बगलासिद्धि

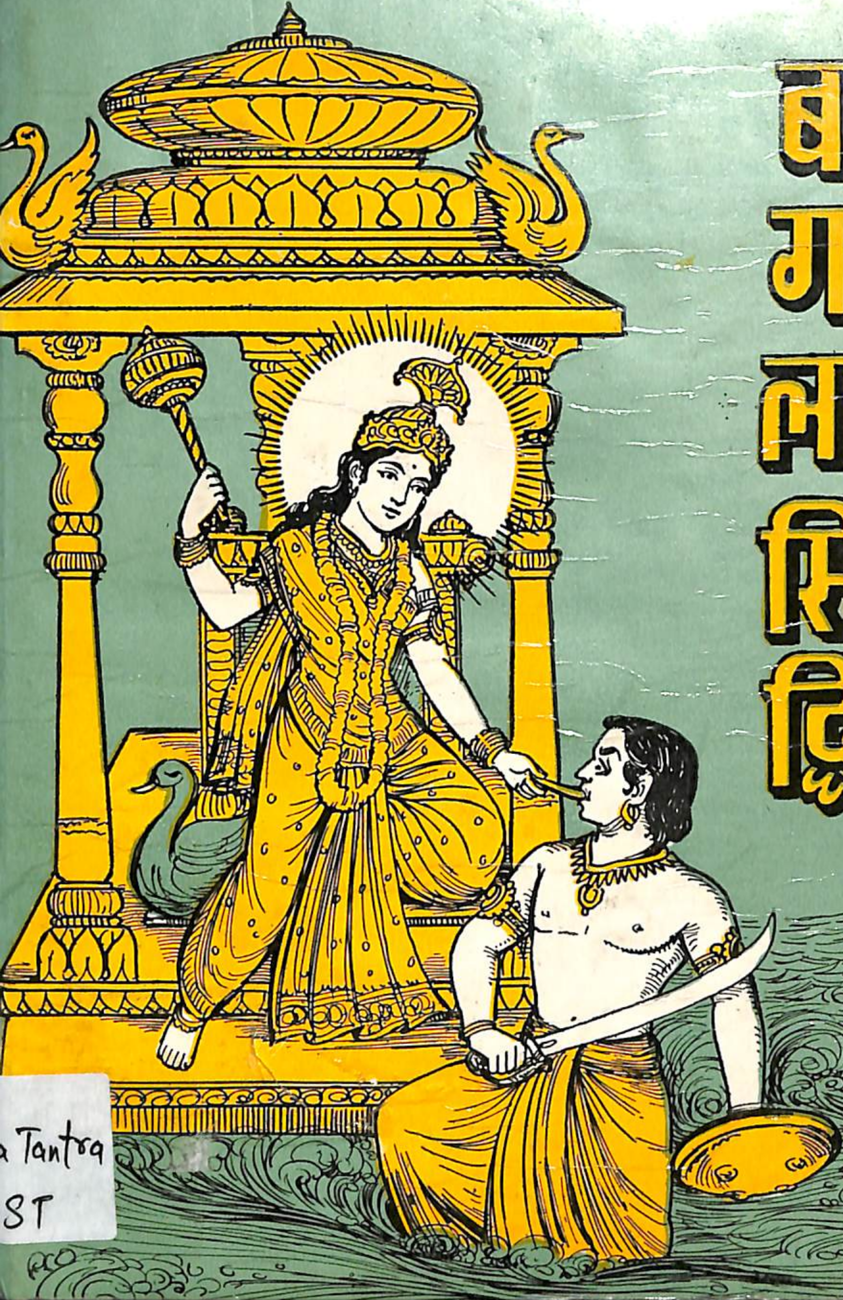

a Tantra
ST

बगलामुखी-सिद्धि

(बगलामुखी साधना का विस्तृत तांत्रोक्त विधान, कवच व स्तोत्रों सहित)

●

लेखक :

डॉ० चमनलाल गौतम

रचयिता—मन्त्र महाविज्ञान, तन्त्र महाविज्ञान, प्राणायाम के असाधारण प्रयोग, शिवरहस्य, विष्णुरहस्य, ओंकार सिद्धि, मन्त्र शक्ति से रोग निवारण कामना सिद्धि, श्रीमद्भागवत सप्ताह कथा।

●

प्रकाशक

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब (वेदनगर), बरेली–२४३००३ (उ०प्र०)

फोन नं० ७४२४२

प्रकाशक :
डॉ० चमनलाल गौतम
ख्वाजा कुतुब (वेद नगर)
बरेली—२४३००३ (उ० प्र०)
फोन : ७४४२४२

●

लेखक :
डॉ० चमनलाल गौतम

●

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

●

संशोधित जनोपयोगी संस्करण
सन् १९९७

●

मुद्रक :
शैलेन्द्र बी० माहेश्वरी
सरस्वती संस्थान
सेठ भीकचन्द मार्ग, मथुरा
फोन : ४०३८९५

●

मूल्य :
चौबीस रुपये मात्र ।

भूमिका

एक वस्त्र महारुद्र की महादशा 'बगलामुखी' है। वैदिक शब्द 'बल्गा' है उसका विकृत आदुमोक्त शब्द 'बगला' है। अतः 'वल्गमुखी' को 'बगलामुखी' कहा जाता है। इसका सम्बन्ध प्राणी के 'अथर्वा सूत्र' से है जिसके सहयोग से मारण, मोहन, उच्चाटन आदि के अभिचार प्रयोग किए जा सकते हैं। पुराण कथाओं के अनुसार देवता इसी के द्वारा कृत्या प्रयोग किया करते थे, अपने शत्रु-पक्ष पर वे सूक्ष्म प्रहार करते थे।

जिह्वाग्रमादाय करेण देवी वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि

(शाक्तप्रमोद-बगलामुखी तन्त्र)

अर्थात् शत्रु के हृदय पर आरूढ़ बाँये हाथ से शत्रु-जिह्वा को खींच कर दाँये हाथ से गदा का आक्रमण करने वाली, पीताम्बर धारण किए हुए, द्विभुजा बगला है। उसे नमस्कार करता हूँ।

'मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेदी सिंहासनोपरिगतं परिपीतवर्णाम्। पीतम्बराभरणमाल्य विभूषितांगीं देवीं नमामि धृतमुद्गरवैरिसिह्वाम्।'

अर्थात् 'सुधा-समुद्र के बीच अवस्थित मणि मण्डप पर अन्नवेदी है, उस पर रत्न-सिंहासन पर पीतवर्ण और पीत वर्ण के आभूषण नाल्य से विभूषित अङ्गों वाली वल्गा है, उसके हस्त में शत्रु जिह्वा और दूसरे में मुद्गर है, उस बल्गा देवी को नमस्कार करता हूँ।

कृत्या प्रयोग आदि का माध्यम प्राणी का अथर्वा 'सूत्र' है। जिसे विकसित और सक्रिय करके काम में लाया जा सकता है 'स्वाभाविक रूपसे यह काक और कुत्ते में अधिक विकसित मिलता है। हमें विश्वास

नहीं होता है कि हमारे घर में आने वाले की पूर्व सूचना काक दे देता है। राजकीय नियन्त्रण में एक विशेष उद्‌देश्य से पोषित कुत्तों के चमत्कार तो प्राय देखने में आते हैं जब अनेक व्यक्तियों में छिपे चोर को वह पहचान लेते हैं। जिस मार्ग से चोर जाता है, उसे सूँघते हुए भी चोर के गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाते हैं। यह उनकी विकसित 'अथर्वा शक्ति' का ही परिणाम है। कई बार ऐसा होता है कि सैकड़ों मील दूर अपने किसी परिजन के दुःख से हम आक्रान्त हो जाते हैं। यह 'अथर्वा सूत्र' के ही माध्यम से होता है। इसे एक तरह की वायरलेस टेलीग्राफी भी कह सकते हैं। यह सूक्ष्म होने के कारण दृष्टि में नहीं आ सकता। अनुभव ही किया जा सकता है। इसी के सहयोग से मारण प्रयोग किए जा सकते हैं।

आचार्यों ने ऐसे घातक प्रयोगों को निषेध ही किया है और गुप्त रखने के भी आदेश दिये हैं ताकि अनधिकारी व्यक्ति इनका दुरुपयोग न कर सकें। इन साधनाओं को गुरु परम्परा से भी सीखने का विधान है ताकि गुरु केवल अधिकारी शिष्य को ही पूर्ण साधना विधि में प्रशिक्षित करे। मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भवन आदिके प्रयोग जनहित के विरुद्ध माने जाते हैं। अत्यन्त आवश्यकता पड़ने पर इस साधना में प्रवीण गुरु से दीक्षा लेकर पूर्ण साधना विधि सीखकर ही अनुष्ठान का श्रीगणेश करना हितकर होगा अन्यथा हानि की सम्भावना हो सकती है। बगलामुखी की साधना विशेष प्रकार से शत्रु पर विजय प्राप्त करने और आकस्मिक सङ्कटों से सुरक्षित रहते के लिए की जाती है। इन उद्‌देश्यों की पूर्ति अन्य साधनों की अपेक्षा बगलामुखी साधना से शीघ्र होती है।

अनुष्ठान के नियमों को जानना और उसका पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। बगलामुखी की साधना वीररात्रि की विशेष प्रकार से सिद्धिप्रद मानी गई है। वीररात्रि की व्याख्या करते हुए कहा गया है–

चतुर्दशी भौमयुता मकारेण समन्विता ।
कुलऋक्षसमायुक्ता वीररात्रिः प्रकीर्तिता ॥ (प्राणतोषिणी)

अर्थात्–"मकरराशिस्थ सूर्य होने पर मङ्गलवार को चतुर्दशी हो और उस दिन कुल नक्षत्र हो तो उसे वीररात्रि कहा जाता है ।"

अनुष्ठानकर्त्ता को स्वयं पीत वस्त्र ही ग्रहण करने चाहिए । पीले कर्णिकार (कनैर) के फूलों का विशेष विधान माना गया है । अक्षत, पुष्प आदि सभी पूजन साम्रग्री पीले रङ्ग की हो तो अच्छा है । कुछ तन्त्रों में ऐसा वर्णन आता है कि हरिद्रा की माला केवल स्तम्भन कार्य में ही प्रयुक्त होती है परन्तु गुरु परम्परा से साधना करने वाले जानतेहैं कि हरिद्रा की माला सभी प्रयोगों में विहित है । बगलामुखी का मन्त्र ३६ अक्षर का होता है । उन्हें ३६ की संख्या प्रिय है । अतः ३६०० ३६००० अथवा ३६ लाख मन्त्र जप के अनुष्ठान विशेष प्रकार से फल-दायक व सिद्धिप्रद माने गये हैं ।

मन्त्र शक्ति विकास की एक व्यवस्थित व वैज्ञानिक प्रणाली है । शास्त्रों में इससे जो लाभ प्राप्ति के माहात्म्य वर्णित किये हुए हैं, उनमें कुछ भी सन्देह नहीं करना चाहिये क्योंकि लाखों वर्षो से लाखों करोड़ों साधकों ने इस तथ्य की पुष्टि की है । परन्तु इस लक्ष्य प्राप्ति के लिए जिन नियमों का वर्णन शास्त्रों में किया गया है,उनका पालन करना भी आवश्यक है । नियमों का पालन न करने पर भी सफलता की आशा करना बुद्धिमानी नहीं है । भोजन सिद्धि के लिए गेहूँ को साफ करके चक्की पर पिसवाना पड़ता है । आटा बनने पर इसमें जल मिला कर एक निश्चित विधि से गूँथना पड़ता है । फिर अग्नि के सहयोग से उसे सेक कर रोटी का आकार बनता है और वह खाने योग्य बनती है । साग सब्जी को काट छांट करके, साफ करके, जल से धोकर, आवश्यक हो तो जल मिलाकर, अग्नि पर एक निश्चित समय के लिये, निश्चित तापमान देना पड़ता है, उसमें नमक, मिर्च, मसाला आदि मिलाने पड़ते हैं और बीच-बीच में देखभाल कर हिलाना पड़ता है तभी साग अच्छा

व स्वादिष्ट बन पड़ता है। यदि इसमें से एक नियम की भी अवहेलना की जाय तो साग सिद्धि असम्भव है। इसका हर नियम आवश्यक है। सभी वस्तुयें डाल कर यदि उसे अग्नि पर न रखा जाए तो साग कैसे बन जायेगा। जल की आवश्यकता होने पर यदि जल न डाला जाए तो साग के जलने की सम्भावना रहती है। हर नियम का अपना-अपना विशेष महत्व रहता है। भोजन के सम्बन्ध में तो समझना सहज है कि यदि एक भी नियम का पालन न किया गया तो भोजन बनने में व्यवधान आना स्वाभाविक है। उसी तरह मन्त्र सिद्धि के लिए जो नियम निर्धारित किये गये हैं, यदि उनका दृढ़ता-पूर्वक पालन न किया गया तो निश्चय-पूर्वक असफलता हाथ लगेगी, मन्त्र की शक्ति पर दोषारोपण करना उचित न होगा। अतः मन्त्र से इच्छानुसार लाभ प्राप्त करने के लिए निम्न महत्वपूर्ण तथ्यों की ओर ध्यान देना चाहिए। इसमें से एक की भी उपेक्षा की गई तो लाभ संदिग्ध रहेगा।

ध्यान के लिए बगलामुखी का सुन्दर चित्र हो। उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग को भली प्रकार देखकर ध्यान करना चाहिए। आकृति अस्पष्ट होनेपर बार-बार देखकर ध्यान जमाने का प्रयत्न करना चाहिए।

सुयोग्य गुरु से दीक्षा अवश्य लेनी चाहिए। केवल पुस्तकों से पढ़कर साधना करने से अभीष्ट सिद्धि नहीं होती क्योंकि साधना क्षेत्र की बाधाओं और उनके निवारण के उपायोंसे गुरु भली प्रकार परिचित होते हैं। साधक की प्रकृति और क्षमता के अनुसार वह उपयुक्त निर्देश देते हैं और त्रुटियों का परिमार्जन भी साथ-साथ करते चलते हैं जिससे मार्ग प्रशस्त करने में सुविधा रहती है। यदि मार्ग की रुकावटों को दूर करने वाला मार्ग दर्शक न हो तो साधना-सिद्धि में देरी होना स्वाभाविक है।

बगलामुखी सिद्धि की

विषय-सूची

--ॐ--

१	बगलामुखी-इति संज्ञार्थ-निर्णयः	६
२	श्री बगलामुखी का वैदिक रूप	१२
३	सांख्यातन-तन्त्रोक्त-माहात्म्यम्	१७
४	वह्निपुराणोश्च-माहात्म्यम्	२२
५	मन्त्र-यन्त्र-विधानम् (मन्त्र महोदधि सम्मती बगलामुखी पटलम्)	२४
६	मेरु-तन्त्रोक्त-विधानम्	३०
७	ब्रह्मास्त्रकल्पविधानम्	४०
८	सांख्यायन-तन्त्रोक्त-विधानम्	४६
९	एकाक्षर-मन्त्र-विधानम्	५१
१०	श्रीबगला-मायामन्त्रः	५५
११	बगला-शावरमन्त्रः मन्त्रोत्कीलनम्, ध्यानम्, मन्त्रशुद्धि-अन्य प्रकारोत्कीलनादि च ।	५७
१२	मन्त्राणां दश संस्काराः	६४
१३	षोडषोपचारमन्त्रः षोडशोपचार मन्त्र, प्रार्थना व यन्त्र संस्कार सामग्री	६६
१४	यन्त्रसंस्कार विधि (वामकेश्वर तन्त्र)	७०

१५ बगला-पूजन-विधिः ७३

मन्त्रः, विनियोगः, सन्ध्या विधिः, शिखा-बन्धन-मन्त्रः, सङ्कल्पः, ऋष्यादिन्यासः, करन्यासः अङ्गन्यासः, प्रातः काल, मध्याह्न व सांयकाल ध्यानम्, मार्जनं, कवचम् अन्तर्यमातृकान्यासः ।

१६ श्रीपीताम्बरार्चन पद्धतिः ७७
१७ सिद्ध तन्त्र प्रयोगः १२२
१८ बगला-कवचम् १२४
१९ कवचम् (१) १२५
२० कवचम् (२) १३५
२१ ब्रह्मास्त्र बगला कवचम् १४१
२२ श्रीबगलामुखी शत्रु-विनाशक-कवचम् १४४
२३ रक्षा-कवचम् १४६
२४ बगला-प्रत्यंगिरा-कवचम् १५१
२५ श्रीबगला-स्तोत्रम् १५६
२६ सहस्रनाम-स्तोत्रम् १५७
२७ शतनाम-स्तोत्रम् १८९
२८ श्रीब्रह्मास्त्र महाविद्या-स्तोत्रम् १९३
२९ पीताम्बरोपनिषत् २०६
३० बगला-हृदयम् २०९
३१ बगलापञ्जरस्तोत्रम् २१४
३२ बगलापंजर न्यास-स्तोत्रम् २२०
३३ कीलक स्तोत्रम् २२१
३४ आरती २२३

बगलामुखी सिद्धि

बगलामुखी इति संज्ञार्थ निर्णयः

ननु बगलामुखीति संज्ञा कथ संगच्छते, बगलेति नाम्ना प्रसिद्ध कोशादौ व्याकरणव्युत्पत्याऽपि साधयितु दुर्घटमेवेति चेत् न यास्केन वृणोते रूपपस्यांगीकारा 'बंगला वृणीतेः' (नि० ६।२)बलगहनमित्यादिव्याख्यानावसरे उव्वटमहीधराभ्यां तथैवांगीकारात् सुसाधुत्वं चावगम्यते। बगला शब्दार्थ उक्तएवं बगला इति लुप्तनकाराद्वितीया-बगुवचनस्यानुकरणम् । तान् खनति विदारयति इति :बगलामुखी' सिध्यति। 'खन् अवदारणे' इत्यस्मात् 'डत् खवेमुट् स चोदात्तः' इत्युणादिसूत्रेण मुखशब्द निष्पादनं भवति ।

प्रश्न यह उठता है कि बगलामुखी यह नाम किस प्रकार सङ्गत होता है । बगला इस नाम से प्रसिद्ध कोश आदि में व्याकरण की व्युत्पत्ति से भी सिद्ध करना महा कठिन हैं । ऐसा जो कहते हैं वह ठीक नहीं है । इसको यास्क मुनि ने वृणोति धातु का एक रूप स्वीकार किया है । बलगहनद्ध इत्यादि की व्याख्या के अवसर पर उच्वट और महीधर ने भी उसी प्रकार से अङ्गीकार किया है । इस शब्द की सुसाधता का तो अङ्गीकरण किया जाता है । बगला शब्द का अर्थ तो कहा ही गया है । बगला यह जिसका नकार लुप्त हो गया है ऐसा द्वितीया कारक के बहुवचन का अनुकरण है । उन बगलों का जो खनन करता है अर्थात् विदरण किया करता है वह बगलामुखी सिद्ध होता है । खन् अवदारणे

इस धातु से डत् और सबसे मुट होता है और वह उदात्त है । इस उणादि सूत्र से मुख शब्द की सिद्धि होती है ।

'मुखं निःसरणे वक्त्रे प्रारम्भोपाययोरपि ।
सन्ध्यन्तरे नाटकादेः द्यौशब्देऽपि नपुंसकम् ॥'

इतिमेदिनीकोशाद् अनेकेऽर्था मुखशब्दस्ताऽवगता भवन्ति । अत्र वेदार्थानुगतत्वात् तन्त्रार्थसम्मतत्वाच्च निःसारणमेवा भूतप्रेतं भवति । बगलानां तथात्वात् । न च 'नखमुखात् संज्ञायाम्' इति ङीषो निवृत्तिरिति वाच्यम् स्वाङ्गवाचके तत्प्रवृत्तत्वात् । नह्यत्र स्वाङ्गवाचकत्वं तस्माद् गौरादित्वात् ङीष् भवत्येव ।एवं कृते ज्वालामुखी, गोमुखीत्यादयः संज्ञाशब्द अपि सिध्यन्ति क्वचिद् बगलानना क्वचिद् बगला, बगलावक्राऽपि संज्ञा दृश्यते मुखशब्दस्य स्थाने ।

कोश में मुख शब्द का अर्थ इस तरह से दिया गया है–मुख शब्द निःसरण में, मुख में, प्रारम्भ में और उपाय में भी होता है तथा नाटक आदि के अभ्यन्तर में तथा द्यो शब्द में भी नपुंसक होता है । इस प्रकार से मेदिनी कोश से अनेक अर्थ मुख शब्द के अवगत हुआ करते हैं । वेदार्थ के अनुगत होने से तन्त्रार्थ के सम्मत्त होने से निःसारण ही अभिमत अर्थ होता है क्योंकि बगलों का तथात्व होता "नख मुखात्संज्ञाम्' इस सूत्र से ङीष् की निवृत्ति हो जाती हैं–ऐसा कथन ठीक नहीं है क्योंकि यह स्वाङ्ग–वाचक में प्रवृत्त होता है । यहाँ पर उसकी स्वाङ्गवाचकता ही नहीं है । इस कारण से गौरादि होने से ङीष् हो ही जाता है । ऐसा मानने पर ही ज्वालामुखी, गौमुखी, इत्यादि शब्द संज्ञावाचक सिद्ध होते हैं । कहीं बगलानना, बगला, बगलावक्रा भी मुख शब्द के स्थान में संज्ञा दिखाई देती है ।

तथापि मुखशब्दस्य सादृश्ये एव मन्तुः योग्यम् पर्यायमात्रविविक्षितत्वात् मतु स्वांकत्वम् । ननु बगलामुखीति सत्ता कथम्, वैदिकग्रन्थेषु सर्वत्र बलगेति दर्शनात् इति चेन्न, 'परोक्ष-

प्रिया इव हि देवा' इति श्रुतिमनुसृत्य बगलामुखीति स्थाने बगलामुखीति प्रयुज्यते। 'पृषदरादीनि यथोपदिष्टम्' इति 'सिंहो वर्णविपर्ययाद्' इतिवद् विपर्ययः। केचिद् बग वाच लातांतिनिरुक्त्या बगलाशब्दं साधयन्ति केचिद् वाचा अलति भूषयतीति बगला अत एवं बगला वाक्प्रदायिनी, इति संगच्छते । सत्य-भामा भीम इतिवत् बगला इत्यपि व्यवह्रियते बगलेति नाम ललितमिति स्तोत्रप्रमाणाच्च । बगलापक्षिविशेषस्य मुखमिव मुखं यस्या इत्यपि केचित् साहसिका ऊचुः इति ।

तो भी मुख शब्द के सादृश्य में ही मानना उचित है क्योंकि वहां पर पदार्थ मात्र ही विवक्षित है स्वाङ्गतत्व नहीं है प्रश्न यह उठता है कि बगलामुखी यह संज्ञा किसी तरहसे हैं क्यों कि वैदिक ग्रन्थोंमें सभी जगह पर बलगा यही दर्शित होती है । ऐसा कहना ठीक नहीं है देवगण परोक्ष में ही प्रिय होते हैं इस श्रुति का अनुसरण करके बगलाभुखी इसके स्थान में बगलामुखी प्रयुक्त किया जाता है । 'पृषोदरादिक जैसे उपदिष्ट किये गये हैं–सिंह वर्ण के विपर्यय से होता है इसी तरह से यहाँ पर भी विपर्णय है । कुछ मनीषी बग का अर्थवाक् करके उसको लगाते हैं--इस निरुक्ति से बगला शब्द की साधना करते हैं । कतिपय विद्वान वाच अर्थात् वाणी से भूषित करती है वह बगला है । इसीलिये बगला वाक् की प्रदान फरने वाली है इस तरह सङ्गति किया करते हैं । सत्य-भामा-भीम इसी तरह से बगला इसका भी व्यबहार किया जाया करता है । बगला–यह नाम ललित है यह स्तोत्र का प्रमाण भी है । बगला एक पक्षिविशेष हैं । उसके मुख की तरह इसका मुख है ऐसा भी कुछ साहसी लोग कहते हैं ।

।। इति बगलामुखी की संज्ञार्थ निर्णयः समाप्तः ।।

श्री बगलामुखी का वैदिक रूप

यजुर्वेद में आभिचारिक प्रकरण में कहा है मूल वेद का पाठ–

रक्षोहरणं बलगहन वैष्णवीमिदमहं त बगलमुत्किरामि यं मे निष्टयो यजमात्यो निचखानेमहं तं बलगमुत्किरामि, य मे समानो यमसम नो निचखानेवमहं त वलगमुत्किरामि, य मे सजातो यमसजातो, निचखानोत्कृत्त्यां किरामि।

(यजुः ५ । २३)

उच्वट भाष्यम्--रक्षोहणं रक्षांसि या वागपहन्ति सा रक्षोहा तां रक्षोहणम् ।'ब्रह्मभ्रूणवृतेषु क्विप्' धातूपपदकालप्रत्ययनियमान्न प्राप्नोति, इति बहुलं छन्दसि इति किप् प्रत्ययः । वलगहन बलगान् कृत्याविशेषान् भूमौ निखनितान् शत्रु भिवनाशार्थं हन्तीति बलगहा वाक् । पूर्ववत् क्विप प्रत्ययः । तां बलगहम् । बलो वृणोतेः यस्य वधार्थं क्रियते तं रोगादिभिर्वृण्वन् आ प्रच्छादयन् गच्छतीतिवलगः, वैष्णवी विष्णुधेवत्यांवाचं वदेति सम्बन्धः उत्किरति। इदमह यत् करोमि तद् बलगकृत्याविशेषम् उत्किरोमि उद्वपामि यं मे निष्ट्य यं वलग मे मम निमेयः पुत्रः स हि निर्गत्य शरीरात् ततो विस्तीर्णो भवति यं च अमात्यः वलग निचखान निखनति । छन्दसि लङ् लिटः सर्वेषु कालेषु भवन्ति । द्वितीयमुतिकरति । यं मे समानो विद्यादिभिः तद्दृशः, असमानः विद्यादिभिरसदृशः शेष व्याख्यातम् । तृतीयमुत्किरति । यं मे सबन्धुः सबन्धुः स्वजमः असबन्धुस्तद्विपरीतः शेषं व्याख्यातम् । चतुर्थमुत्किरति। यं मे सजातः । संजातोभ्राता । स हि समानजन्मा भवति, असजातःअसमानजन्माभ्रातरसदृशः शेषं व्याख्यातम् । सर्वमुत्किरति उत्कृत्यां दिरामि उत्किरामि कृत्याम् ।

उच्वट कृत वच का भाष्य–जो वाक राक्षसों का अपहनन करती हैं

उसको रक्षोहा कहते हैं-कर्म में उसका रक्षोणम् होता है। बगला कृत्या विशेषों को कहते हैं जो कि भूमि में निखनित हैं और शत्रुओं के द्वारा किये गये उन बगलों के विनाश के लिए हनन करती हैं वह वमल ही वाणी है। उसके कर्म कारक में बलगहन होता है। अन्य व्याख्या यह हैं-बल वृणोति का है जिसके वध के लिए किया जाता है उसकी रोगादि से आप्राच्छादित करते हुए गमन करती है वह बलगाहै वैष्णवी वाच को कहो यह सम्बन्ध है। यह मैं जो करता हूँ वह बलगा कृत्या विशेष का उद्वपन करता हूँ। जिस बगल को मेरा पुत्र हैं वह शरीर से निकलकर उससे फिर विस्तीर्ण होता हैं और जिसको बलग को अमात्य निखनन करता है। जो कि विद्या आदि में समान है और अविद्यादि से असमान है जो मेरा भ्राता है। वह समान जन्म वाला होता है और सदृश अर्थात् भाई के सदृश नहीं है सब कृत्या का उत्करण करता हूँ।

महीधरेणाऽपि समानमेतद् व्याख्यातम्। प्रमाणवाक्यानि कानिचिदधिकानि प्रदत्तानि। किञ्चिद् वैशद्यं च प्रदर्शितम् यथा--

पराजयं प्राप्य पलायसनैः राक्षसैरिन्द्रादिवधार्थमभिचार रूपेण भूमौ निखाता अस्थिकेशनखादिपदार्थाः कृत्याविष्शेषा वल्गाः।

महीधर ने भी इसी के समान व्याख्या की है। कुछ प्रमाण वाक्य अधिक दिये हैं और कुछ विशदता भी प्रदर्शित की है। जैसे-पराजय को प्राप्त कर भागे हुए राक्षसों द्वारा इन्द्र आदि के वध के लिये अभिचार के रूपसे भूमि में खोदे हुए अस्थि के नख आदि पदार्थ कृत्याविशेष वल्गा हैं।

कात्यायनसूत्रे कृत्यानिवारणात्मकस्य अस्य प्रकरणस्य निरूपणप्रकारः सम्यक् प्रदर्शितोऽस्ति अस्मिन् प्रकरणे यः सिद्धा

न्तो निरूपितः, स श्रीबगलामुख्यास्तान्त्रिकस्वरूपेण साम्यता गच्छति । अथर्ववेदस्य बगलासूक्तेऽनेकेप्रकाराः कृत्याः दर्शिताः सन्ति, ताः सूक्तलेखने दर्शयिष्यामः ।

यजुर्वेदस्त काण्वशाखायां तैत्तिरीया-काठकामैत्रायणींशाखास्वपि चैतल्लभ्यते । वैष्णवीति पदेन विष्णुपासिता शक्तिः स्वतन्त्रतन्त्रसम्मता यद्विद्याप्रस्तावे उक्तम् स्तम्भनभक्तिरूपेय विद्या तस्याः व्यापकत्वमभ्युपगम्य पुरुषरूपेण स्तोति ।

कात्यायन सूत्र में कृत्या के निवारण स्वरूप इस प्रकार के निरूपण का प्रकार है जो भलीभाँति प्रदर्शित किया गया है । इस प्रकरण में जो सिद्धान्त निरूपित किया है वह श्री बगलामुखी के तान्त्रिक स्वरूप से साम्यताको प्राप्त होता है । अथर्व वेद के बगला सूक्तमें अनेक प्रकार कृत्या के दिखाये गये हैं । उनको सूक्त के लिखने में दिखायेंगे । यजुर्वेद की काण्य-शाखा में तैंत्तिरीय-काठकामैंत्रायणी शाखाओं में भी यह लब्ध होता है । वैष्णवी इस पद से विष्णु के द्वारा उपासना की हुई शक्ति स्वतन्त्र तन्त्र से सम्मत है । जिसके विद्या प्रस्तावमें कहा है यह स्तम्भन की शक्ति रूप वाली है । ऐसी विद्या उसकी व्यापकता स्वीकार करके पुण्य से स्तवन किया जाता है ।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितंयेन नाकः ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।
(य० ३२।६)

स्पष्टार्थत्वान्न व्याख्यायते । अन्यच्च--

'यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेता मनसा रेजमाने ।
यत्राधिसूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।
(य० ३२।७)

अत्रापि उक्तमेव तत्वं स्वीकृतम् । बृहादाण्यकेत्याक्षर--ब्राह्मण अक्षररूपेणेदमेव व्याख्याम् ।

एकस्याक्षरस्य प्रणासने गार्गिसूर्याचन्द्रमसौ विधृतौतिष्ठतः।
एतस्याक्षरस्यशास प्राग विद्यावापृथिव्यौ विधृते तिष्ठतः।
इत्यादि (३।६।)

'अक्षराम्बरान्तघृतेः' 'सा च प्रशासनात्' (वे० द० १।३ ।१०, ११) इत्यनेन शक्तिरूपेण सूत्रितं च। एभिर्व वने रक्षात्मकं शत्रु विनाशक च स्तम्भनमाहात्म्यं व्याख्यात् भवति।

जिससे द्युलोक और पृथिवी उग्र है और दृढ़है जिससे स्वर्गऔर नरक स्तम्भित है। जो अन्तरिक्ष में रज का विमान है ऐसे किसी देवके लिए हविसे हम यज्ञ करते हैं। (य० ३२।६।) अन्य भी हैं-"यं क्रन्दसी इत्या वहाँ पर भी उक्त तत्व ही स्वीकार किया गया है । बृहदाराण्यक के अक्षर ब्राह्मण में अक्षर रूप से यही व्याख्या की गयी है। इसके अक्षर के प्रशासन में गर्गि सूर्याच्चन्द्रमा विधृत स्थित रहते हैं इत्यादि।(३।६) इसके द्वारा शक्ति रूप से सूचित किया है। इन वचनों से रक्षात्मक और शत्रु विनाशक तथा स्तम्भन का माहात्म्य व्याख्यान किया गया है।

गीतायां च--

एवं बुद्धिः पर बुद्ध्या संस्तंभ्यात्मानसात्मना
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।।'
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकान्तेन स्थितो जगत्।
(गी० अ० ३।४३।१०, ४२) इत्यादि रहस्यम्

अन्यच्च

'रक्षसां ग्रीवा अपि कृन्तामि बृहन्तामि बृहद्रवा बृहतीमिद्राय वाचं वद। (य० वे० ५।२२)

अस्मिन् मन्त्रे रक्षसां विनाशने बृहतीछन्दो विशिष्टां बृहत्यागुणायुक्तां वाच प्रयुंक्ते। श्रीभगवत्या मन्त्रो बृहतीचन्दो-विशिष्टो निर्दिष्टः।

उक्त च देवतब्राह्मणे बृहस्पतेर्भवति वाचमभवद् (ख० १-७)

सायणेनेत्थं व्याख्यातम् 'बृहस्पतेर्वाचि' वाक्यं बृहती छन्दः अभवत् अक्षरत् अगच्छद् वा बृहत्या सार्धं बृहस्पतिरपि। तस्मात् प्रजापतेर्यज्ञोऽजायत इत्यर्थः ।

और गीता में-इस प्रकार से बुद्धि के पर को ज्ञात करके आत्मा से आत्मा का संस्तम्भन करके हे महाबाहुओं वाले ! काम स्वरूप शत्रुओं को निहित करो। विष्टम्भन करके यह पूर्ण रूप से जगत् में स्थित है। यह कहा है । (गीता-अध्याय ३।४३।१०।४२) और भी 'रक्षसां ग्रीवा अपि कृन्तामि बृहन्नसि बृहदरवा बृहती मिन्द्रायवाच वद'' -इस मन्त्र से राक्षसों के विनाश के लिये बृहती छन्द विशिष्ट अर्थात् बृहत्व गुण युक्त वाणी का प्रयोग करता है। श्रीभगवती का मन्त्र बृहती छन्द से विशिष्ट निर्दिष्ट किया है। सायण ने इस प्रकार से व्याख्या की है-''बृहस्पति की वाणी अर्थात् वाक्य बृहती छन्द हुआ था अथवा बृहस्पति भी बृहती के साथ गयाथा। इससे प्रजापति के यज्ञमें उत्पन्न हुआ था।

पुनश्च तत्रैवोक्तं बृहती बृहतेर्वृद्धिकर्मणः (ख० ३।११)
छान्दोग्ये च- वाग् हि बृहत तस्या एष पतिः (१।३।२।११)
रहस्यरूपेण उभयं चैतद् बगलामन्त्रे संगच्छते ।

और फिर वहाँ पर ही कहा है बृहत बृहतिका अर्थात् वृद्धि कर्म को छान्दोग्य में-वाणी बृहती हैं उसका यह पति है। रहस्य के रूप से ये दोनों ही बगला तन्त्र में सङ्गत होते हैं।

सांख्यायन तन्त्रोक्त माहात्म्यम्

कैलास शिखरासीनं गौरीवामाङ्ग संस्थितम् ।
भारतीपतिवाल्मीकिः शिवासंयुतमीश्वरम् ।१
अष्टदिक् पालसंयुक्तं विघ्नेशाष्टकसेवितम् ।
भैरवाष्टवृतं देवं मातृमण्डलवेष्टितम् ।२
महापाशुपताक्रांतं प्रमथैरावृतं प्रभुम् ।
नत्वा स्तुत्वा कुमारश्च इदं वचनमब्रवीत् ।३

श्री कौञ्चभेदन उवाच–

चापचर्यासु निपणैर्युद्धचर्याभयंकरः ।
नानामायाविनं चैव जेतुमिच्छामि राक्षसम् ।४
तस्योपायं च तद्विद्यां ब्रूहिमे करुणाकर ।
पुत्रोऽहं तव शिष्योऽहं कृपापात्रोऽहमेव च ।५

श्री ईश्वर उवाच–

साधु साधु महाप्राज्ञ क्रौञ्चभेदनकोविद ।
ब्रह्मास्त्रेण विना शत्रोः संहारो न भवेत् किल ।६
तद्विद्यां च प्रवक्ष्यामि त्रिषु लोकेषु दुर्लभाम् ।
पुत्रो देयः शिरो देयं न देया यस्य कस्यचित् ।७

कैलास पर्वत के शिखर पर विराजमान, जगदम्बा गौरी जिनके वामाङ्ग में संस्थित हैं, शिवा से समन्वित, आठों दिक्पालों से युक्त आठ विघ्नेश्वरों से संयुक्त, आठ भैरवों से समन्वित, मातृ-मण्डल के सहित ईश देव को जो महा पाशुपत ने आक्रान्त और प्रमथगणों से समावृत प्रभु हैं उनको प्रणाम करके तथा स्तवन करके भारती पति वाल्मीकि कुमार ने यह वचन कहा था ।१-३। श्री क्रौञ्चभेदन ने कहा-धनुर्विद्या की चर्या में परम कुशल युद्ध-विद्या में अत्यन्त दक्ष तथा बहुत ही भय-करों से युक्त अनेक प्रकार की माया से संयुक्त राक्षस को मैं जीतना

चाहता हूँ हे दयालो ! उसका कोई भी उपाय जो हो और वह और उस विद्या को आप कृपा करके मुझे बतलाइये। मैं तो हे भगवान् ! आपका ही परम प्रिय पुत्र हूँ, शिष्य भी हूँ और मैं आपकी कृपा का पात्र हूँ। तात्पर्य यह है कि मैं हर तरह से उक्त विद्या के प्राप्त करने का उचित अधिकारी हूँ ।४-५। श्री ईश्वर ने कहा–हे कौञ्च के भेदन करने में कोविद ! आपने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है आप महान् बुद्धिमान् हैं। ब्रह्मास्त्र के बिना शत्रु का संहार निश्चित रूप से नहीं होता है ।६। और उस विद्या के विषय में मैं आपको बतलाऊंगा जो कि तीनों लोकों में परम दुर्लभ है। इस अतीव दुर्लभ विद्या को परम गोपनींय रखना चाहिए। भले ही अपना पुत्र दे देवे तथा समय आ जावे तो अपना शिर भी दे देवे किन्तु इस विद्या को कभी भी किसी को नहीं देना चाहिए ।७।

ब्रह्मास्त्रस्तम्भिनी विद्या स्तब्धमायामनुस्तथा।
प्रवृत्तिरोधनी विद्या बगला च कुमारक: ।८
मन्त्रजीवनविद्या च प्राणिप्रजाऽपहारिका।
षट्कर्माऽऽधारविद्या च रात्रेः पर्यायवाचका: ।९
षट्प्रयोगमयी विद्या षट् विद्याऽऽगमपूजिता।
तिरस्कृताऽखिलाविद्या: त्रिशक्तिमयमेव च।
स्तम्भनेन विना वश्यं शान्तिश्चैव तु तद्विना।
मोहनाऽऽकर्षणे चैव विद्वेषोच्चाटने तथा ।११
मारणं भ्रान्तिरुद्वेगकरणं च कुमारक:।
विद्या च बगलानाम्नी मुनिगुह्या सुपावनी ।१२
विना वाक् स्तम्भिनी विद्यां स्वविद्या न च भासते।
तस्मादेतन्महाविद्यां कमलासनजीविनीम् ।१३
पद्मजो नारदो विद्यां सांख्यायनमुनिं प्रति।
उपदेशक्रमेणैव दत्तवान् मेरुकन्दरे ।१४

हे कुमार ! यह विद्या ब्रह्मास्त्र का भी स्तम्भन करने वाली है तथा यह स्तब्ध माया का मन्त्र है और वगला प्रवृत्ति के रोधन करने वाली विद्या है ।८। यह विद्या प्राणियों और प्रजाओं के अपहरण करने वाली है तथा मन्त्रों के जीवन की विद्या है । यह रात्रि के पर्य्याय की वाचक है और षट्कर्मों के आधार स्वरूप है । मारण-मोहन-वशीकरण-स्तम्भन-उच्चाटन-विद्वेषण-ये छै कर्म ही षट्कर्म कहे जाते हैं ।६। यह विद्या षट् प्रयोगों से परिपूर्ण हैं तथा षट् विद्या के आगमों के द्वारा यह पूजित है । इसके आगे अन्य सम्मत विद्यायें तिरस्कृत होतीहैं और तीनों शक्तियों से पूर्ण हैं ।१०। इससे स्तम्भन के बिना ही वश्य और शान्ति होती है । हे कुमार ! मोहन-आकर्षक-विद्वेषण-उच्चारण-मारण-भ्रान्ति-उद्वेगकरण इस विद्या से होते हैं । यह वगला नाम वाली विद्या परम पावनी है और यह मुनियों के द्वारा गुह्य है ।११-१२। वाणी के स्तम्भन करने वाली विद्या के बिना अपनी विद्या भी भासित नहीं होती है । इस कारण से कमलासन की जीवनी इस महाविद्या को पद्मज देवर्षि नारद ने सांख्यायन को मेरु पवत की कन्दरा में उपदेश के ही क्रम से प्रदान किया था ।१३-१४।

तेन देवी कटाक्षेण कृतवानागमं भुवि ।
मूलमन्त्रोपविद्याश्च अङ्गविद्या च विस्तरात् ।१५
प्रयोगं चोपसंहारं समाराधनमेव च ।
विस्तरेणोक्तवानस्मिन् वक्ष्ये तत्सर्वमादरात् ।१६
स्वविद्यारक्षिणी विद्या स्वमन्त्रफलदायिका ।
स्वकीर्तिरक्षिणी विद्या शत्रु संहारकारिका ।१७
परविद्याछेदिनी च परमन्त्रविदारिणी ।
परमन्त्रप्रयोगेषु सदा विध्वंसकारिका ।१८
परानुष्ठानहारिणी परकीर्तिवनाशिनी ।
पराऽऽपन्नाशकृद् विद्या परेषां भ्रमकारिणी ।१६

ये वा विजयमिच्छन्ति ये वा जन्तुक्षयं कलौ ।
ये क्रूरमृगेभ्यश्च जयमिच्छन्ति मानवाः ।२०
इच्छन्ति शान्तिकर्माणि वश्यं संमोहनाऽऽदिकम् ।
विद्वेषोच्चाटनं पुत्र तेनोपास्यस्त्वयं मनुः ।२१

उसी देवी के कृपा कटाक्ष से भूमण्डल में इस आगम को किया था। मूल मन्त्र से युक्त उपविद्या और विस्तार से अङ्ग विद्या प्रयोग–उपसंहार और उसका समाराधन इसमें विस्तार के साथ कहा है। इस सबको आदर के साथ मैं बतलाऊँगा ।१५-१६। यह विद्या अपनी विद्या की रक्षा करने वाली है और स्वकीय मन्त्र के फल के देने वाली है। अपनी कीर्ति की रक्षा करने वाली है और यह विद्या शत्रुओं से संहार के करने वाली है ।१७। यह विद्या दूसरों की विद्या के छेदन करने वाली है और दूसरों के मन्त्रों का निर्वारण करने वाली है। दूसरों के द्वारा मन्त्रों के प्रयोगों में यह विद्या सदा विध्वंस करने वाली है ।१८। यह विद्या दूसरोंके अनुष्ठानोंके हरण करने वाली है तथा परों की कीर्ति का विनाश करने वाली है। दूसरों के द्वारा दी हुई आपत्तियों का नाश करने वाली है तथा परों को भ्रम में डालने वाली है ।१९। जो पुरुष विजय की इच्छा करते हैं अथवा जो कलियुग में जन्तुओं के क्षय की इच्छा रखते हैं और जो मनुष्य क्रूरमृगों से जयकी इच्छा करते हैं ।२०। जो शान्ति कर्मों को चाहते हैं–जो वैश्य और सोहन आदि कर्मों को करना चाहते हैं। हे पुत्र ! जो पुरुष विद्वेषण और उच्चाटन की इच्छा रखते हैं उनको अवश्य ही इस बगलामुखी मन्त्र की उपासना करनी चाहिए ।२१।

सत्यम्प्रदायविधिना सद्गुरोर्मुखतस्तथा ।
उपदेशक्रमेणैव गृहीत्वा साधयेन्मनुम् ।२२
कुलाऽऽचारसमायुक्तः कुलमार्गेण पुत्रक ।
दीक्षाकाले गुरोर्योगो गृहीतव्यः सुबुद्धिमान् ।२३

साधयेत् कुलमार्गेण तेन मन्त्रं प्रयोजयेत् ।
उपसंहरणं तेन कर्त्तव्यं कुलयोगिना ।२४
सौभाग्येन समायुक्तै: सदा तर्पणपूर्वकै: ।
सदा पूजासमायुक्तै श्चिन्तितं भवति ध्रुवम् ।२५
ऋषिसिद्धाऽमरैश्चैव विद्याधरमहोरगैः ।
यक्षगन्धर्वनागैश्च पिशाचब्रह्मराक्षसैः ।२६
पञ्चेन्द्रियैश्च सचारं सद्यो हन्त्यनिशं मनुः ।
पंडितोऽप्यंण्डितो जीवः किं पुनः क्रौञ्चभेदन ।२७

जो मानव इस मन्त्र की इच्छा रखता है उसको सत् सम्प्रदाय की विधि से सद् गुरुदेव के मुख से जो भी उपदेश का क्रम हो उसी से अनुसार ही इस मन्त्र को ग्रहण करके साधन करना चाहिए ।२२। हे पुत्र ! कुल के आचार से समायुक्त होकर कुल के ही मार्ग से सबुद्धिमान् को दीक्षा के काल में गुरु का प्रयोग घहण करना चाहिए ।२३। कुलके मार्ग से ही साधन करे और उसी के द्वारा मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए । कुलयोगी को उसी के द्वारा उपसंहार करना चाहिए ।२४। सौभाग्य से समायुक्त-पूर्व में तर्पण करने वाले तथा पूजा से संयुतों के द्वारा चिंतन ध्रुव होता है ।१५। ऋषि-सिद्ध--अमर (देव) विद्याधर, महोरग, यक्ष, गन्धर्व, नाग, निशाच, ब्रह्म, राक्षस और पञ्चेन्द्रिय के द्वारा किये हुए संचार यह मन्त्र सदा निरन्तर हनन किया करता है । क्रौंचभेदन ! जीव पण्डित हो अथवा अपण्डित हो उसके विषय में क्या कहना है । ।२६-२७।

॥ इति सांख्यायनतन्त्रे प्रथमः पटलः समाप्तः ॥

वह्नि पुराणोक्त माहात्म्यम्

बगलेति महामन्त्रं सर्वेषां सर्वकामदम् ।
केवलेन जपेनैव लक्षेण काली सिद्ध् यति ।१
वशीकरणकर्मादि दशसाहस्रतो भवेत् ।
अथ वक्ष्ये महेशानि बगलासाधनं तव ।२
बगलेति मनोसंख्यापुरश्चरणकर्मणि ।
लक्षेण मन्त्रसिद्धिः स्यात् नास्त्यत्र युगसंख्यकम् ।३
ततो वश्यादि कर्त्तव्यं दशसाहस्रसंख्यया ।
शरीराऽऽरोग्यतो वापि धनेच्छुश्चायुतं जपेत् ।४
कलावेतस्य तु मनोः प्रभावं किं ब्रवीमि ते ।
सहस्रमात्रहोमेन सर्वं सिद्धिर्नचान्यथा ।५
नास्त्यपेक्षा ऋष्यादेः स्तुतिपाठादिकस्य वा ।
स्तुतिर्वा कवचं वाऽपि ऋष्यादिन्यास एव च ।६
बगलेति स्वयं सर्वसिद्धविद्या इति प्रिये ।
त्वयाऽऽद्या रूपया काल्या स्वयमुक्तं पुरैकदा ।७

बगलामुखी का यह महामन्त्र सबके समस्त कामों का प्रदान करने वाला है । केवल एक लाख मन्त्र के जाप से ही काली सिद्ध हो जाया करती है ।१। वशीकरण आदि कर्म दश सहस्र जप से ही होजाया करते हैं। इसके अनन्तर हे महेशानि ! मैं अब आपके सामने बगलामुखी का साधन प्रकार बतलाता हूँ ।२। बगलामुखी-मन्त्र का पुरश्चरण कर्म में संख्या एक लाख ही है । एक दो लाख से मन्त्र की सिद्धि हो जाती है । इसमें चार की संख्या नहीं है ।३। इसके अनन्तर वश्य आदि करना चाहिए जो कि केवल दश सहस्र की संख्या से ही हो जाते हैं। अपने शरीर के आरोग्य के लिए अथवा धन-प्राप्ति की इच्छा वाले पुरुष को दश सहस्र मन्त्र का जप करना चाहिए ।४। मैं आपकी इस कलियुग

में इस मन्त्र का प्रभाव क्या बतलाऊँ । केवल एक ही सहस्र आहुतियों के द्वारा होम करनेसे सभी प्रकार की सिद्धि हो जाती है–इसमें अन्यथा कुछ भी नहीं हैं अर्थात् पूर्णतया सत्य है ।५। इस मन्त्र के प्रयोग में ऋषि आदि के जानने या कथन की आवश्यता नहीं है अथवा स्तुति और पाठ आदि की भी इसके साधन में कोई आवश्यकता नहीं होती है । इस मन्त्र की सिद्धि में स्तुति, कवच अथवा ऋषि आदि की तथा न्यास की भी आवश्यकता नहीं है ।६। हे प्रिये ! बगला–यह स्वयंही सर्व सिद्ध विद्या है अर्थात् पूर्ण रूप से सिद्ध हुई विद्या है । आद्य रूपा काली आपने ही पहिले एक-बार स्वयं ही ऐसा है ।७।

शरीराऽऽरोग्यतो देवि वैरिनिग्रहतोऽपि वा ।
दिवानक्तं च कर्त्तव्याः सहस्रमानतो हुतीः ।८
केवलाऽऽहुतिमात्रेण रात्रावारोग्यतां लभेत् ।
बगले इति यो द्विश्चात्युत् वोच्चैर्यत्र वा वदेत् ।९
पथिस्था विघ्नदाः सर्वे पलायन्ते तमोक्षिताः ।
भवेद्धि सफलं कर्म बगलेति स्मरन् जनः ।
बगलाजापिनं दृष्ट्वा सर्वे भीतिमवाप्नुयुः ।१०

शारीरिक आरोग्य के हेतु अथवा बैरियों के विग्रह के लिए दिन में अथवा रात्रि में एक सहस्र आहुतियाँ देनी चाहिए ।८। केवल आहु-तियों के देने ही से रात्रिसे आरोग्य की प्राप्तिकर लिया करता है । जो भी कोई 'बगले'–यह दो बार उच्च स्वरसे जहाँ पर भी मुँह से बोलता है उसको देखकर ही मार्ग में स्थित विघ्न देने वाले सब पलायन कर जाया करते हैं और उसके सब कर्म सफल हो जाते हैं जो कि मनुष्य 'बगले'–इस नामका स्मरण कर लिया करता है । बगला के जाप करने वाले साधक को देखकर ही सब मनुष्य भय को प्राप्त हो जाते हैं ।

।९-१०।

॥ इति वह्निपुराणे पाशुपतदानाध्यायः समाप्तः ॥

मन्त्र यन्त्र विधानम्

बगलामुखी पटल–

अथ प्रवक्ष्ये शत्रूणां स्तम्भिनीं बगलामुखीम् ।
प्रणवो गगन पृथिवी शान्तिबिन्दुयुतं बग ।१
ला मु साक्षी गदी सर्वदुष्टानां वा ह्लीन्दुयुक् ।
मुखं पदं स्तम्भयान्ते जिह्वां कीलय वर्णकाः ।२
बुद्धिं विनाशयान्ते तु बीजतारोऽग्निसुन्दरी ।
षट्त्रिंशदक्षरो मन्त्रः नारदो मुनिरस्य तु ।३
छन्दन्तु बृहती शेषं देवता बगलामुखी ।
नेत्रा क्षसायकंपञ्च नवकाष्ठाभिररंककम् ।४

बगलामुखी के मन्त्र का स्वरूप–'ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पद स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ओम् स्वाहा' –यह है। आरम्भ में इसी मन्त्र का उद्धार बतलाया जाता हैं। इसके अनन्तर शत्रुओं के स्तम्भन करने वाली बगलामुखी को बतलाऊँगा। शान्ति और बिन्दु से युक्त गगन और पृथ्वी है अर्थात् सबसे प्रथम प्रणव (ओम्) है और इसके पश्चात् ह्लीं होता है। इसके अनन्तर साक्षी नदी बगला है अर्थात् बगलामुखी होता है। इसके आगे 'सर्व दुष्टानां' होता है और फिर हलीन्दुधुक् अर्थात् वाच है। फिर मुखं पदं स्तम्भय होता है। अन्त में जिह्वां कीलय–ये वर्ण होते हैं। फिर बुद्धि विनाशय है। फिर ह्लीं ओम् स्वाहा होता है। तार का अर्थ प्रणव है और अग्नि सुन्दरी का अर्थ स्वाहा होता है। इस तरह से यह मन्त्र छत्तीस वर्णों वाला होता है। इसका ऋषि नारद है। इस मन्त्र का छन्द बृहती है और देवता बगलामुखी है। नेत्र सायक नव और पाँच काष्ठाओं से अङ्ग वाला है।१–४।

अथ ध्यानम्–

सौवर्णासनसंस्थितां त्रिनयनां पीतांशुलोल्लासिनीम् ।।
हेमांभांगरुचिं शशांकमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम् ।

हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनाः सम्बिभ्रती भूषणैः ।
व्याप्ताङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत् ।५
एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षमयुतं चम्पकोद्भवैः ।
कुसुमैर्जुहुयात् पीठे पूर्वोक्ते पूजयेदिमाम् ।६
चन्दनागुरुचन्द्राद्यैः पूजार्थं यन्त्रमालिखेत् ।
त्रिकोणषट्दलाष्टोस्रषोडशारधरापुरे ।७

सुवर्ण निर्मित सिंहासन पर विराजमान–तीन नेत्रों से युक्त पीत वस्त्रों से सुशोभित–सुवर्ण की आभा से युक्त अङ्ग की कान्ति वाली–चन्द्र से चिह्नित मुकुट धारण करी हुई–सुन्दर चम्पा के पुष्पों की माला धारण करने वाली अपने करों में मुद्गर, वज्र, पाश और रसना को ग्रहण करती हुई–सुन्दरभूषणों से व्याप्त अङ्गों वाली तीनों भुवनों को रचना करने वाली बगलामुखी देवी का ध्यान करना चाहिए ।५। इससे ध्यान करके एक लाख उक्त मन्त्र का जप करे । फिर जप के अन्त में चम्पा के पुष्पों से दश सहस्र आहुतियाँ देवे और पूर्व में वर्णित पीठ पर इस देवी की अर्चना करनी चाहिए ।६। चन्दन, अगुरु चन्द्र आदि से पूजा के लिए मन्त्र का लेखन करे । सर्व प्रथम त्रिकोण लिखे । फिर षट्कोण और फिर अष्टदल और इसके बाद सोलह अवतार वाला भूपुर का आलेखन करना चाहिए ।७।

मध्ये सम्पूजवेद् देवीं कोणे सत्वादिकान् गुणान् ।
षट्कोणेषु षडङ्गानि मातृभैरवसंयुताः ।८
सम्पूज्याऽष्टदले पद्मे षोडशारे यजेदिमाः ।
मङ्गला स्तम्भिनी चैव जृम्भिणी मोहनी तथा ।९
वश्या बला बलाका च भूधरा कल्मषाऽभिधा ।
धात्री च कलना कालकर्षिणी भ्रामिकाऽपि च ।१०
मन्दगमना भोगस्था भाविका षोडशी स्मृता ।
भूगृहस्य चतुर्दिक्षु पूर्वाऽऽदिषु यजेत् क्रमात् ।११
गणेशं वटुकं चापि योगिनीं क्षेत्रपालकम् ।

इन्द्रादींश्च ततो ब्राह्म्ये निजाऽऽयुधसन्विताम् ।१२
इत्थं सिद्धमनुर्मंत्रीं स्तम्भयेद् देवताऽऽदिकान् ।
पीतवस्त्रस्तदासीनः पीतामाल्याऽनुलेपनः ।१३
पीतपुष्पैर्यजेद्देवीं हरिद्रोत्थस्त्रजा जपन् ।
पीतां ध्यायन् भगवतीं प्रयोगेष्वयुतं जपेत् ।१४

मध्य में देवी का पूजन करे और कोणों में सत्व आदि तीनों गुणों का अर्चन करे। इसके अनन्तर षट् कोणों में छै अङ्गों का यजन करके मातृगण और भैरव का पूजन करना चाहिए।८। आठ दलों वाले पद्म में और षोडशार में इस मातृगणों का पूजन करे। अब उनके नामों को बतलाया जाता है-मङ्गला, स्तम्भिनी, जृम्भिणी तथा मोहिनी ।९। वश्या, बला, बलाका, भूथरा कस्महा, धात्री अलना, काल-रूपिणी भ्रमिका ।१०। मन्दगमना, भोगस्था, भाविका, ये सोलह मातृकायें कही गई हैं। इसके अनन्तर भूपुर की पूर्व आदि चारों दिशाओं में गणेश, वटुक योगिनी और क्षेत्रपाल की पूजा करनी चाहिए । उसके बाहर फिर अपने-अपने आयुधों से युक्त इन्द्र आदि देवोंका अर्चन करे।११-१२। इसी रीति से मन्त्र की साधना करने वाले को यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है और उसमें ऐसी शक्ति देवी के प्रभाव से आ जाया करती है कि वह देवता सादिका भी स्तम्भन कर दिया करता है मनुष्यों के विषय में तो कहना ही क्या है। इस देवी के साधक को सदा पीत वर्ण के वस्त्रोंको धारण करके समासीन रहना चाहिए और पीत ही अनुलेपन तथा माला धारण करे।१३। पीतवर्ण के ही पुष्पों के द्वारा देवी का यजन करे तथा हरिद्रा की बनाई हुई माला से मन्त्र का जप करना चाहिए। पीतवर्ण वाली देवी का ध्यान करते हुए प्रयोगों में इसके मंत्र का दश हजार जप करे।१४।

त्रिमध्वाऽऽच्यतिलैर्होमो नृणां वश्यकरो मतः ।
मधुरत्रितयाक्तैः स्यादाकर्षो लवणैर्ध्रुवम् ।१५

तैलाभ्यक्तै निम्बपत्रैर्होमो विद्वेषकारकः ।
ताललवणहरिद्राभिर्द्विषां संस्तम्भनं भवेत् ।१६
अङ्गारधूमराजींश्च महिषं गुग्गुलं निशि ।
श्मश्शानपावके हुत्वा नाशयेदचिरादरीन् ॥१७
गरुतोगृद्धकानां कटुतैलविभीतकम् ।
गृहधूमचितावह्नौ हुत्वा प्रोच्चाटयेद् रिपून् ।१८
दूर्वागुडुलीलाजान् यो मधुरत्रितयाऽन्वितान् ।
जुहोति सोऽखिलान् रोगान् शमशेत् दर्शनादपपि ।१९
पर्वताग्रे महारण्ये नदीसंगे शिवालये ।
ब्रह्मचर्यरतो लक्षं जपेदखिल सिद्धये ।२०
एकवर्णगवं दुग्धं शर्करामधुसंयुतम् ।
त्रिशतं मन्त्रितं पीतं हन्याद् विषपराभवम् ।२१

तीनों मधु-घृत और तिलों के द्वारा किया हुआ होम मनुष्यों के वश्य करने वाला बताया गया है। तीनों मधुरों से अक्त लवण से किया हुआ हवन निश्चित रूप से आकर्षण करने वाला होता है।१५। तैल में अक्त अर्थात् भिगोये हुए नीम के पत्तों से किया हुआ होम विद्वेषण करने वाला हुआ करता है। ताल, लवण और हरिद्रा (हल्दी) से किया हुआ होम शत्रुओं के स्तम्भन करने वाला होता है।१६। अङ्गार धूम अर्थात् चिता का अङ्गार और राई तथा माहिष अर्थात् भैसा गूगल से रात्रि में श्मशान की अग्नि में होम करने से शीघ्र ही शत्रुओं का मारण कर दिया करता है।१४। गरुड़, गिद्ध और कछुआ तेल और विभीतक अर्थात् मिलावा से गृह धूम चिता की अग्नि में होम करने से शत्रुओं का उच्चाटन कर दिया करता है ।१८। दूर्व, गिलोय और खीलों को तीनों मधुरों में अक्त करके जो होम करता है वह समस्त रोगों को दर्शन से ही शमन कर दिया करता है।१९। सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त करने के लिए इस बगलामुखी के मंत्र का जप

पर्वत के शिखर पर, महान वन में, नदियों के सङ्गम में, शिवालय में ब्रह्मचर्य से युक्त होकर एक लाख करना चाहिए।२०। एकही वर्णवाली गौ का दूध जो शर्करा और मधु से युक्त होवे उसको तीन सौ बार मंत्र से अभिमन्त्रित करके पीवे, विष के पराभव का हनन हो जाता है।२१।

श्वेतपालाशकाष्ठेन रचिते रम्यपादुके।
अलक्तरंजिते लक्षं मन्त्रयेन्मनुनाऽमुना ॥२२
तदारूढः पुमान् गच्छेत् क्षणेन शतयोजनम्।
पारदं यः शिलातालपिष्टं मधुसमन्वितम् ॥२३
मनुना मन्त्रयेन् लक्षं लिपेत्तेनाऽखिलां तनुम्।
अदृश्यः स्यान्नृणामेष आश्चर्यं दृश्यतामिदम्।२४
षट्कोणे वलिखेद्बीजं साध्यनामान्वितं मनोः।
हरितालनिशाचूर्णैरुन्मत्तरससंयुतैः।२५
शेषाऽक्षरैः समंबीजं धरागेहविराजितम्।
तद्यन्त्रं स्थापितप्राणपीतसूत्रेण वेष्टयेत्।२६
भ्राम्यत्कुलालचक्रस्थां गृहीत्वा मृत्तिकां तथा।
रचयेद् वृषभ रम्यं यन्त्रं तन्मध्यतः क्षिपेत्।२७
हरितालेन संलिप्य वृषभं प्रत्यहमर्चयेत्।
स्तम्भं विद्विषां वाचं गति कार्यपरम्पराम्।२८

सफेद ढाक के काष्ठ से सुन्दर पादुकाओं की रचना करावे और उनको अलक्त से रंजित करावे। फिर इस देवी के मन्त्र से एक लाख बार अभिमंत्रित करे।२२। उन पादुकाओं पर चढ़कर साधक एक ही क्षणमें सौ योजन तक गमन कर लेता है। पारद (पारा) मैनसिल और हरताल—इनको मधु के साथ पीसे और इस बगलामुखी देवी के मन्त्र से एक लाख बार जप करके अभिमंत्रित करे। इससे फिर अपने सम्पूर्ण शरीर का लेपन करना चाहिए। वह मनुष्य सभी मनुष्यों की दृष्टि

में अदृश्य हो जायगा। इस महान आश्चर्य को देखे।२३-२४। षट्कोण में बीज लिखे और साध्य जो भी हो उसके नाम से युक्त मंत्र के बीजका लेखन करना चाहिए हरिताल-हल्दी के चूर्ण जो कि धतूरे के रस से समर्चित हो। उससे मन्त्र के शेष अक्षरों के समान बीज हो जो भूपुरमें विराजित होवे। उस यन्त्र को स्थापित प्राणपीत सूत्र से वेष्टित करे इससे बहुत सुन्दर वृषभ (बैल) की रचना करनी चाहिए और मध्य में उस यन्त्र को डाल देवे।२७। हरिताल से लिप्त करके उस वृषभ की नित्य पूजा करे। इससे जो भी विद्वेषी हों उनकी वाणी का तथा गति का अर्थात् काम परम्परा का स्तम्भन हो जाता है।२८।

आदाय वाम हस्तेन प्रेतभूमिस्थखर्परम्।
अङ्गारेण चितत्स्थेन तत्र यन्त्रं समालिखेत्।२६
मन्त्रितं निहितं भूमौ रिपूणां स्तम्भयेद् मतिम्।
प्रेतवस्त्रे लिखेद् यन्त्रमंगारेण च तत्पुनः।३०
मण्डूकवदने न्यस्येत् पीतसूत्रेण वेष्टयेत्।
पूजितं पीतपुष्पैस्तद् वाचं संस्तम्भयेद् द्विषाम्।००
यद्भूमौ भविता दिव्यं तत्र यन्त्रं समालिखेत्।
मार्जितं तद् वृषापत्रैर्दिव्यस्तम्भनकृद् भवेद्।३२
इन्द्रवारुणिकामूलं सप्तांशो मनुमन्त्रितम्।
क्षिप्तं जले दिव्यकृतं जलस्तम्भनकारकम्।३३
किं भूरिणा साधकेन मन्त्रः सस्यगुपासितः।
शत्रूणां गतिबुद्ध्यादेः स्तम्भनो नात्र संशयः।३४

प्रेतों की भूमि अर्थात् श्मशान के खप्पर अर्थात् खोपरा को लाकर उस पर चिता में स्थित अङ्गार से यंत्र का लेखन करे।२६। अभिमन्त्रित करके भूमि में निहित कर देवे तो रिपुओं की गति का

स्तम्भन हो जाया करता है। प्रेत के अर्थात् शव के वस्त्र (कफन) पर अङ्गार से यन्त्र को लिखे। उसे मेंढक के मुख में रख देवे और उसको पीत रूप से वेष्टित कर देने तथा फिर पीले पुष्पों के द्वारा उसकी पूजा करे तो ऐसा करने से शत्रुओं की वाणी का स्तम्भन कर देता है।३०-३१। जिस भूमि में दिव्य हो वहाँ पर यन्त्र को लिखे। फिर वृषा के पत्रों से उसका मार्जन करे तो दिव्य का स्तम्भन करने वाला होता है इन्द्र वारुणी का मूल सप्तांश इस मन्त्र से मन्त्रित करे। फिर उसको कल में क्षिप्त कर देवे यह दिव्याकृत उस जल के स्तम्भन करने वाला है।३२-३३। बहुत अधिक कथन से क्या लाभ है! साधना करने वालेके द्वारा भली-भाँति उपासित यह मन्त्र शत्रुओं की गति और बुद्धि आदि तम्भन करने वाला होता है–इसमें कुछ भी संशय नहीं है।३४।

॥ इति श्री मन्त्र-यन्त्र विधानम् ॥

मेरुतन्त्रोक्त-विधानम्

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि स्तम्भिनीं बगलामुखीम् ।
तारमायां समुच्चार्य वदेच्च बगलामुखींम् ।१
तदग्रे सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुख पद्म् ।
स्तम्भयेति पदं जिह्वां कीलयेति ततः परम् ।२
बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा वेदाग्निवर्णकः ।
नारायणो मुनिस्त्रिष्टुप् छन्दश्च बगलामुखी ।३
देवींबीजं तु हृल्लेखा स्वाहा शक्तिः समीरिता ।
विनियोगश्च विख्यातः पुरुषार्थचतुष्टये ।४
हृल्लेखा हृदयं प्रोक्तं शिरश्च बगलामुखी ।
शिखा तु सर्वदुष्टानां ततो वाचं मुखं पदम् ।५

स्तम्भयेति च वर्मोक्तं जिह्वां कीलय नेत्रकम् ।
बुद्धि द्विनाशयास्त्रं स्यात् षडङ्गन्यास ईरित ।६
मूर्ध्नि भाले भ्रुवोर्मध्ये नेत्रयोः श्रोत्रयोर्नसोः ।
गण्डद्वये तथा चौष्ठेऽधराऽऽस्यचिबुकेषु च ।७
गले च दक्षदोर्मूले तन्मध्ये मणिबन्धके ।
अङ्गुलीनां तथामूले हस्ताग्रे चैवमेव हि ।८

इससे अनन्तर स्तम्भन करने वाली बगलामुखी को बतलाऊँगा। बगलामुखी के मन्त्र में सर्वप्रथम तार (ओम्) है फिर माया बीज (ह्लीं) होता है इसके उपरांत 'बगलामुखी'–इसका उच्चारण करे। इसके आगे 'सर्ष दुष्टानां, इस पद को कहना चाहिए। फिर 'वाचंमुखं-पदं स्तम्भय' यह कहे फिर 'जिह्वाँ कीलय' यह बोले और फिर बुद्धि विनाशय ह्लीं ओं स्वाहा'–यह कहना चाहिए यह वेदाग्नि वर्णन अर्थात् छत्तीस वर्णों वाला यन्त्र होता है इसका नारायण मुनि है त्रिष्टुप् छन्द है-बगलामुखी देवी है-बीजहृल्लेलखा है और स्वाहा शक्ति कही गयी। पुरुषार्थ चतुष्टयमें इसका विनियोग विख्यात है ।१-४। इसका हृदय हृल्लेखा कहा गया है और बगलामुखी शिर बताया गया है 'सर्व दुष्टानां' यह इसकी शिखा है 'वाचं-मुखं-पदं स्तम्भय'–वर्ण कहा गया। 'जिह्वाँ कीलय' यह इसका नेत्र है। 'बुद्धि' विनाशय' यह अस्त्र है–इस प्रकार से इसका षडङ्गन्यास कहा गया है ।५-६। मूर्धा में–भौंहों के मध्य में–दोनों कालों में-दोनों नासिकाओं में–दोंनों गण्डस्थलों में ओष्ठ में–अधर आस्य और चिबुक में––दक्षिण भू के मूल में–उसके मध्य में मणिबन्ध में अँगुलियों के मूल में और इसी प्रकार से हस्त के अग्रभाग में न्यास करे ।७-८।

न्यसेद् वामभुजादौ च दक्षोरुमूलके ततः ।
दक्षजानुनि गुल्फे चाङ्गुलिमूले पदाग्रतः ।६
गम्भीरां च मदोन्मत्तां तप्तकाञ्चनसन्निभाम् ।

चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम् ।१०
मुद्गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकम् ।
पीताम्बधरां सान्द्रदृढपीनपयोधराम् ।११
हेमकुण्डलसंभूषां पीतचन्द्रार्धशेखराम् ।
पीतभूषणभूषां च स्वर्णसिंहासनस्थिताम् ।१२
एवं ध्यात्वा च देवेशीं शत्रुस्तम्भनकारिणीम् ।
भूप्रदेशे मनोरम्ये पुष्पामोदसुवासित ।१३
गोमयेनाऽथ संलिप्य मण्डले त्वासनं चरेत् ।
सौवर्णे वाऽथ रौप्ये वा पैत्तले भूर्जपत्रके ।१४
कर्पूराऽगुरुकस्तूरीश्रीखण्डकुङ्कुमैरपि ।
लिखेद् यन्त्रं प्रयत्नेन लेखिन्या हेमतारयोः ।१५

वाम भुज आदि में न्यास करना चाहिए। उसी भाँति फिर दक्ष अरु मूल में-दक्षिणजानु में-गुल्फ में-अंगुलियों के मूल में पद के अग्र में न्यास करना चाहिए ।९। अब देवी का ध्यान बताया जाता है-गम्भीरता युक्त-मद से उन्मत्त तपे हुए सुवर्ण के सदृश चार भुजाओं से समन्वित-तीन नेत्रों वाली-कमल के आसन पर विराजमान दाहिने करोंमें मुद्गर और पाश तथा धाम करोंमें वज्र, शत्रु की जिह्वा को धारण करती हुई--पीत के धारण करने वाली एवं दृढ़ तथा तीन पयोधरों वाली--सुवर्ण के कुण्डल से भूशित-पीतचन्द्रार्ध के शेखर से समन्वित-पीत आभरणों की भूषा वाली-सुवर्ण के सिंहासन पर संस्थित तथा शत्रुओं के स्तम्भन करने वाली देवेशी का इस प्रकार से ध्यान करना चाहिए ।१०-१२। परम् सुरम्य भूमि के भाग में जहाँ पर पुष्पों की गन्ध हो और जो भली भाँति सुवासित हो उसको गोमयसे लीपकर मण्डल की रचना कर आसन का समाचरण करे। अब यन्त्र बनाये। सुवर्ण-चाँदी-पीतल अथवा भोजपत्र पर यंत्र बनावे। कपूर-अगर

कस्तूरी श्रीखण्ड कुंकुम से यन्त्र लिखे । लेखनी सुवर्ण अथवा चाँदी की हो उसी से प्रयत्नपूर्वक लिखे ।१३-१५।

मध्ये योनि समालिख्य तद्बाह्ये तु षडस्रकम् ।
तद्बाह्येऽष्टदलं पद्मं तद्बाह्ये षोडशच्छदम् ॥१६
चतुरस्रत्रयं बाह्ये चतुर्द्वारोपशोभितम् ।
यत्र नोक्तं देवतायाः पीठं वा पीठदेवताः (शक्तयः) ॥१७
यत्र मायोदितं पीठं ज्ञेयास्ता एव शक्तयः ।
तद्बीजेन यजेत् पीठं यद्वा मायाऽणुनाऽथवा ॥१८
तत्राऽऽवाह्य यजेद्देवीं सुपीतैरुपचारकैः ।
यजेदंगानि षट्कोणे पर्वद्वारादिषु क्रमात् ॥१९
गणेश वटुकं चापि योगिनीं क्षेत्रपालकम् ।
ईशानादिनोंऋर्त्यन्तं गुरुपङ्क्ति समर्चयेत् ॥२०
वगलां पूर्वपत्रे तु स्तम्भिनीं च ततः परम् ।
जम्भिनीं मोहिनीं चैव प्रगल्भामचलां जयाम् ॥२१
दुर्धर्षा कल्मषां धीरा कल्याणी कालकर्षिणी ।
भ्रामिका मन्दगमना भोग्याख्या चैव योगिकाः ॥२२

मध्य भाग में योनि लिखे अर्थात् योनि का आकार बनावे । उसके बाहर षट्कोण लिखे । इसके बाहर आठदलों वाला पद्म बनावे । उसके बाहर सोलह दलों का पद्म बनावे । इसके बाहर तीन चौकोर रेखायें बनानी चाहिए जिनमें चार द्वार चारों तरफ होवें । जहाँ पर पीठ और पीठ देवता अर्थात् शक्तियाँ नहीं कही गयी होवें ।१६-१७। वहाँ पर मायोदित पीठ और वे ही शक्तियाँ जाननी चाहिए । उसी के बीज के द्वारा पीठ का यजन करें । अथवा माया मन्त्र से अर्चन करे ।१८। वहाँ पर आह्वान करके देवी का यजन करना चाहिए सुपीत पूजनोपचारोंके द्वारा अर्चन करे । षट्कोण में अङ्गों का अर्चन करे और क्रमसे पूर्वादि दिशाओं के द्वारोंमें गणेश-वटुक-योगिनी और क्षेत्रपाल का यजन करना

चाहिए ।१६। ईशान से आदि लेकर नैऋर्त्यक गुरु पंक्ति का समर्चन करे ।२०। षोडशपत्रों में गन्ध पुष्प और अक्षतों से योगिनियों का अर्चन करना चाहिए । पूर्व पत्र में बगला का यजन करे और इसके पश्चात् स्तम्भिनी का अर्चन करना चाहिए। शेषों के नाम क्रम से बताये जाते हैं-जम्भिनी-मोहिनी-प्रगल्भा-अचला-जया-दुर्धर्षा-कल्मषा धीरा-कल्याणी-कालकर्षिणी-भ्रामिका मन्द-गमना और भोग्या ये योगिनियाँ हैं ।२१-२२।

एताः षोडशपत्रेषु गन्धपुष्पाक्षतैर्यजेत् ।
षोडशस्वरसंयुक्ताः सम्प्रदायात् कुलागमे ॥२३
यजेत्तु पत्रमध्येषु कल्पिते चाऽष्टपत्रके ।
पूर्वाद् ब्राह्मयादिका अष्टौ वाहनायुधसंयुताः ॥२४
लोकेशांश्च तदस्त्राणि पूजयेद् बाह्यतस्तथा ।
योनिमध्ये मूलदेवीं त्रिरञ्जलिभिरर्चयेत् ॥२५
धूपदीपसनैवेद्यैर्गन्धताम्बूलदीपकैः ।
नीराज्यं विधिवत् पश्चाद् यथासंख्यं निवेदयेद् ॥२६
पवित्राऽऽरोपणं कार्यं दमनेन तु पूजयेत् ।
देयं चापि सितान्नेन् प्रत्यहं बलिपञ्चकम् ॥२७
हरिद्राग्रन्थिजामाला पीताम्बरधरः स्वयम् ।
पीतासनः स्मरेत् पीतां चाऽयुतं जपमाचरेत् ॥२८
दशांशेन कृते होमे पीतद्रव्यैः प्रतर्पयेत् ।
सर्वपीतोपचारेण मन्त्रः सिद्ध्यति मन्त्रिणः ॥२९

ये ही षोडश योगिनियाँ हैं जिनका गन्धाक्षत पुष्पों से यजन करे। कुलागम में सम्प्रदाय से षोडश स्वरों से सयुक्तों का पूजन करे। कल्पित अष्टदल में यन्त्रों के मध्य में यजन करना चाहिए। पूर्व से ब्रह्मादिक आठ बाहनों और आयुधों से संव्रतों का यजन करे ।२३-२४। उसी भाँति बाहर में लोकेशों का और उनके आयुधों (अस्त्रों) का पूजनकरे।

योनि के मध्य में मूलदेवी का तीन अञ्जलियों से अर्चन करना चाहिए। अर्चन धूप दीप, नैवेद्य, गन्ध, ताम्बूल, पुष्प आदि से रचना करना चाहिए। विधिके साथ नीराजन(आरती) करके पीछे यथा संख्य निवेदन करे।२५-२६। पवित्रारोपण करे और दमन द्वारा पूजन करे। प्रतिदिन सित अन्न के द्वारा पाँच बलि देवे।२७। हल्दीकी गाँठों की माला बनावे और स्वयं पीतवर्णके वस्त्रों को धारण करे। आसन भी पीतवर्ण का ही होना चाहिए जिस पर बैठकर पीतवर्ण वाली देवी का स्मरण करना चाहिए। दश सहस्र मन्त्र का जप करे। जप का दशांश होम करे और यह भी पीत द्रव्यों से करना चाहिए। होम का नशांश तर्पण करे तथा इसका दशांश मार्जन करना चाहिए। सभी क्रमोपचार जब पीत हों तो मन्त्रधारी मन्त्र सिद्ध हो जाता है।२८-२९।

साध्यसंज्ञां समुच्चार्य स्तम्भयेति ततः परम्।
गतिस्तम्भनकरी विद्या अरिस्तम्भनकारिणी ।।३०
मेधां प्रज्ञां च शस्त्रादीन् देवदानवपन्नगान्।
स्तम्भयेच्च महाविद्या सत्यं सत्यं न संशयः ।।३१
एकान्ते परमे रम्ये शुचौ देशेऽथवा गृहे।
कुण्डं सुलक्षणं कृत्वा मेखलात्रयशोभितम् ।।३२
योनिर्वितस्तिमात्रा तु पट्कर्माण्यत्र साधयेत्।
तथा कर्षणकामस्तु लवणे त्रिमधुरान्वितम् ।।३३
निम्बपत्रं तैलयुक्तं विद्वेषकरणं परम्।
हरिद्रां हरितालं च लवणेन च संयुतम् ।।३४
स्तम्भने होमयेद्देवीं प्रजायाश्च गतेर्मतेः।
आसुर्याश्चापि तैलेन महिषीरुधिरेण च ।।३५

जो भी साध्य हो अर्थात् जिस पर प्रयोग किया जावे उसके नाम का उच्चारण करके फिर मन्त्र में 'स्तम्भय' इसका उच्चारण करना चाहिए यह विद्या गतिका स्तम्भन करने वालीहै और अरियोंके स्तम्भन

करने वाली है। यह मेधा, प्रज्ञा, शस्त्र आदि के तथा देवों, दानवों पन्नगोंका स्तम्भन किया करतीहै। यह महाविद्याहै और सबका स्तम्भन करने वाली है–यह सर्वथा सत्य है–सत्य है–इसमें कुछ भी संशय नहीं है।३०-३१। परम सुन्दर एकान्त अतीव शुद्ध देश में अथवा घरमें सुन्दर लक्षणोंसे युक्त कुण्ड बनाकर जिसमें तीन मेखलाएँ बनाईगयी होवें और एक बिलस्त योनि बनाई गई होवे। उसमें षट्कर्मों का साधन करना चाहिए। उसी प्रकारसे जो कर्षण करने की कामना वाला हो उसे तीन मधुरों (घृत-मधु-दुग्ध) से युक्त लवण का होम करे।३२-३३। विद्वेषण कर्म के लिए तैल से युक्त निम्ब के पत्रों का होम करना उत्तम होता है। लवण से युक्त हल्दी और हरिताल का स्तम्भन करने में देवी का हवन करना चाहिए। प्रज्ञा, गति की मति के स्तम्भन में भी इसी का होम करे। आसुरी के तैल से और महिषी के रुधिर से श्मशान की अग्नि में रात्रि के समय में शत्रुओं के मारण के लिए हवन करना चाहिए।३४-३५।

रिपुणा मरणार्थं श्मशानाग्नौ हुनेन्निशि।
गृध्राणामपि काकानां गृहधूमयुतेन च ॥३६
पक्षेण जुहुयाद् देवीं शत्रोरुच्चाटनाय तु।
दूर्वाकिलालमृत्तवत्यरण्डश्चतुरङ्गुलः ॥३७
लाजास्त्रिमधुयुक्ताश्च सर्वरोगोपशान्तये।
लक्षमेकं यजेद्देवीं ब्रह्मचारी दृढव्रतः ॥३८
पर्वताग्रे महारण्ये सिद्धे शिवालये गृहे
संगमे च महानद्योः निशायामपि साधयेत् ॥३९
श्वेतब्रह्मतरोमूले पादुकां चैव कारयेत्।
अलक्तस्य च रागेण रञ्जितां च हरिद्रया ॥४०
अनया विद्यया चापि लक्षैकेन च मन्त्रिता।
शतयोजनमात्रं तु स गच्छेच्चिन्तिते पथि ॥४१

रसे मनःशिलाऽतालमाक्षिकेण समन्वितम् ।
पिष्ट्वाऽभिमन्त्र्य लक्षैकं सर्वांगे लेपने कृते ॥४२

अपने शत्रु के उच्चाटन के लिए गृहधूम से युक्त गिद्धों और कौवों के पंख से देवी का होम करे। दूव, कुम्हार की मृत्तिका और चार अंगुल एरण्ड तीन मधुरों से समन्वित खीलों का समस्त रोगों की उपशांति के लिये होम करना चाहिए। सुदृढ़ व्रतवाला ब्रह्मचारी रहकर बगलामुखी देवी का एक लाख यजन करे। पर्वत की चोटी पर-महान् अरण्य में सिद्ध शिवालय में--गृह में--महानदियों के सगम स्थलमें रात्रि के समय में साधन करना चाहिए।३६-३६। श्वेत फलाश के वृक्ष के मूल से पादुकाओं की रचना करावे और अलक्त के तथा हल्दी के रङ्ग से उनको रञ्जित करावे।४०। फिर इसी बगलामुखी की विद्या से एक लाख बार उनको अभिमन्त्रित करे। उसके प्रभाव से वह अपने चिन्तित मार्ग में एक सौ योजन तक उनको पहन कर गमन कर जाया करता है।४१। पारा-मैनसिन और हरिताल को मधुरों के साथ पीसकर उसकी एक लाख देवी के मन्त्रसे अभिमन्त्रित करे फिर उससे अपने सर्वाङ्ग में लेपन करे इससे वह अदृश्य हो जाता है और लोक में यह महान् अद्भुत है।४२।

अदृश्यकारकं तत् स्वल्लोके च महदद्भुतम् ।
सुरभेरेकवर्णाया धारोष्णं क्षीरमाहरेत् ॥४३
शर्करामधुसंयुक्तं त्रिशतं मन्त्रितं प्रिये ।
पाययित्वा हि हरते विषं स्थावरजंगमम् ॥४४
दारिद्र्यमोचनं चैव लक्षमेकं जपेत्ततः ।
दशांशेन कृते होमे एभिर्द्रव्यैः पृथक् पृथक् ॥४५
अथातः सम्प्रवक्ष्यामि बगलायन्त्रमुत्तमम् ।
षट्कोणं तस्य मध्ये तु वलयाऽऽकारता लिखेत् ।४७
षट्त्रिंशदक्षरं मन्त्रं बगलायाः स उच्यते ॥४६
तारं कज्जां ततो बगलामुखीं सर्वपदं वदेत् ।

दुष्टानामिति चीच्चार्य वाचं मुखमतः परम् ॥४८
स्तम्भयेति समुच्चार्य जिह्वां कीलय चेत्यपि ।
बुद्धि विनाशयान्ते तु तारबीजाग्निसुन्दरी ॥४९

एकही वर्ण वाली गौ चाहे वह किसीभी एक वर्ण की होवे उसका धारोष्ण दूध लाकर उसको हे प्रिये ! शर्करा और मधु से समन्वित करे और मन्त्र से तीन सौ बार अभिमन्त्रित करे । उस दुग्ध को पिला देनेसे विष का हरण होता है, वह चाहे स्थावर होवे या जङ्गम होवे कैसा भी क्यों न होवे ।४३-४४। फिर एक लाख मन्त्र का जप करे तो दरिद्रता का मोचन होता है । जप का दशांश इन उक्त द्रव्योंसे पृथक्-पृथक् होम करना चाहिए ।४५। इसके अनन्तर वगला देवी के उत्तम यन्त्र के विषय में बतलाता हूँ । इसके यन्त्र को भोज पत्र पर हरिताल हरिद्रा के रससे लिखना चाहिए । मध्य में षट्कोण लिखे जो कि वलय के आकार से युक्त होवे । छत्तीस अक्षरों का वगलामुखी देवी का मन्त्र है वही अब कहा जाता है । सर्व प्रथम इस मन्त्र में तार अर्थात् 'ओं' आता है । फिर लज्जा अर्थात् 'ह्रीं' होता है । इससे 'बगलामुखि' यह पद होता है । फिर 'सर्व दुष्टानां' पद आता है । इसके 'वाचं-मुखं-पदं स्तम्भय' ये पद आते हैं । फिर 'जिह्वां कीलय' ये पद होते हैं इसके उपरान्त बुद्धि विनाशय' और अन्त में 'ओं ह्लीं स्वाहा' ये पद कहे । अग्निसुन्दरी का अर्थ 'स्वाहा' होता है ।४६-४९।

आर्यमन्त्रः समुद्दिष्टः साध्यनाम्नस्तु वेष्टितः ।
वेष्टयेत् पीतसूत्रेण कुलालस्य मृदं व्रजेत् ॥५०
चक्रे मृदं समारोप्य भ्रामयेद् वृषभ तथा ।
कारयेच्च भृदा यत्र हरितालेन लेपयेत् ॥५१
तन्मध्ये निक्षिपेद् मन्त्रं नासायामथवा ततः ।
अर्चयेच्च चतुष्कालं साध्यनाम्नात्र साधकः ॥५२

दुष्टनां स्तम्भयेत् वाचं साक्षाद् वाचस्पतेरपि ।
अथान्यद् बगलायाश्च वक्ष्यते यन्त्रमुत्तमम् ।५३
पट्टेवाऽप्यथ पाषणे ह्लींकारपुटितेन वै ।
साध्यनामान्मत्तरसहरिद्राताजकैस्ततः ।।५४
पूर्वमन्त्रेण संवेष्ट्य चोर्ध्वं त्रिबलयं लिखेत् ।
गर्भस्तम्भं गतिस्तम्भं कुर्यादेतन्न संशयः ।।५५
अथान्यद् वक्ष्यते यन्त्रं श्मशानस्थमधोमुखम् ।
घटखर्पं रमानीय गृहीत्वा वामहस्तके ।।५६
लिखेद् दक्षिणहस्तेन श्मशानांगारकेण च ।
मन्त्रितं निहितं भूमौ रिपूणां स्तम्भयेद् गतिम् ।।५७
प्रेतवस्त्रे लिखेत् यन्त्रमङ्गारेण च तत्पुनः ।
मण्डूकवदने न्यस्येत्पीतवस्त्रेण वेष्टितम् ।
पूजितं पीतपैष्स्तद् वाचं संस्तम्भयेद् द्विषाम् ।।५८

यह मन्त्र समुद्दिष्ट किया गया है। इसमें जो भी अपना साध्य हो उसका नाम वेष्टित करना चाहिए। फिर उसका पीले वर्ण के सूत से वेष्टन करे कुम्हार की मिट्टी के समीप में गमन करना चाहिए उसके चाक में मृतिका का समारोपण करके भ्रमित करे और फिर उसका एक वृषभ बनवाले। उसका हरिताल से लेपन करे उसके मध्य में उस यन्त्र का विक्षेपण करे अथवा नासिकामें रक्खे। यहाँ पर साधक को साध्य के नाम के चार कालोंमें अर्चन करना चाहिए।५०-५२। यह दुष्टों की वाणीका स्तम्भन करता है,चाहे वह साक्षात् बृहस्पति ही क्यों न होवे, उसकी वाणी का तुरन्त स्तम्भन कर दिया करता है। इसके उपरान्त एक अन्य उत्तम बगला का यन्त्र बतलाया जाता है।५३। किसी पट्टे पर अथवा पाषाण पर ह्लींकार से सम्पुटित साध्य का नाम धतूरे के रस-हल्दी और हरिताल से लिखे और पूर्व की ही भाँति करके ऊपर तीन वलय लिखे। यह मन्त्र गर्भ का स्तम्भन-गति का स्तम्भन किया करता है-इसमें लेश मात्र भी संशय नहीं है।५४-५५।

इसके अनन्तर एक अन्य तन्त्र भी उतलाय. जायगा। उसका विधान यह है कि श्मशान में स्थित घट का खीपरा नीचे की ओर मुख वाला होवे। उसको बाँये हाथ से ग्रहण करे और दाहिने हाथ से श्मशान के अङ्गार से इसको उस पर लिखना चाहिए। फिर उनको अभिमन्त्रित देवी के मन्त्र के द्वारा करे और भूमि में निहित कर देवे तो रिपूओं की गति का स्तम्भन कर दिया करता है। फिर प्रेत के उढ़ाये हुए वस्त्र पर इस मन्त्र को लिखे और श्मशान के ही अङ्गार से लिखना च.हिए। इसको किसी मेंढ़क के मुख में रखकर उसको पीले वर्ण के वस्त्र से वेष्टित कर देवे। फिर इसकी पीले पुष्पों से पूजा करे तो शत्रुओं की वाणी का स्तम्भन किया करता है।५६-५८।

॥ इति मेरुतन्त्रोक्तं विधानं समाप्तम् ॥

ब्रह्मास्त्र-कल्प-विधानम्

श्रीमान् साधको ब्राह्ये मुहूर्त्ते चोत्थाय स्वशिरसि सहस्र-दल कमलकर्णिकायां सशक्तिकं गुरुं संचिन्त्य मानसोपचारैः सम्पूज्यजपं समर्प्य गुरुपादुकां जप्त्वा निवेद्य स्वेष्टदेवतां पीताम्बरां ध्यात्वा मानसैरुपचारैः सम्पूज्य ऋष्यादिषडगन्यासध्यान-पूर्वक मूलं जप्त्या निवेद्य जलाशयं गत्वा वैदिकविधिना षडग-न्यासां विधाय जले त्रिकोणं विभाव्य तस्मिन्नङ्कुशमुद्रया स्नात्वाऽऽचम्य प्राणानायम्य वालत्रिबीजैः (ऐं क्लीं सौः) करसूर्य-मंडलात्तीर्थमावाह्य देवीं ध्यायेद्। यथा-

साधना करने वालों को चाहिए कि वह प्रातःकाल में ब्राह्ममुहूर्त में शय्या से उठे और अपने मस्तक में ऐसा ध्यान करे कि एक सहस्र दलों वाला कमल है और उस पद्म की कर्णिका में शक्तिशाली श्री गुरु-देव विराजमान हैं। अपने ध्यान में ही मानसिक अर्चन के उपचारों की

कल्पना करके उनके द्वारा गुरुदेव का यजन करे। फिर जप को समर्पित कर श्री गुरुदेव की पादुकाओं का चिन्तन करना चाहिए। जप को निवेदत करके फिर अपनी इष्ट्र देवी पीताम्बराका चिन्तन करना चाहिए। देवी का भी यजन मनसे कल्पित उपचारों द्वारा करे। फिर ऋषि आदि के षडंगन्यास के तथा ध्यान के साथ मूल मन्त्र का जाप करके उसे भी निवेदित कर देवे। इसके उपरान्त किसीभी जलाशय पर जाकर वेदोक्त विधानसे स्नान करे। ऐंक्लीसौः, इन तीन बीजों से आचमन और प्राणायाम करके और अङ्ग के षडन्यास करे और जल में त्रिकोण बनाकर फिर अंकुश की मुद्रा से उसमें सूर्य मण्डल से तीर्थ का अ.वाहन कर और फिर देवी का ध्यान निम्न प्रकार से करना चाहिए-

नवयौवनसम्पन्नां स्मरेत्तां बगलामुखीम् ॥
पीतमाल्यानुवसनां स्मरेत्तां बगलामुखीम् ॥

इति ध्यात्वा 'गंगे च यमुने चेति' धेनुमुद्रया तीर्थानि प्रार्थ्य मूलेन स्त्रिर्निर्मज्य त्रिःसन्तर्प्य मूलेन श्रीसूर्याय त्रिरर्घ्यं दत्वा जलान्निष्क्रम्य धौते वाससी परिधाय वैदिकीं संख्यां निर्बर्त्य तान्त्रिकी संध्यां कुर्यात् । यथा--मूलेन बालिया त्रिराचम्य मूलेन त्रिःप्राणानायम्य मूलेन शिरोहृदयादिषु त्रिःसम्मार्जयेत् ।

अभिनव यौवन से समन्वित तथा समस्त आभूषणों से विभूषित एवं पीतवर्ण के वस्त्र और माल्य से शोभित उस देवी बगलामुखी का स्मरण एवं चिन्तन करना चाहिए। इस रीति से देवी का ध्यान करके फिर 'गंगे च यमुना च' इत्यादि मन्त्र के द्वारा धेनुमुद्रा प्रदर्शित करते हुए तीर्थों का आवाहन करना चाहिए तथा प्रार्थना करे फिर मूल मन्त्र से तीन बार आवाहन करें। तथा तीन बार भलीभाँति तर्पण करना चाहिए। श्री सूर्यदेव के लिए मूलमन्त्र से ही तीन बार अर्घ्य देवे। जलाशयसे बाहर आकर पीतवर्णके वस्त्र(संख्यामें दो होने चाहिए)धारण करे और सर्वप्रथम वेदोक्त संध्योपासन करके पीछे तान्त्रिक संध्या वन्दन

करना चाहिए । अब तान्त्रिक संध्या का विधान बतलाया जाता है-- मूलमन्त्र से बाला से तीन बार आचमन करके मूल से ही तीन बार प्राणायाम करे और मूल मन्त्र से ही तीन बार मस्तक और हृदय प्रभृति अपने अङ्गों पर सम्मार्जन करना चाहिए ।

ॐ ह्लीं हुं फट् स्वाहा' इत्यघमर्षणं कृत्वा ततः सूर्य-- मन्त्रेण श्रीसूर्याय अर्घ्यं दत्वा त्रिवारं सूर्यमण्डले ध्यात्वा 'ह्लीं ब्रह्मास्त्र विद्यायै विद्महे पीताम्बरायै धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्' सूर्यमण्डलस्थायै श्री बगलामुख्यै इदमर्घ्यं समर्पयामीति त्रिर्दत्वा गायत्रीं दशधा जप्त्वा 'ॐअस्य श्रींबगलामुखी मन्त्रस्य नारदर्षये नमः शिरसि, अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे, श्रीबगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये, स्वाहा शक्तये नमः पादयोः नमः इति कीलकाय नमः सर्वाङ्गे, न्यासे विनियोगाय नमः करसम्पुटे,हलामित्यादि षड् दीर्घ, करः षडङ्गकम् । 'ॐ ह्लीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः 'सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः 'वाचं' मुखं स्तम्भय अनामिकाभ्याँ नमः, 'जिह्वां कीलय' कनिष्ठिकाभ्यां नमः,बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा' करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

फिर 'ॐ ह्लीं हुं फट् स्वाहा'' इस मन्त्र से अघों का मर्षण करे । इसके उपरान्त सूर्यदेव के लिए सूर्य मन्त्र के द्वारा तीन बार अर्घ्य समर्पित करके सूर्यमण्डल में निम्नलिखित बगला गायत्री से देवी का ध्यान करना चाहिए । बगला गायत्री यह है-'ह्लीं ब्रह्मास्त्र विद्यायै विद्महे, पीताम्बरायै धीमहि, तन्नो बगला प्रचोदयात्'' । फिर सूर्यमण्डलस्थायै श्री बगला मुख्यै इदमर्घ्यं समर्पयामि' इसका उच्चारण करते हुए तीन बार अर्घ्य समर्पित कर दश बार उक्त गायत्री जाप करे। इसके उपरान्त अङ्गों पर न्यास करे--न्यास करने का क्रम यह है-- 'ॐ अस्य श्री बगलामुखी मन्त्रस्य नारदर्षये नमः शिरसि--इसके सिर

पर न्यास करे, इसी प्रकार से अन्य अंगों पर भी नीचे लिखी रीति से न्यास करना चाहिए–'अनुष्टुप् छन्द से नमो मुखे, श्री बगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, ह्लीं बीजाय नमो गुह्ये स्वाहा शक्तये नमः पादयोः नमः इति कीलकाय नमः सर्वांगे, न्यास-विनियोगाय नमः कर सम्पुटे इसके अनन्तर ह्लां इत्यादि छै दीर्घों से षट्कारों का न्यास करे। इसका क्रम यह है-ओम् ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः, जिह्वा कीलय कनिष्ठाभ्यां नमः, बुद्धिं विनाशय ह्लीं ओं स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

एवं हृदयादि। 'ॐ ह्लीं शिरसि, 'बगला' ललाटे, 'मुखि' कर्णयोः सर्वं भ्रुवोः' दुष्टानां' नेत्रयोः' 'वाचं' नासिकयोः, मुखं मुखे, 'पदं कण्ठे, 'स्तम्भय' हृदि जिह्वां'जठरे'कीलय नाभौ, 'बुद्धिं' गुह्ये, 'विनाशय' ऊर्वोः 'ह्ली' पादयोः 'बगला' गुल्फयोः 'ऊर्वोः, 'सर्व' लिंगे, 'दुष्टानां' नाभौ, 'वाचम्' उदरे, 'मुखं' हृदि, 'पदं' कण्ठे, 'स्तम्भय' मुखे 'जिह्वां' नासिकयोः, 'कीलय' कर्णयोः 'बुद्धि' नेत्रयोः'विनाशय' भ्रुवोः, 'ह्लीं' ललाटे 'ॐस्वाहा' शिरसि, 'ॐ ह्लीं' बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय ऐं' मूलधारे जिह्वां कीलय' हृदि, बुद्धि विनाशाय ह्लीं ॐ स्वाहा' ब्रह्मरन्ध्रे, 'ह्लीं बगलायै नमः--पूर्वे न्यसामि ॐ ह्लीं गदाधारारिण्यै नमः आग्नेये, ॐपीताम्बरायै दक्षिणे,ॐ स्तम्भिन्यै नैऋत्ये, ॐ जिह्वाकीलिन्यै-पश्चिमे, ॐमदोन्मत्तायै वायव्ये, ॐ त्रिशूलधारिण्यै-कौबेर्याम्, ॐ ब्रह्मास्त्रदेवतायै--ईशान्ये, ॐ स्तब्धातृभ्यः, पाताले ॐमहादेव्यै-ऊर्ध्वम्। एवं दश दिक्षु।

नीचे लिखी हुई रीति से हृदयादि का न्यास करना चाहिए--ओं ह्लीं नमः शिरसि, बगला नमो ललाटे,मुखि नमो कर्णयोः, सर्वनमो

भ्रुवोः, दुष्टानां नमो नेत्रयोः वाच नमो नासिकयोः मुखं नमो मुखे, पदं नमः कण्ठे,स्तम्भय नमो हृदि जिह्वां नमो जठरे,कीलय नमो नाभौबुद्धि नमो गृह्यं, विनाशय नमः ऊर्वोः ह्लीं नमः पादयोः, बगला नमो गुल्फयोः मुखि नम ऊर्वोः, सर्वनमो लिंगे, दुष्टानां नमो नाभौ, वाचं नम उदरे, मुखं नमो हृदि, पदं नमः कण्ठे, स्तम्भय नमो मुखे, जिह्वां नमो नासिकयोः, कीलय नम. कर्णयोः बुद्धि नमो नेत्रयोः विनाशय नमो भ्रुवोः, ह्लीं नमो ललाटे, ओं स्वाहा नमः शिरसि, ओं ह्लीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय ऐं नमो मूलाधारे, जिह्वां कीलय नमो हृदि, बुद्धि विनाशय ह्लीं ओं स्वाहा नमो ब्रह्मरन्ध्रे,इसके अनन्तर दिशाओं में न्यास करना चाहिए–ओ ह्लीं बगलायै नमः पूर्वे न्यसामि, ओं ह्लीं गदा धारिण्य नमः आग्नेये, ओं पीताम्बरायै नमो दक्षिणे, ओं स्तम्भिन्यै नमो नैर्ऋत्ये, ओं जिह्वां कीलिन्यै नमः पश्चिमे, ओं महोन्मत्ताय नमो वायव्ये, ओं त्रिशूल धारिण्यै नमः कौवेर्यान् ओम् ब्रह्मास्त्रदेवतायै नमः ईशान्ये ओं स्तब्धातृभ्यो नमः पाताले, ओं महादेव्यै नम ऊर्ध्वम्, इसी रीति से दशों दिशा, उपदिशाओं का न्यास करना चाहिए ।

एवं न्यासविधिं कृत्वा बगलामातृकां न्यसेत् ।
तारं च मातृकावर्णान् बगलाबीजमेव च ।।
नमोऽन्तेन च विन्यस्य मातृकास्थानतो न्यसेत् ।।

अथ ध्यानम्–

चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम् ।
त्रिशूलं मानपात्रं च गदां जिह्वां च विभ्रतीम् ।।
विम्बोष्ठीं कम्बुकण्ठीं च समपीनपयोधराम् ।
पीताम्बरां मदाघूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम् ।।

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भयं ऐं आत्मतत्वव्यापिनीबगला-

मुख्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि। जिह्वां कीलय क्लीं विद्यातत्व-व्यापिनीबगलाम्बायै नमः बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा सौः शिवतत्वव्यापिनीश्रीबगलाम्बायै नमः। ततो मूले जपित्वा अन्ते 'गुह्यातिगुह्येति' जपं निवेदयेत्।

इस विधि के न्यास करके फिर बगलामातृका न्यास करना चाहिए। तार अर्थात् प्रणव तथा मातृका के वर्णों का और बगला के बीज का जिनके अन्त में 'नमः यह पद का न्यास करे और मातृका स्थान से न्यास करना चाहिए। इसके उपरांत ध्यान बताया जाता है चार भुजाओं से समन्वित, तीन नेत्रों वाली कमल के आसन पर विराजमान, करों में त्रिशूल, पानपात्र अर्थात् मदिना पान करने का पात्र गदा और शत्रु की जिह्वा को धारण करती हुई, बिम्बके फलके समान रक्तवर्ण के ओष्ठों वाली, कम्बु के सदृश कण्ठ संयुक्त, समान एवं पीन (पुष्ट) पयोधरों वाली, पीतवर्ण के वस्त्रों को धारण किए हुए, मद से घूर्णित ब्रह्मास्त्र की देवता अर्थात् देवी का चिन्तन करना चाहिए। इस उक्त रीति से देवी का ध्यान करके फिर मन से कल्पित अर्चन के उपचारों के द्वारा निम्न रीति से यजन करना चाहिए–ओं ह्लीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखां पद स्तम्भय ए आत्मतत्वव्यापिनी बगलामुखी अम्बा के श्री पादुका का पूजन करता हूँ–जिह्वां कीलक क्लीं बिद्या तत्व व्यापिनी वगला लम्बा के लिए नमस्कार है–बुद्धि विनाशय ह्लीं ओं स्वाहा शिव तत्व व्यापिनी श्री बगला अम्बा के लिए नमस्कार है। इसके पश्चात् मूल का जप करके अन्त में गुह्याति-गुह्य, इस मन्त्र से देवी के लिए जप को निवेदित करे।

॥ इति जप विधानम् ॥

सांख्यायन तन्त्रोक्त विधानम्

क्रौञ्चभेदन उवाच--

महापाशुपतऽऽक्रान्त नमः पन्नगभूषण ।
षट्त्रिंशदक्षरीं विद्यां बगलायाश्च मे वद ॥१

ईश्वर उवाच--

मन्त्रोद्धारं प्रवक्ष्यामि पुरश्चरणलक्षणम् ।
प्रयोगञ्चोपसंहारं सांख्यञ्च शृणु पुत्रक ॥२
तारं च बगलाबीजं बगलापदममुद्धरेत् ।
मुखीति पदमुच्चार्य वाचं मुख पदं वदेत् ॥३
स्तम्भयति पदं चोक्त्वा जिह्वां कीलय उच्चरेत् ।
बुद्धिशब्दं तथोच्चार्य विनाशय पदं वदेत् ॥४
स्तब्धमायां समुच्चार्य प्रणवं च ततो वदेत् ।
वह्निजायां समुच्चार्य यन्त्रोद्धारं विभावत् ॥५
षट्त्रिंशदक्षरं मन्त्रं मन्त्रराजमिमं भुवि ।
न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि सद्यःसिद्धिकरीं पराम् ॥६

क्रौञ्चभेदन ने कहा–पन्नगों (सर्पों) के भूषणों वाले ! हे महा पाशुपात से समाक्रान्त ! आपके लिए नमस्कार है। आप कृपा करके छत्तीस अक्षरों वाली बगला की विद्या को मुझे बतलाइए।१। ईश्वर ने कहा–सर्वप्रथम मैं पुरश्चरण लक्षण वाले मन्त्र का उद्धार बतलाऊँगा और अङ्गों के सहित इसका प्रयोग तथा उपसंहार भी बतलाऊँगा। हे पुत्र उसको तुम अब श्रवण कीजिए।२। तार (प्रणव) और बगला का बीज और बगला पद का उद्धार करे। इसके अनन्तर मुखी–इस पद का उच्चारण करके फिर वाचं मुखं पदं' इसका उच्चारण करना चाहिए। इसके अनन्तर 'स्तम्भय'–इस पद का उच्चारण करे। फिर 'जिह्वां कीलय यह पद कहना चाहिए।३। इसके अनन्तर

'बुद्धि' इसका उच्चारण कर 'विनाशय' पद कहे।४।इसके पश्चात् साध्य अर्थात् 'ह्लीम्' का उच्चारण कर प्रणव 'ओं' का उच्चारण करना चाहिए। फिर 'स्वाहा' शब्द को कहे–यही बगलामुखी देवी के मन्त्र का का उद्धार होता है।५। यह छत्तीस अक्षरों का मन्त्र है जो कि भूमण्डल में मन्त्र राज इसको कहा जाता है। इसके पश्चात् इस मन्त्र की न्यास विद्या को कहूँगा जो कि परा सिद्धि को तुरन्त ही करने वाली है।६।

बगलामातृकां चादौ कामतार्त्तीयवाग्भवम्।
श्रीमायां मातृकां चैव बगलापञ्जरं न्यसेत् ॥७
लघुपीढां च विन्यस्य सर्वतन्त्रेष्वयं क्रमः।
ध्यानं यत्नात् प्रवक्ष्यामि ध्यानं सर्वार्थसिद्धिदम् ॥८
आदौ मध्ये तथा चान्ते ध्यानं कुर्यात्समाहितः।
चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम् ॥९
त्रिशूलं पानपात्रं च गदां जिह्वां च विभ्रतीम्।
विम्बोष्ठीं कम्बुकण्ठीं समपीनपयोधराम् ॥१०
पीताम्बरां सदापूर्णां ध्यायेद् ब्रह्मास्त्रदेवताम्।
नारदो ऋषिरेवाऽत्र बृहती छन्द उदाहृतम् ॥११
देवता बगलानाम्नी स्तम्भनास्त्रं च चिन्मयी।
ल बीजं चैव ह्लीं शक्तिः रं कीलकमुदाहृतम् ॥१२
शत्रूणां स्तम्भनार्थाय जपेऽहं विधिपूर्वकम्।
सङ्कल्पपूर्वकं मन्त्रं कौलाचारक्रमेण च ॥१३
पृथिवीलक्षं जपेन्मन्त्रं न्यासध्यानसमन्वितम्।
तर्पयेत्तद्दशांशेन हेतुसम्मिश्रवारिणा ॥१४

आदि में बगला मातृका का और कामतार्तीय वाग्भव का श्रीमाया मातृका और बगला पञ्जर का न्यास करे।७। इसके अनन्तर लघुपीढ़ा का विन्यास करना चाहिए। सभी तन्त्रों में यही क्रम होता है। इसके

पीछे मैं ध्यान बतलाऊँगा। ध्यान ही सब अर्थों की सिद्धि के प्रदान करने वाला होता है।८। इस ध्यान को आदि में मध्य में, और अन्त में परम समाहित करके करना चाहिए। अब ध्यान बताया जाता है-- बगलामुखी देवी चार भुजाओं को रखने वाली है, तीन नेत्रों से युक्त हैं तथा कमल के आसन पर विराजमान हैं, अपने करों में क्रम से त्रिशूल मदिरापान करने का पात्र, गदा और शत्रु की जिह्वा को धारण की हुई हैं। बिम्ब के परिपक्व फलके समान ओष्ठों वाली, कम्बु (शङ्ख) के सदृश कण्ठ से युक्त हैं तथा सम और पीन पयोधरों से समन्वित हैं। पीतवर्ण के वस्त्रों वाली है और मदिरा के मद से घूर्णित-इस प्रकार से ब्रह्मास्त्र देवता का ध्यान करना चाहिए अर्थात् देवी के स्वरूप का चिन्तन करे। इस मन्त्रका ऋषि नारद हैं और इसका बृहती छन्द कहा गया है। बगला नाम वाली देवी इस मन्त्र की देवता हैं, स्तम्भन अस्त्र है, इसका चिन्मयी बीज है, ह्रीं शक्ति है और रं कीलक कहा गया है।९-१२। शत्रुओं के स्तम्भन करने के लिए मैं इस मन्त्र का विधि के साथ जप करता हूँ। सङ्कल्प के साथ और कौलाचार क्रम से इस मंत्र का साधन करता हूँ। न्यास और ध्यान के सहित एक लक्ष इस मन्त्र का जप करे और हेतु से संमिश्रण जल से जप का दशांश तर्पण करना चाहिए।१३-१४।

जुहुयाद् विल्वपत्रेण (कुसुमैः) तद्शांशेन बुद्धिमान्।
ब्राह्मणान् भोजयेत्पुत्र तद्दशाशं घृतप्लुतम् ॥१५
तर्पणं तर्पयामीति स्वाहान्तं होममाचरेत्।
पूजा त्रैकालिकी नित्यं जनतर्पणमेव च ॥१६
होमो ब्राह्मणभुक्तिश्च पुरश्चरणमुच्यते।
पुरश्चर्या विना मन्त्रो न प्रसिद्ध्यति भूतले ॥१७
एवं साधितमन्त्रेण षट् प्रयोगान् समाचरेत्।
शान्तौ च जुहुयात् शालिसक्तुमाज्यसमन्वितम् ॥१८

गुणायुतं चामलकप्रमाणं क्रौञ्चभेदन ।
वशीकरणकार्येषु विल्वपत्रं घृतप्लुतम् ।१६
गुणायुतं हुनेद्धीमान् कुण्डे पूर्वोक्तमादरात् ।
स्तम्भनेषु हुनेद्धीमान् तालकं घृतसंयुतम् ।२०

इसका दशांश बुद्धिमान विल्वपत्रों (कुसुमों) से हवन करे। हे पुत्र ! इसके दशम भाग की जो संख्या होनी है उनने ही सुयोग ब्राह्मण को घृत से प्लुत भोजन कराना चाहिए ।१५। तर्पण में 'तर्पयामि'–यह कहकर देवी के नाम से तर्पण करे और स्वाहा' अन्त में लगाकर होम का समाचरण करना चाहिए। प्रतिदिन तीन कालों में पूजा करे और जप तथा तर्पण करे ।१६। होम और विप्रों का भोजन कराना–यह पुरश्चरण का विधान कहा जाता है। इस भूमण्डलमें बिना एक पुरश्चरण के किये मन्त्र कभी भी सिद्ध नहीं होता है। यदि सिद्धि प्राप्त करनी है तो पुरञ्चण अवश्य ही करना चाहिए ।१७। इस प्रकार से सिद्ध किए हुए मन्त्रके द्वारा फिर षट्कर्मों का समाचरण करना चाहिए मारण, मोहन, स्तम्भन, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण–ये षट् कर्म कहे जाते हैं। इनमें कतिपय विद्वान विद्वेषण का भी परिगणन किया करते हैं। शान्ति के कर्म में घृत से समन्वित शाली और सतुआ की आहुतियाँ देवे ।१८। हे क्रौञ्चभेदन ! आँवले के प्रमाण के बराबर गुणायुत अर्थात् दश सहस्र होम करे। वशीकरण करने के कार्यों में घृत से प्लुत करके विल्वपत्रों की आहुतियाँ देवे।१६।बुद्धिमान् को स्तम्भन करने के कार्यों में घृत से समाप्लुत तालक का हवन करना चाहिए। होम पूर्व में बताये हुए कुण्ड में आदर-पूर्वक करना चाहिए ।२०।

बदरीफलमात्रं तु गुणायुतममन्यधीः ।
विद्वेषणे च जुहुयात् पत्रैर्निम्बार्कसम्भवैः ।२१

रात्रौ वेदायुतैर्धीमान् सद्यो विद्वेषणं भवेत् ।
राजीलवणसंयुक्तं वाणायुतमनन्यधीः ॥२२
सद्य उच्चाटनं शीघ्रं ध्रुवं कूर्मादयोरपि ।
तिलतैलेन समिश्रं माषहोमं गुणान्तिम् ।२३
प्रेताग्नौ प्रेतकाष्ठे च जुहुयात् प्रेतकानने ।
प्रेतोन्मुखे च जुहुयात् नग्नः सन्निशिमण्डले ।
सद्यो मरणमाप्नोति मृकण्डुसदृशोऽपि च ।२४

यह तालुक गुणायुत ही अनन्य बुद्धि वाला होकर बदरी फल के समान आहुति देवे । यदि विद्वेषण करना ही तो नीम के और आक के पत्तों से होम करना चाहिए ।२१। विद्वान् को रात्रि के समय में वेदायुत अर्थात् अस्सी सहस्र आहुतियाँ देनी चाहिए । इससे प्रभाव से तुरन्त ही विद्वेषण हो जाता है । अनन्य बुद्धि बाल साधक को वाणायुत (बाणका अर्थ पाँच और अयुत का अर्थ दश सहस्र है) पाजी (राई) लवण से करके होम करना चाहिए । इससे कूर्मादिक का भी तुरन्त उच्चाटन हो जाता है और शीघ्र हो जाया करता है । तिल के तेल से मिश्रित गुणान्वित होम श्मशान में प्रेम की अग्नि में और प्रेत के अर्थात् चित्ता के काष्ठ में हवन करे और प्रेत (शव) के मुख में आहुतियाँ देवे । मण्डलमें रात्रि के समय में नग्न होकर हवन करे तो तुरन्त ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है अर्थात् साध्य का मारण हो जाता है जो भी कोई साध्य होवे यह चाहे मृकण्डके सदृश भी क्यों न होवे । तात्पर्य यह है कि मार्कण्डेय जैसा भी चिरञ्जीवी क्यों न हो उसका भी मारण हो जाता है । २२-२४।

॥ इस सांख्यायन तन्त्रे सप्तमः पटलः समाप्तः ॥

एकाक्षर मन्त्र विधानम्

अप्रबुद्धमन्त्र: संस्कारेण प्रबुद्ध: क्रियते, अत: संस्काराणामुप-योग: । यथा हि--

मन्त्राणां दश संस्कारा: कथ्यन्ते सिद्धिदायिन: ।
निर्दोषितां प्रथान्त्याशु ते मन्त्रा: साधु संस्कृता ।१
जननं जीवनं चैव ताडनं बोधनं तथा ।
अभिषेकोऽथ विमलीकरणाऽऽप्यायने पुन: ।२
तर्पणं दीपनं गुप्ति: दशैता मन्त्रसंस्क्रिया: ।
प्रणवान्तरितं कृत्वा मन्त्रवर्ण जपेत् सुधी: ।३
मन्त्रार्णसंख्यया तद्धि जीवनं सम्प्रचक्षते ।
मंत्रवर्णान् समालिख्य ताडयेच्चन्दनाम्भसि ।४
प्रत्येकं वायुबीजेन ताडनं तदुदाहृतम् ।
विलिख्य मन्त्रवर्णांस्तु प्रसूनै: करवीरजै: ।५
मन्त्राक्षरेण संख्यातैर्हन्यात् तद् बोधनं मतम् ।
स्वतन्त्रोक्तविधानेन मन्त्री मन्त्रार्णसंख्यया ।६
अश्वत्थपल्लवैर्मन्त्रमभिषिञ्चेद्विशुद्धये ।
संचिन्त्य मनसा मन्त्रं ज्योतिमन्त्रेण निर्दहेत् ।७

जो मन्त्र अप्रबुद्ध होता है वह संस्कार के द्वारा शुद्ध किया जाया करता है अर्थात् फिर वह चेतन हो जाता है। अतएव संस्कारों का बड़ा उपयोग हुआ करता है। वही दिखलाया जाता है, मन्त्र के दश संस्कार सिद्धि के देने वाले कहे जाया करते हैं। भली भाँति से संस्कार किए गये मन्त्र शीघ्र ही निदोषता को प्राप्त हो जाया करते हैं।१। अब उन दशों के नाम बतलाये जाते हैं, जनन, जीवन, ताड़न, बोधन, अभिषेक, विमलीकरण, आप्यायन तर्पण दीपन, गुप्ति ये मन्त्रों की दश संस्कार करने की क्रियायें हैं। मन्त्र में जितने वर्ण होवे उतनी ही बार संख्या में प्रणव का सम्पुट देकर मन्त्र का जप करना चाहिए इसकी

ही जीवन नामक संस्कार कहा जाता है। मन्त्र के वर्णों को लिखकर चन्दन के जलमें ताड़न करे। प्रत्येक का वायु बीज के द्वारा ताड़न कहा गया है।२-४। मन्त्र के वर्णों को लिखकर बारम्बार के पुष्पों से जितने मन्त्र के अक्षर होवें उतनी संख्यामें हवन करे तो बोधन नाम वाला संस्कार होता है। अपने तन्त्र में कहे हुए विधानसे मन्त्र धारी मन्त्र की वर्ण संख्या के अनुसार पीपल के हत्तों से मन्त्र का अभिषिञ्चन करे। इससे विशुद्धि होती है। मन्त्रधारी मन से मन्त्र का भली-भाँति चिन्तन करके मन्त्र का ज्योति मन्त्र से निर्दहन करे।६-७।

अथ पञ्जरन्यास–

वक्ष्येहं पञ्जरन्यासं मन्त्रसिद्धिकरं नृणाम्।
बगला पूर्वतो रक्षेत् आग्नेप्यां च गदाधारी।८
पीताम्बरा दक्षिणे च स्तम्भिनी चैव नैऋते।
जिह्वाकीलिन्ययो रक्षेत् पश्चिमे सर्वदा मम।९
वायव्यो च ममोन्मत्ता कौवेर्लां च त्रिशूलिनी।
ब्रह्मास्त्रडेवता प तु ऐशान्यां सततं मम।
संरक्षेन्मां तु सततं पाताले स्तब्धमातृका।१०
ऊर्ध्वं रक्षेन्महादेवी जिह्वास्तम्भनकारिणी।
एवं दश दिशः रक्षेद् बगला सर्वसिद्धदा।११
एवं न्यासविधिं कृत्वा यत्किञ्चिज्जपमाचरेत्।
तस्याः स्मरणमात्रेण शत्रूणां स्तंभनं भवेत्।१२

सर्वन्यासविधिं कृत्वा बगलामातृकां न्यसेत् ।
तन्मातृकाविधि वक्ष्ये सारात् सारतत्परम् ।१३
तारं च मातृकार्णं च बगलाबीजमेव च ।
नामोऽन्तेन च विन्यस्य मातृकान्यासतोऽनघ ।१४
ध्यानेन मन्त्रसिद्धिः स्यात् ध्यान सर्वार्थसाधकम् ।
ध्यानं विना भवेन्मूकः सिद्धमन्त्रोऽपि साधकः ।१५

अब मैं पंजर न्यास बतलाऊँगा जो कि मानवों को मन्त्र की सिद्धि करने वाला है । पूर्व दिशामें बगला रक्षा करे और गदाधारी आग्नेयीमें रक्षा करे दक्षिण में पीताम्बरा और नैऋत्य दिशा में स्तम्भिनी रक्षा करे । परिश्रम में मेरी सर्वदा जिह्वा कीलिनी रक्षा करे ।८६। वायव्य में मन्दोन्मत्ता और कौबेरी दिशामें त्रिशूलिनी रक्षा करे । ऐशानी दिशा में मेरा निरन्तर ब्रह्मास्त्र देवता परित्राण करे । स्तब्ध मातृका पातालमें निरन्तर रक्षा करे । ऊर्ध्व की ओर महादेवी जिह्वा के स्तम्भन करने वाली रक्षा करे ।१०-११। इस रीति से दशों दिशाओं में अब सिद्धियोंके प्रदान करने वाली बगला मेरी रक्षा करे । इस प्रकार से न्यास के विधान को करके जो कुछ भी जप करना चाहिए ।१२। उस देवी के केवल स्मरण करने ही से शत्रुओं का स्तम्भन हो जाता है । सम्पूर्ण न्यास की विधि करके फिर बगला के मातृका का न्यास करना चाहिए ।१३। उस मातृका की विधि मैं बतलाऊँगा तो सार से परम सार स्वरूप है । हे अनघ ! प्रणव-मातृका के वर्ण और बगला के बीज का जिस के अन्त में 'नमः' यह पद होवे मातृका का न्याससे विन्यास करके फिर ध्यान (चिंतन) से मन्त्र की सिद्धि हुआ करती है । क्योंकि ध्यान ही समस्त अर्थों का साधक होता है । ध्यान के बिना मन्त्र को सिद्ध लेने वाला भी पुरुष मूक ही रहता है जो कि साधक है ।१४-१५।

अथ ध्यानम्–

वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैश्वानरः शीतति ।
क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति ।१६
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वन्मंत्रिणा यन्त्रितः ।
श्री नित्ये वगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ।१७
एवं ध्यात्वा जपेन्मन्त्रं तत्वलक्षं सुबुद्धिमान् ।
गुडोदकेन सन्तर्प्य तद्दशांशेन पुत्रक ।१८
त्रिकोणकुण्डेजुहुयात् हस्तनिम्नोन्नते शुभे ।
हयारिकुसुमेनैव सुरक्तेनाऽऽन्यसंयुतम् ।१९
ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चात्तत्वसंख्याच्च युग्मकम् ।
मन्त्रसिद्धिर्भवेत्पुत्र नान्यथा शिवभाषितम् ।२०
वाममार्गक्रमेणैव वामामभ्यर्य पुष्पिणीम् ।
मन्त्रसिद्धिकरं चैव सर्वदा रिपुनाशनम् ।२१
परमन्त्रप्रयोगेषु नानाचेटककृत्रिमैः ।
सद्यः स्तम्भनविद्या च बगला नात्र संशयः ।२२

हे श्रीनित्ये ! हे बगलामुखी ! हे कल्याण ! आप वाद करने वाले को मूक बना दिया करती हैं-भूमि के स्वामी राजा को भी रंक कर देती हैं और वैश्वानर को शीतल बना देती हैं। जो महान् क्रोधी होता है उसको शान्त स्वभाव वाला कर दिया करती हैं और महान् दुर्जनको परम सज्जन कर देती हैं। जो बहुत ही शीघ्र गमन करने वाला है उसको भी लङ्गड़ा बना देती हैं। जो बहुत गर्व करने वाला है उसके भी गर्वको नष्टकर देती हैं और सब कुछ के ज्ञाता को भी जड़ बनादेती

है जो कि आपके मन्त्र को साधना करने वाले के द्वारा मन्त्रित बना दिया जाता करता है। ऐसी आपके लिए मेरा प्रतिदिन प्रणाम है। इस प्रकार से ध्यान करके फिर सुबुद्धिमान पुरुष को बगलामुखी के मन्त्र का तत्व लक्ष जप करना चाहिए। जप का दशांश गुड़ मिश्रित जल से तर्पण करे। हे पुत्र ! परम शुभ त्रिकोण कुण्ड में जो एक हाथ गहरा और उन्नत होवे हवन करे। हेम रक्त हवादि को पुष्पों के द्वारा घृत से श्रुत करके करना चाहिए। इसके पश्चात् तत्व संख्या से अर्थात् चौबीस से युग्तक ब्राह्मणों को भोजन करावे। हे पुत्र ! इस विधान में करने पर मन्त्र की सिद्धि हो जाती है अन्यथा अर्थात् अन्य प्रकार से सिद्धि कभी नहीं होती है ऐसा भगवान् शिव का कथन है। वाममार्ग के क्रम से ही पुष्पिणीवामा का अभ्यर्चन करके मन्त्र की सिद्धि करने वाला विधान है और सर्वदा इसके द्वारा रिपुओं का विनाश होता है दूसरों के द्वारा किए हुए मंत्र प्रयोगों में अनेक कृत्रिमता तथा चेटकों के तुरन्त ही स्तम्भन करने की विद्या बगला है-इसमें कुछ भी संशय नहीं है।१६-२२।

॥ इति एकाक्षर मन्त्र विधानम् ॥

श्री बगला-माला मन्त्र

ॐ नमो भगवति ओम् नमो वीरप्रतापविजयेभगवति बगलामुखि मम सर्वनिन्दकानां सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय ब्राह्मीं मुद्रय बुद्धि विनाशय विनाशय अपरबुद्धि कुरुकुरु आत्मविरोधिनांशत्रुणां शिरो-ललाट-मुख,-नेत्र,-कर्ण नासिकोरू, पद, अणुरेणु, दन्तोष्ठ-जिह्वा-तुल, गुह्य, गुद, कटि जानु, सर्वाङ्गेषु केशादिपादपर्यन्तं पादादिकेशपर्यन्तं स्तम्भय स्तम्भय खें खीं मारय मारय परमन्त्र परयन्त्र परतन्त्राणि

छेदय छेदय, आत्ममन्त्रयन्त्र तन्त्राणि रक्ष रक्ष, ग्रहं निवारय निवारय, व्याधिं विनाशय विनाशय: दुःखं हर हर दारिद्रयं निवारय निवारय सर्वमन्त्रस्वरूपिणि, सर्वतन्त्र स्वरूपिणि, सर्व-शिल्पप्रयोगस्वरूपिणि, सर्वतत्वस्वरूपिणि, दुष्टग्रह, भूतग्रह आकाशग्रह, पाषाणग्रह, सर्वचांडालग्रह, यक्षकिन्नरकिम्पुरुषग्रह भूतप्रेतपिशाचानां, शाकिनी, डाकिनीग्रहाणां पूर्वदिशां बन्धय बन्धय वार्तालि मां रक्ष, रक्ष, दक्षिणदिशां बन्धय बन्धय, किरातवार्तालि मां रक्ष रक्ष, पश्चिमदिशां बन्धय बन्धय, स्वप्नवार्तालि मां रक्ष रक्ष, उत्तरदिशां बन्धय बन्धय कालि मां रक्ष रक्ष, ऊर्ध्व दिशां बन्धय, उग्रकालि मां रक्ष रक्ष, पातालदिशां बन्धय बन्धय बगलापरमेश्वरि मां रक्ष रक्ष, सकलरोगान् विनाशय विनाशय शत्रुपलायनाय पञ्चयोजनमध्ये राजनस्त्रीवशता कुरु कुरु, शत्रून् दह दह, पच पच स्तम्भय स्तम्भय, मोहय मोहय, आकर्षय आकर्षय, मम शत्रून् उच्चाटय उच्चाटय, हुं फट् स्वाहा।

ओं हे भगवति ! नमस्कार है ॐ वीरों के प्रताप पर विजय करने वाली हे भगवति ! हे बगलामुखी ! मेरे समस्त निन्दा करने वालों के तथा सब दुष्टों के वाक् (वाणी), मुख, पदे का स्तम्भन करो-२, ब्राह्मी का मुद्रण करो-, बुद्धि को विनाश करो-२, अपर बुद्धि करो, आत्मा के विरोधी शत्रुओं के शिर, ललाट, मुख, नेत्र, कर्ण, नासिका, ऊरु, पद अणुरेषु-दन्तोष्ठ, जिह्वा, पुला, गुह्य, गुदा, कटि, जानु, सब अङ्गों में केशों से आदि लेकर पैरों तक, पैरों से आदि लेकर केशों तक स्तम्भन करो, स्तम्भन करो, खों खीं का मारण करो।२। परों के द्वारा प्रयुक्त मन्त्र, परायों प्रयुक्त यन्त्र, परों के द्वारा प्रयुक्त तन्त्रों का छेदन करो-२, आत्मा के अर्थात् अपने प्रयोग किये गये मन्त्र, यन्त्र, तन्त्रों की रक्षा करो-२, ग्रह का निवारण करो-२, व्याधि का विनाश करो-२, दुःख का

हरण करो-२, दरिद्रता का निवारण करो-२, हे सब यन्त्रों के स्वरूप वाली ! हे सब शिल्पों के प्रयोगों के स्वरूप वाली ! हे सब तत्वों के स्वरूप वाली! दुष्टग्रह, भूतग्रह, आकाशग्रह, पाषाणग्रह, सर्वचाण्डालग्रह, यक्ष, किन्नर, किम्पुरुषग्रह, भूत-प्रेत,पिशाचों की तथा शाकिनी-डाकिनी ग्रहों की पूर्व दिशा का बन्धन करो-२ हे वार्तालि ! मेरी रक्षा करो-२, दक्षिण दिशा का बन्धन करो-२, हे वार्तालि ! मेरी रक्षा करो-२, किरात वार्तालि ! मेरी रक्षा करो-२, पश्चिम दिशा बन्धन करो-२, हे स्वप्न वार्तालि ! मेरी रक्षा करो-२, उत्तर दिशा का बन्धन करो-२, हे कालि ! मेरी रक्षा करो-२, ऊर्ध्व दिशा का बन्धन करो-२, हे उग्र, कालि ! मेरी रक्षा करो-२, पाताल दिशा का बन्धन करो-२, हे बगला परमेश्वरी ! मेरी रक्षा करो, सफल रोगों का विनाश करो-२, सब शत्रुओं के पलायन के लिए पाँच योजनों के मध्य में (एक योजन चार कोश का होता है) राजा, स्त्री जनों की वशता को करो-२, शत्रुओं का दहन करो, पाचन करो, स्तम्भन करो-२, मोहन करो-२, आकर्षण करो -२, मेरे शत्रुओं का उच्चाटन करो-२, हुँ फट् स्वाहा।

॥ इति श्री बगलामुखी माला मन्त्र ॥

बगला शावर मन्त्र

ओ३म् मलयाचल बगला भगवती महाक्रूरी महाकराली राजमुखबन्धनं ग्राममुखबन्धनं ग्रामपुरुषबन्धनं कालमुखबंधनं चोरमुखबंधनं व्याघ्रमुखबन्धनं सर्वदुष्टग्रहबन्धनं सर्वजनबंधनं वशीकुरु हुं फट् स्वाहा।

ऐसा कहा जाता है कि मानवों की दूषित मनोवृत्ति समझकर सभी मन्त्रों को कीलित कर दिया था और शावर मन्त्रों के प्रयोग का उपदेश किया था। बगला का भी शावर मन्त्र है–मन्त्र का स्वरूप निम्न है–– ओं मलयाचल की निवासिनी बगला भगवती, महाकाली, महाक्रूर, राजा के मुख का बन्धन, ग्राम के मुख का बन्धन, ग्राम के पुरुषों का बन्धन, काल के मुख का बन्धन, चोरों के मुख का बन्धन, व्याघ्र के

मुख का बन्धन, सब दुष्ट ग्रहों के मुख का बन्धन, सब जनों का बन्धन, वशी करो-२ । हुँ फट् स्वाहा । इति अङ्ग मन्त्र का उद्धार है ।

मन्त्रोत्कीलनम्–

ॐ अस्य श्रीबगलामुखी--उत्कीलनमस्य सदाशिव ऋषिः तस्मै नमः शिरसि, जगत्सृष्टिसाधनीभूतबृहद्गायत्रछन्दसे नमो मुखे, श्रीब्रह्मास्त्रोत्कीलदायं क्लीं ब्लू ग्लौं ह्लीं ण्लौ ब्लूं क्लीं सं सं सूच्यग्रेणोत्कीलनसूचीमुख्यै देवतायै नमो हृदये ॐ ऐं क्लीं ह्लीं ह्रीं ऐं अं बीजाय नमो गुह्ये, ॐ ह्लीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः त्रीन् मूलमुच्चार्य ॐ ऐं ह्लीं ह्लीं ऐं ओंब्ली सं सं सं रुद्धसूच्य ग्रेणः ब्रह्माग्रन्थीनुत्कीलय ॐ अं ह्लीं आं इं ब ईं ग उं ला ऊ मु ऋं खि ॠ स लृं दु एं ष्टा ऐं नां ओं वा औ चं अ मु अः ख अः प अं दं औ स्त ओम् ऐ ग एं जि लृं ह्वां लृं की ऋं लृं ॠं य ऊ वु उं द्धि ईं वि इं ना आं श अं य ह्लीं ॐ क्षं ॐ स्वाहा ।

ओं इस श्री बगलामुखी, के उत्कीलन मन्त्र का सदाशिव ऋषि हैं, उनके लिए नमस्कार है, शिर में, जगतों की सृष्टि के साधनीभूत बृहद् गायत्री छन्द के लिए नमस्कार है मुख में, भी ब्रह्मास्त्र के उत्कीलना के लिए क्ली, ब्लू, ग्लौं, ह्लीं, ण्लों ब्लूं क्लीं सं सं सं सूची (सुई) के अग्रभाग से उत्कीलन सूची मुख वाली के लिए, देवताके लिए नमस्कार है हृदय में, ओं ऐ क्लीं ऐं अं बीज के लिए नमस्कार है । गुह्य में, ओं ह्लीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लृं एं ऐं ओं औ अं अः तीन मूल का उच्चारण करके ओं ऐं ह्लीं एं ओं ब्लीं सं स सं रुद्र सूची के अग्रभाग से ब्रह्म ग्रन्थियों का उत्कीलन करो । ओं अं ह्ली आं इं ब ईं गं ऊं लाऊ मु ऋं खि ॠं सं लृं ष लॄं दु एं ष्टा ऐं नां ओं वा ओं चं अं मु आ खं अः प अ दं ओं स्या औ म्भ ऐं य एं जि

लृं ह्वां लृं की श्र लां ऋं यं ऊं बु उं ढ्वि ईं वि इं नं आ शं श्रं यं ह्लीं ओं अं ओं स्वाहा ।

ॐ ऐं क्लीं लीं ह्लीं क्लीं ऐ ओं ब्लीं सं सं सं रुद्रसूच्यग्रेण ब्रह्मग्रन्थिम् उत्कीलय उत्कीलय, ॐ ब्लूं ह्लौं ह्लंह्लीं ह्लां ओऽम् इति कीलकाय नमो, नाभौ हस्त दत्वा उच्चरेत् । ॐ ह्लीं ह्लीं ह्लसौं ॐ बगलामुखीमहामन्त्रे उत्कीलनार्थे जपे विनियोगाय नमः, इति सर्वांगे व्यापकं कृत्वा शिरसि प्रणमेत् ।

अथ करादिन्यासः ॐ इं लं हंसः ह्लां सोहं लं ईं ॐ उत्कीलिन्यै नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, ॐ इं लं हं सः ह्लीं सोहं लं ईं ॐ महोत्कीलिन्यं नमः तर्जनीभ्यां नमः, ॐ इं लं ह्लः ह्लूं सोहं लं ईं ॐ रुद्र सूच्या उत्कीलिन्यै नमः मध्यमाभ्यां नमः । ॐ इं लं ह्लः ह्लैं लं ईं ॐः ब्रह्मग्रन्थि उत्कीलिन्यै नमः अनामिकाभ्यां नमः ॐ इं लं हंसः ह्लौं सोहं लं ईं ॐ योगिन्य उत्कीलिन्यै नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ इं लं हंसः सोहं लं ईं ॐ सवोंत्कीलिन्यै नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

ओं ऐं क्लीं क्लीं ह्ली क्लीं ऐं ओं सं सं सं रुद्र सूची के अग्र से ब्रह्म सन्धि का उत्कीलन करो-२ । ओं ब्लूं ह्लौ ह्लं ह्लीं ह्लां ओं कीलक के लिए नमस्कार है । नाभि में हाथ देकर उच्चारण करे । ओं ह्लीं ह्लीं ह्लासौ ओं बगलामुखी के महा मन्त्र में उत्कीलन के लिए जप में विनियम को नमस्कार है, इस तरह से सर्वाङ्ग में व्यापक करके शिर में प्रणाम करना चाहिए । इसके अनन्तर करादि का न्यास है-- ओं इं लं हं सः ह्लां सोहं ल ईं ओं उत्कीलिनी के लिए नमः अंगुष्ठोंके लिए नमस्कार है, ओं इं लृ लसः ह्लीं सोहं लं ई ओं महोत्कीलिनीके लिए नमः है तर्जनियों के लिए नमस्कार है, ओं इं लं हंसः ह्लूं सोहं लृं ईं ओं रुद्र सूची से उत्कीलिनी के लिए नमस्कार है, मध्यमाओं के

लिए नमस्कार है ओं इं लं हृसः ह्लै सोहं लं ईं ओं ब्रह्मग्रन्थि उत्कीलनी के लिए नमस्कार है अनामिकाओं के लिए नमस्कार है ओ३म् इं लं हसह्लों सोइ लं ईं ॐ योगिनी के लिए उत्कीलनी को नमस्कार है कनिष्ठिकाओं के लिए नमस्कार है, ओं इं लंहसः ह्लः सोह लं ई ओं सर्वोत्कीलिनी को नमस्कार है करतल कर पृष्ठों के लिए नमस्कार है।

ध्यानम्—

'रुद्रसूचीमुखीध्याये सर्वाभरणभूषिताम् ।
वरदाऽभयसूच्यग्रनखदंष्ट्राभयानकाम् ॥
चतुर्भु जां त्रिनयनां वरदाऽभयकुण्डिकाम् ।
शूलाग्रान् खरतीक्ष्णाग्रान् कुर्वती ग्रथिताक्षरान् ॥
वर्णमालाविभूषाङ्गी सर्ववर्णात्मिकां शिवाम् ।
प्रोद्यश्वतां मनून् सर्वान् नानावर्णविजृम्भितान् ॥
विविच्य वरदे मन्त्रान् मालायां कुसुमानिव ।
प्रवेशय मनुं देहि प्रकटीकुरु सर्वदा ॥
अभयं टंकवरदं पाशं पुस्तकमङ्कुशम् ।
शूल सूच्यग्रमादाय देहि मे प्रणमामि त्वाम् ॥'
इति ध्यात्वा जगद्धात्रीं जगदानन्दरूपिणीम् ।
ग्रन्थित्रयविशेषज्ञं शिवं ध्यात्वा जपेन्मनुम् ॥

भगवान् रुद्र की सूची मुखी का ध्यान करता हूँ जो समस्त आभूषणों से भूषित हैं। जो वरदान, अभयदान, सूची के अग्रभाग वाले नख और दृष्टाओं के धारण करने वाली हैं, चार भुजाओं से समन्विता है, तीन नेत्रों वाली है, वरदान, अभयदान, कुण्डिका को रखने वाली है, शूलाग्र, खर और तीक्ष्ण उग्र वाले ग्रथित अक्षरों को करती हुई, जो वर्णमाला से विभूषित अङ्गों वाली तथा सर्व वर्णों के स्वरूप वाली शिव है प्रोद्यश्वता है, सब मन्त्रों की जो अनेक वर्णोंसे विजृम्भित हैं हे वरदे!

माला में कुसुमों के ही समान विवेचन करके प्रवेशित करो, मन्त्र को दीजिए और सर्वदा प्रकट करो। अजय, टंकवरद, पाशु, पुस्तक, अंकुश, शूल, सूची के अग्र लाकर मुझे प्रदान कीजिए। मैं आपको प्रणाम करता हूँ। इस तरह से जगतों की धात्री और जगतों के आनन्द के रूप वाली का ध्यान करके तीनों ग्रन्थियों के विशेषज्ञ शिक्का ध्यान कर मन्त्र का जप करे।

ॐ इं लं हंस उत्कीलिन्य नमः, ओम् ई ल हंसः ॐ वः ॐ ह्लीं बगलामुखि इत्यादि मूल ह्लीं लं ईं वः उत्कीलिन्यं स्वाहा इत्येकवारं न जपेत् ॐ ईं हंसः रं सं र ह्लः ॐ ह्लीं बगलामुखि इत्यादि मूलं ॐ लं हंसः ह ॐ वः उत्कीलिन्यै स्वाहा इति सकृज्जपेत्। एवं बारत्रयं जप्त्वापुनः अकरादिक्षका रान्तं उच्चार्य ॐ ईं हंसः ॐ वः मूल ओ३म् वः सः ह लं इं क्षं लं हं क्षकारमारभ्य अकारान्तमुच्चार्य ओ३म् वः ह्लां इं लं हंसः मलं सोहं लं ई ओ३म् वः उत्कीलिन्यै स्वाहासकृदुच्चार्य अथ जागरणम् ओ३म् ईं ल हंसः सोह ओ३म् वः वः वः ओ३म् हंसः सोवं लं ईं ओ३म् मम हृदये चिरं तिष्ठ स्वाहा हृदये हस्तं हस्तं हत्वा त्रिवारं जपेत्। पुनः ओ३म् ह्लीं हंसः मूलं ओ३म् अं आ इं ईं उं ऊ ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः हंस ह्लीं ओ३म् इदि इति सकृज्जपेत् जीवनम्।

ॐ इं लं हंसः ह्लीं उत्कीलिनी के लिए नमस्कार है ॐ इं लं हंसः ॐ वः ह्लीं उगलामुखि इत्यादि मूलतन्त्र ह्लीं लं ईं उत्कीलिनी के लिए स्वाहा है, इसको एक बार नहीं जपना चाहिए। ॐ ईं हसः रं सं रं ह्लीं: ॐ ह्लीं बगलामुखि इत्यादि ॐ ईं लं हंसः ॐ वः उत्कीलिनी के लिए स्वाहा है, इसको एक बार जपे। इस प्रकार से तीनवार जप करके फिर अकार से आदि लेकर क्षकार के अन्त पर्यन्त उच्चारण करके ॐ इं स ॐ वः मूल ॐ वः सः हं लं इं लं हस सोहं ॐ वः ॐ हंसः सोहं लं ईं ओ मेरे हृदय में बहुत लम्बे समय तक स्थित रहिए-२ स्वाहा—इसका हृदय पर हाथ रखकर तीन बार जप करें।

फिर ॐ ह्लीं हंसः मूल ओं आं इं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं मूलं क्षकारादि एं ऐं ओं औं अं अः हंसः ह्लीं ॐ, यह एक बार जाप करे जीवनम्–

अथ मन्त्र शुद्धि–

अकारादि क्षकारान्तं ॐ ह्लीं हंसः सोहं ह्लीं सः सोहं अकारान्तं मम विद्याशुद्धि कुरु स्वाहा। (इति विद्या शुद्धिः) ॐ ह्लूं ह्लं क्लीं क्लीं ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं क्रीं रुद्र सूच्यग्रेण उत्कीलय उत्कीलय अं १५ बगलाशापोद्धारं कुरु कुरु मूलं अं १५ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ऐं एं ऐं क्लीं क्लीं ह्लं ह्लुं ह्लूं ॐ रुद्रसूच्यग्रेण बगलाशापविमोक्षं कुरु कुरु स्वाहा। (इति शाप मोचनम्) पुनः मूलं अष्टवारं जप्त्वा ब्राह्मणीः मुद्राः प्रदर्श्य पञ्च मुद्राभिः प्रणमेत्।

अकार से आदि लेकर क्षकार के अन्त तक ॐह्लीं हंसः सोहं ह्लीं सः सोहं मूल क्षकार से आदि लेकर अकार के अन्त तक मेरी विद्या की शुद्धि करो स्वाहा। (यह विद्या शुद्धि है) ॐ ह्लूं ह्लूं ह्लं क्लीं क्लीं ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं रुद्रसूची के अग्र से अग्र से उत्कीलन करो-२ अं १५ बगला शापोद्धार को करो-२, मूल मन्त्र, अं १५ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं एं एं एं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं ह्लूं ह्लूं ॐ रुद्रसूची के अग्रभाग से बगला शाप का विमोक्ष करो-२ स्वाहा। (इति शाप विमौचनम्) फिर मूल मन्त्र का आठ बार जप करके ब्राह्मी मुद्रा को प्रदर्शित करके पंच मुद्राओं से प्रणाम करना चाहिए।

अथ अन्य प्रकारोत्कीलनादि–

उत्कीलनम्––

मृद्बीजं च मनोरादौ वनान्ते प्रणवं जपेत्।
मन्त्रोऽयं बगलामुख्या मन्त्रोत्कीलनसिद्धिदः।१

मन्त्र के आदि में मृदु बीज और वनान्त में प्रणव (ओंकार) का जप करे। यह बगलामुखी का मन्त्र उत्कीलन की सिद्धि के प्रदान करने वाला है।१।

संजीवनम्--

मृत्स्नाबीज जपेद्देवि प्रणवं च वनाञ्चले ।
बगलामन्त्रराजस्य भवेत् सञ्जीवनं परम् ।२

हे देवि ! मृत्स्ना के बीज का जाप करे और वनाञ्चल में प्रणव का जप करे । बगला के मन्त्र राज का परम सञ्जीव होता है ।२।

शापोद्धार:--

तारं मृत्स्नां च बगले रुद्रशापं विमोचय ।
तारं मृद्वनं देवि विद्येयं शापहारिणी ।३

हे अगले ! तार (प्रणव) और मृत्स्ना तथा रुद्रशाप का विमोचन करो । हे देवि ! तार और मृद्वन वह विघ्न शापहारिणी हैं अर्थात् शाप के हरण करने वाली है ।२।

सम्पुटिकरणम्--

रसनां मृत्तिकाबीजं मनोरन्ते पठेत्सुधीः ।
श्रीदेव्या बगलामुख्या मन्त्रः सम्पुटिकाभिधः ।४

सुधी पुरुष को रसना, मृत्तिका बीज को मन्त्र के अन्त में पढ़ना चाहिए । यह श्रीदेवी बगलामुखी का सम्पुटिकाभिध मन्त्र है अर्थात् सम्पुटीकरण का मन्त्र है ।४।

॥ इति देवी रहस्योक्तप्रकार समाप्तः ॥

मन्त्राणां दश संस्काराः

क्रौञ्चभेदन उवाच--

नमस्ते जगतां नाथ भस्मोद्धूलितविग्रह ।
एकाक्षरं महामन्त्रवैभवं वद मे प्रभो ।१

ईश्वर उवाच--

यत्तदेकाक्षरि मन्त्रं तत्तन्मन्त्रेपु जीवनम् ।
उत्तमं बीजसंयुक्तं तन्त्रं सर्वार्थसाधनम् ।२
नानामन्त्रेषु मन्त्रेवा बीजाद्यं सर्वसिद्धिदम् ।
निर्बीजमेव निर्वीर्यं शिवस्य वचनं यथा ।३

तद्बीजोद्धारमनघं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।
एकाक्षरमहामन्त्रं बगलाया: सुसिद्धिदम् ।४
पूजनं च प्रयोग च वक्ष्येऽह तव पुत्रक ।
सोऽन्तरान्तसमायुक्त चतुर्णस्वरसंयुतम् ।५
रेफाक्रान्तं बिन्दुयुक्त ब्रह्मास्मैकाक्षरो मनु: ।
ह्लीं ब्रह्मा ऋषिश्छन्दो गायत्री समुदाहृतम् ।६
देवता बगला नाम्नी शक्तिश्चिन्मयरूपिणी ।
लं बीज हूं च शक्तिश्च ई कीलमुदाहृतम् ।७
न्यासविद्यां प्रवक्ष्यामि, मन्त्रसिद्धिकरी नृणाम् ।
भूतसिद्धि भुव: सिद्धि मातृकाद्वितयं न्यसेत् ।८
मन्त्राक्षरेण विन्यस्य तद्विधि शृणु पुत्रक ।
नेत्रवाणचतु:पञ्चनवपंचदशोऽक्षरम् ।९
ॐ ह्लीं बगलामुखि इत्यादि च विन्यसेद् ।
अङ्गुलीभिश्च षडङ्गेषु विन्यसेत्तथैव च ।१०

क्रौंचभेदन ने कहा-हे भस्म से उद्धूलित स्वामिन् ! आप तो समस्त जगतों के नाथ हैं। आपको मेरा प्रणाम है । हे प्रभो ! एकाक्षर वाले महामन्त्र के वभव को मुझे कृपाकर बताइए ।१। ईश्वर ने कहा-जो जो भी एकाक्षर होता है वह उन-उन मन्त्रों का जीवन ही होता है । बीज से युक्त उत्तम मन्त्र समस्त अर्थों के सिद्ध करने वाला साधन होता है ।२। अनेक मन्त्रों में अथवा मन्त्र में बीजाद्य सब अर्थों की सिद्धि का देने वाला है । जो बिना बीज वाला है वही वीर्य से हीन **होता** है । उसी भाँति से भगवान् शिव का वचन है ।अनघ ! अर्थात् है पापों से रहित ! उस बीज का उद्धार ही सब सिद्धियोंके देने वाला है । बगलादेवी का जो एकाक्षर महामन्त्र है वह सुन्दर सिद्धि का प्रदानता होता है ।४। हे पुत्र ! मैं पूजन और प्रयोग सब आपको बतलाऊँगा । वह अन्तरांत से समायुक्त होता है, तथा चतुर्थ स्वरसे संयुक्त होता है । रेफ से आक्रांत और विष्णु से युक्त ब्रह्मास्त्र का एकाक्षर मन्त्र होता है । ह्लीं है । इसका ऋषि ब्रह्मा है और छन्द गांयत्री होता है ।

इसकी देवता ह्लीं बगला नाम वाली होती है और शक्ति चिन्मय रूपी है। इसका लं बीज है-हूँ शक्ति है तथा ईं इसका कीलक कहा गया है ।४-६। इसके अनन्तर न्यास विद्या के विषयमें कहूँगा जो मनुष्यों को मंत्र की सिद्धि करके मातृका द्वितीय का न्यास करना चाहिए ।७-८। मंत्र के अक्षरों का विन्यास करे। उसकी विधि का तुम श्रवण करो । नेत्र वाण, चिकुर (वार), पंच, नव ऐसे पंच, नव दशाक्षरों वालाहै। ओंह्लीं बगला मुखि-इत्यादि का विन्यास करे। उसी भाँति छैः अङ्गों में अंगु-लियों से न्यास करे ।९-१०।

मन्त्रैर्मलत्रयं मन्त्री विमलीकरणं हि तत् ।
कुशोदकेन जप्तेन प्रत्यर्णं प्रोक्षणं मनो ॥११
वारिबीजेन विधिवत् एतदाप्यायनं मतम् ।
तारुव्योमाग्नियुक् ज्योतिर्मंत्र एष उदाहृतः ॥१२
मन्त्रेण वारिणा मन्त्रे तर्पण तर्पणं मतम् ।
तारमायारमायोगो मनोर्दीपनमुच्यते ॥१३
जप्यमानस्य मन्त्रस्य गोपनं त्वप्रकाशनम् ।
संस्कारा दश मन्त्राणां सर्वतन्त्रेषु गोपिताः ॥१४
यत् कृत्वा सम्प्रदायेन मंत्रीं वाञ्छितमश्नुते ।
रुद्रकीलितविच्छिन्नसुपृप्तमदयोऽपि च ।१५
मंत्रदोषाः प्रणश्यन्ति संस्कारैभिरुत्तमैः ॥१६

मन्त्रधारी मन्त्र में मल में चाप को निर्दग्ध करे इससे मन्त्र का विमलीकरण नामक संस्कार होता है। अभिमन्त्रित किये हुए कुशोदक से विधि के साथ वारिबीज से मन्त्र के प्रत्येक वर्ण का प्रोक्षण करने से आप्यायन नामक संस्कार होता है। तारव्योम और अग्नि से युक्त ज्योति मन्त्र कहा गया है ।१२। मन्त्र के द्वारा अर्थात् इसी उक्त मन्त्र से मन्त्र में अर्थात् जिस मात्र को संस्कार करना है उसमें तर्पण करे तो यह तर्पण नामक संस्कार होता है। तार-माया और रमा का योग करने से मन्त्र का दीपक नामक संस्कार कहा जाता है ।१३। जिस

मन्त्र का जाप करना है अर्थात् जप किया जा रहा है उसको प्रकाशित न करना ही गोपन नाम का संस्कार होता है। ये मन्त्रों के चाहे जो भी कोई मन्त्र हो सबसे दश संस्कार हैं और सब तन्त्रों में ये गोपित होते हैं।१४। सम्प्रदाय से इनको करके मन्त्रधारी अपने मनो-भिलषित फल को प्राप्त किया करता है। इनके करने का यह प्रभाव होता है कि रुद्र देव के द्वारा कीलित-बिछिन्न गुप्त और शप्त आदि सभी दोष जो मन्त्रों में रहते हैं वे सभी इन उत्तम दश संस्कारों से नष्ट हो जाया करते हैं।१५-१६।

॥ मन्त्राणां दश संस्काराः समाप्ताः ॥

षोड्शोपचार मन्त्राः

प्रसीद जगतां मातः संसाराऽर्णवतारिणि ।
मया निवेदितं भक्तया आसनं सफलं कुरु ॥१

आसनपरिमाणम्--

चतुरङ्गुलविस्तारं रौप्यनिर्माणपीठकम् ।
अलंकारं यथायोग्यं पुरुषस्तु निवेदयेत् ॥२
मूलप्रकृतिरूपेण सूयते संचराचम् ।
पूजामहं विधास्यामि स्वागतं ते महेश्वरि ॥३
सुगन्धि परमामोदं पर वागीश्ववेश्वरि ।
पाद्यमेतन् मयादत्तं प्रसीद भुवनेश्वरि ॥४
दूर्वातण्डुलमिश्रं च कर्पूरागुरुपूरितम् ।
अर्घ्यं दत्तमिदं गृह्यं मत्तस्त्रिभुवनार्चिते ॥५
आपो नारायणः साक्षात् अप्सु सर्वं चराचरम् ।
निवेदयामि हे देवि अद्भिराचमनीयकम् ॥६
वाजिमेधफलमेवाप्तुं मया दत्तं वरानने ।

मधुपर्कं प्रतीच्छस्व मातर्मे भुवनेश्वरि ।।७

(पुनराचमनीयकमाचमनमन्त्रेण दद्यात् ।)

सर्व प्रथम आसनका मन्त्र है । हे संसार रूपी सागरसे तारण करने वाली ! आपतो ममस्त जगतों की माता है,आप प्रसन्न होइये । भक्ति-भाव से मेरे द्वारा समर्पित इस आसन को सफल कीजिए ।१। अब आसन चार अंगुलों के विस्तार वाला होना चाहिए । साधक पुरुष यथा योग्य अलङ्कार निवेदित करे ।२। हे महेश्वरी ! आपके द्वारा मूल प्रकृति के स्वरूपसे वह सम्पूर्ण चराचर जगत् विरचित किया जाता है । आपका यहाँ पर स्वागत है । मैं आपकी पूजा करूँगा ।५। हे वागीश्वरे-श्वरि ! परमामोद और सुगन्धित श्रेष्ठ यह पाद्य मेरे द्वारा निवेदित है । हे महेश्वरि ! आप प्रसन्न होइये ।४। हे त्रिभुवनों के द्वारा समर्चिने ! दूर्वा और तंडुलों से मिश्रित और कपूर और अगुरु से पूरित मुझसे दिया हुआ यह अर्घ्य है इसको ग्रहण कीजिए ।५। आप अर्थात् जल साक्षात् नारायण हैं और जलों में यह समस्त चराचर जगत् विद्यमान रहता है । हे देवि ! जलों से आपके लिये यह आचमन निवेदन करता हूँ ।६। हे वरानने ! वाजिमेध यज्ञ के फल की प्राप्ति के लिये यह मधु-पर्क मैंने निवेदित किया है । हे माता ! भुवनेश्वरि ! इसको आप ग्रहण कीजिए ।७। इसके अनन्तर फिर आचमनीयक के पूर्वोक्त मन्त्र के द्वारा आचमनीय समर्पित करना चाहिए ।

शंखस्थमुद्रकं पुण्यं सुगन्धि सुमनोहरम् ।
निवेदितं महादेवि स्नानीयं प्रतिगृह्यताम् ।।८
त्वं देवि परमेशानि परब्रह्मस्वरूपिणी ।
गृहाण वस्त्रमिदं देवि यज्ञसूत्रमिदं शुभे: ।।६
ज्योतिषां ज्योतिरेका त्वम् अनादिनिधनेऽनघे ।
मया दत्तमलकारमलङ्कुरु नमोऽस्तु ते ।।१०

सुगन्धि दुर्गमं नान्यं कुमुदोत्पलमालिनम् ।
सितपीताऽरुणादानं गृहाण पुष्पं वरानने ॥११

धूपं गुग्गुलसंयुक्तं चन्दनाऽगुरुचर्चितम् ।
दशाष्टाङ्गसमुद्भूतं गृहाण परमेश्वरि ॥१२

शङ्ख में स्थल जल परम पुण्य अर्थात् पवित्र सुगन्धित और सुमनोहर है। महादेवि ! परम सुन्दर इस जलको मेरे द्वारा अर्पित किया है। उस स्थानीय को आप ग्रहण कीजिए ।८। हे देवि ! आप तो परमेशानी हैं और परब्रह्म के स्वरूपवाली हैं। हे शुभे ! आप इस वस्त्र को ग्रहण कीजिए। यह यज्ञ सूत्र है ।९। हे अनघे ! आप तो ज्योतियोंमें एक ही ज्योति हैं। आप अनादि निधन हैं। मेरे द्वारा यह अलङ्कार अर्पित किया जाता है इससे आप अपने को अलंकृत करिए। आपके लिए मेरा नमस्कार है ।१०। हे वरानन ! परम सुगन्ध से युक्त जैसा कि अन्य कोई नहीं है, कुमुदोत्पलों माला वाला सितपीत और अरुण से युक्त यह पुष्प है इसको आप ग्रहण कीजिए ।११। यह धूप गूगल से समन्वित और चन्दन तथा अगरु से चर्चित है तथा दशाष्टाङ्ग से समुद्भूत है। हे परमेश्वरि ! इसको आप ग्रहण कीजिए ।१२।

परं ज्योति परं ब्रह्मजगदेकं सनातनि ।
भूतये मम देवेशि दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥१३

यद् दत्तं परया भक्त्या फलमूलादिकं मया ।
गृहाण परमेशानि नैवेद्यं सुमनोहरम् ॥१४

नैवेद्यं विविधं रम्यं नानाफलसमन्वितम् ।
शर्करासंयुतं कृत्वा पायसं च निवेदयेत् ॥१५

अशेषजगदाधारभूते त्रैलोक्यवन्दिते ।
प्रदक्षिणमहं वन्दे विद्वत्सु पादपंकजम् ॥१६

धान्यं मुद्गकलायं च राजीवस्य तिलस्य च ।
व्यक्ताऽनेकफलयुक्तां रचनां विनिवेदयेत् ॥१७

प्रार्थना

प्राणान् रक्ष यशो रक्ष पुत्रदारधनानि च ।
सर्वरक्षाकरी यस्मात् त्वं देवि भुवनेश्वरि ॥१८

इति मन्त्रैः श्रीसूक्तैर्वा यत्र सम्पूजयेत् । ततः पश्चात् दक्षिणां दद्यात् ।

हे सनातनि ! यह परम ज्योति और परम ब्रह्म है और यह एक जगत् है । हे देवेशि ! मेरी मति के लिए आप इस दीप को ग्रहण कीजिए ।१३। मेरे द्वारा परभक्ति के भाव के द्वारा जो फल और मूल आदि जो आपकी सेवा में निवेदित किया गया है । हे परमेशानि ! इस सुमनोहर नैवेद्य को आप ग्रहण कीजिए । अनेक प्रकार का नैवेद्य जो परम रम्य और विविधि फलों से समन्वित है-शर्करा से संयुक्त करके पायस को निवेदित करना चाहिए ।१५। हे समस्त जगतों के आधार स्वरूप वाली ! आप तो तीनों लोकों द्वारा वन्दित हैं । मैं प्रत्येक क्षण में विद्वानों के पाद पंकज की वन्दना करता हूँ ।१६। मुद्गकलाय धान्य कट फलों से युक्त राजीव और तिल की रचना का निवेदन करे ।१७। प्रार्थना हे भुवनेश्वरि ! हे देवि ! आप जिस कारण से सब की रक्षा करने वाली हैं अतएव प्राणों की रक्षा करो-यश की रक्षा कीजिए और पुत्र द्वारा तथा धन की रक्षा करो ।१८। इन मन्त्रों से और श्रीसूक्त से यन्त्र का अर्चन करना चाहिए । इसके पीछे दक्षिणा देवे ।

यन्त्रसंस्कारसामग्री

(१) यन्त्रम् (२) पञ्चगव्यम् (३) पात्रम् (४) शीतलजलम् (५) कुङ्कुमकस्तूरी (६) पञ्चाऽमृतम् (७) दुग्धम् (८) जलम् (९) धूपम् (१०) दधि (११) घृतम् (१२) मधु (१३) शर्करा (१४) कलशम् (१५) रोचना (१६) कुशाः (१७) षोडशोपचाराः (१८) पट्टसूत्राणि (वस्त्रम्) (१९) अष्टोत्तरशताहुतिदानम् (२०) दक्षिणा । कुल २० है ।

यन्त्र, पञ्चागव्य, पात्र, शीतल जल, कुंकुम, कस्तूरी, पंचामृत, दुग्ध, जल, दधि, घृत, मधु, शर्करा, कलश, रोचना, कुशा, षोडश उपचार, पट्टसूत्र (वस्त्र) अष्टोत्तरशत आहुतिदान, दक्षिणा कुल २० हैं।

यन्त्र-संस्कार-विधि

वामकेश्वर तन्त्र

भैरव्युवाच--

चक्रं चेदं महादेव त्वप्रसादान् मया श्रुतम्।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि प्रतिष्ठाकर्मनिर्णयम् ॥१

ईश्वर उवाच--

शृणु देवि महाभागे जगत्कारिणी केलिनि।
तस्योद्यापनकर्माङ्ग सर्वकर्मविनिर्णयम् ॥२
स्नात्वा संकल्प्यवै मन्त्री गुरोर्वचनमाचरेत्।
पञ्चगव्यं ततः कृत्वा शिवमन्त्रे नाभिमंत्रितम् ॥३
(पंचाक्षरेण हौं वा)
तत्र चक्रं क्षिपेन् मन्त्रीं प्रणवेन समाकुलम् ॥४
तदुद्धृत्य ततश्चक्रं स्थापयेत् स्वपात्रके।
पञ्चामृतेन दुग्धेन शीतलेन जलेन वा ॥५
चन्दनेन सुगन्धेन कस्तूरीकुङ्कुमेन च।
पयोदधिधृतक्षौद्रशर्कराद्यै रनुक्रमात् ॥६
ततो धूपान्तरैः कुर्यात् पञ्चामृतविधि ततः।
हाटकैः कलशैर्देवीमष्टभिर्वापिपूरितैः ॥७

भैरवी ने कहा–हे महादेव ! यह चक्र तो मैंने आपकी प्रसन्नता या कृपा से सुन लिया है। इसके पश्चात् अब मैं प्रतिष्ठा कर्म के निर्णय को श्रवण करना चाहती हूँ।१। श्री ईश्वर ने कहा–हे केलिनि ! हे देवि ! आप तो महान् भाग्यवती हैं और जगतों के कारण स्वरूपा हैं।

आप सुनिए—उसके उद्यापन कर्म का अङ्ग सर्व कर्म-विनिर्णय को सुनिए ।२। मन्त्र के धारण कर्त्ता पुरुष को स्नान करके संकल्प करना चाहिए और अपने गुरु के वचन का समाचार करना चाहिए। इसके उपरान्त पञ्चगव्य बनाकर उसको शिव मन्त्र से अभिमन्त्रित करे। मंत्र पञ्चाक्षर अर्थात् 'ओं नमः शिवाय' हो अथवा ओं हौं जूं सः-यह मन्त्र होवे। फिर उससे निकालकर उस चक्र को अपने पात्र में स्थापित करे। फिर पञ्चामृत से–दूध से अथवा शीतल जल से सुगन्धित चन्दन से और कस्तूरी कुंकुम से स्नान करावे। क्रम से दुग्ध, दधि, घृत, क्षौद्र (शहद) और शर्करादि से क्रम से स्नान करावे ।३६। फिर धूपान्तरों से करे और फिर पंचामृत विधि को करे। सुवर्ण के कलश जो आठ होवें और जल से भरे हुए होवें ।७।

कषायजलसम्पन्नैः करयेत् स्नानमुत्तमम् ।
स्नानं समाप्यैतां स्थापयत् स्वर्णपात्रके ॥८
यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि ।
तन्नो यन्त्रं प्रचोदयात् ॥९
स्पृष्ट्वा यन्त्रं कुशाग्रेण गायत्र्या चाभिमन्त्रितम् ।
अष्टौत्तरशतं देवि देवताभावसिद्धये ॥१०
आत्मशुद्धि ततः कृत्वा षडङ्गै र्देवता यजेत् ।
तत्रावाह्य महादेवी जीवन्यासं च कारयेत् ॥११

तथा कषाय जल से सुसम्पन्न होंगे । इसके द्वारा उत्तम स्नान कराना चाहिए। स्नान की इस क्रिया को समाप्त करके फिर उस देवी को किसी सुवर्ण के पात्र में स्थापित करा देवे ।८। 'यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्रायधीमहितन्नो यन्त्रं प्रचोदयात्' इस गायत्री का उच्चारण करते हुए यन्त्र का स्पर्श करके कुशाग्र से अभिमन्त्रित करे। हे देवि ! देवता के भाव की सिद्धि एक सौ आठ बार पढ़ें ।९-१०। फिर आत्मशुद्धि करके षडङ्गों से देवता का यजन करे। उसमें

फिर महादेव का आवाहन करके जीव (प्राण) का न्यास करना चाहिए ।११।

जीवन्यासमन्त्रः शारदायाम्

प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य विधानमभिधीयते ।
येन प्रजापति मन्त्री प्राणवन्तो भवन्ति ते ।१२
पाशाङ्कुशयुता शक्तिर्वाणविन्दुविभूषिता ।
याद्यां सप्त सकरांतः व्योमसध्येन्दुसंयुतम् ।१३
तदन्ते हंसमन्त्रः स्यात् ततोऽमुष्याः पदं वदेत् ।
'प्राणं इह' वदेत् पश्चात् 'इह प्राणास्वतः' परम् ।१४
'अमुष्या जीव इह' स्थितिस्ततोऽमुष्याः पदं वदेत् ।
सर्वेन्द्रियाणि अमुष्या वाङ्मनश्चक्षुरन्ततः ।१५
श्रोत्रघ्राणपदे प्राणा इहाऽऽगत्य सुखं चिरम् ।
तिष्ठन्त्वग्निधूरन्ते प्राणमन्त्रोऽयमीरितः ।१६

जीव-न्यास का मन्त्र शारदा में कहा-अब प्राण प्रतिष्ठा के मन्त्र का विधान कहा जाता है-जिसके द्वारा मन्त्र प्रजापति हैं वे प्राण वाले होते हैं। वंश और अँकुश से युक्त शक्ति जो कि वाण विन्दु से विभूषित हैं पाद्य सप्त सकारान्त व्योम मध्यन्दु से संयुक्त ।१२-१३। उसके अन्त में मन्त्र होवे और फिर 'अमुष्य' इस पदका उच्चारण करे अम्रकी अर्थात् बगलामुखी देवी के 'प्राण-इह' अर्थात् प्राण यहाँ आवे यह बोलें । पीछे इसके अनन्तर 'इह प्राणः' यह बोलना चाहिए। फिर 'अमुष्या जीव इह' यह कहकर 'अमुष्याः स्थिति'-इस पद को कहना चाहिए । मनुष्या अर्थात् इस देवी की समस्त इन्द्रियाँ-वाक्मनः चक्षुःश्रोत्र घ्राण यहाँ आकर चिरकाल तक सुख पूर्वक स्थित होवें । अन्त में स्वाहा पद कहे । यह प्राण प्रतिष्ठा का मन्त्र कहा गया है ।१४-१६।

(अमुष्याः स्थाने मन्त्रदेवतानाम लिखेत् ।) ततः प्राणशक्तिं ध्यात्वा उपचारैः षोडशभिः महामुद्राभिः सदाफलताम्बूलैः

नैवेद्यनिकरैः देवीं तत्र समर्चयेत
पट्टसूत्रादिकं दद्यात वस्त्राऽलंकारमेव च ।
मुकुटं चामरं घण्टां यथायोग्यं महेश्वरि ।१७
सनमेतत् प्रयत्नेन दद्यादात्महिते रतः ।
ततो जपेत सहस्रं च सकलेप्सितसिद्धये ।
बलिदानं ततः कुर्यात प्रणमेच्चक्रराजकम् ।१८

अमुष्याः पद जहाँ है वहाँ पर मन्त्र के देवता का नाम लिखे। इसके उपरान्त प्राण शक्ति उससे आ गयी है–ऐसा ध्यान करके षोडश-उपचारों से, महामुद्राओं से सदा फल ताम्बूलों से, नैवेद्यों के समूहों से वहाँ पर देवी का समर्चन करना चाहिए। फिर यह सूत्र आदि तथा वस्त्र यथायोग्य अर्पण करे।१७। आत्मा के हित में निरत होकर यह सब अर्पित करना चाहिए। फिर सफल अभिलषितों की सिद्धि के लिए एक सहस्र मन्त्र का जप करे। फिर बलिदान करे और अन्तमें चक्रराज के लिए भक्ति भाव से समन्वित होकर प्रणाम करना चाहिए।१८।

बगला पूजन विधि

मन्त्र–

ॐह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखंपदंस्तम्भयजिह्वां कीलय कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ ।

मन्त्र–

ॐह्लीं ब्रह्मास्त्रायै विद्महे । स्तम्भनबाणायै धीमहि तन्नो बगला प्रचोदयात्

विनियोग–

ओं अस्य श्रीबगलागायत्रीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीछंदः बगलानाम्नी चिन्मयशक्तिरूपिणी गायत्री देवता, ओं बीजं ह्लीं शक्तिः विद्महे क्रीलकं गायत्रीजपे विनियोगः ।

संध्या विधि–

आचमन मन्त्र–

'ओं आत्मतत्वाय स्वाहा । ओं विद्यातत्वाय स्वाहा । ओं शिवतत्वाय स्वाहा ।'

शिखा बन्धन मन्त्र–

'ओं मणिधारिणी वज्रिणि महाप्रतिसरे रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा ।'

मूल मन्त्र से तिलक करके इसी से तीन बार प्राणायाम करे फिर निम्न संकल्प करके विनियोग पढ़े–

संकल्प–

देशकालौ संकोर्त्य ओमद्य श्रीबगलामुखीप्रीतये प्रातः संध्या महं करिष्ये ।'

विनियोग–

'ओमस्य श्रीबगलामुखीमहामन्त्रस्यनारदोऋषिःबृहतीच्छंदः श्रीबगलामुखी देवता ह्लीं बीजं स्वाहा शक्तिःमम सकलकामना सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।'

ऋष्यादिन्यास–

नारदऋषये नमः शिरसि । बृहतीच्छन्दसे नमः मुखे । बगलामुखीदेवतायै नमः, हृदि । ह्लीं बीजाय नमः, गुह्ये ।

स्वाहाशक्तये नमः पादयोः ।

करन्यास–

ओं ह्लीं अङ्ग ष्ठाभ्यां नमः । बगलामुखि तर्जनीभ्यां नमः;। सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां नमः,। वाचं मुखं स्तम्भय अनामिकाभ्यां नमः, जिह्वां कीलयकीलय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । बुद्धि विनाशय ह्लीं ओं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अंगन्यास–

ओंह्लीं हृदयाय नमः बगलामु खी शिरसे स्वाहा । सर्वदुष्टानां शिखायै वषट् । वाचं मु खं पदं स्तम्भय कवचाय हुम् । जिह्वां कीलय कीलय नेत्रत्रयाय वौषट् । बुद्धि विनाशय ह्ली ओं अस्त्राय फट् ।

प्रातःकाल का ध्यान–

उद्यदादित्यसंकाशां पुस्तकाक्षरां स्मरेत् ।
कृष्णाजिनधरां ब्राह्मीं ध्यायेत्तारांकिताम्बरे ॥

मध्याह्न ध्यान–

शुक्लां शुक्लाम्बरधरां वृषवाहनकृताश्रयम् ।
त्रिनेत्रां वरदां पाशं शूलं च कोटिकाम् ॥
सूर्यमण्डलमध्यस्थां ध्यायेद् देवीं समभ्यसेत् ॥

सायंकाल ध्यान–

श्यामवर्णा चतुर्बाहुं शंखचक्रलसत्काराम् ।
गदापद्मधरां देवी सूर्यासनकृताश्रयाम् ।
सायाह्ने वरदां देवी गायत्रीं स्मरेद्धृदि ॥

मार्जन–

मूल मन्त्र के उच्चारण से तीन बार इष्टदेव के मस्तक पर, दो बार भुजाओं पर, तीन बार हृदय पर, तीन बार नाभि में और दोबार पैरों पर जल छिड़कते हुए मार्जन करें ।

कवचं–

ओं अस्य श्री बगलामुखीकवचस्य नारदऋषिःअनुष्टुप् छंदः श्रीबगलामुखी देवता लं बीज ईं शक्तिः ऐं ।

कीलकम् पुरुषार्थ चतुष्टप्राप्तये जपे विनियोगः ।
शिरो मे बगला पातु हृदयमेकाक्षरी परा ।
ॐ ह्लीं ओं मे ललाटं च बगला वैरिनाशिनी ।१
गदाहस्ता सदा पातु मुखं मे मोक्षदायिनी ।
वैरिजिह्वाधरा पातु कण्ठं मे बगलामुखी ।२
उदरं नाभिदेशं च पातु नित्यं परात्परा ।
परात्परतरा पातु मम गुह्यं सुरेश्वरी ।३
हस्तौ चैव तथा पातु पार्वती परिपातु मे ।
विवादे विषमे घोरे संग्रामे रिपुसंकटे ।४
पीताम्बरधरा पातु सर्वाङ्ग शिवनर्तकी ।
श्रीविद्या समया पातु मातंगी पूजिता शिवा ।५
पातु पुत्रं सदा चैव कलत्रं कालिका मम ।
भ्रातरं पातु नित्यं मे पितरं शूलिनी सदा ।६
रन्ध्रं हु बगलादेव्याः कवचं मन्मुखोदितम् ।
नैव देययमुख्याय सर्वसिद्धिप्रदायकम् ।७
पठनादुद्धारणादस्य पूजनाद् वाञ्छितं लभेत् ।
इदं कवचं न ज्ञात्वा यो जपेद्धि बगलामुखीम् ।८
पिबन्ति शोणितं तस्य योगिन्यः प्राप्य सादराः ।
वश्ये चाकर्षणे चैव मारणे मोहने तथा ।९
महाभये विपत्तौ च पठेद्वा पाठयेत्तः ।
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद् भक्तियुक्तस्य पार्वति ।१०

अन्तर्मातृकान्यास–

अस्य अन्तर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः

मातृका सरस्वती देवता ह्लीं बीजानि स्वराः शक्तिः अव्यक्त कीलकं श्रीबालात्रिपुररित्वेन ममशरीरशुद्धयर्थंअन्तर्मातृकान्यासे विनियोगः।

श्री पीताम्बरार्चन पद्धति

गुं गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गणेशाय नमः । श्रीपीताम्बरायै नमः ।

ओं गुं गुरु वर्णों के लिए नमस्कार है, श्री गणेश के लिए नमस्कार है श्री पीताम्बरा के लिए नमस्कार है।

श्रीमान् साधकेन्द्रः ब्राह्मे महूर्त्ते उत्थाय, प्रातःकृत्यं विधाय शौचमुखमार्जनादि कृत्वा,शुद्धे वाससी परिधाय, शुभासने प्राङ्-मुखो उदङ्मुखो वा उपविश्य, मूलेनाचम्य, प्राणानायम्य, वामे हस्ते विभूतिं गृहीत्वा, जलेन मिश्रितां कृत्वा--

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृताम् ।

इति मन्त्रेणाभिमन्त्र्य, 'त्र्यायुष्यं' इति ललाटादिस्थानेषु धारयित्वा, रुद्राक्षमालां धारयेत् ।

श्रीमान् साधना करने वाला श्रेष्ठ पुरुष प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में शय्या से उठ जावे और शौचादि प्रातः कालीन सब कृत्यों को समाप्त करे। फिर विशुद्ध धौत वस्त्र धारण करके परम शुभ आसन पर पूर्व की या उत्तर की ओर मुखकर बैठ जावे । मूल मन्त्र पढ़कर आचमन करे और प्राणायाम करना चाहिए । अपने वाम कर में विभूति ग्रहण कर उसको जल से मिश्रित करें । त्र्यम्बक यजामहे सुगन्धि पुष्टि वर्धनम् । उर्वारु-कमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्'-इस मन्त्र के द्वारा अभिमंत्रित

करके 'त्र्यायुष्य' इससे ललाट आदि स्थानोंपर धारण करके रुद्राक्ष की माला को धारण करे।

ॐ ह्लीं आत्मतत्वाय स्वाहा, ॐह्लीं विद्यातत्वाय स्वाहा।
ॐ ह्लीं शिवतत्वाय स्वाहा, ॐ ह्लीं सर्वतत्वाय स्वाहा।

मूलेन शिखां बध्वा, मूलेन प्राणानायुम्य, हस्ते जलं गृहीत्वा अद्येत्यादि ममाशेषदुरितक्षयपूर्वकमभीष्टफलप्राप्त्यर्थं श्रीपीताम्बराप्रीतये प्रातः (सायं) संध्यां करिष्ये।

फिर–ओं ह्लीं आत्मतत्वाय स्वाहा, ओं ह्लीं विद्यात तत्वाय स्वाहा, ओं ह्लीं शिवत्वाय स्वाहा, ओंह्लीं सर्व तत्वाय स्वाहा। फिर मूल मन्त्र से शिखा में ग्रन्थि लगावे। मूल मन्त्र से तीन वार प्राणायाम करे। इसके अनन्तर हाथ में जल लेकर संकल्प करना चाहिए। अद्य-इत्यादि के द्वारा देशकाल आदि का स्मरण करके मेरे सम्पूर्ण पापों के क्षय के साथ् अभीष्ट के फल की प्राप्ति के लिए श्री पीताम्बरा देवी की प्रीति के वास्ते मैं प्रातःकालीन संध्या करूँगा।

ऋष्यादिकरषडंगन्यासं कृत्वा, दक्षिणकरे जलमादाय, वामेनाच्छाद्य, मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य, तज्जलं वामहस्ते गृहीत्वा, दक्षिणेस्यतत्वमुद्रया मूलमन्त्रसहितैःनखबिन्दुनमोमन्त्रैः मातृःकाक्षरैः स्वशिरसि प्रोक्षयेत्। अवशिष्टजलं मूलेन त्रिवारमभिमन्त्य।

इसके पश्चात् ऋषि आदिका षडङ्ग न्यास करे। फिर दाहिने हाथ में जल ग्रहण करके वाम कर से ढके और मूल मन्त्र को सात बार पढ़ कर अभिमन्त्रित करना चाहिए। उस जल को बाँये हाथ में लेकर दाहिने हाथ की तत्व मुद्रा से मूल मन्त्र के सहित नख विन्दु नमः अन्त में रखकर मातृका को अक्षरों से अपने शिर पर प्रक्षिप्त करे। अवशिष्ट जल को मूल मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित करे।

दक्षकरे निधाय, मूलमुच्चरन् वामतत्वमुद्रया शिरसि त्रिः प्रोक्षयेत् तेजोरूपं तज्जलं इडयाऽऽकृष्य, स्वदेहान्तःस्थसकल-कल्मषक्षालनेन कृष्णतामपन्नं विभाव्य,स्ववामभागे कल्पितवज्र शिलायां ,ॐ ह्लीं पशु हुं फट् ।' इति पाशुपतास्त्रमन्त्रेण भूमौ आस्फालयेत् । हस्तौ प्रक्षाल्य, आचम्य, पुनर्जन्म दक्षहस्ते गृहीत्वा, तत्वमुद्रया हेमामालिनी स्वाहा' इति त्रिः शिरसि प्रोक्षयेत् पूर्ववदाचम्य,सूर्यमण्डले यथोक्तरूपां देवीं ध्यात्वा अर्घ्यपात्रे फल पुष्पगन्धाक्षतैः सह जलं गृहीत्वा उत्थाय--

उसको दक्षिण कर में रक्खे और मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुए वाम तत्व मुद्रा में शिर पर तीन बार प्रक्षेप करना चाहिए । तेजः स्वरूप उस जलको इडा से आकृष्ट करके अपने देह के अन्दर स्थित सम्पूर्ण कल्मष के प्रक्षालन से कृष्ण वर्ण को विभाजन करके वाम भाग में कल्पना की हुई वज्र की शिला पर 'ॐ ह्रीं पशुं हुं फट्-इस पशुपत अस्त्र से भूमि पर आस्फालित कर देवे । फिर दोनों हाथों को धोकर, आचमन करके फिर दाहिने हाथ में जल लेवे । तत्व मुद्रा से 'अमृत शालिनी स्वाहा' इससे तीन वार शिरपर प्रोक्षण करना चाहिए । फिर पूर्व की ही भाँति आचमन करके सूर्यमण्डल में देवी का ध्यान करे जैसा कि उसका स्वरूप बतलाया जा चुका है। इसके अनन्तर अर्घ्य पात्र में फल-पुष्प गन्ध-अक्षतों के साथ जल लेकर उठ जावे ।

ॐ ह्लीं बगलामुखीं विदमहे दुष्टस्तम्भनीं धीमहि ।
तन्नः शक्ति प्रचोदयात् ।

उद्यदादित्यवर्तिन्यै शिवचैतन्यमध्यै श्री बगलामुख्यै इदमर्घ्यं स्वाहा । इति अर्घ्यत्रयं दत्वा, उपविश्य, आचम्य, प्रणवादिमूल-मन्त्रेण षडंगं विधाय, देवीं ध्यात्वा, गायत्रीं यथाशक्ति प्रजप्य--

ओं ह्लीं बगलामुखीं विद्महे, दुष्ट स्तम्भिनीं धीमहि, तन्नः शक्ति प्रचोदयात्' इस मन्त्र के द्वारा उदीमान आदित्य के मण्डल में स्थित रहने वाली, शिवके चैतन्य से परिपूर्ण श्रीबगलामुखी के लिए यह अर्घ्य है स्वाहा है। इस प्रकार से तीन बार अर्घ्य देकर बैठ जावे और आच-मन कर जिसके आदि में प्रणव (ओंकार) है ऐसे मूल मन्त्र के बीज से षडङ्ग करके देवी का ध्यान करे यथाशक्ति गायत्री का जाप करे।

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान् महेश्वरि।'
एवं संध्यां विधाय योन्यौ प्रणमेत्। ततः शुद्धजलेन--
ॐ ह्रीं हंसः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय श्रीसूर्याय इदमर्घ्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।
इति अर्घ्यत्रयं दद्यात्।

इसके अनन्तर 'गृह्याति' इत्यादि के द्वारा अर्थात् आप गुह्य से भी अत्यधिक गुह्य की गोप्ती हैं। मेरे किए हुए जाप को ग्रहण कीजिए। हे देवी! मेरी सिद्धि इस जाप से हो जावे। हे महेश्वरि! यह सिद्धि आपके ही प्रसाद (प्रसन्नता) से होवे। इस रीति से संध्या करके योनि के लिए प्रणाम करे। अर्थात् योनि मुद्रा प्रदर्शित करते हुए प्रणाम करना चाहिए। इसके उपरान्त शुद्ध जल से—'ओं ह्री हं सः मार्तण्ड भैरवाय।' प्रकाश की शक्ति के सहित का श्री सूर्य्याय इदमर्घ्यं गृहाण-गृहाणस्वाहा' इस मन्त्र से तीन अर्घ्य सूर्यदेव को देवे।

शुद्धजले तीर्थमावाह्य, 'व' इति धेन्वाऽमृतीद्यत्य, मूलेन अष्टवारमभिमन्त्र्य, श्रीचक्रं विभाव्य स्वाहृदयात्, सपरिवारां सायुधां श्रीबगलामुखीं तर्पयामि नमः' प्रति दशधा सन्तर्प्य ओं ऐं ह्रीं श्रीं' गुरुपादुकामन्त्रमुच्चार्य स्वगुरुश्री अमुकानन्द-नाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः' एवं परं गुरुं परमेष्ठिगुरुं च तर्पयेत्। ततः दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ, श्रीपादुकां

पूजयामि तर्पयामि नम, । ततः तीर्थं विसृज्य अनेन तर्पणार्च्येन कर्मणा श्रीपीताम्बरा प्रीयताम् ।

फिर शुद्ध जल में तीर्थ का आवाहन करके 'व' इस बीज से धेनु-मुद्रा से अमृतीकरण करे । फिर मूल मन्त्रसे आठ बार अभिमन्त्रण करके फिर स्वयं हृदय से श्री चक्र की विभावना करके--सपरिवारां सायुधां श्री बगलामुखी तर्पयामि नमः । इससे दश बार तर्पण करना चाहिए । फिर 'ओं ऐं ह्री श्री' श्री गुरु पादुका के मन्त्र का उच्चारण करके अपने गुरुदेव श्री अमुकानन्द नाथ की श्रीपादुका का पूजन करता हूँ, तर्पण करता हूँ, नमस्कार है । इसी प्रकार से पर गुरु, परमेष्ठि गुरु का तर्पण करता हूँ ऐसे तर्पण करना चाहिए । इसके अनन्तर दिव्यौध, सिद्धौध, मानबोध की श्री पादुका का पूजन करता हूँ, नमस्कार है । इसके उपरान्त तीर्थ का विसर्जन करके इस तर्पण नामक कर्म्म से श्री पीताम्बरा देवी प्रीतियुक्त होवें ।

॥ इति तर्पणम् ॥

अथ पूजाविधि–

पूजागृहद्वारदेश गत्वा 'ॐ ऐ ह्रीं श्रीं' द्वाराधिष्ठितगणेशा-दिदेवताभ्यो नमः' इति सम्पूज्य,आत्मानं तेजो रूपं ध्यात्वा द्वार देवताज्ञां गृहीत्वा, वामांगसंकोचेन दक्षिणपादपुरः सरः गृहान्तः प्रविश्य--

पूजा करने के गृह के द्वार पर पहुँचकर 'ओं ऐं ह्रीं श्रीं' द्वारा धिष्ठित गणेशादि देवताओं के लिए नमस्कार है-इस मन्त्र से भली भाँति अर्चन करके अपने आपको तेज स्वरूप वाला ध्यान करके द्वार पर स्थित देवताओं की आज्ञा को ग्रहण करके बाँये अङ्ग के संकोच से पहिले अपना दाहिना पाद आगे बढ़ाकर पूजा गृह के अन्दर प्रवेश करना चाहिए। वहाँ पर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करे–

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि स्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशः ।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥

इति पठित्वा 'हुँ फट् स्वाहा' इति भूतानि निःसारयेत् । पूजागृहे एभिर्मन्त्रैस्तिलसर्षपाक्षतान् विकिरेत् । नैऋर्त्कोणे वास्तुपुरुषाय नमः । ईशाने त्रिकोणं कृत्वा, तत्र साधारं दीपं संस्थाप्य ॐ रक्तवर्णद्वादशशक्तिसहिताय दीपनाथाय नमः, इति सम्पूज्य प्रार्थयेत् ।

वे भूत यहाँ से दूर चले जावें जो भूत इस भूमि में संस्थित हैं और जो प्राणी विघ्नों के करने वाले हैं अर्थात् अर्चन के कर्म में बाधा उपस्थित करने वाले हैं वे सभी भगवान् शिव की आज्ञा से नष्ट हो जावें। पिशाच, भूत सभी दिशाओं से यहाँ से अपक्रमण कर जावें। मैं सबके अविरोध से इस पूजा के कर्म को समारम्भ करता हूँ। यह पढ़कर 'हुँ फट् स्वाहा' यह पढ़कर समस्त भूतों का वहाँ से निःसारण कर पूजा के गृह में इस उक्त मन्त्रों से तिल, सर्षप और अक्षरों का विकिरण करें। नैऋर्त्य कोण में वास्तु पुरुष के लिए नमस्कार है । ईशान कोण में त्रिकोण बनाकर यहाँ पर आधार के सहित दीप की संस्थापना करे । फिर जो एक वर्ण का द्वादश शक्ति सहित दीपनाथ को नमस्कार इससे पूजन कर प्रार्थना करे –

भो दीप देवीस्वसपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ॥

इति नत्वा, 'वेदिकायै नमः इति गन्धपुष्पैः पीठ सम्पूज्य, 'ॐ जप-ध्वनिमन्त्रमामःस्वाहा ।' इति घण्टां वादयेत्। भैरवाज्ञां प्रार्थयेत् ।

'तीक्ष्णदन्त महाकाय कल्पान्तदहनोपमम् ।
भैरवाय नमस्तुभ्यम् अनुज्ञां दातुमर्हसि ।'

हे दीप ! आप देवी के रूप वाले हैं। आप मेरे कृत कर्म्म के साक्षी हैं और अविघ्नों के करने वाले हैं। जब तक मेरे कर्म की समाप्ति होवे तब तक आप यहाँ पर सुस्थिर होकर रहें। इस रीतिसे दीपक को नमस्कार करके 'वेदिकायै नमः' इसका उच्चारण करके गन्धाक्षत पुष्पों से पीठका यजन करके 'ओं जप ध्वनि मन्त्रमात स्वाहा' इससे घण्टा का वादन करना चाहिए। फिर भैरवदेव से आज्ञा प्राप्त करने की प्रार्थना करे। प्रार्थना मन्त्र तीक्ष्ण दन्त इत्यादि है। इसका अर्थ है-हे तीक्ष्ण दाँतों वाले ! आपका वपु महान् हैं। कल्प के अन्त में आप अग्नि के समान होते हैं। ऐसे भैरवदेव आपके लिए मेरा प्रणाम समर्पित है। अब आप सम्बर्धन करने के लिए मुझे अपनी अनुज्ञा प्रदान करने के लिए योग्य होते हैं।

ततः आसनं संशोध्रयेत्। 'ॐ रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा' इति मन्त्रेण भूमिं सम्प्रोक्ष्य, आसनाऽधः त्रिकोणमण्डलं कृत्वा, तत्र मायाबीजं विलिख्य, 'ॐह्लीं आधारशक्त्यै नमः' इति सम्पूज्य' वस्त्रेण संरक्ष्य तत्रासनमास्तीर्य, आसनात् त्रिकोणे गं गणपतये नमः' 'सं सरस्वत्यै नमः'। वायव्ये--'दुं दुर्गायै नमः'। ईशाने --क्षं' क्षेत्रपालाय नमः' इति सम्पूज्य, आसनं स्पृष्टवा--

इसके अनन्तर आसन संशोधन करना चाहिए। 'ओं रक्ष-रक्ष हुँ फट् स्वाहा-इस मन्त्र से भूमि का भली-भाँति प्रोक्षण करके आसन के नीचे के भाग में एक त्रिकोण की रचना करके उन त्रिकोण मंडल में माया बीज को लिखे। 'ओं ह्रीं आधार शक्त्यै नमः' इस मन्त्र से पूजन करके वस्त्रसे संरक्षण करना चाहिए। वहाँ पर आसन को लाकर आसन से त्रिकोण में 'गं गणपते नमः' सं सरस्वत्यै नमः, (वायव्य दिशायें) दुं दुर्गायै नमः। ईशान में-क्षं क्षेत्रपालाय नमः इस प्रकार से पूजन करके आसन की ओर देखें।

पृथ्वित्वया घृता लोका देवि त्वं विष्णुना घृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।

इति सम्प्रार्थ्य, प्राङ्मुखो उदङ्मुखो वा पद्मासनाद्यास नेनोपविश्य, मू लेनाचम्य, ॐ मधिधारिणि वज्रिणि महाप्रतिसरे रक्ष रक्ष हु ं फट् स्वाहा' इति शिखां बघ्नीयात् । ततो देव्या-दक्षिणवामपार्श्वयोः घृततैलदीपो प्रज्वाल्य, ओ३म् ऐं ह्रीं रक्त-वर्णद्वादशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नमः' इति पूजयित्वा--

हे पृथ्वि ! आपने समस्त लोकोंको धारण कर रखा है और आपको भगवान् विष्णु ने (बारह अवतार में भूमि को भगवान ने धारण किया था) धारण किया है । हे देवि ! अब आप मुझको धारण कीजिए और इस आसन को पवित्र कीजिए । इस प्रकार से प्रार्थना करके पूर्व दिशा या उत्तर की ओर मुख वाला होकर पद्मासन आदि के आसन पर उपविष्ट होकर मूल मन्त्र से आचमन करे । फिर 'ॐ मणिधारिणी ! वज्रिणी ! महाप्रतिसरे ! रक्ष-रक्ष हुँ फट् स्वाहा-इस मन्त्र का उच्चा-रण करके अपनी शिखा में ग्रन्थि लगावे । इसके अनन्तर देवी के दक्षिण और वाम पार्श्वों में घृत और तेल से दीपों को प्रज्वलित करे । ओंह्रीं श्रीं रक्तवर्णद्वादशक्तियुक्याय दीपनाथाय नमः-इसको उच्चारण करके इन दीपों का अभ्यर्चन करना चाहिए । फिर प्रार्थना करे-

भो दीप देवीरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ।।

इति प्रार्थयेत् । अस्त्रमन्त्रेण दिग्बन्धन विधाय, अंगुष्ठतर्ज-नीयोगेन 'ॐ नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट्' इति वह्नि-प्रकारं विचिन्त्य आचम्य, प्राणायामत्रयं कुर्यात् ।

हे दीप ! आप देवी का ही स्वरूप हैं । आप के द्वारा किये जाने वाले कर्म के साक्षी हैं अर्थात् स्वयम् ही मेरी कर्म के देखने वाले हैं और

मेरे किये जाने वाले कर्म्म में यदि कोई विघ्न-बाधा उपस्थित होवे तो उसको हटा देने वाले हैं अतएव मेरी करबद्ध प्रार्थनाहै जब कि तक मेरा यह कर्म साङ्ग समाप्त होवे तब तक सुस्थिर होकर आप यहाँ पर विराजमान रहें अर्थात् प्रज्वलित बने रहें। इस प्रकार से क्षपक की प्रार्थना करनी चाहिए। फिर अस्त्र मन्त्र के द्वारा समस्त दिशाओं का बन्धन करे। अ गुष्ठ और तर्जनी अंगुलि के योग से–ओं नमः सुदर्शनाय अस्त्राय फट् इस मन्त्रका उच्चारण करते हुए अपने चारों ओर वह्निका एक आकार (चहारदीवारी) है ऐसा चिन्तिन करे। फिर आचमन करके तीन बार प्राणयाम करना चाहिए।

संकल्प :

ॐतत्सदद्य परमात्मन आज्ञय प्रवर्तमानस्य श्री श्वेतवाराह कल्पेजम्बूद्वीपे भरतखण्डे अमुकप्रदेशे अमुकसम्वत्सरे अमुकस्थाने अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नःअमुकशर्माऽहं श्रीभगवत्याः पीताम्बरायाः प्रसादसिद्धिद्वारा मम सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थं यथाशक्ति तथा ज्ञानेन यथासम्भावितोपचारद्रव्यैः सांगावरणैः श्रीभगवतीपीताम्बरासपर्यां करिष्ये।

ततःस्ववामभागे गुरुपादुकामन्त्रेण गुरुं दक्षिणभागे गणपति मन्त्रेण गणपतिं च प्रणम्य, सुमुख, चतुरस्र गोक्षुर, योनिमुद्राः प्रदर्श्य, गुरुं नत्वा, स्वशिरसि सघट्टमुद्रां बध्वा--

ओं तत्सदद्य परमात्मन आज्ञया प्रवर्तमानस्य अमुक सम्वत्सरस्य श्री श्वेतवाराहकल्पे, जम्बूद्वीपे, भरतखण्डे, अमुक प्रदेशे, अमुक स्थाने अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, अमुक गोत्रोत्पन्नः, अमुक शर्मा अहं श्री भगवत्याः पीताम्बरायाः प्रसाद सिद्धि द्वारा मम सर्वाभीष्ट सिद्धयर्थ यथाशक्ति तथा ज्ञानेन यथा सम्भावित, उपचारःद्रव्यैः

साङ्गावरणैः श्री भगवती पीताम्बरा समर्पण करिष्ये । इस संकल्प के पश्चात् अपने वाम भाग में गुरु पादुका मन्त्र के द्वारा गुरुदेव के लिए और दक्षिण भाग में गणपति के मन्त्र से गणपति के लिए प्रणाम करके सुमुख, चतुरस्र, गोक्षुर और योनिमुद्रा प्रदर्शन करके गुरु को प्रणाम करके अपने शिर पर सघट्ट मुद्रा बाँधै ।

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपति पीठत्रयं भैरवम् ।
सिद्धौघ बटुकत्रय पदयुगं दूतीत्रयं मण्डलम् ॥
वीराद्यष्टचतुष्कर्षाष्ठिनवकं वीरावलीपंचकम् ।
श्रीमन्मालिनि मन्त्रराजसहितं वन्देगुरोर्मगुण्डलम् ।
वन्दे गुरुपदद्वन्द्वनवाङ्मनसगोचरम् ।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रिपुरं महः ।

इति पठित्वा ऋषयादिन्यासपूर्वकं श्रीगुरुपादुकामन्त्रं दशवारं जपेत् ।

फिर निम्न मन्त्रों का उच्चारण करना चाहिए--

श्रीनाथ आदि तीनों गुरुदेव, गणपति तीनों पीठ, भैरव सिद्धों का समुदाय, तीनों वटुक, पदयुग, तीनों दूतिवों का मण्डल, वीरादिक के आठ चतुष्क, षष्टि और नवक, वीरावलियों का पंचक, श्री मन्मोलिनी मन्त्रराज के सहित गुरुदेवों का मंडल गुरुदेवों के चरण युगल मनवाणी से गोचर को मैं वन्दना करता हूँ । वह पढ़कर ऋषि आदि के न्यास के सहित श्री गुरुपादुका के मन्त्र का दश वार जप करना चाहिए ।

ततः स्वयं रक्तगन्धाक्षतरक्ताम्बरस्रगाभरणैलंकृतः ताम्बूलतूरिताननः शिवोऽहमिति भावयन् स्ववामभागे वर्धनीकलश स्थापयेत् तद् यथा--

त्रिकोणवृत्तचसुरस्रमण्डलं विधाय 'ॐ मण्डलाय नमः' इति सम्पूज्य, 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, आधारं प्रक्षाल्य, मण्डलं विधाय 'ॐ धर्मप्रदद्वादशकलात्मने वह्निमण्डलाय नमः' इति आधारं

संपूज्य, मूलेन जलमापूर्य, तत्र 'क्रों, इत्यङ्कुश मुद्रया रात्रौ चन्द्रमण्डलात्, दिवसे सूर्य मण्डलात् तीर्थान्यावाह्य--

इसके अनन्तर स्वयं रक्त गन्ध, अक्षत, रक्ताम्बर, रक्तस्रक् और आभरण से समलंकृत होकर मुख में ताम्बूल खाकर मैं साक्षात् शिव ही हूँ--ऐसी भावना करता हुआ होवे और अपनी बाँयी ओर वर्धनी कलश की संस्थापना करनी चाहिए । उसका प्रकार इस तरह से है-- त्रिकोण वृत चतुरस्र मण्डल बनाकर 'ओं मण्डलाय नमः'इससे भलीभाँति अर्चन करके 'ओं ऐं ह्लीं श्रीं' आधार का प्रक्षालन करके मण्डल विधान करे। 'ओं धर्मप्रद द्वादश कलात्मने वह्निमण्डला नमः' इससे आधार का यजन करके मूलमन्त्र के द्वारा जल से आपूरित करे। वहाँ पर 'क्रों' इस अंकुश की मुद्रा से रात्रि में चन्द्र मण्डल में और दिन में सूर्य मण्डल में तीर्थों का आवाहन करना चाहिए।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु ॥

इति संपूज्य, सहस्रारे 'हुँ फट्' इति मन्त्रेण चक्रमुद्रया संरक्ष्य, गरुडमुद्रया निर्विषीकृत्य, 'हुम्' इति अवगुण्ठ्य, 'क्रों' इति अंकुमुद्रया 'ॐऐं ह्लीं श्रीं नमोभगवत्यशेषतीर्थालवाले शिव-जटाधिरूढे गङ्गे गंगाम्बिके स्वाहा' इति पठित्वा, मत्स्यमुद्रया-ऽच्छाद्य 'वं' इति धेन्वाऽमृतीकृत्य मूलमन्त्रेण सप्तधाऽभिमन्त्र्य, गन्धाक्षतैः संपूज्य प्रणमेत् ।

तीर्थों का निम्न प्रकार से नामोल्लेख करते हुए आवाहन करे-- हे गंगे ! हे यमुने ! हे गोदावरि ! हे सरस्वति ! हे नर्मदे ! हे सिन्धु ! हे कावेरि ! आप सब यहाँ पर अपना पदार्पण करके इस जलमें सन्निधि कीजिये । इस रीति से भली भाँति प्रार्थना करके 'ओं कामप्रद षोडश कलात्मने सोममण्डलाय नमः इस मन्त्र का उच्चारण करके

पूजन करे । फिर सहस्रार चक्र की मुद्रा से अर्थात् जिसमें सहस्र अर होवें ऐसे चक्र की मुद्रा प्रदर्शित करके 'हुँ फट् इस मन्त्रसे संरक्षण करे । गरुड़ की मुद्रा से निर्विषीकरण करे 'हुँ' । इससे अवगुण्ठन करके 'क्रों इस आकुद्य की मुद्रा से 'ओं ऐं श्री नमो भगवत्येशेष तीर्थलवाले ! शिवजटाधिरूढ़े ! गंगे । गंगाम्बिके ! स्वाहा—इस मन्त्र को पढ़कर मत्स्य की मुद्रा से आच्छादन करके व इसको पढ़कर धेनु की मुद्रा से अमृतीकरण करे और फिर मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके गन्धाक्षतों पूजन करके प्रणाम करना चाहिए ।

॥ इति वर्धन कलशार्चम् ॥

भूतशुद्धि :

ततो मूलेन श्री चक्रे पुष्पांजलि दत्वा, भूतशुद्ध्यादिन्यासान् कुर्यात् । तद् यथा--

मूलाधारस्थितां स्वेष्टदेवतारूपां विसतन्तुविभांविद्युत्प्रभापुजभासुरां कुंडलिनीं ध्यात्वा, उत्थाय हृत्कमले सगतां सुषुम्नावर्त्मना, प्रदीपकलिकाकारां जीवकलामादाय, ब्रह्मरन्ध्रगतां स्मरेत् 'ॐ हंसः सोऽहम्' इति मन्त्रेण जीवं ब्रह्मणि संयोज्य, तत्स्थानस्थितभूतानि प्रविलापयेत् । ॐ भुवः जले प्रविलापयामि, जलम् अग्नौ, अग्निं वायौ वायुम् आकाशे आकाशम् अहंकारे, अहंकारं महत्तत्वे, महत्तत्वं प्रकृतौ, प्रकृतिम् आत्मनि । आत्मनि च शुद्ध सच्चिदानन्दरूपोऽहमिति भावयेत् ।

इसके उपरान्त मूलमन्त्र से पुष्पांजलि देकर भूतशुद्धि आदि न्यास को करना चाहिए । वह इस प्रकार से है—अपने मूलाधार में संस्थित अपने इष्टदेवता के स्वरूप वाली, बिसतन्तु के सदृश, विद्युत् की प्रभा के पुंज के समान भासुरा कुण्डलिनी का ध्यान करके उठाकर हृदय कमल में संगत सुषुम्ना के मार्ग से प्रदीप की कालिका के आकार वाली जीवकला को लेकर ब्रह्मरन्ध्रता का स्मरण करना चाहिए । 'ओं हंसः

सोऽहम्' इस मन्त्र से जीवको ब्रह्म में से योजित करके उस स्थान में स्थित भूतों को प्रविलायित कर देना चाहिए। उसका प्रकार यह है- ओं भुवं जले प्रविलपायामि अर्थात् भू को जलमें प्रविलापित करता हूँ। जल को अग्नि में, अग्नि को वायु में, वायु को आकाश में, आकाश को अहंकार, में अहंकार को महत्तत्व को प्रकृति में और प्रकृति को आत्मा में प्रविलापत करे। फिर अपनी आत्माओं में शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूप वाला हूँ-ऐसी भावना करनी चाहिए।

ततः पापपुरुषं विचिन्त्य, वामनासया 'यं' बीजेन षोडशवार मापूर्य 'रं' बीजेन चतुःषष्ठिवारं कुंभयित्वा, पुनः 'यं' बाजेन द्वात्रिंशद्वारं रेचकेन भस्मीभूतं पापपुरुषं बर्हिनिस्सार्य, पुनः षोड शवारं वायुमापूर्य तद्भस्म अमृतधारयाऽऽप्लाव्य, 'लं' बीजेन चतुःषष्टिवारं कुम्भकेन घनीकृत्य, पुनः 'ईं' बीजेन द्वात्रिंशद्वारं रेचकेन प्राणान् उत्पाद्य कुंडलिनीशक्ति' 'सोऽहम्' इति मन्त्रेण परमात्मनः सकाशाद् अमृतमवजीवमादाय हृत्कमले समागतां, तत्र जीवं संस्थाप्य सुषुम्नामार्गेण मूलाधारगतां चिन्तयेत्।

इससे अनन्तर देहमें स्थित पाप पुरुषका ध्यान करके वाम नासिका से यं बीज को सोलह बार आपूरित करके रं बीज से चौसठ बार कुम्भित करके फिर यं बीज से बत्तीस बार रेचक से भस्मीभूत पाप पुरुष को न्यास द्वारा बाहर निकालकर फिर सोलहबार वायुको आपरित करे और उस भस्म को अमृत की धारा से आप्लवित करके 'लं' बीज से चौसठ बार कुम्भक से उसे भस्मीभूत करके फिर 'ईं' बीज से बत्तीस बार रेचक से प्राण से उत्पादन करके कुण्डलिनी शक्ति को सोऽहम् इस मन्त्र से परमात्मा के संकाश से अमृतमयजीव को लाकर हृत्कमल में समागत करे फिर वहाँ पर जीव को संस्थापित करे और सुषुम्ना मार्ग में मूलाधार से गई हुई का चिंतन करना चाहिए।

॥ इति भूतशुद्धिः ॥

अथ प्राणप्रतिष्ठा

हृदि हस्तं दत्वा, 'ओं श्रीं क्लीं मम सर्वेन्द्रियाणि स्थितानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।'

अपने हृदय पर हाथ रखकर मुख से–ओं श्रीं क्लीं मम सर्वेदियानि स्थितानि उहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा । इसी प्रकार से प्राणेन्द्रियों की प्रतिष्ठा की जाती है ।

अथ मातृकान्यास

अथान्तमातृका न्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः, मातृकासरस्वती देवता, ह्लीं बीजानि, स्वराः शक्तयः अव्यक्तं कीलकम्, मातृकान्यासे विनियोगः ।

ॐ ह्लीं अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

ॐ ह्लीं इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्या नमः ।

ॐ ह्लीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ ह्लीं एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः ।

ॐ ह्लीं ओं पं फं वं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।

ॐ ह्लीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

सर्वप्रथम अंगुष्ठादि न्यास करें । फिर हृदयादि न्यास करें । फिर षडङ्गन्यास करना चाहिए ।

इसके पश्चात् बहिर्मातृक न्यास करे ।

अथ हृदयादिन्यास

ॐ ह्लीं अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः ।

ॐ ह्लीं इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा ।

ॐ ह्लीं उं टं टं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट् ।

ॐ ह्लीं एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुँ ।

ॐ ह्लीं ओं पं फं बं भं मं औं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ ह्लीं अं यं रं लं वं शं षं सं हं अः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

'आधारे लिङ्गनाभौ प्रकटितहृदये तालु मूले ललाटे ।
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदश, दश दले द्वादशार्द्धे चतुष्के ।
बालान्ते बालमध्ये ड, फ, क, ठ, सहिते कण्ठदेशे स्वराणाम्
हं क्षं तत्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ।

आधार में लिंग नाभि में, प्रकटित हृदय तालु के मूल से ललाट में, दो पत्र में, षोडशार में, बारह और दश दल में, द्वादशार्ध अर्थात् छै में चतुष्क में, बालान्तमें बाल-मध्य में, ह, फ, क, ठ, से युक्त, स्वरों के कण्ठ देश में, हं, क्ष तत्वार्थ से युक्त समस्त दलों में गत वर्णों के स्वरूप से समन्वित को प्रणाम करता हूँ ।

इस प्रकार से ध्यान करके मानस उपचारों के द्वारा निम्न रीति से पूजन करें–

'लं' पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि । 'हं' आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि । 'यं' वाय्वात्मक धूपं समर्पयामि। 'रं' हन्यात्मकं दीप समर्पयामि । 'वं' अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि ।
'स' सर्वात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि । इति सम्पूज्य--

कंठे विशुद्धचक्रे-- अं आं इं ईं उं ऊं ऋं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः ।

हृदये अनाहत चक्रे--कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं ।

नाभौ मणिपूरे--डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं ।

स्वाधिष्ठाने--बं भं यं रं लं ।

मूलाधारे--वं शं षं सं ।

विन्यस्य--ततो भ्रू मध्ये आज्ञाचक्रे--हं क्षं विन्यसेत् ।

इत्यन्तर्मातृकान्यासः

ॐअस्य श्रीबहिर्मातृकान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः, मातृकासरस्वती देवता, हलो बीजानिः स्वराः शक्तयः अव्यक्त कीलकं न्यासे विनियोगः ।

पूर्व की भाँति ऋषि आदि न्यास करके अकार से आदि लेकर क्षकार के अन्त तक मातृका वर्णों से अपने देह में व्यापक न्यास करना चाहिए ।

श्रीन्यास-कर्म को उक्त रीति से इस प्रकार से करें–

ॐ ह्लीं अं नमः मुखे । ॐ ह्लीं आं नमः मुखवृत्ते ।
ॐ ह्लीं इं नमः दक्षनेत्रे ॐ ह्लीं ईं नमः वामनेत्रे ।
ॐ ह्लीं उं नमः दक्ष कर्णे । ॐ ह्लीं ऊं नमः वामकर्णे ।
ॐ ह्लीं ऋं नमः दक्षनासापुटे । ॐह्लीं ॠं नमःवामनासापुटे।
ॐ ह्लीं लृं नमः दक्षगण्डे । ॐ ह्लीं ॡं नमः वामगण्डे ।
ॐ ह्लीं एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे । ॐ ह्लीं ऐं नमः अधरे ।
ॐह्लीं ओंनमःऊर्ध्वदन्तपंक्तौः । ॐ ह्लीं औंषधोदन्तपंक्ते ।
ॐ ह्लीं अं नमः मुखवृत्ते । ॐ ह्लीं अः नमः कण्ठे ।
ॐ ह्लीं क नमः दक्षिण वाहुमूले । ॐ ह्लीं खं नमः कर्पूरे ।
ॐ ह्लीं गं नमः दक्षिणबन्धे । ॐ ह्लीं घं नमः दक्षांगुलिमूले ।
ॐ ह्लीं ङं नमः दक्षांगुलिपद्मे । ॐ ह्लीं च नमः वामवाहुमूले।
ॐ ह्लीं छं नमः वातकूर्परे । ॐ ह्लीं जं नमः वामणिवन्झे ।
ॐ ह्लीं झं वामङ्गुबिमूले । ॐ ह्लीं ञं नमः ।
यामङ्गुल्अग्रे ।
ॐ ह्लीं टं नमः दक्षपादमूले । ॐ ह्लीं ठं नमः दक्षजानुनि ।
ॐ ह्लीं डं नमः दक्षगुल्फे । ॐ ह्लीं ढं नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले।

ॐ ह्लीं णं नमः दक्षपादाङ्गुल्ये। ॐ ह्लीं त नमः वामपादमूले।
ॐ ह्लीं थं नमः वामजानुनि । ॐ ह्लीं दं नमः वामगुल्फे ।
ॐ ह्लीं धं नमः वामपादाङ्गुलिमूले । ॐ ह्लीं नं नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे ।
ॐ ह्लीं पं नमः दक्षपार्श्वे । ॐ ह्लीं फं नमः वामपाश्व।
ॐ ह्लीं बं नमः पृष्ठे । ॐ ह्लीं भं नमः नाभौ ।
ॐ ह्लीं मं नमः जठरे । ॐ ह्लीं यं नमः हृदये ।
ॐ ह्लीं रं नमः दक्षांसे । ॐ ह्लीं लं नः ककुदि ।
ॐ ह्लीं वं नमः वामांसे । ॐ ह्लीं शं नमः । हृदयादिदक्षकरान्तम् ।
ॐ ह्लीं षं नमः हृदयादादिवामकरान्तम् ।
ॐ ह्लीं सं नमः हृदयादिदक्षपादान्तकम् ।
ॐ ह्लीं हं नमः हृदयादिवामपादान्तम् ।
ॐ ह्लीं लं नमः मस्तकादिपादान्तम् ।
ॐ ह्लीं क्षं नमः पादादिशिरोऽन्तम् ।

इति बहिर्मातृकान्यासः ।

अस्य श्रीब्रह्मास्त्रविद्याबगलामुखीषड्त्रिंशाक्षरात्ममन्त्रस्य नारदो ऋषिः पङ्क्तिः श्रीबगलामुखीदेवता, ह्लीं बीजं स्वाहा शक्तिः ॐ कीलकम् श्रींबगलामुखीवरप्रसादसिद्धयर्थं न्यासे विनियोगः ।

ॐ ह्लीं बगलामुखि अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
सर्वदुष्टानां तर्जनीभ्यां नमः ।
वाचं मुखं स्तम्भय मध्यमाभ्यां नमः ।
जिह्वां कीलय अनामिकाभ्यां नमः ।
बुद्धि विनाशय कनिष्ठकाभ्यां नमः ।
ॐ ह्लीं स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

अथ हृदयादिन्यास

ॐ ह्लीं बगलामुखि हृदयाय नमः। सर्व दुष्टानां शिरसे स्वाहा। वाच मुखं पद स्तम्भयः शिखायै वषट्। जिह्वा कीलय कवचाय हुम बुद्धि विनाशय नेत्रत्राय वौषट्। ह्लीं ओंम् स्वाहा अस्त्राय फट्।

इस प्रकार से न्यास करके ओं भूर्भुवः स्वरोम् इति दिग्बन्धः।

तत्वादिन्यास

ॐ ह्लीं बगलामुखि आत्मतत्वाय नमः मूलाधारे।

सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय विद्यात्वाय नमःहृदये। जिह्वां कीलय शिवतत्वाय नमः भ्रूमध्ये।

बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा सर्वतत्वाय नमः ब्रह्मरन्ध्रे।

इस प्रकारसे विन्यास करके अपनी आत्मा की कामकला के स्वरूप वाला विभावित करके हृदय में देवी का ध्यान करना चाहिए।

ध्यानम्

मध्येसुधाब्धि मणिमंडपरत्नवेद्यां
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीं
देवीं भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्॥

इस रीति से ध्यान करके मन में कल्पित उपचारों के द्वारा भली-भाँति पूजन करके अपनी शक्ति के अनुसार मूलमन्त्र का जप करके देवी के लिए उसे निवेदित करें, योनि मुद्रा के द्वारा प्रणाम करना चाहिए। इसके उपरांत पीठ में जैसा भी बताया गया है, उस यन्त्र की स्थापना करें।

यन्त्रोद्धार

त्रिकोणषट् कोणवृत्ताऽष्टदलचतुर्द्वारत्मक यन्त्र स्थापयेत्। यन्त्रात्मनोर्मध्ये हस्तपरिमितेऽन्तराले पात्रासादनं कुर्यात्।

स्ववामभागे त्रिकोणषट् कोणवृत्तचतुरस्रं कृत्वा शङ्कमुद्रयादक्षाङ्गुष्ठेन स्पृशेत् तत्र । मण्डले अग्नीशासुरवायव्यकोणेषु मध्ये चतुर्दिक्षु च, षडङ्गमन्त्रैः पूजयित्वा । शंखाधारं मण्डले स्थापयेत्। तत्राग्निकलाः यजेत् ।

त्रिकोण षट्कोण, वृत्त, ८ दलों वाला कमल और चार द्वारों से युक्त यन्त्र स्थापित करना चाहिए। यन्त्र और आत्मा के मध्य में एक हाथ परिमित अन्तराल में पात्रों का आसादन करें। अपनी बाईं ओर त्रिकोण, षटकोण, वृत्त (गोलाकार) और चोकोर करके शंख की मुख से दाहिने हाथ के अंगूठे से स्पर्श करें। वहाँ पर मण्डल में अग्नि ईशान, असुर और वायव्य कोणों में, मध्य में और चारों दिशाओं में मन्त्रों से पूजन करके शंखाधार को मण्डल में स्थापित करे वहाँ पर अग्नि कलाओं का यजन करना चाहिए।

ॐऐं श्रीं ऐं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने सामान्यार्घ्यपात्राधाराय नमः ।

एक मन्त्र के द्वारा आधार का अर्चन करके दश कलाओं का यजन निम्न मन्त्रों से करें-

ऐं ह्रीं श्रीं धूमार्चिषे नमः रं गष्मायै नमः लं ज्वालिन्यै नमः वं ज्वालिन्यै नमः, श विस्फुलिङ्गिन्यै नमः ष सुश्रियै नमः, सं सुरूपायै नमः, हं कपिलायै नमः, लं हव्यवाहायै नमः, क्षं कव्यवाहायै नमः ।

फिर--

ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पवमानस्य धीमहि तत्र शङ्खः प्रचोदयात् । इति शङ्खं प्रक्षाल्य, आधारोपरि संस्थाप्य

इस मन्त्र के द्वारा शंख को प्रक्षालन करके आधार के ऊपर संस्थापित करें।

'ऐं ह्रीं श्रींक्लीं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने सामान्यार्घ्यपात्राय नमः । इति शंखं सम्पूज्य ।

कं भं तपिन्यै नमः खं वं तापिन्यै नमः गं फं घूमायै नमः धं पं मरीच्यैः नमः, ङं नं ज्वालिन्यैः नमः चं धं रुच्यै नमः छं दं सुषुम्णायै नमः जं थं भोगदायै नमः झं तं विश्वायै नमः ञं णं बोधिन्यै नमः टं ढं धारिण्यै नमः ठं डं क्षमायै नमः ।

इति द्वादशकलाः सम्पूज्य--

इसके उपरांत वर्ण बीज के द्वारा शंख भरकर गन्धाक्षतों के द्वारा अभ्यर्चन करें-

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः सोममंडलाय नमः, मन्त्र ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायैः नमः, आं मानदायै नमः, इं पूषायै नमः ईं तुष्टयै नमः उं पुष्टये नमः ऊं रत्यै नमः, ऋं धृत्यै नमः, ॠं शशिन्यै नमः लृं चन्द्रिकायै नमः लॄं कान्त्यै नमः, एं ज्योत्स्नायै नमः ऐं श्रियै नमः ओं प्रीत्यै नमः औं अङ्गदायै नमः अं पूर्णायै नमः अः पूर्णामृतायैं नमः ।

इति षोडश कलाः पूजयेत् ।

वहाँ पर हेतुलव का प्रक्षेप करें और योनि मुद्रा को प्रदर्शित करें। धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करके मत्स्यमुद्रा से आच्छादन करना चाहिए । फिर मूल मन्त्र का ३ बार जप करना चाहिए । खं ऐं ह्रीं ग्रां ऐं क्लीं सौः इस मन्त्र से शंख के जल द्वारा अपने आपको और पूजा के द्रव्यों का प्रोक्षण करें । इस अर्घ्य से कुछ थोड़ा सा वर्धनी में प्रक्षिप्त करना चाहिए ।

विशेषार्घ्यस्थापनम्

देवीचक्रात्मनोर्मध्ये जलेन स्थलं, सम्प्रोक्ष्य, तत्र त्रिकोण-षट्कोणवृत्तचतुरस्रात्मकं विधाय खंडत्रयेण मूलेन त्रिकोणेषु मध्ये पूजयेत् ।

देवी के चक्र और अपनी आत्मा के मध्य में जल के द्वारा उस

स्थल का प्रोक्षण करके यहाँपर त्रिकोण, षट्कोण,वृत्त,चतुरस्र (चकोर) के स्वरूप वाला मण्डल बनाकर खण्डों वाले मूल के द्वारा त्रिकोणों में मध्य में अर्चन करना चाहिये ।

ओं ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ओं स्वाहा । इति मूलमन्त्रः

षट्कोणों में षडङ्ग मन्त्रों के द्वारा पूजन करना चाहिये-

षट्कोणषु षडंगमन्त्रैः पूजयेत् । ततः --

ह्लां हृदयदेवीश्रीपादुकां पूजयामि,

ह्लीं शिरोदेवीश्रीपादुकां पूजयामि,

ह्लूं शिखादेवीश्रीपादुकां पूजयामि,

ह्लैं कवचदेवीश्रीपादुकां पूजयामि,

ह्लौं नेत्रदेवीश्रीपादुकां पूजयामि,

ह्लः अस्त्रदेवीश्रीपादुकां पूजयामि ।

इस प्रकार से भली भाँति पूजन करके चतुरस्र में चारों पीठों का पूजन करना चाहिए-

कामरूपपीठाय नमः । जालन्धरपीठाय नमः ।

पूर्णगिरिपीठाय नमः । ओड्ययानपीठाय नमः ।

वहाँ पर अस्त्र से क्षालित त्रिपादिका को स्थापना इस मन्त्रसे करें-

'ॐ ऐं ह्रीं श्री ऐं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने विशेषार्घ्यपात्राधाराय नमः ।'

इस रीति से पूजन करके फिर दश अग्नि कलाओं का निम्न मन्त्रों से पूजन करें-

लं ज्वलिन्यै नमः, वं ज्वलिन्यै नमः, शं विस्फुलिगंन्यै नमः पं सुश्रियै नमः, सं सुरूपायै नमः, हं कपिलायै नमः, लं

हव्यवाहायै नमः क्षं कव्यवाहायै नमः ।

अब इस मन्त्र द्वारा अस्त्र से क्षालित पात्र को संस्थारित करके भली भाँति पूजन करें–

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने विशेषार्घ्यपात्राय नमः ।'

द्वादश सूर्यदेव की कलाओं का पूजन निम्न मन्त्रों से करे–

ऐं ह्रीं श्रीं कं भं तपिन्यै नमः ऐं ह्रीं श्रीं खं बं तापिन्यै नमः ऐं ह्रीं श्रीं गं फं धूमायै नमः, ऐं ह्रीं श्रीं घं पं मरीच्यै नमः ऐं ह्रीं श्रीं ङं नं ज्वालिन्यै नमः, ऐं ह्रीं श्रीं चं धं रुच्यै नमः, ऐं ह्रीं श्रीं छं सुषुम्नायै नमः ऐं ह्रीं श्रीं जं थं भोगदायै नमः ऐं ह्रीं श्रीं झं तं विश्वायै नमः ऐं ह्रीं श्रीं ञं णं बोधिन्यै नमः ऐं ह्रीं श्रीं झं तं विश्वायै नमः, ऐं ह्रीं श्रीं ठं डं क्षमायै नमः ।

इसके अनन्तर विलोम मातृका के द्वारा और मूल मन्त्र से क्षीर से आपूरित करे–

क्षं लं हं सं षं वं लं रं यं मं भं बं फं नं धं दं थं तं णं ढ डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं ग ख कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं ॐह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।

फिर निम्न मन्त्र से पूजन करके

'ऐं ह्रीं श्रीं सौः सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने विशेषार्घ्यपात्रामृताय नमः ।

इन मन्त्रों के द्वारा सोलह चन्द्र की कलाओं का यजन करना चाहिये–

'अ अमृतायै नमः आं मानदायै नमः, इं पूषायै नमः, ईं तुष्ट्यै नमः, उं पुष्ट्यै नमः, अं रत्यै नमः ऋं धृत्यै नमः,

ॠं शशिन्यै नमः, लृं चन्द्रिकायै नमः लॄं कान्त्यै नमः, एं ज्योत्स्नायै नमः ऐं श्रियै नमः, ओं प्रीत्यै नमः, औं अंगदायै नमः, अं पूर्णायै नमः, अः पूर्णावृतायै नमः ।

यहाँ पर त्रिकोण की रचना करके पश्चिम कोण से आरम्भ होना है–

अं आं इं ईं उं ऊं ऋ ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अंअः।

पर्यन्त अग्नि कोण से आरम्भ होता है ।

कं खं गं घं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं ।

पर्यन्त अग्नि कोण से आरम्भ होता है ।

थं दं धं नं फं बं भं मं यं रं लं शं षं सं ।

पर्यन्त, कोणों में–'हं, लं, क्ष' मध्ये -इं, दोनों पार्श्वों में होता है । फिर 'हं सः' यह लिखकर पाँच रत्नों का पूजन करना चाहिए ।

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ग्लूं रत्नाय नमः ॐ ऐं ह्री ग्लूं पाताल रत्नाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं स्लूं स्वर्ग रत्नाय नमः, ॐ ऐं ह्रीं श्री म्लूं मर्त्यरत्नाय नमः ॐ ऐं ह्रीं श्रीं न्लूं नागरत्नाय नमः ।

इस रीतिसे रत्नों के पञ्चकका पूजन करके फिर मध्य में त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त अष्टार् चतुरस्र की विभावना को, चतुरस्र में आनन्द भैरव और आनन्द भैरवी का अर्चन करना चाहिए ।

ऐं ह्रीं श्रीं हं सं क्षं मं लं वं रं यूं आनन्दभैरवाय वषट् ।
आनन्दभैरवस्य पादुकां पूजयामि नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं सं हं क्षं मं लं वं रं यों सुधादेव्यै वौषट् ।
आनन्दभैरवी सुधादेवीओंपादुकां पूजयामि नमः ।

फिर त्रिकोण में कूटत्रय द्वारा और मध्य में मूल के द्वारा पूजन करके षट्कोण में षडगों का पूजना करना चाहिए–

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं अग्निचक्रे ब्रह्मात्मकशक्तिपादुकां पूजयामि नमः

ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सूर्यचक्रे विश्वात्मकशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं सौः सोमचक्रे रुद्रात्मकशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं श्रीं श्रीं ह्रां हृदयदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं शिरोदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रूं शिखादेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रैं कवचदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौ नेत्रदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रः अस्त्रदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं अं असितांगभैरवसहितं-आं ब्राह्मीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं इं रुद्रभैरवसहितं-ईं माहेश्वरीदेवीश्री पादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं उं चण्डभैरवसहितं ऊं कौमारीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ऋं क्रोधभैरवसहित ॠं वैष्णवदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं लृं उन्मत्तभैरवसहितं-लॄं वाराहीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं एं कपालभैरवसहितं-ऐं माहेन्द्रीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं ओं भीषणभैरवसहितं-ओं चामुण्डादेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं अं संहारभैरवसहितं-अः महालक्ष्मीदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हं सः शुचिषद् वसुरन्तरिक्षसद् होता वेदिषद्
तिथिर्दुरोणसद् नृषद् वरसद् ऋतसद् व्योमसद्
अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋते वृहत् ।

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं अं ब्रह्मादशकलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ॐऐं ह्लीं श्रीं ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्तात्विसीमतः सुरुचोवेनआवः
सुबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योतिसतश्च विश्वः ।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं उं विष्णुदशकलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
ॐप्र तत् विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः।
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेषु अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं मं रुद्रदशकलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं विन्द्वीश्वरपञ्चकलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं तद् विष्णोः परमं पदथं सदा पश्यन्ति सूरयः ।
दिवीब चक्षुराततम् ।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं तद् विप्रासो विपन्यवो जागृवाथसः समिन्धते ।
विष्णोर्यत् परमं पदम् ।
ॐऐंह्लींश्रीं विन्दुनादसदाशिवषोडशकलाश्रीपादुकांपूजयामिनमः
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं विष्णुर्योनि कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु ।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं धेहि सरस्वती ।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजौ ।
ॐऐं ह्लीं श्रीं ऐं क्लीं सौःश्रीपीताम्बराकलायै नमः।इतिसंपूज्यः

ॐ आं ह्रीं क्रीं यं रं लं वं शं षं सं हल क्षं ह्रां हं सः ह्रां विशेषां च्यर्ाऽमृतस्य प्राणा इह प्राणाः । ॐ आं ह्रीं क्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं ह्रां हं सः ह्रां सर्वेन्द्रियाणि सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ह्रीं ॐहं सः । इति त्रिः। एवंप्राणप्रतिष्ठां कृत्बा। अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं लं क्षं ।

इस रीति से मातृका वर्ण अनुलोम करे और तीन आवृत्ति के द्वारा करे–

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं श्रीखण्डैकरसानन्दकरे परसुधात्मनि ।
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेहि कुलनायिके ।
ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अकुलस्थाऽमृताकारे शुद्ध ज्ञानाकरेपरे ।
अमृतत्व निधेह्यस्मिन् वस्तुति क्लिन्नरूपिणि ।
ऐं ह्रीं श्रीं सौः त्वद्रूपियकारस्य त्वं कृत्वा ह्येयत् स्वरूपिणि।
भूत्वा पराऽमृताकारा मयि विस्फुरणं कुरु ।
ॐ ह्रीं श्रीं ऐं प्लुं हसौः जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ।

इन मन्त्रों का पाठ करके दीपिनी मन्त्र का आठ बार जप करना चाहिए–

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लिन्ने क्लेदय महाक्षोभं कुरु क्लीं सौं मोक्षं कुरु कुरु हं सौः ।

इसके अनन्तर मूल मन्त्र का नौ बार पाठ करना चाहिए । धेनुमुद्रा से अमृतीकरण करके यहायोनि मुद्रा और अस्त्र से संरक्षण करके कवच से अवगुण्ठन करे और धेनु तथा योनि मुद्राओं को प्रदर्शित करे ।

फिर 'ऐं' ह्रीं ग्रीं एं क्लों सौः स्वाहा'–इससे विशेषार्घ्यमुनि देवीरूप की विभावना करके 'श्रीपीताम्बरायै नमः' इससे गन्ध पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य के अन्त पर्यन्त पूजन करके प्रणाम करना चाहिए ।

आत्म पात्र स्थापन

इसमें सर्व प्रथम अपने सर में 'श्री ह्रीं क्लीं' इसके द्वारा गन्ध अक्षत, पुष्पों से श्रीगुरु पादुका का अर्चन करे और स्वयं भी गन्ध आदि के द्वारा अलङ्करण करके अपने आगे त्रिकोण–वृत्त और चतुरस्र मंडल की रचना करके 'ॐ ह्रीं हं सः सोऽहं स्वाहा' इस मन्त्र के द्वारा अपने और श्री पात्र के मध्य में आधार के सहित पात्र को स्थापित करे और

उसको सुधा से पूरित करे। फिर अपने सर में निम्न छः मन्त्रों के द्वारा पूजन एवं तर्पण करना चाहिए।

ॐ ऐं ह्लीं श्रीं दिव्यौघश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं सिद्धौघश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं मानवौघाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं स्वगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं परमश्रीगुरुपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं परमेष्टिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

इस रीति से भली भाँति पूजन तथा तर्पण करके हृदय में श्री पीताम्बरा का तर्पण करे, मूलाधार में गणपति का तथा नाभि में आत्म-पादुका मन्त्रसे ओं ह्लीं हं सः सोऽहं स्वाहा' इस मन्त्र से बार-बार तर्पण करे फिर 'आर्द्र ज्वलित ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माऽहमस्मि, अहमस्मि, ब्रह्मऽहमस्मि, अहेयाऽहं मां जुहीमि स्वाहा इस मन्त्र से 'मेरी आत्मा शुद्ध हों' यह मन्त्र के अन्त में स्वीकार करके ४ तत्वों से आनन्द से परिपूर्ण होकर देवी का यजन करना चाहिये।

फिर मूल तन्त्र के द्वारा प्राणायाम करे और मूलमन्त्र से ऋषि आदि का न्यास करे। ध्यान आदि करके मानस उपचारोंसे पूजन करके कुछ मूल मन्त्र का जाप करे। फिर हाथ में पुष्पांजलि ग्रहण करके मूल मन्त्र का उच्चारण करके 'श्री बगलामुखीं पूजयामि नमः' इस मन्त्र के द्वारा पुष्प समर्पित करके मन्त्र राज के मध्य में ध्यान में वर्णित देवी का चिन्तन करके पीठ की पूजा करनी चाहिये।

ॐ ह्लीं श्रीं मण्डूकाय नमः। ॐ ह्लीं श्रीं आधाराय नमः।
ॐ ह्लीं श्रीं मूलप्रकत्यै नमः। ॐ ह्लीं श्रीं आधारशक्त्यै नमः।
ॐ ह्लीं श्रीं कूर्माय नमः। ॐ ह्लीं श्रीं अनन्ताय नमः।
ॐ ह्लीं श्रीं वराहाय नमः। ॐ ह्लीं श्रीं पृथिव्यै नमः।
ॐ ह्लीं श्रीं सुधार्णवाय नमः। ॐ ह्लीं रत्नद्वीपाय नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं नन्दनोद्यानाय नमः । ॐ ह्रीं श्रीं स्वर्णप्रकाराय नमः।
ॐ ह्रीं श्रीं कल्पवृक्षाय नमः । ॐ ह्रीं श्रीं मणिमण्डपाय नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं स्वर्णवेदिकायै नमः ॐ ह्रीं श्रीं रत्नसिंहासनाय नमः।
ॐ ह्रीं श्रीं धर्माय नमः ॐ ह्रीं श्रीं ज्ञानाय नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं ऐश्वर्याय नमः । ॐ ह्रीं श्रीं वैराग्याय नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं अधर्माय नमः । ॐ ह्रीं श्रीं जज्ञानाय: नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं अनैश्वर्याय नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अवैराग्याय नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं मायायै नमः । ॐ ह्रीं श्रीं विद्यायै नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं अविद्यायै नमः । ॐ ह्रीं श्रीं अनन्ताय नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं पद्माय नमः । ॐ ह्रीं श्रीं आनन्दकन्दाय नमः ।

ॐ ह्रीं श्रीं स विन्नालाय नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं विकारमयकेशरेभ्यो नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं अर्कभण्डाय नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं पं सोममण्डलाय नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं रं बह्निमण्डलाय नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं सं प्रबोधात्मने सत्वाय नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं रं प्रवृत्यात्मने रजसे नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं तं मोहात्मने तमसे नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं आं आत्मने नमः ।
ॐ ह्रीं श्री पं परमात्मने नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं अज्ञानात्मने नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं ज्ञां ज्ञानतत्वात्मने नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं मां मायातत्वात्मने नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं कंकालतत्वात्मने नमः ।
ॐ ह्रीं श्रीं विं विद्यातत्वात्मने नमः ।

ॐ ह्लीं श्रीं अं अंजितायै नमः ।

ॐ ह्लीं श्रीं अः अपराजितायै नमः ।

ॐ ह्लीं श्रीं निं नित्यायै नमः ।

ॐ ह्लीं श्रीं विं विलासिन्यै नमः ।

ॐ ह्लीं श्रीं दां दोग्ध्र्यै नमः ।

ॐ ह्लीं श्रीं अ अघोरायै नमः ।

ॐ ह्लीं श्रीं सं सर्वमंगलायै नमः ।

ॐ ह्लीं श्रीं ऐं परायै नमः । ह्लीं सौ सर्वशक्तिकमला-
सनाय नमः ।

पीठ पूजा करके और गन्ध, अक्षत, पुष्पोंसे अर्चन करके यन्त्र राज में मूर्ति की कल्पना करे। फिर त्रिखंडा मुद्रा से पुष्पों को ग्रहण करके मूल का पाठ करे । इसके बाद ध्यान इस प्रकार से करना चाहिए-

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेद्यां
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषितांगी
देवीं भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥

'सुधा के सागर के मध्य में मणियों से मण्डित रत्नों की वेदी है। उसमें सिंहासन के ऊपर विराजमान है और चारों ओर पीतवर्ण के वस्त्र हैं। पीतवर्ण के अम्बर तथा आभूषण एवं मालाएँ हैं। इस देवी का अङ्ग विभूषित हैं, देवी के करों में मुद्गर और शत्रु को जिह्वा है, ऐसी देवी का मैं भजन करता हूँ।'

इस प्रकार से ध्यान करके अपने हृदय-कमल में परात्पर शिव के साथ एकताकी भावना करके नासिक द्वारसे बहते हुए अपने अन्तःकरण में स्थित तेज की अंजलि में लाकर इस प्रकार से प्रार्थना करे-

ऐं एहि एहि देवेशि बगले सुरपूजिते ।
परामृहपरे शीघ्रं सान्निध्यं कुरुसिद्धिदे ।

देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते।

यावत् त्वां पूजयिष्यामि, तावत् त्वं सुस्थिरा भव।

"हे सुरों के द्वारा समर्चित बगले! हे देवेशि! आप आइये। हे सिद्धि के प्रदान वाली! आप शीघ्र ही परामृत में परायण होकर सन्निधान कीजिये। हे भक्ति के द्वारा सुलभे! हे देवों की स्वामिन! हे अपने समस्त परिवार से समन्वित रहने वाली! मैं जितने काल पर्यन्त आपका पूजन करूँ तब तक आप सुस्थिर होकर विराजमान रहें।"

फिर-

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्ठानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा। सः ह्लीं भगवति आगच्छ आगच्छ अस्मिन् मण्डले सान्निध्यं कुरु मम सुप्रसन्नं कुरु कुरु स्वाहा।

बगला के मन्त्र द्वारा ब्रह्मरन्ध्र के स्नान में करोड़ों विद्याओं की विडम्बना करने वाली समस्त भूषणों से सच्छन्ना, अङ्गों के सहित, समस्त परिवार समन्विता, वाहन से युक्त शक्ति से संयुत को बहन्ना सापुट के द्वार से चक्र में मध्य बिन्दु से आवाहन करे और पुष्पों को समर्पित करके चिन्तन करे वहाँ पर मध्य बिन्दु में विलास करने वाली देवी को आवाहन, स्थापना मुद्राओं आदि को प्रदर्शित कर 'आवाहिता भव" इत्यादि के द्वारा मत्स्य मुद्रा से आच्छादन करके मूलमन्त्र का १० बार यज्ञ करे।

फिर-

ततः आं ह्रीं क्रीं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं सः ह्रीं ॐ हंजः श्रीपीताम्बरा याः प्राणा इह प्राणाः। आं ह्रीं क्रों जीवइहं जीव, आं ह्रीं क्रों सर्वेन्द्रियाणि स्थितानि इहागत्य सुखं चिरंतिष्ठन्तु।

मन्त्र का उच्चारण करके प्राण प्रतिष्ठा करे तथा गन्ध पुष्पादि को अर्पित करे। फिर योग मुद्रा दिखाकर मूल षडङ्ग से सकलीकरण करे। फिर किरीट मुद्रा को दिखावे। फिर सामान्य अर्घ्योदक से षोडश उपचारों से अर्चन करना चाहिये, अर्चन का क्रम इस प्रकार से है:-

श्री बगलाया आसनं जमर्पयामि। एवं पाद्यम्। अर्घ्यम्। आचमनीयम्। मधुपर्कम् पृथक् पुनराचमनीम्। पञ्चामृतस्ननम्। पुनः शुद्धोदकस्नानम्। सुगन्धतैलमर्दनम् उद्धर्तनम्। उष्णोदकम्। शुद्धोदकस्नानम्। अभिषेकस्नानम्। पुनः शुद्धोददकम्। शुद्धवस्त्रेण प्रोक्षणम्। पींठे निवेशनम्। वस्त्रार्पणम्। आभरणार्पणम्। चन्दनम्। ऋतुकालोद्भवपुष्पाणि। हरिद्राकुङ्कुमादिसौभाग्यद्रध्माणि। धुपम्। दीपम्। आधारोपरि देवींपुरतः नैवेद्यं संस्थाप्य, मूलेन संप्रोक्ष्य, गन्धपुष्पैः सम्पूज्य, मलेनाभिमत्र्य, धेन्वोऽमृतीकृत्य, वामाङ्गुष्ठेन पात्रं स्पृशन्, दक्षिणेन विशेषाघ्योंदकमादाय-

फिर-

'हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम्।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि।'

"हेम के पात्र में स्थित दिव्य-सुसस्कृत परमान्न को जो ५ प्रकार का है और ६ रसों से युक्त है, हे परमेश्वरि ! आप उसे ग्रहण कीजिए।"

यह पढ़कर 'ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' इस मन्त्र से देवी को जल समर्पित करना चाहिये। फिर बांये हाथ में पद्म मुद्रा को बाँध कर दाहिने हाथ से प्राण आदि ५ मुद्राओं से अर्पित करे। यह पाँच मन्त्र इस प्रकार से हैं:-

प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा।

इसके पश्चात निम्न पाठ करें–

ब्रह्मेशाद्यै: सरसमभित: सूपविष्टै: समन्ताद्
दिव्याकल्पैर्ललितरमणी वीज्यमामाना सखीभि: ।
नर्मक्रीड़ाप्रहसनपरा हासयन्ती सुरेशान्
भुङ्क्ते पात्रे कनकखचिते षड्रसान लोकधात्री ।।

बड़े ही आनन्द के साथ ब्रह्म-ईश आदि देवी के चारों ओर विराजमान हैं, दिव्य आकल्पों के द्वारा परम सुन्दरी रमणी सखियों के साथ स्थित हैं क्रीड़ा में नर्म वचनों के प्रहसन में प्रवीण देवी हैं और सुरगणों को हास्ययुक्त कर रही हैं स्वर्ण के खचित पात्रमें लोकों की धात्री देवी छ: प्रकार के रसों का आस्वादन कर रही है ।'

ये पढ़कर कुछ मूल मन्त्र का जाप करके मध्य में जल देकर फिर क्षण भर रुक कर 'अमृतपिधानमसि स्वाहा' इस मन्त्र से जल अर्पित करना चाहिए । क्रम इस प्रकार से हैं–

मूल मन्त्र के प्रथम खण्ड से–"ॐ ह्लीं बगुलामुखि" आत्मतत्वव्यापिनी श्री बगुलामुखी तृप्यतु ।

"सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय" विद्यातत्वव्यापिनी श्री बगलामुखी तृप्यतु ।

जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं स्वाहा--शिवतत्वव्यापिनी श्रीबगलामुखी तृप्यतु ।

फिर सम्पूर्ण मूल मन्त्र से–

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वा कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐस्वाहा-सर्वतत्वव्यापिनी श्री बगलामुखी तृप्यतु ।

इसके बाद हाथ पैरों को धोकर और कुल्ला मरा कर ताम्बूल अर्पित करके आरती करनी चाहिए ।

आवरण पूजन--

पुष्पांजलि लेकर निम्न मन्त्र से प्रार्थना करे--

संविन्मये परे देवि पराऽमृतरसप्रिये ।
अनुज्ञां देहि देवेशि परिवारार्चनाय मे ।

फिर चक्र में पुष्पांजलि अर्पित करे और मूलमन्त्र के द्वारा ३ बार बिन्दु में तर्पण करके षडङ्गों का अर्चन करना चाहिए । वह इस प्रकार से हैं-बिन्दु में, अग्नि, ईशान, नैऋत, वायु कोणों में, मध्य में और दिशाओं में निम्न मन्त्रों से करे-

ॐ ह्लां हृदयदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ॐ ह्लीं शिरोदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ॐ ह्लूं शिखादेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ॐ ह्लैं कवचदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ॐ ह्लौं नेत्रदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ॐ ह्लः अस्त्रदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

इसका मूल मन्त्र 'श्रीबगुलामुखी चतुरस्त्ररेखायै नमः ।'

फिर पुष्पांजलि देकर-

पूर्व द्वार में-

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं गं गणपतये वर वरद सर्वजन मे वशमानय स्वाहा श्री गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

फिर पश्चिम द्वार में-

यां यीं यूं यैं यौः यः योगिनीभ्यः फट् स्वाहा । श्रीयोगिनी-श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

फिर उत्तर द्वार में-

क्षं क्षेत्रपालाय नमः । श्रीक्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

इसके बाद ईशान से आदि लेकर उत्तर के अन्त तक तीनों

रेखाओं का इस प्रकार पूजन करे-

तं तमोरेखायै: नमः, रं रजोरेखायै नमः, सं सत्वरेखायै नमः ।

इसके पीछे पंक्ति के आकार में विराजमान दिव्यौधि आदि गुरुओं के लिये पुष्पांजलि देवे । सर्वप्रथम दिव्यौधि-

ॐ ह्लीं श्रीं परमशिवानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं पराशयाम्बाश्रीपादुकां पूजयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं पराधिकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ॐ ह्लीं श्री कुकेश्वरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ॐ ह्लीं श्रीं कुकेश्वरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ॐ ह्लीं श्रीं शुक्लादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ॐ ह्लीं श्रीं कामेश्वरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
ॐ ह्लीं श्रीं कामेश्वर्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

इति दिव्यौधाः ।

फिर सिद्धोध-

सिद्धौधेभ्य पराख्येभ्यो नमः ।

ॐ ह्लीं श्रीं भोगानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं क्लिन्नानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं समयानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं सहजानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

इति सिद्धौधाः ।

अन्त में मानवौध है-

मानवौघेभ्य: पराख्येभ्यो गुरुभ्यो नमः ।

ॐ ह्लीं श्रीं निगमानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं विश्वानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं विमलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं भुवनानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं मदनानन्दनाथश्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ ह्लीं श्री लीलानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्री स्वात्मानन्दनाथश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि ।

इति मानवौधाः

इसके बाद परमेष्ठि गुरु, परम गुरु और अपने गुरुका तर्पण करे । फिर इस प्रकार प्रार्थना करे–

अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पुष्पप्रपङ्क्तिपूजनम् ।

हे शरण में समागतों पर प्यार करने वाली! मेरे अभीष्ट को सिद्धि प्रदान कीजिए । मैं यह पुष्पों की पंक्ति का प्रकृष्ट पूजन आपकी सेवा में भक्ति से समर्पित करता हूँ ।

ये पढ़कर पुष्पांजलि दे–

ॐ ह्लीं श्रीं अं बगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं आं स्तम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं इं मोहिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं ईं जृम्भिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं उं बगलामुखीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं ऊं चञ्चलाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं ऋं भूधराश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं ॠं कलुषाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं लृं धात्रीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं ॡं करणाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं एं कालाकर्षिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं ऐं भ्रामिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं ओं मन्दगमनाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं औं भोगिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।
ॐ ह्लीं श्रीं अं अंबिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ ह्लीं अः शान्ताश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

फिर पुष्पांजलि लेकर निम्न प्रार्थना करे

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ।

ॐ ह्लीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं आं असिताङ्गभैरवसहितं--

ब्राह्मीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ ह्लीं श्रीं इं चं छं जं झं ञं ईं रुरुभैरवसहितं--

माहेश्वरीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ह्लीं श्रीं उं टं ठं डं ढं णं ऊं चण्डभैरवसहितं--

कौमारीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ ह्लीं ऋं तं थं दं धं ॠं क्रोधभैरवसहितं--

वैष्णवीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ ह्लीं शीं लृं पं फं भं लॄं उन्मत्तभैरवसहितं--

वाराहीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ ह्लीं श्रों एं यं रं लं वं ऐं कपालभैरवसहितं--

इन्द्राणीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ ह्लीं श्रीं ओं शं षं सं हं औं भीषणभैरवसहितं--

चामुण्डादेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

ॐ ह्लीं श्रीं अ ल क्षं अः संहारभैरवसंहितं--

महालक्ष्मीदेव्याम्बाश्रींपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

पुष्पांजलि देकर निम्न मन्त्र पढ़े-

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ।

इसके बाद शङ्ख के जल से एक बार और विशेष अर्घ्योदक से ३ बार तर्पण करना चाहिए । इसके उपरान्त वामाबर्त से ६ कोणों में निम्न मन्त्रों के द्वारा तर्पण करें-

ॐ ह्लीं श्रीं डां डीं डूं डै डौं डः रसधातुस्थ-डाकिनीदेवी--
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं रां रीं रूं रै रौं रः असृगधातुस्थ-राकिनीदेवी--
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं लां लीं लूं लै लौं लः मांसधातुस्थ-लाकिनीदेवी--
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं कां कीं कूं कै कौं कः मेदोधातुस्थ-काकिनीदेवी--
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं शां शीं शूं शै शौं शः अस्थिधातुस्थ-शाकिनीदेवी-
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं हां हीं हूं है हौं हः मज्जधातुस्त-हाकिनीदेवी--
श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

इस रीति से भली-भाँति पूजन करके उनके अग्रभागों में इस प्रकार से पूजन एवं तर्पण करें।

ॐ ह्लीं श्रीं सुभगाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं भगाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं भगसर्पिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ह्लीं श्रीं भगावहाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्।

फिर शङ्ख के जल से एक बार और विशेष अर्घ्य के जल से ३ बार बिन्दु में तर्पण करना चाहिए।

अग्निकोण में -

ॐ ह्लीं श्रीं क्रोधिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ईशान कोण में

ॐ ह्लीं श्रीं जृम्भिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि।

अग्नि कोण में--

ॐ ह्लीं श्री चामरधारिणीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

इस प्रकार से तर्पण करके निम्न प्रार्थना करे–

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ।

फिर शङ्ख के जल से एक बार विशेष अर्घ्य से ३ बार मूल मन्त्र से बिन्दु में देवी का तर्पण करें । इसके बाद में देवी के आगे–

त्रिनेत्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

बिन्दु में–

मूलेन श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि ।

३ बार तर्पण करके निम्न प्रार्थना करें–

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठावरणार्चनम् ।

फिर शङ्ख के जल से एक बार और विशेष अर्घ्य से ३ बार पूजन एवं तर्पण करना चाहिए ।

इसके अनन्तर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और उपस्कर के सहित महा-नैवेद्य पूर्व की भाँति आधार के ऊपर देवी के आगे रखकर रहली की तरह पूजन करके धेनु मुद्रा से अमृतीकरण करके 'अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा' इसके द्वारा विशेष अर्घ्य अर्पित करे । फिर यह प्रार्थना करे–

हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम् ।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वरि ।

नैवेद्यं समर्पयामि प्राणादिपञ्चमुद्राभिरर्पयेत् । प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा:, समानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा ।

फिर यह ध्यान करे–

ब्रह्मेशाद्यै: सरसमभित: सूपविष्टै: समन्ताद्
दिव्याकल्पैर्ललितरमणी वीज्यमाना सखीभि: ।

नम्र-क्रीडामुहसनपरा हासयन्ती सुरेशान्
भुङ्क्ते पात्रे कनकखचिते, षड्रसान् लोकधात्री ॥

फिर कुछ मूल मन्त्र का जाप करके मध्य में जल देकर फिर रुक कर 'अमृतपिधानमसि स्वाहा' यह पढ़ कर जल देवे ।

मूल मन्त्र के प्रथम खण्ड–

'ॐ ह्लीं बगलामुखि आत्मतत्वव्यापिनी बगलामुखी तृप्यतु ।'

दूसरे खण्ड से–

'सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय विद्यातत्वव्यापिनी श्री बगलामुखी तृप्यतु ।'

तृतीय खण्ड से–

'जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ओम् स्वाहा शिवतत्व व्यापिनी श्रीबगलामुखी तृप्यतु ।'

इसके बाद पूर्ण मन्त्र के द्वारा–

'ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ओम् स्वाहा सर्वतत्वव्यापिनी श्रीबगलामुखी तृप्यतु ।

तर्पण करना चाहिए ।

इसके पश्चात् हाथ धोकर, कुल्ला कराकर ताम्बूल देवे । फिर आरती, देव-वन्दना और आत्म-वन्दना करके हाथों के धोने के उपरांत पुष्पाञ्जलि देकर पूजा का अङ्ग रूप होम करे ।

होम--

अथेत्यादि श्री पीताम्बरपूजाङ्गत्वेन विहितहवनं करिष्ये ।

'अथेत्यादि' के द्वारा श्री पीताम्बरा की पूजा का अङ्ग होने से विहित हवन करूँगा, यह सङ्कल्प करना चाहिए । फिर कुण्ड हो या स्थण्डिल हो, उसमें 'ह्ली ओम् ह्लीं श्रीं' इस मूल से सम्प्रोक्षण करे ।

फिर मूल मन्त्र के द्वारा अग्नि को लाकर 'अग्नये नमः' इसके द्वारा गन्ध और अक्षत से पूजन करे। हाथोंसे वह्नि के पात्र को लाकर अपने सामने अग्नि की स्थापना करे। 'ॠ ह्लीं श्रीं' मूल से काष्ट आदि का सम्प्रोक्षण करके अग्नि में निक्षेप करे। जलाकर इसका इस प्रकार ध्यान करे–

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्ध विश्वतोमुखम्॥

जातवेदा हुताशन जो प्रज्वलित है, मैं उस अग्नि की वन्दना करता हूँ, वह स्वर्ण के वर्ण के समान अमल है, समृद्ध है और विश्वतोमुख है।

फिर पुष्पांजलि ग्रहण कर 'ओ३म् ह्लीं श्री' इस मूल मन्त्रसे अग्नि में देवी के चैतन्य का आवाहन करे। मूल मन्त्र के द्वारा कम से कम २१ और इससे अधिक अपनी इच्छा और शक्ति के अनुसार आहुतियाँ देकर गन्ध आदि के द्वारा पूजन करे। फिर अपने स्थान पर विराजमान है, ऐसी भावना करे। इसके बाद अग्नि के मुख का पूजन करे। भस्म लेकर ललाट आदि अङ्गोंमें धारण करे। फिर इस प्रकार प्रार्थना करे–

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थानं परमेश्वरः।
यत्र ब्रह्मादयो देवाः तत्र गच्छ हुताशन।
गच्छ त्वं भगवन्नग्ने स्वस्थानं कुण्डमध्यतः।
हव्यसादाय देवेभ्यः शीघ्र देहि, प्रसीद मे॥

'हे परमेश्वर ! हे सुरों में श्रेष्ठ ! आप अपने स्थान पर जाइये, हे हुताशन ! जहाँ पर ब्रह्मा आदि देवता हैं, वहाँ पर ही आप जाइये। हे भगवान् ! हे अग्ने ! कुण्ड के मध्य से आप अपने स्थान को गमन कीजिये। इस हव्य को लेकर शीघ्र ही आप देवों को दीजिये और मुझ पर प्रसन्न होइये।

इस प्रकार से अग्नि का विसर्जन करके देवी के लिए होम को

अर्पित करना चाहिए । यह प्रार्थना करे कि इस पूजा के अङ्ग स्वरूप होम के कर्म से श्रीबगलामुखी प्रसन्न होवें ।

बलिदान-

ईशान, वायु, नैऋत्य और अग्नि कोणों में क्रम से वटुक, योगिनी, क्षेत्रपाल और गणपति के लिए बलि देवें ।

ईशान में-

एहि एहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिल जटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान् नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा, वटुकाय एष बलिर्न मम ।

'हे देवी पुत्र ! हे वटुकनाथ ! हे कपिल ! हे जटाओं के भार से भासुर ! हे त्रिनेत्र ! हे ज्वालामुखी! आप आइये-आइये । समस्त विघ्नों को नष्ट कीजिए, और सब उपचारों से युक्त इस बलि को ग्रहण कीजिये स्वीकार कीजिए । स्वाहा, यह बलि मेरी नहीं, बटुक के लिए है ।

वायव्य कोण में-

'याँ योगिनीभ्यो नमः इति योगिनीः पूजयित्वा सामान्या-र्घ्योकं गृहीत्वा'-

इस मन्त्र से योगिनियों का पूजन कर सामान्य अर्घ्य का जलग्रहण करे । इसके बाद प्रार्थना करे-

'ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्मांडतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा पाताले वा, सलिलपवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा ।

क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन

प्रीता देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवान्द्याः।

'ब्रह्माण्ड से भी ऊपर हिम लोक में, गगन तलमें, भूतल अथवा निष्फल में, पाताल में या तल लोक में, सलिल या पवन में जहाँ कहीं भी स्थित होम क्षेत्र है, पीठोपपीठ आदि में अपना स्थान बनाकर रहने

वाली देवियाँ धूप आदि के द्वारा तथा शुभ बलि की विधि से वीरेन्द्रों के द्वारा वन्दनीय सदा रक्षा करें।

'सर्वयोगिनीभ्यो हुं फट् स्वाहा, योगिनीभ्य: एष बलिर्न मम।

योगिनियों के लिए यह बलि है,मेरी नहीं। इससे जल देकर प्रणाम करे।

क्षं क्षेत्रपालाय नम: क्षेत्रपालबलिमंडलाय: नम: क्षेत्रपाल-बलिद्रव्याय नम: ।

इन मन्त्रों से गन्ध पुष्पों के द्वारा पूजन करे। सामान्य अर्घ्य के लिए जल का ग्रहण करें।

ॐ क्षां क्षूं क्षै क्ष: इमं बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा, क्षेत्र-पालाय एष बलिर्नमम: ।

क्षेत्रपाल इस बलि को ग्रहण करो २ स्वाहा। यह बलि क्षेत्रपाल के लिए है, मेरी नहीं है।

आग्नेय कोण में--

'गं गणपतये नम: गणपतिबलिमंडलाय नम: ।'

इस यन्त्र से गन्ध-पुष्पों से पूजन करके जल लेकर--

ॐ गां गीं गूं गै गौ ग: गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वश-मानय इमं बलि गृहाण गृहाण स्वाहा, गणपतये एष बलिर्न मम इति जलं दत्वा प्रणमेत्।

इस मन्त्र से जल देकर प्रणाम करें।

उत्तर में -पूर्व की भाँति मण्डल बनाकर पूजा करे। आधार के सहित बलि रखकर वहाँ पर सब देवताजों का यजन करके 'ह्लीं सर्व-विघ्नकृद्भ्य: सर्वभूतेभ्यो हुँ फट् स्वाहा उससे समस्त भूतों के लिए बलि देवे।

॥ इति बलिदानम् ॥

फिर हाथों और पैरों को धोकर योनि मुद्रा से प्रणाम और फिर आरती करे । अन्त में देवी के लिये मन्त्र पुष्पांजलि देकर परिक्रमा करे और इस प्रकार स्तुति करे–

समस्तमुनि, यक्ष, किंपुरुष, सिद्ध, विद्याधर, महासुर, सुराप्सरागोगममुखैः गणैः सेविते । निवृत्तितिलकाम्बर-प्रकृति-शान्ति विद्याकलाःकमलापमधुराकृते कलित एष पुष्पाञ्जलिः । तरङ्गयति सम्पदं तदनु संहरत्यापदम् ।

'समस्त मुनि, यक्ष, किम्पुरुष, सिद्ध, विद्याधर, महासुर, सुर व अप्सराओं के गणों में प्रमुखों के द्वारा सेवित अर्थात् हे सेवा की हुई ! निधृत तिलक वस्त्र, प्रकृति, शान्ति, विद्या व कलाओं के समुदाय से हे मधुर आकृति वाली ! ये बलिह पुष्पांजलि हैं अर्थात् आपके लिए यह सुन्दर पुष्पोंकी अञ्जलि अर्पित है । सम्पदा जो तरङ्गित करती है और आपदाओं का संहार करती है ।

इसके अनन्तर सुवासिनी, वटुक व कुमारिकाओं का भली भाँति पूजन करके सन्तुष्ट करे और विजर्जन करे । इसके पश्चात् १०८ बार मूलमन्त्र का जाप करे । देवी से इस प्रकार निवेदन करे–

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात् महेश्वरि ।।

।। इति निवेदयेत् ।।

पीछे, आप गुह्य से भी अधिक गुह्य की रक्षा करने वाली हैं । मेरे किये हुए इस जप को ग्रहण करे । हे महेश्वरि ! हे देवि ! आपके प्रसाद से मुझे सिद्धि प्राप्त हो ।

इस रीति से निवेदन करना चाहिए ।

इसके उपरान्त उद्वासन करे । सामान्य अर्घ्य पात्रको उठाकर तीन बार भ्रमित करके इस प्रकार प्रार्थना करे ।

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद् यदाचरितं मया ।
तत् सर्वं भगवत्यम्ब गृहाणाराधनं परम् ॥

मेरा कृत कर्म साधु हो अथवा असाधु हो, जो-जो भी मैंने किया है, वह सभी जगदम्बे ! हे भगवति ! मेरे परम आराधन को आप ग्रहण कीजिए ।

यह पढ़कर इसका पाठ करे–

इतः पूर्वं माँ मदीयं च श्रीबगलामुखीदेवयायै समर्पयामि नमः ।

इससे पूर्व मुझको और मेरे को श्रीबगुलामुखी देवता के लिए मैं समर्पण करता हूँ । नमस्कार है ।

इसके पश्चात् अवशिष्ट जल से जो कि सामान्य अर्घ्य का है, अपने सर में सम्मार्जन करके सामार्यको का संयोजनकरे । फिर देवी के ऊपर रहने वाले पुष्पों को संहार की मुद्रा से ग्रहण करे और उसको स्वयं सूँघे । फिर देवी के चैतन्य को अपने हृदय में स्थापित करके मन में कल्पित उपचारों से पूजन करे । हाथों से अर्घ्य पात्र को लेकर सर पर करे । इस प्रकार प्रार्थना करे–

देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक ।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु ॥

'हे देवों के स्वामी ! हे गुरो ! हे स्वामिन ! हे देशिक ! हे स्वात्म नायक ! हे कृपा के सागर ! रक्षा करो-२ । पूजा को पूर्ण बना दो ।

इस प्रकार से प्रार्थना करके इस द्रव्य को दूसरे पात्र में करके विशेष अर्घ्य पात्र को धोकर उसमें पुष्पों और अक्षतों को डालदे । फिर देवता के आगे स्थापित को उच्छिष्ट बलि दे और इस प्रकार भैरव ध्यान करे –

गदात्रिशूलडमरुपाशहस्तं त्रिलोचनम् ।
कृष्णाभं भैरवं देवं ध्यायेदुच्छिष्टभैरवम् ॥

'गदा, त्रिशूल, डमरू व पाश हाथों में धारण करने वाले तीन नेत्रों

से युक्त, कृष्ण आभा वाले भैरव देव का जो कि उच्छिष्ट भैरव है, ध्यान करे।

ऐसा ध्यान करके 'ओं उच्छिष्टभैरव एहि एहि बलिं गृहाण गृहाण हुँ फट् स्वाहा।' इस मन्त्र से वलि देकर, उसे उठाकर पूजा के घर से वाहर भूमि में चतुरस्र (चौकोर) मण्डल बनावे। फिर काले कुत्ते को बुलाकर बलि दे और यह मन्त्र पढ़े–'वटुकवाहन इमां पूजां बलिं च गृहाण गृहाण स्वाहा।

इसे पढ़ते हुए जल छोड़कर हाथों, पैरों को धोवें। फिर गृह के अन्दर प्रवेश कर अपने आसन पर बैठकर आचमन करे और शान्ति स्तवन का पाठ करे।

फिर उच्छिष्ट चांडालिनि का ध्यान करना चाहिए। फिर मन्त्र से निर्माल्य के सहित नैवेद्योच्छिष्ट बलि को दे।

'ऐं नमः उच्छिष्टचांडालिनि मातङ्गि सर्वजनवशङ्करि इमां पूजां बलिं च गृहाण गृहाण स्वाहा।

फिर हाथों को धोकर पात्रामृत को स्वयं ग्रहण करे। वहाँ पर उस समय जो अन्य व्यक्ति उपस्थित हों, उनको भी दे। फिर इस प्रकार प्रार्थना करे–

'न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम्। शिवशासनतः। शिव-शासनतः।

'गुरु से अधिक नहीं है, गुरुदेव से अधिक कोई नहीं है, शिव के शासन से, शिव के शासन से।'

फिर देवी के लिए पूजा को वर्धनी के जल से अर्पित करे।

'अनेन यथाज्ञानेन यथासम्भावितोपचारद्रव्यैः श्री बगला-मुखीसपर्याख्येन कर्मणा भगवती श्रीपीताम्बरा प्रीयताम्। ॐ तत् सत्।'

इस ज्ञान के अनुसार यथा सम्भव उपचार द्रव्यों से श्रीबगलामुखी सपर्या नामक कर्म के भगवीत पीताम्बरा प्रसन्न हों। 'ओं तत्सत्।'

इसके पश्चात् प्रसाद और चरणामृत लेकर शिष्टों के साथ खाये और सुख पूर्वक विहार करें।

॥ श्री पीताम्बरार्चन-पद्धति समाप्तम् ॥

सिद्धि मन्त्र-प्रयोग

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि सुलभं क्रौञ्चभेदन।
महोत्पाते महाघोरे सङ्कटे वैरिसङ्कुले ॥१
केवल मूलमन्त्रेण प्रयोगं वा समाचरेत्।
स्वगृहे शुभनक्षत्रं घटिकां संग्रहेच्छुचिः ॥२
साध्यनामायुतं चैव षट्त्रिंशद्वर्णकं मनुम्।
पङ्क्तित्रयं लिखेद् भित्तौ अर्कसंख्यां पृथक् पृथक् ॥३
तस्योपरि लिखेद् रेखा ऊर्ध्वाधः शूलसंयुताः।
लिखित्वा साधकश्रेष्ठः प्राणान् संस्थाप्य यत्नतः ॥४
पूजयेद् परया भक्त्या पीतद्रव्येण पुत्रक।
सन्ध्याकाले वाऽर्धरात्रौ तत्र स्थित्वा जपेन्मनुम् ॥५
स्तम्भयेत्संकलान् लोकान् किं पुनः क्षद्रमानुषान्।
अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि मांडकाख्यं प्रयोगकम् ॥६
यस्य श्रवणमात्रेण त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात्।
भृगौ प्रभातसमये स्नात्वा सम्यग् विधानतः ॥७
पीतद्रव्याणि संगृह्य नदीतीरे च साधकः।
मंडकं गृहीत्वा तु तत्रैव च प्रपूजयेत् ॥८
तन्त्रोक्तविधिना वत्स पीतद्रव्येण भूर्जके।
षट्कोणां च लिखेत्स्पष्टं मध्ये साध्यं च योजयेत् ॥९
कोणाषट्के लिखेन्मंत्र षट्त्रिंशदक्षरात्मकम्।
तस्योपरि लिखेन्मंत्रं गायत्रीं बगलाऽऽह्वयाम् ॥१०

हे क्रौञ्चभेदन ! इसके अनन्तर मैं एक अन्य सुलभ विधान आपको वतलाऊँगा । किसी भी महान् उत्पात के होने पर महान् घोर संकट के पड़ने पर तथा बैरियों के द्वारा घिर जाने पर केवल मूल मन्त्र के ही द्वारा प्रयोग का समाचरण करना चाहिए । अपने ही धर में किसी का शुभ नक्षत्र में शुचि होकर घटिका का संग्रह करें ।१-२। साध्य का नाम और दस सहस्र छत्तीस अक्षर का मन्त्र को भीत पर तीन पंक्तियों को लेखन करं और अंक संख्या पृथक्-पृथक् होनी चाहिए ।३। उसके ऊपर और नीचे शूल से संयुत रेखा लिखें । रह लिखकर साधना करने वालों में श्रेष्ठ पुरुष को यत्नपूर्वक प्राणों की संस्थापना करनी चाहिए । संध्या के समय में अथवा आधी रात में वहाँ पर स्थित होकर मन्त्र का जाप करे ।४-५। इससे समस्त लोकों का स्तम्भन होताहै बिचारे क्षुद्र मानवों की तो बात ही क्या है । अब एक माण्डक नाम वाला अन्य प्रयोग बतलाता हूँ ।६। जिस प्रयोग के श्रवण मात्र से ही तीनों लोकों को एक ही क्षण में स्तम्भित कर दिया करता है । भृगुवार के दिन प्रातःकाल में विधान से अच्छी तरह स्नान करके सात पीले द्रव्यों का संग्रह करके नदी के तट पर जाकर एक मण्डूक का ग्रहण करे अर्थात् पकड़ लेवेवहाँ पर ही अच्छी तरह से पूजन करना चाहिए ।७-८। हे वत्स ! तंत्र में वर्णित विधि से भोज पत्र पर पीत द्रव्यसे एक षट्कोण लिखे और स्पष्ट रूप से मध्य में जो भी साध्य हो उसका नाम लिखे । छै कोणों में मन्त्र को लिखें जो कि बगलामुखी देवी का छत्तीस अक्षरों का है । उसके ऊपर बगला गायत्री मन्त्र को लिखना चाहिए ।९-१०।

ओं बगलामुख्यै च विद्महे स्तम्भभिन्यै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात् ।

शताक्षरमहामन्त्रं तस्योपरि च वेष्टयेद् ।
एवं लिखितमन्त्रस्य गुटिकां कारयेच्छुभाम् ।।११
पीतसूत्रेण संवेष्ट्य मंडूकस्यानने क्षिपेत् ।

पीतोपचारैः सम्पूज्य कलशे निःक्षिपेत्ततः ।।१२
आच्छाद्य पूर्णपात्रेण स्थापयेद्देवतालये ।
प्रत्यहं पूजयेन् मंत्रं शतं बारसहस्रकम् ।।
जप्त्वा मनोरथान् सर्वान् पूरयेद् बगलामुखी ।।१३

बगला गायत्री का स्वरूप यह है–'ओं बगलामुख्यै च विद्महे स्तम्भिन्यै च धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्' उसके ऊपर शताक्षर महा मन्त्र को वेष्टित करे। इस प्रकार से लिखे हुए मन्त्र की एक गुटिका करके उस मेंढक के मुख में डाल देवे। फिर पीत उपचारों से पूजन करके उसको कलश में डाल देवे। उसको पूर्ण पात्र से ढककर किसी देवता के आलय में उसको स्थापित कर देवे। उस मन्त्र का प्रतिदिन पूजन करे और एक सौ अथवा एक हजार करे तो बगलामुखी देवी सब मनोरथों को पूरा कर देती है।१३।

।। इति सिद्ध-मन्त्र-प्रयोगः ।।

--o--

श्री बगला कवचम्

कवच का अभिप्राय उस माध्यम से है जिससे रक्षा कार्य सम्पन्न हो सके। शारीरिक-सुरक्षा के लिए प्राचीन काल में लोहे और चमड़े के निर्मित वस्त्रों का प्रयोग किया जाता था ताकि युद्ध क्षेत्र में शत्रु के आक्रमणों का उस पर कोई प्रभाव न हो सके। रक्षा करने वाली कोई भी वस्तु हो, उसकी संज्ञा कवच होगी क्योंकि कवच का अर्थ है--आच्छादन करना। किसी वस्तु से अपने को ढका जाय तो उसे कवच का प्रयोग करना कहा जायेगा।

जिस तरह लोहे के कवच से शारीरिक सुरक्षा का उद्देश्य पूर्ण होता है, उसी तरह आध्यात्मिक शक्तियों से ओत-प्रोत देवी कवच का भी निर्माण किया जा सकता है जिसके प्रयोग से आसुरी शक्तियों के प्रकोपों से बचा जा सकता है। इसमें मन्त्र शक्ति की प्रमुखता तो रहती ही है, श्रद्धा भावना के सम्मिलित होने से यह अत्यन्त प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। अपनी रुचि व श्रद्धा वाले कवच का नित्य प्रति पाठ किया जाता रहे तो भी अनिष्टों के आक्रमणों से सुरक्षा रहती है।

अपनी दैनिक सन्ध्या व उपासना के बाद कवच का पाठ करना चाहिए। कवच पाठ स्वयं में एक उपासना है परन्तु इसका उद्देश्य केवल रक्षा करना है। आसुरी शक्तियाँ चारों ओर मडँरा रही हैं। उनसे हानि की सम्भावना हो तो कवच का श्रद्धापूर्वक पाठ करना चाहिए। पाठ करते हुए यह भावना करनी चाहिए कि हमारे विभिन्न अङ्गों पर अध्यात्म शक्ति कवच चढ़ गया है। सम्पूर्ण शरीर की सुरक्षा के लिए यह भावना भी की जा सकती है कि हमारे चारों ओर चक्र-कार रूप में एक ऐसी रेखा खिची हुई है जिसे पार करना आसुरी शक्तियों की सामर्थ्य में नहीं है। आन्तरिक नेत्रों से अनुभव करें कि वे शक्तियाँ उस शक्तिशाली लौह-निर्मित रेखा से टकरा कर चकनाचूर होती जा रही हैं परन्तु उस घेरे में प्रविष्ट नहीं हो पा रही हैं। यह भावना जितनी दृढ़ होगी, कवच-पाठ उतना ही प्रभावशाली सिद्ध होगा यहाँ कुछ महत्वपूर्ण बगलाकवच दे रहे हैं। पूजन व मन्त्र साधनाके बाद कवच पाठ करना चाहिए। विभिन्न उद्देश्यों को पूर्ति के लिए अलग अलग कवच यहां दे रहे हैं-

कवचम् (१)

कैलासाचलमध्यगं पुरदहं शान्तं त्रिनेत्रं शिवम्
वामस्था गिरिजा प्रणम्य कवचं भूतप्रदं पृच्छति।

देवी श्रीबगलामुखी रिपुकुलारण्याग्निरूपा च या
तस्याश्चापविमुक्तमंत्र सहितं प्रीत्याऽधुना ब्रूहि माम् ।।१

श्री शङ्कर उवाच--

देवि श्रीं भववल्लभे शृणु महामन्त्रं विभूतिप्रदम्
देव्या वर्मयुतं समस्तसुखदं साम्राज्यदं मुक्तिदम् ।
तारं रुद्रवधू विरञ्चिसंहिता विष्णु-प्रिया कामयुक्
कांते श्रीबगलानने मम रिपून् नाशय युग्मं त्वति ।।२
ऐश्वर्याणि पदं च देहि युगलं शीघ्रं मनोवाञ्छितं
कार्यं, साधय युग्मयुच्छिववधूवह्निप्रियान्तो मनुः ।
कंसारेस्तनयं च बीजमपरा शक्तिश्च वाणीं तथा
कीलं श्रीमति भैरवर्षिसहितं छन्दो विराट्संयुतम् ।।३
स्वेष्टार्थस्य परस्य वेति नितरां कार्यस्य सम्प्राप्तये
नानाऽसाध्यमहागदस्य नियतं नाशाय वीर्याप्तये ।
ध्यात्वा श्रीबगलाननां मनुवरं जप्त्वा सहस्राख्यकम्
दीर्घैः षट्कयुतैश्च रुद्रमहिमाबीजैर्विनास्यङ्गके ।।४

कैलाश गिरि के मध्य में विराजमान पुर के दहन करने वाले परम शान्त स्वरूप से युक्त भगवान शिव को प्रणाम करके वाम भागमें स्थित गिरिजा श्री शिव के बोलीं-भू प्रदान करने वाले कवच को पूजित है जो देवी शत्रुओं के कुल रुपी अरण्यके लिए अग्निके स्वरूप वाली श्रीबगला मुखी देवी है उसका आपत्ति से मुक्त करने वाले मन्त्र के सहित कवच को प्रति से अब कृपा करके मुझे बतलाइए ।१। भगवान् शङ्कर ने कहा-हे श्रीभव की प्रिये ! हे देवि ! उस भूति के दाता महामन्त्र का आप श्रवण कीजिए । यह देवी के वर्मसे समन्वित कवच समस्त सुखों का देने वाला-साम्राज्य का प्रदाता और संसार के भव बन्धन से छुटकारा देने

वाला है। इसमें सर्वप्रथम तार अर्थात् ओं है। फिर विरञ्चि के सहित रुद्र वधू है और काय से युक्त विष्णु प्रिया हैं अर्थात् श्री है। हे कान्ते ! हे श्रीबगलानने ! मेरे रिपुओं को नाश के लिए युग्म का प्रयोग है।२। बहुत ही शीघ्र ऐश्वर्यों को दीजिए। यह पद युगल है तथा मेरे मनोवांच्छित का प्रदान करो। कार्य की साधना करो यह भी युग्म से युक्त हो। अन्तमें शिव वधू वह्नि प्रिया होवे-यह मन्त्र है। कंसारि भगवान् श्रीकृष्ण का तनय बीज है और अपरा शक्ति वाली है। इसका भैरव ऋषि के सहित है और छन्द विराट्संयुत है।३। अपने अर्थ का अथवा दूसरे के अर्थ के कार्य की सम्प्राप्ति के लिए-अनेक असाध्य महान् रोग के नियत रूप से नाश के वास्ते एवं वीर्य पराक्रम की प्राप्ति के लिए श्रीबगलामुखी का ध्यान करके इसके श्रेष्ठ मन्त्र का एक सहस्र जाप करना चाहिए और दीर्घ रुद्र महिमा के षटक युत बीजों के द्वारा अङ्ग में न्यास करे।४।

ध्यानम्

सौवर्णासनसंहिता त्रिनयना पीतांशुकोल्लासिनीं ।
हेमाभाङ्गरुचि शशाङ्कमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम् ।
हस्तैर्मुद्गरपाशवज्ररसनाः संबिभ्रती भूषणै-
र्व्याप्तांगी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनी चिन्तयेत् ।।५

सुवर्ण निर्मित आसन पर विराजमान-तीनों नेत्रों से समन्वित पीतवर्ण के सशस्त्रों से शोभिता, हेमकी आभा के समान अङ्गोंकी आभा से संयुता, शशांक को मुकुट में धारण करने वाली, पीतचम्पा की माला से विभूषिता अपने करों में मुद्गर, पाश, वज्र और शत्रु की जिह्वा को ग्रहण करती हुई, भूषणों से व्याप्त अङ्गों वाली, तीनों भुवनों का स्तम्भन करती हुई श्री बगलाभुखी का ध्यान करे।४।

ॐ अस्य श्रीबगलामुखीब्रह्मास्त्रमन्त्रकचस्य भैरव ऋषिः विराट् छन्दः, श्रीबगलामुखी देवता, क्लीं बीजम्, ऐं शक्तिः, श्रीकीलकं मम परस्य च मनोभिलषितेष्टकार्यसिद्धये विनियोगः शिरसि भैरव ऋषये नमः मुखे विराट्छन्दसे नमः। हृदि बगला मुखीदेवतायै नमः । गुह्ये क्लीं बीजाय: नमः। पादयोः ऐं शक्तये नमः सर्वांगे श्री कीलकाय नमः। ॐ ह्लां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्लीं तर्जनीभ्यां नमः ॐ ह्लूं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ ह्लैं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ ह्लौं कनिष्ठकाभ्यां नमः, ॐ ह्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । ॐ ह्लां हृदयाम नमः, ॐ ह्लीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्लूं शिखायै वषट्, ॐ ह्लैं कवचाय हुम्, ॐ ह्लौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्लः अस्त्राय फट्।

ॐ इस बगलामुखी के ब्रह्मास्त्र मन्त्र के कवच का भैरव ऋषि है, विराट् छन्द है, श्री बगलामुखी देवता हैं, क्लीं बीज है, ऐं शक्तिहै, श्री कीलक हैं, मेरे और दूसरे के मन को अभिलषित कार्य की सिद्धि के लिए विनियोग है । शिर में भैरव ऋषि के लिए नमस्कार है। मुख विराट् छन्द के लिए नमस्कार है, हृदय में बगलामुखी देवता के लिए नमस्कार है, गुह्य में क्लीं बीजको नमस्कार है, पादोंमें ऐं शक्तिके लिए नमस्कार है, सब अङ्गों में श्री कीलक को नमस्कार है। ॐ ह्लां अंगुष्ठों के लिए नमस्कार है, ॐ ह्लीं तर्जनियों को नमस्कार है। ॐ ह्लू मध्यमाओं के लिए नमस्कार है, ॐ ह्लैं अनामिकाओं के लिए नमस्कार है, ॐ ह्लीं कनिष्ठकाओं को नमस्कार है, ॐ ह्ला करतल करपृष्ठों के लिए नमस्कार है। ॐ ह्लां हृदय को नमस्कार है, ॐ ह्लीं शिर के लिए स्वाहा है, ॐ ह्लूं शिखा के लिए वषट् है, ॐ ह्लैं कवच के लिए हुम् है, ॐ ह्लौं नेत्रत्रय को वौषट् है, ॐ ह्लः अस्त्र के लिए फट् है।

मन्त्रोद्धार:--

ओं ह्लीं ऐं श्रीं क्लीं श्रीं बगलानने मम रिपून्नाशय नाशय ममैश्वर्याणि देहि देहि,शीघ्रं मनोवाञ्छितं कार्यं साधय साधय ह्लीं स्वाहा ।

शिरो मे पातु ओं ह्लीं ऐं श्रीं क्लीं पातु ललाटकम् ।
सम्बोधनपदं पातु नेत्रे श्री बगलानने ।१
श्रुतौ मम रिपुं पातु नासिकां नाशयद्वयम् ।
पातु गण्डौ सदा ममैश्वर्याण्यन्तं तु मस्तकम् ।२
देहिद्वन्द्वं सदा जिह्वां पातु शीघ्रं वचो मम ।
कण्ठदेशं मन: पातु वांछितं बाहुमूलकम् ।३
कार्यं साधयेद्वन्द्वं तु करौ पातु सदा मम् ।
मायायुक्ता तथ स्वाहा हृदयं पातु सर्वदा ।४
अष्ठाधिकचत्वारिंशदण्डाद्या बगलामुखी ।
रक्षां करोतु सर्वत्र गृहेऽरण्ये सदा मम ।५
ब्रह्मास्त्राख्यो मनु: पातु सर्वांगे सर्वसन्धिषु ।
मन्त्रराज: सदा रक्षां करोतु मम सर्वदा ।६
ओं ह्लीं पातु नाभिदेशं कटिं मे बगलाऽवतु ।
मुखीवर्णद्वयं पातु लिंगं मे मुष्कयुग्मकम् ।७
जानुनी सर्वदुष्टानां पातु मे वर्णपञ्चकम् ।
वाचं मुखं तथा पादं षडवर्णा: परमेश्वरी ।८
जंघायुग्मे सदा पातु बगला रिपुमोहनी ।
स्तम्भयेति पदं पृष्ठं पातु वर्णत्रयं मम ।९
जिह्वावर्णद्वयं पातु गुल्फौ मे कीलयेति च ।
पादोर्ध्वं सर्वदा पातु बुद्धिं पादतले मम ।१०
विनाशयपदं पातु पादाङ् गुल्योर्नखानि मे ।
ह्लीं बीजं सर्वदा पातु बुद्धीन्द्रियवचांसि मे ।११

ॐ ह्रीं ऐं श्रीं दलीं श्रवगलानने मम रिपून् नाशय-नाशय, ममैश्व र्याणि देहि देहि, शीघ्रं वाञ्छितं कार्य्यं साधय-साध, ह्रीं स्वाहा ओं ह्रीं ऐं मेरे शिर की रक्षा करे–श्रीं क्ली मेरे ललाटका परित्राण करे बगलालने यह सम्बोधन पद नेत्रों की रक्षा करे।१। मम रिपुं यह मेरे दोनों कानों की सुरक्षा करे दोनों नाशय पद मेरी नासिका की रक्षाकरे मम पद गण्डोंकी रशा करे ऐश्वर्याणि यह पद मेरे मस्तक की रक्षा करे।२। दोनों देहि पद सदा जिह्वा का परित्राण करें शीघ्रं पद मेरे वचन की रक्षा करें, मनः यह पद गण्डदेश की रक्षा करे वाञ्छितं पद बाहुओं के मूल की सुरक्षा करे।३। कार्य साधय यह पद सदा मेरे दोनों करों की रक्षा करे माया (ह्रीं) तथा स्वाहा ये पद सर्वदा हृदय का परित्राण करें।४। अड़तालीस दण्डों से समन्वित बगलामुखी देवी सर्वत्र गृह में अरण्य में सर्वदा सुरक्षा करे।५। ब्रह्मास्त्र नामक मन्त्र सम्पूर्ण अङ्ग में समस्त सन्धियों में रक्षा करे मन्त्रराज सर्वदा मेरी रक्षा करे।६। ओं ह्रीं मेरे नाभिदेश की रक्षा करे बगला मेरी कटिका त्रांण करे मुखी ये दोनों वर्ण मेरे लिंग और दोनों मुष्क (वृषण) की रक्षा करे।७। सर्व दुष्टानां ये पाँच वर्ण मेरे जानुओं की रक्षा करें वाचं मुख पद ये षट् वर्ण परमेश्वरी है, रिपुओं का मोहन करने वाली बगला सदा मेरी जंघाओं की सुरक्षा करें स्तम्भय ये तीन वर्ण मेरे पद और पृष्ठभाग की रक्षा करे।८-९। जिह्वा ये दो वर्ण मेरी गुल्फों का त्राण करे। कीलय यह सर्वदा पादों के ऊर्ध्व भाग की रक्षा करे, बुद्धि यह पद मेरे पादों के तलों की रक्षा करे।१०। विनाशय यह पद मेरे पादों की अंगुलियों और नखों की सुरक्षा करे। ह्रीं बीज सर्वदा मेरी बुद्धि-इन्द्रियों और वचनों की रक्षा करे।११।

सर्वांगं प्रणवः पातु स्वाहा रोमाणि मेऽवतु।
ब्राह्मी पूर्वदले पातु चाग्नेय्यां विष्णुवल्लभा।१२
माहेशी दक्षिणे पातु चामुण्डा शाक्षसेऽभवतुः।
कौमारी पश्चिमं पातु वायव्ये चापराजिता।१३

वाराही चोत्तरे पातु नारसिंही शिवेऽवतु ।
ऊर्ध्वं पातु महालक्ष्मीः पाताले शारदाऽवतु ।१४
इत्यष्टो शक्तयः पान्तु सायुधाश्च संवाहनाः ।
राजद्वारे महादुर्गे पातु मां गणनायकः ।१५
श्मशाने जलमध्ये च भैरवश्च सदाऽवतु ।
द्विभुजा रक्तवसनाः सर्वाभरणभूषिताः ।१६
योगिन्यः सर्वदा पान्तु महारण्ये सदा मम ।
इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतम् ।१७

मेरे सम्पूर्ण अङ्ग की स्वाहा पद रक्षा करें और स्वाहा पद मेरे रोमों की रक्षा करें पूर्वदल में ब्राह्मी और आग्नेयी में विष्णुवल्लभा त्राण करे ।१२। दक्षिण में माहेशी रक्षा करे, नैर्ऋत्य में चामुण्डा त्राण करे कौमारी पश्चिम में और अपराजिता वायव्य में मेरी रक्षा करे ऊर्ध्वभाग में महालक्ष्मी और शारदा पाताल में मेरा परित्राण करे ।१४। ये आठों शक्तियाँ अपने आयुधों और वाहनों के सहित मेरी रक्षा करें । राजद्वार में और महादुर्ग मे गणनायक मेरा रक्षण करें ।१५। श्मशान भूमि में और जल के मध्य में सदा मेरी भैरव रक्षा करें । महारण्य में दो भुजाओं वाली रक्त वस्त्रधारिणी तथा सव आभरणोंसे भूषित योगि-नियाँ सदा मेरी सुरक्षा करें । हे देवि ! यह अद्भुत कवच है जिसको मैंने आपको बतला दिया है ।१६-१७।

श्रीविश्वविजयो नाम कीर्तिश्रीविजयप्रदम् ।
अपुत्रो लभते पुत्रं घोरं शूर शतायुषम् ।१८
निर्धनो धनमोप्नोति कवचस्यास्य पाठतः ।
जपित्वा मन्त्रराजं तु ध्यात्वा श्रीबगलामुखीम् ।१९
पठेदिदं किं किवचं निशायां नियमात् तु यः ।
यत् यत् कामयते कामं साध्यासाध्ये महीतले ।२०

तत् तत् काममवाप्नोति सप्तरात्रेण शंकरि ।
गुरुं ध्यात्वां सुरां पीत्वा रात्रौ शक्तिसमन्वितः ।२१

यह श्री विश्व विजय नाम वाला है जो श्री और कीर्ति एवं विजय के प्रदान करने वाला है । इसके प्रभाव से साधक यदि पुत्रहीन हो तो वह परम धीर शूर और सौ वर्ष की आयु वाले पुत्र को प्राप्त किया करता है ।१८। इस कवच से पाठ करने में धनहीन पुरुष धन की प्राप्ति किया करता है । पहिले मन्त्र जाप करके इसका पाठ करना चाहिए जो कोई निशा के समय में नियम से इस कवच का पाठ करता है वह जो भी कामना करता है चाहे वह साध्य हो या असाध्य होवे उसी को इस मही मण्डल में वह प्राप्त कर लेता है । शांकरि ! साथ ही रात्रियों में करने से उनकी प्राप्ति हो जाया करती है । रात्रि में सुरापान करके शक्ति से समन्वित होकर गुरु का ध्यान करना चाहिए ।१६-२१।

कवचं यः पठेद् देवि तस्यासाध्यं न किञ्चन ।
यः ध्यात्वा प्रजपेन् मन्त्रं सहस्रं कवचं पठेत् ।२२
त्रिरात्रेण वशं याति मृत्योः तन्नात्र संशयः ।
लिखित्वा प्रतिमां शत्रोः सतालेन हरिद्रया ।२३
लिखि हृदि तन्नाम तं ध्यात्वा प्रजपेन् मनुम् ।
एकविंशदिनं यावत् प्रत्यहं च सहस्रकम् ।२४
जप्त्वा पठेत् तु कवचं चतुर्विंशतिवारकम् ।
संस्तम्भं जायते शत्रोर्नात्र कार्या विचारणा ।२५
विवादे विजयं तस्य संग्रामे जयमाप्नुयात् ।
श्मशाने च भयं ना स्त कवचस्य प्रभावतः ।२६

हे देवि जो पुरुष इस कवचको पढ़ता है इस जगती तलमें उसे कुछ भी असाध्य नहीं होता है । इस कवच का ध्यान करें और मन्त्र जाप करें और एक सहस्र का जप करके कवच का पाठ करना चाहिए ।२२। मनुष्य तीन रात्रि में मृत्यु के बस में चला जाता है । इसमें कुछ भी

संशय नहीं है। हरिद्रा से ताल के सहित शत्रु का लेखन करें। उसके हृदयमें उसका नाम लिखकर उसका ध्यान करें और मन्त्र जाप करें। इकत्तीस दिन पर्यन्त प्रतिदिन एक सहस्र मन्त्र का जाप करना चाहिए ।२३-२४। मन्त्र का जाप करके चौबीस बार कवच का पाठ करना चाहिए शत्रु का स्तम्भन हो जाया करता है-इसमें लेश मात्र भी संदेह नहीं है ।२५। उसकी विवाद में विजय होती हैं और संग्राम में भी जीत की प्राप्ति किया करता हैं। इस कवच की कृपा से उसको श्मशान में भी कोई भय नहीं होता है। इस कवच का ऐसा ही प्रभाव है ।२६।

नवनीतं चाभिमन्त्र्य स्त्रीणां दद्यान् महेश्वरि।
वन्ध्यायां जायते पुत्रो विद्याबलसमन्वितः ।२७
श्मशानांगारमादाय भौमे रात्रो शनावथ।
पादोदकेन स्पृष्ट्वा च लिखेत् लोहशलाकया ।२८
भूमौ शत्रोः स्वरूपं च हृदि नाम समालिखेत्।
हस्त तद्धृदये दत्वा कवचं तिथिवारकम् ।२९
ध्यात्वा जपेन् मन्त्रराजं नवरात्रं प्रयत्नतः ।
म्रियते ज्वरदाहेन दशमेऽहनि न संशयः ।३०
भूर्जपत्रेष्विदं स्त्रोत्रमष्टचन्धेन संल्लिखेत्।
धारयेद् दक्षिणे बाहौ नारी वामभुजे तथा ।३१
संग्रामे जयमाप्नोति नारी पुत्रवती भवेत्।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि नैव कुन्तन्ति तं जनम् ।३२
सम्पूज्य कवचं नित्यं पूजायाः प्लमालभेत्।
बृहस्पतिसमो वापि विभवे धनदोपमः ।३३

हे महेश्वरि ! नवनीत को अभिमन्त्रित करके स्त्रियों को देना चाहिए। इससे विद्या और बल से समन्वित पुत्र वन्ध्या के भी उदर से उत्पन्न हो जाता है ।२७। भौमवार अथवा शनिवार में रात में श्मशान के अङ्गार को लाकर पादोदक से स्पर्श करके लोहे की शलाका

से भूमिमें शत्रु का स्वरूप लिखे और उसके हृदयमें उसका नाम लिखना चाहिए। उसके हृदय पर हाथ धरकर पन्द्रह बार कवच का पाठ करे और ध्यान करके प्रयत्न पूर्वक नौ बार अर्थात् नौ रात्रि तक मन्त्रराज का जप करे तो वह शत्रु ज्वर के दाह से दशवें ही दिन में मर जाया करता है–इसमें कुछ भी संशय नहीं है।२८-३०। इस यन्त्र को भोजपत्र पर भली भाँति लिखना चाहिए पुरुषको इसे दाहिनी भुजामें और नारी को बाँयी भुजा में धारण करना चाहिए ।३१। इसको धारण करके पुरुष रणक्षेत्र में विजय प्राप्त किया करता है तथा नारी पुत्रवती हो जाती है। ब्रह्मास्त्र आदि अस्त्र भी अनिष्ट नहीं कर पाते हैं–ऐसा इस का महान् प्रभाव होता है।३२। इस कवच का प्रतिदिन भले प्रकार से अभ्यर्चन करके देवता की पूजा से फल की प्राप्ति हो जाती है वह पुरुष बृहस्पति के समान बुद्धिमान और वैभव में कुबेर के सदृश हो जाता है ।३३।

कामतुल्यश्च नारीणां शत्रूणां यमोपमः ।
कवितालहरीं तस्य भवेद् गंगाप्रवाहवत् ।३४
गद्यपद्यमयी वाणी भवेद् देवीप्रसादतः ।
एकादशशतं यावत् पुरश्चरणमुच्यते ।३५
पुरश्चर्याविहीनं, तु न चेदं फलदायकम् ।
न देयं परशिष्येभ्यो दुष्टेभ्यश्च विशेषतः ।३६
देयं शिष्याय भक्ताय पञ्चत्वं चान्यथाऽऽप्नुयात् ।
इदं कवचमज्ञात्वा भजेद् यो बगलामुखीम् ।
शतकोटिं जपित्वा तु तस्य सिद्धिनं जायते ।३७
दाराढ्यो मनुजोऽस्य लक्षजपतः प्राप्नोति सिद्धिं परां
विद्यां श्रीविजयं तथा सुनियतं धीरं च वीरं वरम् ।
ब्रह्मास्त्राख्यमनुं विलिख्य नितरां भुजेऽष्टगन्धेन वै
धृत्वा राजपुरं व्रजन्ति खलु ये दासायते तान्नृपः ।३८

नारियोंके मनको मोहित करनेके लिए वह कामदेव के तुल्य आक-

षंक बन जाता है तथा शत्रुओं के पराजय और आतंक के लिए साक्षात् यमराज के समान हो जाता है । उस पुरुष के हृदयमें कविता को लहरी अर्थात् काव्य रचना की तरङ्गें गङ्गा के प्रवाह के तुल्य वहन किया करती हैं।३४। देवीके अनुपम प्रसादसे उसकी वाणी सर्वदा गद्य और पद्य से परिपूर्ण हो जाया करतीहै । एकदश शत पर्यन्त इसका पुरश्चरणकहा जाता है ।३५। पुरश्चरण के विहीन रहनेसे अर्थात् पुरश्चरण किये बिना यह कभी फलदायक नहीं होता है । तात्पर्य यह है कि यदि फल सिद्धि अपेक्षित हो तो अवश्यही इसका पुरश्चरण करना चाहिए। इसकी दीक्षा भूल कर भी दूसरे के शिष्य को न देवे और विशेश रूप से दुष्टों के लिए तो कभी भी देनी ही नहीं चाहिए ।३६। जो परम भक्त शिष्य हो उसी को इसकी दीक्षा देवे । अन्यथा करने से मृत्यु को प्राप्त हो जाया करता है । जो इस कवच का ज्ञान प्राप्त न करके बगलामुखी की सेवा करताहै वह सौबार जप करके भी सिद्धि प्राप्त नहीं किया करता है ।३७। द्वारा से युक्त पुरुष इसके एक लाख जप से ही सिद्धिकी प्राप्ति कर लेता है । ओं, श्री, विजय, सुनियत, धीर और वीर वरदान ब्रह्मास्त्र नामक मन्त्र को निरन्तर भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर धारण करके जो राजाके नगर में गमन किया करता है निश्चय ही वहाँ का राजा उसका दास हो जाता है ।३८।

॥ इति श्री विश्वेसरोद्धाप तन्त्रो पार्वतीश्वर-सम्वादे
बगलामुखी-कवचम् समाप्तम् ॥

रक्षा कवचम् (२)

श्रीगणेशाय नमः श्रीबगलायै नमः ।

प्रथमं गुरुं ध्यात्वा प्राणायामं कृत्वा कवचं पठेत् । ओं अस्य श्रीपीताम्बराबगलामुखी कवचस्य महादेव ऋषिः,उष्णिक्

छन्दः श्रीं पीताम्बरा देवता, स्थिरमाया बीजम्, स्वाहा शक्तिः अंष्ठः कीलकम्, मम सन्निहितानां दूरस्थानां सर्वदुष्टानां, वाङ् मुखपदजिह्वापवर्गाणां स्तम्भनपूर्वकं सर्वसम्पत्तिप्राप्तिचतुर्वर्ग-फलसाधनार्थं जपे विनियोगः ।

श्री गणेश के लिए नमस्कार है । श्री बगलादेवी के लिए प्रणाम है सर्वप्रथम अपने श्री गुरुदेव के चरणों का ध्यान करके प्राणायाम करे और इसके अनन्तर कवच पाठ करे । ओं इह श्रीपीताम्बरा बगलामुखी के कवच के महादेव ऋषि हैं, उष्णिक छन्द हैं, पीताम्बर देवता है, स्थिर मायाबीज है, स्वाहा शक्ति है, अष्ठ कीलक है, मेरे समीप में स्थित तथा दूर में स्थित समस्त दुष्टोंके वचन, मुख, पद, जिह्वा अपवर्गों का स्तम्भन के सहित सम्पूर्ण संपदा की प्राप्ति के साथ चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के फल के साधन के लिए जप करने में विनियोग है ।

ध्यानम्--

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेद्यां
सिंहासनोपरि गतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषितांगी ।
देवी भजामि धृतमुद्गरवरिजिह्वाम् ।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।२

इति ध्यात्वा पठेत् ।

हिमवत्तनया गौरी कैलासेऽथ शिलोच्चये ।
अपृच्छद् गिरिशं देवीं साधकानुग्रहेच्छया ।३

सुधा के महासागर के मध्य में मणियों से विरंचित मण्डप में रत्नों की वेदी पर सिंहासन के ऊपर विराजमान परिपीतवर्ण वाली पीतभूषण, माला, वस्त्र से विभूषित, अङ्ग-प्रत्यङ्गों से संयुक्त, मुद्गर और शत्रु की जिह्वा को धारण करती हुई देवी का मैं भजन करता हूँ

।१। अपने एक कर से शत्रु की जिह्वा को ग्रहण करके वाम कर से शत्रुओं को परिपीड़ित करती हुई तथा दाहिने हाथ से गदा के संघात से मारती हुई दो भुजाओं वाली पीत वस्त्र धारिणी देवी के लिए नमन करता हूँ ।२। इस प्रकार से देवी के स्वरूप का ध्यान करके कवच का पाठ करना चाहिए । गिरियों के राजा हिमवान् की परमप्रिय पुत्री गौरी ने कैलाश पर्वत पर एक उच्च शिलाओं के समूह पर विराजमान भगवान शिव से अपनी साधना करने वाले भक्तों पर अनुग्रह करने की इच्छा से पूछा था ।३। श्री पार्वती ने कहा–

श्रीपार्वत्युवाच--
देवदेव महादेव भक्तानुग्रहकाकारक ।
शृणु विज्ञाप्यते यत्तु श्रुत्वा सर्वं निवेदय ।४
विशुद्धाः कोलिका लोके ये मत्कर्मपरायणाः ।
तेषां निन्दाकरा लोके बहवः किल दुर्जनाः ।५
मनोबाधां विदधते मुहुः कटुभिरुक्तिभिः ।
तेषामाशु विनाशाय त्वया देव प्रकाशितः ।६
यो मन्त्रो बगलामुख्याः सर्वकामसमृद्धिदः ।
कवचं तस्य मन्त्रस्य प्रकाशय दयानिधे ।७
यस्य स्मरणमात्रेण पशूनां निग्रहो भवेत् ।
आत्मानं सतत् रक्षेद् व्याघ्राग्निरिपुराजतः ।८
श्रुत्वाऽथ पार्वतीवाक्यं ज्ञात्वा तस्या मनोगतम् ।
विहस्य तां परिष्वज्य साधु साध्वित्यपूजयत् ।९
तदाह कवचं दैव्यै कृपया करुणानिधिः ।

हे देवों के भी पूज्य देवेश्वर ! आप तो सर्वोपरि महान् देव है और सर्वदा अपने भक्तों पर कृपा करने वाले हैं । आप मेरी प्रार्थना सुनिये जो इस समय मैं आपकी सेवा में विज्ञप्ति की जा रही है और फिर कृपया उसका समाधान कीजिए ।४। कौलिक मत के मानने वाले लोक में परम विशुद्ध हैं जो कि सभी मेरे ही कर्मोंमें परायण रहा करते

हैं। तात्पर्य यह है कि कौलिकों में विशुद्धता है और साथ ही मेरे ही कर्मों में उनकी तत्परता एवं संलग्नता भी है। किन्तु लोक में उनकी निन्दा करने वाले बहुत से दुर्जन रहा करते हैं ।५। ये लोग अत्यन्त कटु वचनों के द्वारा कौलिकों के मन को बाधा पहुँचाया करते हैं और बराबर ऐसा करते ही रहते हैं। उनके विनाश करने के लिए हे देव ! आपने एक मन्त्र प्रकाशित किया है जो बगलामुखी देवी का मन्त्र समस्त कामनाओं की समृद्धि का देने वाला है। हे दयानिधे ! उस मन्त्र के कवच को अब प्रकाशित कर दीजिए ।६-७। जिसके केवल स्मरण ही करने से पशुओं का भी निग्रह हो जाया करता है और जो अपनी आत्मा को निरन्तर व्याघ्र, अग्नि, शत्रु और राजा से सुरक्षित किया करता है ।८। भगवान् शिव अपनी प्रिया पार्वती के इस वचन का श्रवण करके और उनके मन में स्थित भाव को समझ करके परम प्रसन्न हुए और हँसकर उनका समालिंगन करते हुए कहा था—बहुत ही अच्छा प्रश्न है—इस तरह से पार्वती से परम प्रशंसा की थी ।९। इसके पश्चात् उसी समय में करुणा के सागर सदाशिव प्रभु ने देवी के लिए कृपाकर उस कवच को कहा था।

शृणु त्वं बगलामुख्याः कवचं सर्वकामदम् ।१०
यस्य स्मरणमात्रेण बगलामुखी प्रसीदति ।
सर्वसिद्धिप्रदा प्राच्यां पातु मां बगलामुखी ।११
पीताम्बरा तु चाग्नेय्यां याम्यां महिषमर्दिनी ।
नैर्ऋत्यां चण्डिका पातु भक्तानुग्रहकारिणी ।१२
पातु नित्यं महादेवी प्रचीच्यां शूकरानना ।
वायव्ये पातु मां काली कौवेर्यां त्रिपुराऽवतु ।१३
ईशान्यां भैरवी पातु पातु नित्यं सुरप्रिया ।
ऊर्ध्वं वागीश्वरी पातु मध्ये मां ललिताऽवतु ।१४
अधस्ताद् अपि मां पातु वाराही चक्रधारिणी ।

मस्तकं पातु मे नित्यं श्रीदेवी बगलामुखी ।१५
भालं पीताम्बरा पातु नेत्रे त्रिपुरभैरवी ।
श्रवणौ विजया पातु नासिकायुगलं जया ।१६

भगवान् श्रीशंकर ने कहा--हे देवी ! अब आप बगलामुखी के सब कामनाओं के प्रदान करने वाले कवच का श्रवण कीजिए ।१०। यह कवच ऐसा है कि इसके स्मरण भरकर लेने से ही देवी बगलामुखी परम प्रसन्न हो जाया करती हैं। यह सब सिद्धियोंको प्रदान करने वाली बगलामुखी मेरा पूर्व दिशा में परित्राण करे ।११। आग्नेयी दिशा में पीताम्बरा और याम्य दिशा में महिषमर्दिनी तथा नैर्ऋत्य दिशा में भक्तों पर अनुग्रह करने वाली चामुण्डा देवी रक्षा करें ।१२। शूकर के समान मुखवाली महादेवी नित्य ही पश्चिम में मेरी रक्षा करे। वायव्य दिशा में मेरा परित्राण काली करे तथा कौबेरी दिशा में मेरा रक्षण त्रिपुरादेवी करे ।१३। ईशानी दिशा में भैरवी रक्षा करे और सुर प्रिया नित्य ही परिपालन करे । ऊर्ध्व भाग में वागीश्वरी सुरक्षा करे तथा मध्य भाग में ललितादेवी मेरा परित्राण करें ।१४। नीचे की ओर भी चक्र के धारण करने वाली वाराही मेरी रक्षा करे। मेरे मस्तक की रक्षा नित्य ही श्रीदेवी बगलामुखी करें ।१५। मेरे भाल को पीताम्बरा रक्षित करें और मेरे नेत्रों को त्रिपुर भैरवी सुरक्षित करें । श्रवणों का त्राण विजया करे और जयादेवी मेरी दोनों नासिकाओं की रक्षा करे ।१६।

शारदा वचनं पातु जिह्वां पातु सुरेश्वरी ।
कण्ठं रक्षतु रुद्राणी स्कन्धौ मे विन्ध्यवासिनी ।१७
सुन्दरी पातु बाहू मे जया पातु करौ सदा ।
भवानी हृदयं पातु मध्यं मे भुवनेश्वरी ।१८
नाभिं पातु महामाया कटिं कमल-लोचना ।
उरू मे पातु मातङ्गी जानुनी चापराजिता ।१६

जंघां कपालिनी पातु चरणौ चंचलेक्षणा ।
सर्वत: पातु मां तारा योगिनीं पातु चाग्रतः ।२०
पृष्ठं मे पातु कौमारी दक्षपार्श्वे शिवाऽवतु ।
रुद्राणी वामपार्श्वे तु पातु मां सर्वश्रेष्ठदा ।२१
स्तुता सर्वेषु देवेषु रक्तवीजविनाशिनी ।
इत्येतत् कवचं दिव्यं धर्मकामार्थ साधनम् ।२२
गोपनीयं प्रयत्नेन कस्यचिन्न प्रकाशयेत् ।
य: सकृच्छृणुयादू एतत् कवचं मन्मुखोदितम् ।२३
स सर्वान् लभते कामान् मूर्खो विद्यामवाप्नुयात् ।
तस्यामु शत्रवो यान्ति यमस्य भुवने शिवे ।२४

शारदादेवी मेरे वचन का त्राण करें । सुरेश्वरी देवी मेरी जिह्वा की सुरक्षाकरें। रुद्राणी कण्ठका और विन्ध्यावासिनी स्कन्धोंका परित्राण करें।१७। मेरी बाहुओं की रक्षा सुन्दरी करें और जयादेवी सर्वदा मेरे करों का परित्राण करें । भवानी हृदयको रक्षित करें मेरे मध्यभागकी सुरक्षा भुवनेश्वरी करें ।१८। महामाया देवी मेरी नाभिका तथा कमल लोचना कटिका त्राण करें मातङ्गी दोनों उरुओंकी और अपराजिता देवी दोनों जानुओं का परित्राण करें ।१९। जंघाओंकी सुरक्षा कपालिनी देवी करें तथा चचलेक्षणा मेरे चरणों का त्राण करें। तारा सभी ओर से मेरी रक्षा करें और अगले भाग में योगिनी मेरी परित्राण करें ।२० कौमारी मेरे पृष्ठ भाग की रक्षा करें और दाहिने पार्श्व में शिवा मेरी रक्षा करें । रुद्राणी वाम पार्श्व में रक्षा करें जो सभी श्रेष्ठों के प्रदान करने वाली हैं ।२१। समस्त देवों में रक्तबीज के विनाश करने वालीं का स्तवन किया गया है । यही परम दिव्य कवच है जो समस्त कार्यों के अर्थ को साधने वाला है ।२२। इसका गोपन अत्यधिक प्रयत्नों के द्वारा करना चाहिए और इसको किसी के भी सामने प्रकाशित न करे । जो कोई भी पुरुष मेरे मुख से कहे हुए कवच का एक अक्षर भी श्रवण कर लेता है वह समस्त मनोरथों की प्राप्ति कर लिया करता है और

मूर्ख भी हो तो भी वह विद्या को प्राप्त कर लेता है। हे शिवे ! उसके सर्व शत्रु गण यमराज के भवन में चले जाते हैं अर्थात् मृत्युगत हो जाया करते हैं।२३-२४।

इति श्रीरुद्रयामले महातन्त्रे श्रीमहाविद्यापीताम्बराबगलामुखी-कवचम् (२) समाप्तम् ।

श्रीबगलामुखी शत्रु विनाशक कवचम्

श्री ब्रह्मोवाच--

विश्वेश दक्षिणामूर्ते निगमागमवित् प्रभो ।
मह्यं परान्त्वया दत्ता विद्या ब्रह्मास्त्रसंज्ञिता ।१
तस्य मे कवचं ब्रूहि येनाहं सिद्धिमाप्नुयाम् ।
भवामि वज्रकवचं ब्रह्मास्त्रन्यासमात्रतः ।२

श्रीदक्षिणामूर्तिरुवाच--

शृणु ब्रह्मन् परं गुह्यं ब्रह्मास्त्रकवचं शुभम् ।
यस्योच्चारणमात्रेण भवेद् वै सूर्यसन्निभः ।३
सुदर्शनं मया दत्तं कृपया विष्णवे तथा ।
तद्वद् ब्रह्मास्त्रविद्यायाः कवचं कथयाम्यहम् ।४
अष्टाविंशत्यस्त्रहेतुमाद्यं ब्रह्मास्त्रमुत्तमम् ।
सर्वतेजोमयं सर्व सामर्थ्य विग्रहं परम् ।५
सर्वशत्रुक्षयकरं सर्वदारिद्र्यनाशनम् ।
सर्वापच्छलराशीनाममस्त्रकं कुलिशोपमम् ।६
न तस्य शत्रवश्चापि भयं चौर्यं भयं जरा ।
नरा नार्यश्च राजेन्द्र खगा व्याघ्रादयोऽपि ।७

तं दृष्ट्वा वशमायन्ति किमन्यत् साधवो जनाः ।
यस्य देहे न्यसेद् धीमान् कवचं बगलामयम् ।८

श्री ब्रह्माजी ने कहा–हे दक्षिणा मूर्त्ते ! आप तो विश्व के ईश हैं और हे प्रभो ! आप निगम और अगम के ज्ञाता हैं। पहिले आपने मुझे ब्रह्मास्त्र संज्ञा वाली विद्या प्रदान की थी।१। उस विद्या के कवच को अब आप मुझे बतला दीजिए जिसके ज्ञान से सिद्धि को प्राप्त कर सकूँ। ब्रह्मास्त्र के न्यास मात्र से मैं वज्र कवच वाला हो जाऊँगा।२। श्री दक्षिणा मूर्ति ने कहा–हे ब्रह्माजी आप अब सावधान होकर परम गुह्य और अतीव शुभ ब्रह्मास्त्र कवच का श्रवण कीजिए। जिस कवच के स्मरण मात्र से सूर्य के तुल्य मनुष्य हो जाया करता है।३। हमने कृपा करके भगवान विष्णु के लिए सुदर्शन महान तेजस्वी आयुध दे दिया था ठीक उसी भाँति आपके समक्ष मैं ब्रह्मास्त्र विद्या के कवच का वर्णन करता हूँ।४। यह ब्रह्मास्त्र अट्ठाईस अस्त्रों में सर्व शिरोमणि अस्त्र है और बहुत ही उत्तम है। वह सभी प्रकार तेजों से परिपूर्ण है और इसमें सब सामर्थ्यहै तथा यह परम विग्रह है।५। यह समस्त शत्रुओं के क्षय को करने वाला है तथा सभी दरिद्रता का विनाशक है। सब आपदाओं के शैलों के समूह के लिए वज्र के समान अस्त्र है।६। अन्य क्या कहा जाय साधुजन भी उसको देख देखकर ही वश में आ जाया करते हैं। उसके कोई भी शत्रु नही होते हैं और इसको न तो चोरों का भय होता है न ही बुढ़ापा ही आता है। नर-नारी हे र.जेन्द्र! खग और व्याघ्र आदि हिंसक जन्तु भी इसका दर्शन करते ही वश में आ जाया करते हैं। जो श्रीमान् इस बगलामेय कवच का देह में न्यास किया करता है उसमें ऐसा ही प्रभाव हुआ करता है।७-८।

स एव पुरुषो लोके केवलः शंकरोपमः ।
न देयं परशिष्याय शठाय पिशुनाय च ।९
दातव्यं भक्तियुक्ताय गुरुदासाय धीमते ।

कवचस्य ऋषिः श्रीमान् दक्षिणामूर्तिरेव च ।१०
अस्यानुष्टप् छन्दः स्यात् श्रीबगला चास्य देवता ।
बीजं श्रीवह्निजाया च शक्तिः श्रीबगलामुखी ।११
कीलकं विनियोगश्च स्वकार्यं सर्वसाधके ।

यह पुरुष लोक में केवल भगवान् शंकर के समान हो जाता है। इस कवच की दीक्षा दूसरे के शिष्य को, शठ को और पिशुन को कभी नहीं देनी चाहिए ।६। जो शक्ति से युक्त हो, गुरु का अनन्य भक्त हो और श्रीमान् हो उसी को इसकी दीक्षा देनी चाहिए। कवच का ऋषि श्रीमान् दक्षिण मूर्ति ही है ।१०। इसका छन्द अनुष्टुप् है और इसका देवता श्री बगलामुखी देवी है। इसका बीज श्री वह्निजाया (स्वाहा) है तथा इसकी शक्ति श्री बगलामुखी है ।११ इसका कीलक और विनियोग सबकी साधना करने वाले अपने कार्य में होता है।

अथ ध्यानम्---

शुद्धस्वर्णनिभां रामां पीतेन्दुखण्डशेखराम्
पींतागन्धानुलिप्तांगीं पीतरत्नविभूषणाम् ।
पीनोन्नतकुचां स्निग्धां पीतलाङ्गीं सुपेशलाम्
त्रिलोचनां चतुर्हस्तां गम्भीरां मदविह्लाम् ।।
वज्रारिरसनापाशमुद्गरं दधतीं करैः ।
महाव्याघ्रासनां देवीं सर्वदेवनमस्कृताम् ।
प्रसन्नां सस्मितां क्लिन्नां सुपीतां प्रमदोत्तमाम् ।
सुभक्तदुःखहरणां दयार्द्रां दीनवत्लाम् ।
एवं ध्यात्वा परेशानी बगलाकवचं स्मरेत् ।

अथ ध्यानम् विशुद्ध सुवर्ण के सदृश-रामा-पीत चन्द्र खण्ड को शेखर में धारण करने वाली-पीत वर्ण के गन्ध से लिप्त अङ्गों वाली पीले रत्नों के आभूषणों से समन्वित पीन (स्थूल) और उन्नत कुचों से भूषित-परम स्निग्ध, पीले अङ्गों वाली, सुपेशल अर्थात् परम कोमल, तीन नेत्रों वाली चार भुजाओं से संयुत, गम्भीर, मद से विह्वल-करों

के द्वारा वज्र, शत्रु की जिह्वा, पाश और मुदगर को धारण करती हुई महान् व्याघ्र पर आसन रखने वाली सब देवों के द्वारा नमस्कृत, प्रसन्न सुन्दर स्मित से संयुक्त, क्लिन्न, सुपीता प्रमदाओं में उत्तम अपने सुन्दर भक्तों के दुःख, दौर्भाग्य के हरण करने में दया से आर्द्र, दोनों पर प्रेम करने वाली, देवी का ध्यान करके हे परेशानि ! फिर इस बगला के कवच का स्मरण करना चाहिए ।

॥ इति ब्रह्मास्त्र बगला कवचम् ॥

ब्रह्मास्त्र बगला कवचम्

श्री गणेशाय नमः श्रीपीताम्बरायै नमः ।

श्रीदेव्युवाच--

नमस्ते शम्भवे तुभ्यं नमस्ते शशिशेखर ।
त्वत्प्रसादात्श्रुत सर्वमधुना कवचं वद ।१

श्री शिव उवाच--

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं परमाद्भुतम् ।
यस्य स्मरणमात्रेण रिपोः स्तम्भो भवेत् क्षणात् ।२
कवचस्य च देवेशि महामायाप्रभावतः ।
पंक्तिः छन्दः समुद्दिष्टं देवता बगलामुखी ।३
धर्मार्थकाममौक्षेषु विनियोगः प्रकीर्तितः ।
ॐकारो मैं शिरः पातु ह्लींकारो वदनेऽवतु ।४
बगलामुखी दोर्युग्म कण्ठे सर्व सदाऽवतु ।
दुष्टानां पातु हृदयं वाचं मुखं ततः पदम् ।५
उदरे सर्वदा पातु स्तम्भयेति सदा मम ।
जिह्वां कीलय मे मातर्बगला सर्वदाऽवतु ।६

बुद्धि विनाशय पादौ तु ह्लीं ओं मे दिग्विदिक्षु च ।
स्वाहा मे सर्वदा पातु सर्वत्र सर्वसन्धिषु ।७

श्री गणेश के लिए नमस्कार है। श्री पीताम्बरा को नमस्कार है। श्री देवी ने कहा–हे भगवान् शम्भु देव ! आपकी सेवा में मेरा प्रणाम निवेदित है। हे शशि शेखर ! आपके लिए मेरा नमस्कार है। आपकी कृपा से मैंने सभी कुछ का श्रवण किया था अब आप इसका कवच कृपया बतलाइये ।१। भगवान् श्री शिव ने कहा–हे देवि ! मैं परम अद्भुत कवच का वर्णन करूँगा, आप उसका श्रवण कीजिए। जिसके केवल श्रवण ही करने से महान् शक्तिशाली भगवान् विष्णु का भी एक ही क्षण में स्तम्भन हो जाया करता है। साधारण प्राणी की तो बात ही क्या है ।२। हे देवेशि ! और यह आपके प्रभाव से इस कवच में ऐसी अद्भुत शक्तिहै। इसका छन्द पंक्ति बता दिया गया है और इसका देवता बगलामुखी है ।३। इसका विनियोग धर्म, अर्थ काम और मोक्ष चारों वर्गों की प्राप्तिमें करें ओंकार मेरे सिर की रक्षा करे तथा ह्लीं-कार मेरे बदन में सुरक्षा करें ।४। बगलामुखी मेरी दोनों बाहुओं की रक्षा करें और सर्व सदा कण्ठ परित्राण करे। दुष्टानां–यह पद मेरे हृदयको सुरक्षित करे। इसके अनन्तर वाचं-पदं-मुखं ये तीनों पद सर्वदा मेरे उदर की रक्षा करें और स्तम्भय यह सर्वदा मेरा परित्राण करे। हे माता जिह्वां कीलय यह मेरी सर्वदा रक्षा करे।५-६। बुद्धि विनाशय, यह मेरे दोनों पदों का त्राण करे और ह्लो ओं–यह मेरी दिशाओं तथा विदिशाओं में सुरक्षा करे। स्वाहा पद सर्वदा सब जगह मेरी समस्त सन्धियों में रक्षा करें ।७।

इति ते कथितं देवि कवचं परमाद्भुतं ।
यस्य स्मरणमात्रेण सर्वस्तम्भो भवेत् क्षणात् ।।८
यद् धृत्वा विविधा दैत्या वासवेन हताः पुरा ।
यस्य प्रसादात् सिद्धोऽहं हरिः सत्वगुणान्वितः ।९

वेधा सृष्टि वितनुते कामः सर्वजगज्जयी ।
लिखित्वा धारयेद् यस्तु कण्ठे वा दक्षिणेभुजे ।१०
षट्कर्मसिद्धिस्तस्याशु मत्तुल्यो भवेद् ध्रुवम् ।
अज्ञात्वा कवचं देवि तस्य मन्त्रो न सिध्यति ।११

हे देवि ! मैंने इस परम अद्भुत कवच का वर्णन आपके सामने कर दिया है। जिसके केवल स्मरण भर कर लेने से ही क्षण में सभी का स्तम्भन हो जाया करता है। इसका श्रवण तथा स्मरण करके पहले देवेन्द्र ने सभी दैत्यों का हनन कर दिया था। जिसके प्रसाद से मैं सब गुणों में समन्वित हरि सिद्ध हुआ हूँ।८-९। इसके ही प्रभाव से ब्रह्मासृष्टि रचना करके उसे विस्तृत किया करते हैं और इसकी ही कृपासे कामदेव को सब पर विजय भी प्राप्त होती है। जो पुरुष इसको लिखकर कण्ठ में अथवा दाहिनी भुजा में बाँध लेवे ।१०। उसको षट् कर्मों की शीघ्र ही सिद्धि हो जाती है और शीघ्र ही मेरे तुल्य हो जाया करता है। मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, स्तम्भन, विद्वेषण, षट्कर्म कहे जाते हैं। हे देवि ! इसके कवच के बिना मन्त्र की सिद्धि नहीं होती है ।११।

॥ श्री इति बगलामुखी-शत्रु विनाशक कवच सम्पूर्ण ॥

रक्षा कवचम्

बगला मे शिरः पातुः ललाटं ब्रह्मसंस्तुता ।
बगला मे भ्रुवौ नित्यं कर्णयोः क्लेशहारिणी ॥
त्रिनेत्रा चक्षुषी पातु स्तम्भिनी गण्डयोस्तथा ।
मोहिनी नासिकां पातु श्री देवी बगलामुखी ॥
ओष्ठयोर्दुर्धरा पातु सर्वदन्तेषु चञ्चला ।
सिद्धान्नपूर्णा जिह्वायां जिह्वाग्रे शारदाम्बिके ॥
अक्लमषा मुखे पातु चिबुके बगलामुखी ।
धीरा मे कण्ठदेशे तु कण्ठाग्रे कालकर्षिणी ॥

शुद्धस्वर्णनिभा पातु कण्ठमध्ये तथाऽम्बिका ।
कण्ठमूले महाभोगा स्कन्धौ शत्रु विनाशिनी ॥
भुजा मे पातु सततं बगला सुस्मिता परा ।
बगला मे सदा पातु कर्पूरे कमलोद्भवा ॥
बगलाऽम्बा प्रकोष्ठौ तु मणिबन्धं महाबला ।
बगला श्रीर्हस्ततोश्च कुरुकुल्ला कराङ्गुलिम् ।

बगला मेरे शिर की सुरक्षा करे और ब्रह्मा के द्वारा स्तवन की हुई मेरे ललाट का त्राण करे। मेरी भ्रूओं को बगला तथा क्लेश हारिणी मेरे कानों की सुरक्षा करे। नेत्र वाली देवी चक्षुओं की रक्षा करे और स्तम्भिनी नित्य ही मेरे गण्डों का त्राण करे। मोहिनी श्री देवी बगलामुखी नासिका का परित्राण करे। दुर्धरा मेरे ओष्ठों की रक्षा करे तथा चञ्चला सब दाँतों की रक्षा करे। मेरी जिह्वामें सिद्धान्तपूर्ण रक्षा करें तथा जिह्वाके अग्रभाग में शारदा और अम्बिका त्राण करें। मेरे मुख की सुरक्षा अकल्मषा करे चिबुक की बगलामुखी सुरक्षा करे। मेरे कण्ठ देश में धीरा रक्षा करें और कालकर्षिणी कण्ठ के अग्रभाग में रक्षा करे। शुद्ध सुवर्ण के सदृश कण्ठ के मध्य में सुरक्षा करे तथा अम्बिका भी परित्राण करे। महाभोगा कण्ठ मूल में तथा शत्रु विनाशिनी दोनों स्कन्धों की रक्षा करे मेरी दोनों भुजाओं की सुरक्षापरा सुस्मिता बगला निरन्तर करे। कमलोद्भवा बगला सदा मेरे कर्पूरोंकी रक्षा करे। प्रकोष्ठोंकी रक्षा अम्बा बगला करे और महाबला मणिबन्ध में त्राण करे। बगला और श्री हाथों का त्राण करे एवं कुरुकुल्ला करों की रक्षा करे।

नखेषु वज्रहस्ता च हृदये ब्रह्मवादिनी ।
स्तनी मे मन्दगमना कुक्ष्योर्योगिनी तथा ॥
उदरं बगला माता नाभिं ब्रह्मास्त्रदेवता ।
पुष्टिं मुद्गरहस्ता च पातु नो देववन्दिता ॥

पार्श्वयोर्हनुमद्वन्द्या पशुपाशविमोचनी ।
करौ रामप्रिया पातु उरुयुग्मं महेश्वरी ॥
भगमाला तु गुह्यं मे लिंगं कामेश्वरी तथा ।
लिंगमूले महाक्लिन्ना वृषणौ पातु दूतिका ॥
बगला जानुनी पातु जानुयुग्मं च नित्यशः ।
जङ्घे पातु जगद्धात्री गुल्फौ रावणपूजिता ।
चरणौ दुर्जया पातु पीताम्बरा चरणांगुलीः ।
पादपृष्ठं पद्महस्ता पादाधश्चक्रधारिणी ।
सर्वांगं बगला देवी पातु श्रीबगलामुखी ।
ब्राह्मी मे पूर्वतः पातु माहेशी वह्निभागतः ॥
कौमारी दक्षिणे पातु वैष्णवी स्वर्गमार्गतः ।
ऊर्ध्वं पाशधरा पातु शत्रु जिह्वाधरा ह्यधः ॥
रणे राजकुले वादे महायोगे महाभये ।
बगला भैरवी पातु नित्यं क्लींकाररूपिणी ॥
इत्येवं वज्रकवचं महाब्रह्मास्त्रसंज्ञकम् ।
त्रिसन्ध्यं यः पठेद् धीमान् सर्वैश्वर्यमवाप्नुयात् ॥
न तस्य शत्रवः केऽपि सखायः सर्व एव च ।
बलेनाकृष्य शत्रुं स्यात् सोऽपि मित्रत्वमाप्नुयात् ॥
शत्रुत्वे मरुता तुल्यो धनेन धनदोपमः ।
रूपेण कामतुल्यः स्याद् आयुषा शूलधृक्समः ॥
सनकादिसमो धैर्ये श्रियां विष्णुसमो भवेत् ।
तत्तुल्यो विद्यया ब्रह्मन् यो जपेत् कवचं नरः ॥

वज्र हस्ता नखों में त्राण करें तथा ब्रह्म-वादिनी हृदय में रक्षा करें। मन्द गमना मेरे स्तनों की सुरक्षा करे तथा योगिनी कुक्षियों का त्राण करें। बगला माता उदर का और ब्रह्मास्त्र देवता नाभि का

परित्राण करें। देवोंके द्वारा वन्दिता मुद्गर हाथोंमें धारण करने वाली हमारी पुष्टि की सुरक्षा करें। हनुमानजी के द्वारा वन्द्यमाना पशुपाश विमोचनी दोनों पार्श्वों का त्राण करें। रामप्रिया दोनों करों की रक्षा करे और महेश्वरी ऊरुओं के युग्म का त्राण करें। मेरे गुह्य को भग-माला सुरक्षित करे तथा लिंग की कामेश्वरी रक्षा करे। लिंग के मुख को महाक्लिन्न रक्षाकरे और दूतिका दोनों वृषणोंकी रक्षा करें। बगला देवी जानुओं की तथा जानुयुग्म की रक्षा करें। जगद्धात्री जंघाओं की और रावणपूजिता दोनों गुल्फों की सुरक्षा करें। दुर्जया चरणोंकी और पीताम्बर चरणों की अंगुलियों की रक्षा करें। पद्महस्ता पादों के पृष्ठ का और चक्र धारिणी पादोंके नीचेके भागका संरक्षण करे। श्रीबगला-मुखी बगला देवी सर्वाङ्ग की सुरक्षा करें ब्राह्मी मेरी पूर्व दिशा में रक्षा करे आग्नेयी में माहेशी रक्षा करे कौमारी दक्षिण में रक्षा करे वैष्णवी स्वर्ग मार्ग से रक्षा करे, उर्ध्व में पाशधरा रक्षा करे, अधोभाग में शत्रु की जिह्वा को धारण करने वाली रक्षा करे, रणक्षेत्र में, राज-कुल, वाद में, महायोगमें और महाभयमें बगला भैरवी क्लींकाररूपिणी नित्य ही परित्राण करे, इस प्रकार से इस ब्रह्मास्त्र संज्ञावाले वज्रकवच का जो धीमान् पुरुष तीनों संन्याकालों में नित्य नियम से इसका पाठ किया करता है वह सभी प्रकार के ऐश्वर्य को प्राप्त कर लिया करता है। उसके कोई भी शत्रु समुत्पन्न नहीं होतेहैं और सभी उसके सखा ही होते हैं। वह शत्रु को भी बल से आकर्षित कर लेता है और वह शत्रु भी मित्र भाव को प्राप्त हो जाया करता है। इसका पाठ करने वाला शत्रुता में मरुत के तुल्य होता है और धनके द्वारा कुबेर के तुल्य होता है। रूप सौन्दर्य में कामदेव के समान और आयु से शूलधृक् के दृश्य हो जाता है। धैर्यमें सनकादि के समान हो जाता है और बुद्धि में भग-वान विष्णु के तुल्य हो जाया करता है। हे ब्रह्माजी विद्या से भी उसी के सदृश हो जाया करता है जो मनुष्य इस कवच का जप किया करता है।

नारी वापी प्रयत्नेन वाञ्छितार्थमवाप्नुयात् ।
द्वितीया सूर्यवारेण यदा भवति पद्मभूः ॥
तस्यां जातं शतावृत्या शीघ्रं प्रत्यक्षमाप्नुयात् ।
याता तरीयं संध्यातां भू शय्यायां प्रयत्नतः ॥
सर्वान् शत्रून् क्षयं कृत्वा विजयं प्राप्नुयात् नरः ।
दारिद्रयान् मुच्यते चाऽऽशु स्थिरा लक्ष्मीर्भवेद् गृहे ॥
सर्वान् कामानवाप्नोति सविषो निर्बिषो भवेत् ।
ऋणं निर्मोचनं स्याद् वै सहस्रावर्तनाद् विधेः ॥
भूतप्रेतपिशाचादिपीडा तस्य न जायते ।
द्युमणिर्भ्राजते यद्वत् तद्वत् स्याच्छ्रीप्रभावतः ॥
स्थिराभया भवेत् तस्य यः स्मरेद् बगलामुखीम् ।
जयदं बोधदं देवि कामधुक् देहि मे शिवे ॥
जपस्यान्ते स्मरेद् यो वै सोऽभीष्टफलमाप्नुयात् ।
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद् बगलामुखीम् ॥
न स सिद्धिनवाप्नोति साक्षाद् वै लोकपूजितः ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन कवचं ब्रह्मतेजसम् ॥
नित्यं पदाम्बुजध्यानात् महेशानसमो भवेत् ।

अथवा नारी हो वह भी इसके पाठ करने से अपने मनोवांछित अर्थ की प्राप्ति कर लिया करती है। द्वितीया सूर्यबार से जब पद्मभू होती है उसमें उत्पन्न सौ आवृत्तिसे शीघ्र ही प्रत्यक्ष को प्राप्त होतीहै। संध्या में तुरीय को गई हुई प्रयत्न से भूशाया में रहकर समस्त शत्रुओं का क्षय करके नर विजय का लाभ किया करता है और शीघ्र ही दरिद्रता से मुक्त हो जाया करता है और फिर लक्ष्मी घर में सुस्थिर हो जाती है। सभी कामनाओं को प्राप्त करता है तथा विष से युक्त भी निर्विष हो जाता है। हे ब्रह्मन् ! एक सहस्र आवृत्ति के करने से ऋणसे छुटकारा प्राप्त होता है। उसकी फिर भूत-प्रेत और पिशाच आदि की

पीड़ा निश्चय ही कभी-कभी नहीं होती है। श्री के प्रभाव से जिस प्रकार भगवान् भास्कर चमका करते हैं वह भी वैसे ही दीप्तिमान् हो जाता है। जो बगलामुखी का स्मरण किया करता है उसको वह स्थिराभया होती है। यह कहना चाहिए कि हे शिव ! जय देने वाला और मुझे अमुक कामना का प्रदान करो। जापके अन्त में जो बगलामुखी का स्मरण किया करता है वह निश्चय अपना अभीष्ट फल प्राप्त कर लेता है। इस कवच का ज्ञान न प्राप्त करके जो भी बगलामुखी के मन्त्र का जप करता है, वह कभी भी सिद्धि की प्राप्ति नहीं किया करता है चाहे वह साक्षात् लोक द्वारा पूजित भी क्यों न होवे। उस कारण से सब प्रकार के प्रयत्न से इस ब्रह्म तेज वाले कवच का पाठ अवश्य ही करना चाहिए। नित्य प्रति पदाम्बुओं के ध्यानसे मनुष्य महेशान के ही समान हो जाया करता है।

॥ इति श्रीदक्षिणामूर्तिसहितायां रक्षा-कवचम् समाप्तम् ॥

श्रीबगलामुखी प्रत्यंगिरा कवचम्

श्री शिव उवाच--

आधुनाहं प्रवक्ष्यामि बगलायाः सुदुर्लभम् ।
यस्य पठन मात्रेण पवनोपि स्थिरायते ॥
प्रत्यङ्गिरां तां देवेशि शृणुष्व कमलानने ।
यस्यांमरण मात्रेण शत्रवो विलयं गताः ॥
श्री देव्युवाच--
स्नेहोऽस्ति यदि मे नाथ संसारार्णवतारक ।
तथा कथय मां शम्भो बगलाप्रत्यंगिरां मम ॥
श्री भैरव उवाच--
यं यं प्रार्थयते मन्त्री हठात्तत्तत्समाप्नुयात् ।

विद्वेषणाकर्षणे चैव स्तम्भनं वैरिणांविभो ।
उच्चाटनं मारणं चैव येन कर्तुं क्षमो भवेत् ।
तत्सर्वं ब्रूहि मे देव यदि मां दयसे हर ॥

श्री भगवान् शिव ने कहा–इस समय मैं श्री बगलादेवी के परम दुर्लभ कवच के विषय में बतलाऊँगा जो ऐसा युगल स्तम्भन वाला है कि इस कवच के कोमल स्मरण से ही वायुभी स्थिर हो जाया करता है जो कि निरन्तर अबाध गतिसे वहन करने वाला है फिर अन्य की तो बात ही क्या है । हे देवि ! आपका मुख तो कमल के समान परम सुन्दर है । अब आप उस प्रत्यंगिरा के विषय में श्रवण कीजिए । जिसके केवल स्मरण भर के ही करने से समस्त शत्रुगण विलय को प्राप्त होते हैं । श्रीदेवी ने कहा–हे नाथ ! आप तो इस संसार रूपी घोर महा-सागर से तारण करने वाले देवेश्वर प्रभु हैं । यदि आपका मेरे ऊपर प्रगाढ़ स्नेह है तो कृपा करके हे शम्भो ! उस प्रत्यंगिरा बगला को मुझे बतलाइये । श्री भैरवदेव ने कहा–अर्थात् भैरव ने भी भगवान शंकर से विनम्रता पूर्वक प्रत्यङ्गिरा बगला के विषय में ज्ञान प्राप्त करने का अनुरोध किया था–हे हर मन्त्र का जप करने वाला पुरुष जिस पदार्थ के प्राप्त करने की याचना किया करता है हर से उसी-उसी की प्राप्ति कर लिया करता है । हे विभो ! विद्वेषण, आकर्षण, बैरियों का स्तम्भन, उच्चाटन, मारण से सभी षट् कर्म जिसके द्वारा करने के लिए समर्थ हो जाता है । हे देव ! वह सम्पूर्ण आप मेरे समक्ष में कहिए यदि आप मेरे ऊपर अनुकम्पा करते हैं ।

श्रीसदाशिव उवाच––
अधुना हि महादेवि परानिष्ठा मतिर्भवेत् ।
अतएव महेशानि किंचिन्नवक्तुमर्हसि ।
श्री पार्वत्युवाच––
जिघान्सन्तं जिघान्सीयान्न तेन ब्रह्महा भवेत् ।

श्रुति रैषाहिगिरिश कथं मांत्वं निन्दसि ।

श्री शिवउवाच--

साधु साधु प्रवक्ष्यामि श्रृणु ष्वावहितानघे ।
प्रत्यंगिरां बगलायाः सर्वशत्रुनिवारिणीम् ।।
नाशिनीं सर्वदुष्टानां सर्वपापौघ हारिणीम् ।
सर्वप्राणिहितां चैव सर्व दुःखविनाशिनीम् ।।
भोगदां मोक्षदां चैव राज्यसौभाग्य दायिनीम् ।
मन्त्रदोषप्रमोचनीं ग्रहदोषनिवारिणीम् ।

भगवान् श्री सदाशिव प्रभु ने कहा-हे महादेवी ! निश्चय ही इस समयमें परमाधिक निष्ठा वाली बुद्धि होनी चाहिए । हे महेशानि ! इसीलिए आप कुछ भी कहने के योग्य नहीं होती हो । श्री पार्वती जी ने कहा-जो प्राणघात करने वाला अपने खपर प्रहार करता हुआ आ रहा है उसको मार ही देना चाहिए क्योंकि प्राण रक्षा सबसे बड़ा धर्म होता है । इस प्रकार की स्थिति में मार देने से भी कभी ब्रह्महत्या नहीं होती है । हे गिरिश! ऐसी निश्चय हीं श्रुति है । फिर आप मेरी किस तरह से विशेष निन्दाकर रहे हैं! क्योंकि मेरी निन्दा का कोई भी ऐसा उचित कारण नहीं दिखाई देताहै। भगवान श्रीशिव ने कहा बहुत अच्छा बहुत ही ठीक है । हे अनघे! अर्थात् पाप रहित ! मैं अब आपके सामने कहूँगा । आप बहुतही सावधान होकर श्रवण कीजिए । बगला को प्रत्यङ्गिरा देवी सब शत्रुओं के निवारण करने वाली होती है । यह समस्त दुष्टों का विनाश कर देने वाली हैं और सब प्रकार के पापों के समूहका हरण करने वाली है । देवी सभी प्राणियों के हित करने वाली है और सभी दुःखों का हनन किया करती है । यह भोगों को प्रदान करती है-सुखोपभोग देनेके पश्चात् मोक्षभी देती है । यह देवीराज्य और सौभाग्य को भी प्रदान करती हैं । मन्त्रमें जो भी दोष हो जिनसे हानि होती हो उसका प्रमोचन करने वाली हैं । तथा भौम, शनि आदि ग्रहों के द्वारा

प्राप्त होने वाले दोषों (कष्टों तथा हानियों) का निवारण किया करती है।

अस्य श्री बगला-प्रत्यंगिरा-मन्त्रस्य नारदो ऋषिःस्त्रिष्टुप् छन्दः प्रत्यंगिरा देवता ह्लीं बीजम् हुं शक्तिः ह्लीं कीलकं ह्लीं ह्लीं ह्लीं प्रत्यंगिरा मम शत्रु-विनाशे विनियोगः।

ओं इस बगला प्रत्यङ्गिरा मन्त्र का नारद ऋषि है, त्रिष्टुप् छन्द है, प्रत्यङ्गिरा देवता है, ह्ली बीज है, हुँ शक्ति है, ह्लीं कीलकहै ह्लीं ह्लीं ह्लीं प्रत्यंगिरा मेरे शत्रुओं के विनाश में इसका विनियोग है।

ॐ प्रत्यंगिरायै नमः प्रत्यंगिरे सकल-कामान् साधय मम रक्षां कुरुकुरु सर्वान् शत्रून् खादय खादय मारय मारय घातय-घातय ॐ ह्लीं फट् स्वाहा।

मन्त्र–ओं प्रत्यङ्गिरायै नमः (प्रत्यंगिरा के लिए नमस्कार है) कुरु कुरु (मेरी रक्षा करो, करो) सर्वान् शत्रून खादय खादय (सब शत्रुओं का भक्षण करो, खा जाओ) मारय-मारय, घातय घातय (मार दो, मार डालो–घात करो–घात कर दो) ओं ह्लीं फट् स्वाहा।

ॐ भ्रामरि स्तम्भिनीदेवी क्षोभिणीमोहिनी तथा।
संहारिणी द्राविणी च जृम्भिनी रौद्ररूपिणी॥
इत्तष्टौ शक्तयो देवि शत्रु-पक्षे नियोजिताः।
धारयेत् कण्ठदेशे च सर्व-शत्रु विनाशनीः॥

ओं भ्रामरी, स्तम्भिनी देवी, क्षोभिणी, मोहनी, संहारिणी जृम्भिणी और रौद्ररूपिणी–इन आठ शक्तियों को हे देवी! मेरे शत्रु के पक्षमें नियोजित करके कण्ठ देश में धारण करना चाहिए। यह सब शत्रुओं का विनाश कर देने वाली है।

ॐ ह्लीं भ्रामरि सर्व शत्रून् भ्रामय ॐ ह्लीं स्वाहा ।
ॐ ह्लीं स्तम्भिनि मम शत्रून् स्तम्भय ॐ ह्लीं स्वाहा ।
ॐ ह्लीं क्षोभिणि मम शत्रून् क्षोभय क्षोभय ॐह्लीं स्वाहा ।
ॐ ह्लीं मोहिनि मम शत्रून् मोहय मोहय ॐ ह्लीं स्वाहा ।
ॐ ह्लीं संहारिणि मम शत्रून् संहारय संहारय ॐह्लीं स्वाहा
ॐ ह्लीं द्राविणि मम शत्रून् द्रावय द्रावय ॐ ह्लीं स्वाहा ।
ॐ ह्लीं जृम्भिणि मम शत्रून् जृम्भय जृम्भय ॐ ह्लीं स्वाहा।
ॐ ह्लीं रौद्रि मम शत्रून् सन्तापय सन्तापय ॐ ह्लीं स्वाहा ।

(१) ॐ ह्लीं भ्रामरि ! सब शत्रुओं को भ्रामित करो भ्रामित कर दो । ॐ ह्लीं स्वाहा । (२) ॐस्तम्भिति ! मेरे शत्रुओं को स्तम्भित कर दो, स्तम्भन करो ॐ ह्लीं स्वाहा । (३) ह्लीं क्षोभिणि ! मेरे शत्रुओं को क्षोभित करो, क्षोभ युक्त बनादो । ॐ ह्लीं स्वाहा । (४) ॐ ह्लीं मोहिनि ! मेरे शत्रुओं को मोहित करो, मोहन-मुग्ध कर दो । ॐ ह्लीं स्वाहा । (५) ॐ ह्लीं संहारिणी मेरे शत्रुओं का संहार करो, संहार कर दो, ॐ ह्लीं स्वाहा । ॐ ह्लीं द्राविणी ! मेरे शत्रुओं का द्रविण करो, द्रावण कर दो, ॐ ह्लीं स्वाहा । (७) ॐ ह्लीं जृम्भिणी मेरे शत्रुओं को सन्तप्त कर दो-सन्ताप युक्त कर दो ॐ ह्लीं स्वाहा ।

इयं विद्या महाविद्या सर्वशत्रु निवारिणी ।
धारिता साधकेन्द्रेण सर्वान् दुष्टान् विनाशयेत् ।
त्रिसंध्यमेकसंध्यं वाथ पठेत्स्थिर-मानसः ।
न तस्य दुर्लभं लोके कल्पवृक्ष इव स्थितः ।।
यं यं स्पृशति हस्तेन यं यं पश्यति चक्षुषा ।
स एव दासतां याति सारान्सारामिमं मनुम् ।।

यह एक महाविद्या है जो सभी शत्रुओं का नाश निवारण कर देने वाली है । उत्तम, साधक के द्वारा धारण की हुई यह विद्या समस्त दुष्टों का विनाश कर दिया करती है । तीनों प्रातः मध्याह्न सायंकाल में अथवा किसी एक ही संध्याकाल में जो मन को सुस्थिर करके इसका

पाठ किया करता है उसको कुछ भी लोक में दुर्लभ वस्तु नहीं है अर्थात् वह जो कुछ इच्छा करता है वही उसको प्राप्त हो जाता है। यह तो उसके लिए कल्प वृक्षके ही समान स्थिर रहता है। कल्प वृक्ष का ऐसा प्रभाव हुआ करता है उसके सामने प्राप्त होकर जो भी मन से इच्छा होती है वही उसे तुरन्त प्राप्त हो जाया करता है। इसका साधक पुरुष जिस-जिसका हाथ से स्पर्श करता है और जिज-जिसको नेत्र से देख लेता है वह ही स्वयं दासता को प्राप्त हो जाया करता है। यह मन्त्र समस्त सारों से भी बड़ा हैं।

॥ इति श्री रुद्रयामले शिव पार्वती सम्वाद बगला
प्रत्यंगिरा कवचं समाप्तम् ॥

श्री बगला स्तोत्रम्

प्रायः लोगों की यह धारणा रहतीहै कि देवी देवताओं की स्तुतियों करना न ही बुद्धि संगत है और न ही कोई शक्तिशाली साधना जिससे किसी विशिष्ट उद्देश्यकीपूर्ति होनी सम्भव हो। वास्तव में इस धारणा में कोई सार नहीं है। यह ठीक है कि देवी शक्ति-धारी नहीं होती है, वह किसी की निन्दा अथवा स्तुति से प्रभावित नहीं होती है। प्रशंसा सुनकर वह तुरन्त वरदान देनेको तत्पर नहीं हो जाती और न ही निंदा से हानि पहुँचाने का प्रत्यत्न करती हैं।

स्तोत्र पाठका अभिप्राय यह है कि साधक जब देवी शक्ति के किन्हीं विशिष्ट व असाधारण गुणों से समन्वित है, उनकी ओर वह आकर्षित है। उनका सम्मान करता है और अपनेमें विकसित करने का आकांक्षी है और उस दैवी शक्तिके निरन्तर सान्निध्यमें रहना चाहता है। किसी देवी शक्ति के सामीप्य की अनुभूति करने का अर्थ है स्वयं उस साँचे में ढलते रहना शक्ति सम्पन्न होजाना। श्रद्धा और भावनाकी पवित्र शक्ति का शीघ्र विकास होता है।

स्तोत्र मन्त्रवत होते हैं। ध्वनि समूह को मन्त्र कहते हैं। स्तोत्र में ध्वनि की विशेषता रहती है। इसलिए स्तोत्र साधनासे अद्‌भुत शक्तियों का विकास होता देखा गया है, जटिल समस्याओं का समाधान होता है, व्याधियों, विपत्तियों और अनिष्टों की निवृत्ति होती है।

कुछ प्रसिद्ध बगला स्तोत्र यहाँ दिये जा रहे हैं जिनके निश्चित प्रभावको अनेकों साधकों ने अनुभव क्रिया है। अतः इनका सफल प्रयोग किया जा सकता है।

सहस्रनाम स्तोत्रम्

सुरालयप्रधाने तु देवदेवं महेश्वरम्।
शैलाधिराजतनया संग्रहे तमुवाच ह ।१
श्रीदेव्युवाच--
परमेष्ठिन् परं धाम प्रधान परमेश्वर।
नाम्नां सहस्रं बगलामुख्या ब्रूहि वल्लभ ।२
ईश्वर उवाच--
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि नामधेयसहस्रकम्।
परब्रह्मास्त्रविद्यायाश्चतुर्वर्गफलप्रदम् ।३
गुह्याद् गुह्यतरं देवि सर्वसिद्धैकवन्दितम्।
अतिगुप्ततरं विद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता ।४
विशेषतः कलियुगे महासिद्ध्यौघदायिनी।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ।५
अप्रकाश्यमिदं सत्यं स्वयोनिरिव सुव्रते।
रोधिनी विघ्नसंघानां मोहिनी सवयोषिताम् ।६
स्तम्भिनी राजसैन्यानां वादिनी परवादिनाम्।
पुरा चैकार्णवे घोरे काले परमभैरवः ।७
सुन्दरीसहितो देवं केशवं क्लेशनाशनः।
उरगासनमासीनं योगनिद्रामुपागतम् ।८

सहस्रनाम परमं वद वद देवन्य कस्यचित् ।
निद्राकाले च ते काले मया प्रोक्तः सनातनः ।
महास्तम्भकरं देवि स्तोत्रं वा शतनामकम् ।९

सुरों के निवास करने के प्रधान स्थान में देवोंके देव भगवान् महेश्वर से शैलाधिराज की पुत्री पार्वती ने संग्रह में कहा था ।१। श्री देवी ने कहा-हे परमष्ठिन ! आपतो स्वयं ही परधाम-प्रधान और परमेश्वर हैं । प्राणवल्लभ ! आप कृपया बगलामुखी जो आद्या है उसके सहस्रनाम मुझे बतलाइए ।२। ईश्वरने कहा-हे देवि ! अब आप श्रवण कीजिए-बगलाके सहस्रनामों को बतलाता हूँ । यह सहस्रनाम जो परब्रह्मास्त्रविद्या के हैं वे चारों वर्गों के फल का प्रदान किया करते हैं । अर्थात् इनसे कर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सभी की प्राप्ति सुलभता हो जाती है ।३। यह विद्या अत्यन्त ही गुप्त है और सभी तन्त्रों में इसको छिपा करके रक्खा गया है ।४। यह विद्या विशेष रूपसे इस महान् घोर कलियुग में जिसमें अन्य सभी साधन भस्मता को प्राप्त हो गये हैं महा सिद्धियों के समुदाय के देने वाली है । इसको छिपाकर रखना चाहिए, यह बहुत ही गोपनीयहैं और प्रयत्न-पूर्वक इसको गुप्तरखना आवश्यकहै ।५। हे सुव्रते! यह विद्या तो अपनी योनिके ही समान प्रकाशित न करने के योग्य हैं । यह सभी विघ्नोंके समुदायोंके रोधन करने वाली है अर्थात् समस्त विघ्नों को दूर कर देती है और समस्त स्त्रियों का मोहन कर देने वाली है ।६। यह राजाओंकी सेनाओं का भी स्तम्भन करने वाली और दूसरे वादियों के लिए यह वादिनी है, पहिले जब एक ही सागर परम घोर स्वरूप में था तब उस समयमें परम भैरव जो क्लेशोंका नाश करने वाला है सुन्दरी के सहित केशव देव जो उरग (शेष) की शय्या पर समासीन थे और योग निद्रा को प्राप्त हो रहे थे । निद्रा के समय में उन सनातन प्रभु से मैंने कहा था । हे देवि ! महान् स्तम्भन करने वाले सनातन स्तोत्रका अथवा सहस्रनाम का या शतनाम का परमोत्तम वर्णन कीजिए जो किसी भी देव का होवे ।७-९।

श्रीभगवानुवाच--
श्रृणु शंकर देवेश परमातिरहस्यकम् ।१०
अजोऽहं यत्प्रसादेन विष्णुः सर्वेश्वरः ।
गोपनीयं प्रयत्नेन प्रकाशात् सिद्धिहानिकृत् ।११

अस्य श्रीपीताम्बरीसहस्रनामस्त्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् सदाशिव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दःश्रीजगद्वश्यकारी पीताम्बरी देवता, सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे विनियोगः ।

श्री भगवान् ने कहा-देवेश्वर ! शंकर ! परम रहस्य से युक्त का अब आप श्रवण कीजिए । जिसके प्रसाद से मैं अज और सर्वेश्वरों का भी ईश्वर विष्णु हो गया हूँ । इसका गोपन प्रयत्नपूर्वक करना चाहिए। इसके प्रकाश के करने से इससे होने वालीं सिद्धि को हानि करने वाला यह हो जाता है।१०-११। इस पीताम्बरीके सहस्रनाम स्तोत्रका साक्षात् सदाशिव प्रभु ऋषि हैं, अनुष्टुप् छन्द है, जगत् के वश्य करने वाली श्री पीताम्बरी देवी इसका देवता है । इसका विनियोग समस्त अभीष्टों की सिद्धि के लिए ही होता है ।

ध्यानम्--
पीताम्बर परीधाना पीनोन्नतपयोधराम् ।
जटामुकुटशोभाड्यां पीतभूमिसुखासनाम् ।१२
शत्रोर्जिह्वां मुद्गारं च बिभ्रतीं परमां कलाम् ।
सर्वांगमपुराणेषु विख्यातां भुवनत्रये ।१३
सृष्टिस्थितिविनाशानामादिभूतां महेश्वरीम् ।
गोप्यां सर्वप्रयत्नेन श्रृणु तां कथयामि ते ।१४
जगद्विध्वंसिनीं देवीमजरामकरकारिणीम् ।
तां नमामि महामायां महदैश्वर्यदायिनीम् ।१५

पीत बसनों के परिधान करने वाली-पीन(पुष्ट) और उन्नत स्तनों से संयुत जटा जूट और मुकुट की शोभा से युक्त पीतवर्ण की भूमि

पर सुखपूर्वक विराजमान, शत्रु की जिह्वा, मुद्गर और परमाकला को धारण करती हुई, तीनों भुवनों में समस्त आगमों और पुराणों में विख्यात, सृष्टि, स्थिति और संहार करनेवाली आदिभूता, महेश्वरी सब प्रयत्नों से गोपनीया उसके विषय में कहता हूँ उसका अब आप श्रवण करिए।२२-२४। सम्पूर्ण जगत् के विध्वंस करने वाली और अजर (वृद्धता रहित) और अमर मृत्यु से रहित करने वाली महान् ऐश्वर्य के देने वाली उस महामाया की सेवा में प्रणाम करता हूँ।१५।

प्रणवं पूर्वमुद्धृत्य स्थिरमायां ततो वदेत् ।
बगलामुखि सर्वदुष्टानां ततो वाचमेव च ।१६
मुखं पदं स्तम्भयेति जिह्वां कीलय बुद्धिमत् ।
विनाशयेति तारं च स्थिरमायां वदेत् ।१७
वह्निप्रियां ततो मन्त्रश्चतुर्वर्गफलप्रदः ।
ब्रह्मास्त्रं ब्रह्मविद्या च ब्रह्ममाया सनातनी ।१८
ब्रह्मेशी ब्रह्मकैवल्यबगला ब्रह्मचारिणी ।
नित्यानन्दा नित्यरूप नित्यसिद्धा निरामया ।१९
स धारिणी महामाया कटाक्षक्षेमकारिणी ।
कमला विमला नीला रत्नकान्तिगुणाश्रिता ।२०
कामप्रिया कामरता कामकामस्वरूपिणी ।
मंगला विजया जाया सर्वमंगलकारिणी ।२१

अब मन्त्र का उद्धार बताया जाता है-सर्वप्रथम प्रणव (ॐ) का उच्चारण करे और फिर स्थिर माता (ह्लीं) को कहे। इसके अनन्तर बगलामुखि, सर्वदुष्टाना, वाचं, मुखं, पदं, स्तम्भय, जिह्वा कीलय, बुद्धि विनाशय-इन पदों को कहकर प्रणव कहे और अन्त में ह्लीं कहकर स्वाहा पद का उच्चारण करना चाहिए। यही मन्त्र है जो धर्मार्थ काम मोक्ष चारों वर्गों के फल का देने वाला है, अब सहस्रनामों को बताया जाता है। ब्रह्मास्त्र-ब्रह्मविद्या-ब्रह्ममाया-सनातनी है अर्थात् सर्वदा से ही

चली आने वाली है ।१६-१८। ब्रह्मे शी, ब्रह्मकैवल्य, बगला और ब्रह्म-चारिणी है । नित्य ही आनन्द रूपा है, नित्य सिद्धा है, नित्य रूप वाली तथा निरामया है अर्थात् पीड़ा रहित है ।१९। सन्धारिणी, महामाया अपनी कृपासे पूर्ण दृष्टिपात से ही क्षेम करने वाली हैं । कमला,विमला नील रत्नों के समान कान्ति वाली और गुणाश्रिता है ।२०। कामप्रिया काम में विरत, काम के भी कामना के स्वरूप वाली हैं मंगला, विजया अर्थात् विजय रखने वाली, जया और सभी प्रकार के मंगलों से सम्पन्न करने वाली है ।२१।

कामिनी कामनी काम्या कामुका कामचारिणी ।
प्राणप्रिया कामरता कामा कामस्वरूपिणी ।२२
कामाख्या कामबीजस्था कामपीठनिवासिनी ।
कामदा कामहा काली कपाली च करालिका ।२३
कंसारि: माला कामा कैलासेश्वरवल्लभा ।
कात्यायनी केशवा च करुणा कामकेलिभुक् ।२४
क्रिया कीर्ति: कृत्तिका च काशिका मधुरा शिवा ।
कालाक्षी कालिका काली कमलानना सुन्दरी ।२५
खेचरी च खमूर्तिश्च क्षुद्रा क्षुद्रक्षुधा खरा ।
खंगहस्ता खंगरता खंगिनी खर्चरप्रिया ।२६

कामिनी, कामनी, काम्या अर्थात् कामना करने के योग्य, कामुका अर्थात् काम भाव से समन्वित और कामचारिणी है अर्थात् अपनी ही इच्छा से संचरण करने वाली है । कामसे प्रेम करने वाली काममें रति रखने वाली, कामा और कामके समान ही स्वरूप से समन्वित है ।२२-कामाख्या अर्थात् कामा नाम वाली, काम बोज में स्थिता और काम पीठ पर निवास करने वाली है । काम के देने वाली, काम का हनन करने वाली, काली, कपाली और करालिका है ।२३। कंसा की शत्रु, कमला, कामा और कैलास के स्वामी की प्रिया है । कात्यायनी केशवा करुणा और काय क्रीड़ा के भोग करने वाली है ।२४। क्रिया, कीर्ति,

कृत्तिका, काशिका, मधुरा, शिवा, कमलाक्षी, कालिका काली और कमल जैसे आनन (मुख) वाली सुन्दरी है।२४। खेचरी, ख (आकाश) की मूर्ति क्षुद्रा, क्षुद्रक्षुधा, परा है। हाथ में खंग रखने वाली, खंग में ही रत खंगिनी और खर्परप्रिया है।२६।

गंगा गौरी गामिनी च गीता गोत्रविवर्धिनी ।
गोधरा गोकरा गोधा गन्धर्वपुरवासिनी ।२७
गन्धर्वा गन्धर्वकला गोपिनी गरुडासना ।
गोविन्दभावा गोविन्दा गान्धारी गन्धमादिनी ।२८
गौरांगी गोपिकामूर्तिर्गोपी गोष्ठवासिनी ।
गन्धा गजेन्द्रगा मान्या गदाधरप्रिया ग्रहा ।२९
घोरघोरा घोररूपा घनश्रोणी घनप्रभा ।
दैत्येन्द्रप्रबलां घण्टावादिनी घोरनिस्वना ।३०
डाकिन्युमा उपेन्द्रा च उर्वशीं उरगासना ।
उत्तमा उन्नता उन्ना उत्तमस्थानवासिनी ।३१
चामुण्डा मुण्डिता चण्डी चण्डदर्पहरेति च ।
उग्रचण्डा चण्डचण्डा चण्डदैत्यविनाशिनी ।३२

गंगा, गौरी, गामिनी, गीता और गोत्र का वर्धन करने वाली है। गोधरा, गोकरा, गोधा और गन्धर्वों के पुरमें निवास करने वाली है।२७। गन्धर्वा, गन्धर्वकी कला वाली, गोपिनीऔर गरुड़के आसन वाली गोविन्द के अन्दर भाव रखने वाली, गोविन्दा गान्धारी और गन्ध मादनी है।२८। गौरांगी, गोपिका की मूर्ति, गोपी और गोष्ठ के निवास करने वाली है। गन्धा, गजेन्द्र की भाँति गमन करने वाली अथवा गजेन्द्र केशरी पर गमन करने वाली तात्पर्य सिंह वाहिनी है। मान्या--गदाधार को प्रियतमा और ग्रहा है।२९। घोर से भी अधिक घोर, घोर रूप वाली, घन श्रोणी वाली घन के समान प्रभा में समन्विता दैत्येन्द्र के (समान) ऊपर प्रबल होने वाली, घण्टा-नाद करनेवाली घोर ध्वनि वाली हैं।३०।

डाकिनी, उमा, उपेन्द्रा, उर्वशी और उरग पर आसन रखने वाली हैं। उत्तमा, उन्नता, उन्ना और उत्तम स्थान पर वास करने वाली है।३१। चामुण्डा मुण्डिता, चण्डी, चण्ड दैत्य के दर्प के हरण करने वाली, उग्र-चण्डा, चण्ड दैत्य के विनाश करने वाली हैं।३२।

चण्डरूपा प्रचण्डा च चण्डा चण्डशरीरिणी।
चतुर्भुजा प्रचण्डा च चराचरनिवासिनी।३३
क्षत्रप्रायश्शिरोवाहा छला छलतरा छली।
क्षत्ररूपा क्षत्रधरा क्षत्रियक्षयकारिणी।३४
जया च जयदुर्गा च जयन्ती जयदा परा।
जायिनी जयिनी ज्योत्स्ना जटाधरप्रियाऽजिता।३५
जितेन्द्रिया जितक्रोधा जयमाना जनेश्वरी।
जितमृत्युर्जरातीता जाह्नवी जनकात्मजा।३६
झंकारा झंकारी झंटा झंकारी झंकशोभिनी।
झखा झंमेशा झंकारी योनिकल्याणदायिनी।३७

चण्ड रूप वाली, प्रचंडा चण्डा चण्डे के शरीर वाली है अर्थात् उग्र-वपु वाली है। चारों भुजाओं वाली, प्रचण्डा अर्थात् अत्यन्त तेज स्वभाव वाली, चर और अचरों में निवास करने वाली है।३३। क्षात्रप्रायशिरों-वाहा, छला, छलतरा छली, क्षत्र रूप वाली, क्षत्रधरा और क्षत्रियों के क्षय को करने वाली है।३४। जया, जय दुर्गा जयन्ती, जय देने वाली परा है। जायिनी, जयिनी, ज्योत्स्ना, जटाधर की प्रिया और अजिता है।३५। इन्द्रियों को जीतने वाली, क्रोधको जीत लेने वाली जयमाना, जने-श्वरी अर्थात् सब जनों की स्वामिनी है मृत्यु को जीत लेने वाली, जरा (वृद्धता) से परे, जाह्नवी और जनक की आत्मजा अर्थात् जानकी है।३६। झंकारा, झञ्झरी, झण्टा, झंकारी और झंकारी शोभा वाली है। झखा झंमेशा झकारी और कल्याण के देने वाली है।३७।

झञ्झरा झमुरी झाराझरा झरतरा परा ।
झञ्झा झमेता झंकारी योनि कल्याणदायिनी ।३८
ईमना मानसी चिन्त्या ईमुना शंकरप्रिया ।
टंकारी टिटिका टीका टंकिनी चटवर्गगा ।३९
टापा टोपा टटपविष्टमनी टमनप्रिया ।
ठकारधारिणी ठोका ठंकरी ठिकरप्रिया ।४०
ठेकठासा ठकरती ठामिनी ठमनप्रिया ।
डारहा डाकिनी डारा डामरा डमरप्रिया ।४१
डाकिनी डडयुक्ता च डमरूकरवल्लभा ।
ढक्का ढक्की ढक्कनादा ढौलशब्दप्रबोधिनी ।४२
ढामिनी ढामनप्रीता ढगतन्त्रप्रकाशिनी ।
अनेकरूपिणी अम्बा अणिमा सिद्धिदायिनी ।४३
अमन्त्रिणी अणुकरी अणुमद्भानुसंस्थिता ।
तारा तन्त्रवती तन्त्रतत्वरूपा तपस्विनी ।४४
तरंगिणी तत्वपरा तन्त्रिका तन्त्रविग्रहा ।
तपोरूपा तत्वदात्री तपःप्रीतिप्रधर्षिणी ।४५
तन्त्रयन्त्रार्चनपरा तलातलनिवासिनी ।
तल्पदा त्वल्पदा काम्या स्थिरा स्थिरतरा स्थितिः ।४६

झञ्झरा, झमुरी, झारा, झरा, झरतरात, परा,झञ्झा, झमेता, झंकार झण, कल्याण देने वाली है ।३८। ईमना, मानसी, चिन्त्या, ईमुना, शंकर प्रिया, टंकारी, टिटिका, टीका, टंकनी, चटवर्गाणा हैं ।३९। टापा, टोपा, टटपवि, टमनी, टमनप्रिया ठकारधारिणी, ठोका, ठंकरी, ठिकरप्रिया है ।४०। ठकठासा, ठकरनी, ठमिनी, ठमनप्रिया, डारहा डाकिनी, डारा डामरा, डमरप्रिया है ।४१। डाकिनी, डडयुक्ता, डमरूकर में रखने वाले की प्रियतमा है, ढक्का, ढक्की, ढक्कनादा, ढोलक, शब्द से प्रबोध वाली है ।४२। ढामिनी, ढामनप्रीता, ढग तन्त्रका प्रकाश करने वाली है, अनेक रूपों वाली अम्बा आणमा, सिद्धि के देने वाली है ।४३। अमन्त्रिणी

अणुकरी, अणुमद्भानुसंस्थिता है तारा तन्त्रवती, तन्त्रों के तत्वों के रूप वाली है तथा तपस्विनी है ।४४। तरङ्गिणी, तत्व परायुक्ता, तन्त्रिका-तन्त्रों के विग्रह वाली, तप के रूप से संयुता, तत्वों के देने वाली और तप की प्रति की प्रधर्षिणी है ।४५। तन्त्रों और यन्त्रों के द्वारा अभ्यर्चन में तत्पर और तलातल में निवास करने वाली है । तल्प की दात्री, अल्प के देने वाली काम्या अर्थात् कामना के योग्य, स्थिरा, स्थिरतरा अर्थात् अधिक स्थिर रहने वाली और स्थिति है ।४६।

स्थाणुप्रिया स्थविरास्थिलता स्थानप्रदायिनी ।
दिगम्बरा दयारूपा दावाग्निदमनी दमा ।४७
दुर्गा दुर्गपरा देवी दुष्टदैत्यविनाशिनी ।
दमनप्रमदा दैत्यदया द्रव्यपरायणा ।४८
दुर्गातिनाशिनी दान्ता दम्भिनी दम्भवर्जिता ।
दिगम्बरप्रिया दम्भा दैत्यदम्भविदारिणी ।४९
दमना दशनसौन्दर्या दानवेन्द्रविनाशिनी ।
दयाधरा च दमनो दर्भपत्रविलासिनी ।५०
धारिणो धरिणी धात्री धराधरधरप्रिया ।
धराधरसुता देवी सुधर्मा धर्मचारिणी ।५१

स्थाणु की (भगवान् शिव की) प्रिया, स्थविरास्थिवता, स्थान के प्रदान करने वाली, दिगम्बरा अर्थात् दिशा ही अम्बर (वस्त्र) वाली (नग्ना) दया के रूप वाली, दावाग्नि (वन में संघर्ष से स्वतः उत्पन्न अग्नि) के दमन करने वाली और दमा है ।४७। दुर्गा, दुर्गपरा, देवी, दुष्ट दैत्योंके विनाश करने वाली, दमन प्रमदा, दैत्य दया और धन देनेमें तत्पर रहने वाली है ।४८। दुर्ग की आर्ति (पीड़ा) के विनाश करने वाली, परम दमन शीला, दम्भिनी, दम्भ से रहित, दिशाओं के ही अम्बरों से प्रेम रखने वाली, दम्भा और दैत्यों के दम्भ का निवारण करने वाली है ।४९। दमना, दशन के सौन्दर्य से सम्पन्न बड़े-बड़े दानव

के स्वामियों का विनाश करने वाली है, दया को धारण करने वाली, दमनी और दर्भ के पत्रों पर विलास करने वाली है। दर्भ जमका नाम है।५०। धरिणी, धरिणी, धात्री, धराधर, धर प्रिया, भराधर (हिमवान्) की पुत्री, देवी सुधर्मा और धर्मका चार करने वाली है।५१।

धर्मज्ञा धवला धूला धनदा धनवर्द्धिनी ।
धीराऽधीरा धीरतरा धीरसिद्धिप्रदायिनी ।५२
धन्वन्तरिधरा धीरा ध्येया ध्यानस्वरूपिणी ।
नारायणी नारसिंही नित्यानन्दा नरोत्तमा ।५३
नक्तानक्तवती नित्या नीलजीमूतसन्निभा ।
नीलाङ्गी नीलवस्त्रा च नीलपर्वतवासिनी ।५४
सुनीलपुष्पखचिता नीगजम्बुसमप्रभा ।
नित्याख्या षोडशी विद्या नित्या नित्यसुखावहा ।५५
नर्मदा नन्दना नन्दा नन्दानन्दविवर्धिनी ।
यशोदानन्दतनया नन्दनोद्यानवासिनी ।५६

धर्म के ज्ञान रखने वाली, धवला, धूला धन के देने वाली, धन के वर्धन करने वाली, धीरा अधीरा, अधिक धीरा धीरों की सिद्धि के देने वाली है ।५२। धन्वन्तरिकों धारण करने वाली, शीरा ध्यान करने के योग्य, ध्यान के ही स्वरूप से समन्विता, नारायणी, नारसिंही, नित्य ही आनन्द से सम्पन्न, नरों में उत्तमा है ।५३। नक्ता, नक्तवती, नित्या नील जीमूत (मेघ) के सदृश, नीलवर्ण के अङ्गों वाली, नील वस्त्रों से संयुत तथा नील पर्वत पर निवास करने वाली है ।५४। सुन्दर नीलवर्ण के पुष्पों से खचित, नील जम्बु के समान प्रभा वाली नित्यानाम वाली, षोडशी, विद्या, नित्या और नित्य ही सुखों का आवाहन करने वाली है ।५५। नर्मदा, नन्दना, नन्द, नन्दा के आनन्द को बढ़ाने वाली यशोदा नन्द की तनया और प्रन्दन (सुरगणों के उद्यान का नाम) उद्यान में वास करने वाली है ।५६।

नागान्तका नागवृद्धा नागपत्नी च नागिनी ।
नमिताशेषजनता नमस्कारवती नमः ।५७
पीताम्बरा पार्वती च पीताम्बरविभूषिता ।
पीतमाल्याम्बरधरा पीताभा पिंगमूर्धजा ।५८
पीतपुष्पार्चन रता पीतपुष्पसमर्चिता ।
परप्रभा पितृपतिः परसैन्यविनाशिनी ।५९
परमा परतन्त्रा च परमन्त्रा परापरा ।
पराविद्या परासिद्धिः परास्थानप्रदायिनी ।६०
पुष्पापुष्पवती नित्या पुष्पमालाविभूषिता ।
पुरातना पूर्वपरा परसिद्धिप्रदायिनी ।६१
पीतनितम्बिनी पीता पीनोन्नतपयस्विनी ।
प्रेमा प्रेमध्यमा शेषा पद्मपत्रविलासिनी ।६२
पद्मावती पद्मनेत्रापद्मा पद्ममुखी परा ।
पद्मासना पद्मप्रिया पद्मरागस्वरूपिणी ।६३
पावनी पाविका पात्री परदा वरदा शिवा ।
प्रेतसंस्था परानन्दा परब्रह्मस्तरूपिणीं ।६४

नागों के अन्त करने वाली, नागों की वृद्धि करने वाली अथवा नागों में सबसे बड़ी नागों की पत्नी नागिनीं सम्पूर्णजनों के समुदाय को नमित करने वाली, नमस्कार वाली और नमस्कार स्वरूप है ।५७। पीताम्बरों वाली, पार्वती, पीतवर्ण के अम्बरों से भूषिता, पीतवर्ण की मालाओं के धारण करने वाली, पीत आभा से युक्त और पिंग अर्थात् पीले केशों वाली है ।५८। पीले पुष्पों के द्वारा समर्चन करने से प्रसन्न, पीले पुष्पों से पूजित परप्रभा, पितृगणों की पति अर्थात् स्वामिनी परों अर्थात् शत्रुओं की सेना का विनाश कर देने वाली है ।५९। परमा अर्थात् सर्वोपरि विराजमाना, परतन्त्रा, परमन्त्रा, परापरा, पराँ अर्थात् परम श्रेष्ठ सिद्धि स्वरूपा और अपरा है, पराविद्या, परासिद्धि, परा के स्थान को प्रदान करने वाली है ।५०। पुष्पापुष्पवती, नित्या, पुष्पों की

मालाओं से विभूषिता, पुरातना, पूर्वपरा और पर अर्थात् परम सिद्धि के देने वाली है ।६१। पीत नितम्बों वाली, पीता, पीन (परिपुष्ट) तथा उन्नत (ऊपर को उठे हुए) स्तनों से पयस्विनी, प्रेमा, प्रेमघ्यमा, शेषा, पद्मों के दलों पर विलास करने वाली है ।६२। पद्मावती, पद्म के सदृश लोचनों वाली, पद्मा पद्म के समान मुख से संयुत, परा, पद्म के आसन वाली, पद्मों से प्रेम रखने वाली और पद्म के रागसे स्वरूप से समन्वित है ।६३। पावना (पवित्र करने वाली), पालिका पालन करने वाली परदा, वरों के प्रदान करने वाली शिवा, प्रेत (शव) पर में संस्थित रहने वाली, परमानन्द से संयुक्त और परब्रह्मके स्वरूप वाली है ।६४।

जिनेश्वरप्रिया देवी पशुरक्तरतिप्रया ।
पशुमांसप्रियाऽपर्णा परामृतपरायणा ।६५
पाशिनी पाशिका चापि पशुघ्नी पशुघ्नी पशुभाषिणी ।
फुल्लारविन्दवदनी फुल्लोत्पलशरीरिणी ।६६
परानन्दप्रदा वीणा पशुपाशविनाशिनी ।
फुत्कारा फुत्करा फेणी फुल्लेन्दीबरलोचना: ।६७
फट्मन्त्रा स्फटिका स्वाहा स्फोटा च फट् स्वरूपिणी ।
स्फोटिका घुटिका धीरा स्फाटिकादिस्वरूपिणी ।६८
वरांगना वरधरा वाराही वासुकी वरा ।
विन्दुस्था विन्दुनी वाणी विन्दुचक्रनिवासिनी ।६९
विद्याधरी विशालाक्षी काशीवासिजनप्रिया ।
वेदविद्याविरूपाक्षी विश्वयुग् बहुरूपिणी ।७०

जिनेश्वर की प्रिया देवी पशुओं के रक्त में रति और प्रेम रखने वाली है । पशु के मांस को प्रिय समझने वाली अपर्णा परामृत में परायण है ।६५। पाशवाली पाशिका पशुओं का हनन करने वाली पशु-भाषिणी विकसित कमल के समान मुख वाली खिले हुए कमल के तुल्य शरीर से सुसम्पन्न है ।६६। परमाधिक आनन्द के प्रदान करने

वाली वीणा पशुओंके पाशका विनाश करने वाली है, फुत्कारा-फुत्करा फेणी विकसित इन्दीवर (कमल) के तुल्य श्रेष्ठ लोचनों वाली है ।६७। फट् मन्त्र वाली स्फाटिक स्वाहा, स्फोटा फट् के स्वरूप वाली है, स्फाटिका, घृटिका, धीरा, स्फटिक मणि के पर्वत के स्वरूप वाली है ।६८। श्रेष्ठ अङ्गनावरों के धारण करने वाली वाराही, वासुकी, बरा बिन्दु में स्थित, बिन्दुनी, वाणी और विन्दु चक्र में निवास करने वाली है ।६९। विद्या के धारण करने वाली, विशाल नेत्रों से समन्वित, वाराणसी में निवास करने वाले जनों की प्रिया वेद-विद्या विरूप-नेत्रों वाली अर्थात् त्रिनेत्रा विश्वयुक्त और अनेकों रूपों वाली है ।७०।

ब्रह्मशक्तिर्विष्णुशक्तिः पञ्चवक्त्रा शिवप्रिया ।
वैकुण्ठवासिनी देवी वैकुण्ठपददायिनी ।७१
ब्रह्मरूपा विष्णुरूपा परब्रह्ममहेश्वरी ।
भवप्रिया भवोद्भावा भवरूपा भवोत्तमा ।७२
भवपारा भवधारा भाग्यवत्प्रियकारिणी ।
भद्रा सुभद्रा भवदा शुम्भदैत्यविनाशिनी ।७३
भवानी भैरवी भीमा भद्रकाली सुभद्रिका ।
भगिनी भगरूपा च भगमाना भगोत्तमा ।७४
भगप्रिया भगवती भगवासा भगाकरा ।
भगसृष्टा भाग्यवती भगरूपा भगासिनी ।७५
भगलिंगप्रिया देवी भगलिंगपरायणा ।
भगलिंगस्वरूपा च भगलिंगविनोदिनी ।७६
भगलिंगरता देवी भगलिंगनिवासिनी ।
भगमाला भगकला भगाधारा भगाम्बरा ।७७
भगावेगा भगाभूषा भगेन्द्रा भाग्यरूपिणी ।
भगालिंगसम्भोगा भगलिंगासवावहा ।७८

ब्रह्मा की शक्ति विष्णु की शक्ति पञ्चवक्त्रा शिव की प्रियतमा बैकुण्ठलोक में निवास करने वाली देवी और वैकुण्ठ में पद (स्थान)

प्रदान करने वाली है ।७१। ब्रह्मके स्वरूप वाली भगवान् विष्णु के स्वरूप से समन्विता परब्रह्म महेश्वरी भगवान् भव (शिव) प्रिया भर के उद्भव वाली भव के ही रूप वाली भव से भी उत्तमा है ।७२। भव की पारा भव की धारा भाग्यवानों के प्रिय कार्य करने वाली भद्रा, सुभद्रा भवा और शुम्भ नामक दैत्य के विनाश करने वाली है ।७३। भवानी भैरवी भीमा भद्राकली सुभद्रिका भगिनी भगरूपा भगमाना और भगोत्तमा है।७४। भव (शिव) की प्रियतमा भगवती भगावासा भगाकरा भगसृष्टा भाग्यवती भगरूपा और भगांसिनी है ।७५। भगलिग की प्रिया देवी भगलिंग में परायण है । भगलिंग के स्वरूप से संयुक्त और भगलिंग से विनोद करने वाली है ।७६। भगलिंग में निरत देवी भगलिंग में निवास करने वाली है । भगमाला भगकला भगधारा और भगके अम्बर वाली है ।७७। भगवेगा भगाभूषा नगेन्द्रा भाग्यरूपिणी हैं । भग और लिंग के अङ्ग का सम्भोग वाली भगलिंगास्वावहा है ।७८।

भगलिंगसमाधुर्य्या भगलिंगनिवेशिता ।
भगलिंगसुपूजा च भगलिंगसमन्विता ।७९
भगलिंगविरक्ता च भग लिंगसमावृता ।
माधवी मादवी मान्या मधुरा मधुमानिमी ।८०
मन्दहासा महामाया मोहिनी महदुत्तमा ।
महामोहा महाविद्या महाघोरा महास्मृतिः ।८१
मनस्विनी मानवती मोदिनी मधुरानना ।
मेनका मानिनी मान्या मणिरत्नविभूषिता ।८२
मल्लिमा मौलिका माला मालाधरमपोत्तमा ।
मदना सुन्दरी मेधा मधुमत्ता मधुप्रिया ।८३
मत्तहंसा समोन्नासा मत्तसिंहमहासिनी ।
महेन्द्रवल्लभा भीमा मौल्यञ्च मिथुनात्मजा ।८४

महाकाल्या महाकाली मनोबुद्धिर्महोत्कटा ।
माहेश्वरी महामाया महिषासुरघातिनी ।८५

भर्गलिंग के माधुर्य के सहित भर्गलिंगनिवेशिता भग और लिंग की सुन्दर पूजा भर्गलिंगसे समन्वित है । माधवी-मादवी मान्या मधुरा और मधुमानिनी है भर्गलिंग विरक्त और भर्गलिङ्ग से समावृता है ।७९-८०। मन्दहास वाली महाविद्या महाघोरा महास्मृति महामाया मोहिनी और महद्रुत्तमाहै ।८१।मनस्विनी मानवती मधुर आनन वाली मेनका मानिनी मान्या और मणियों से और रत्नों से भूषिता है।८२। मल्लिका मौलिका माता मालाओं की धारण करने वाली उत्तम मद से संयुत है । मदना सुन्दरी मेधा मधुमत्ता और मधु से प्रेम करने वाली है ।८१। मत्तहंसा समोन्ना सामद से मस्त सिंह पर अपना महान् आसन रखने वाली है । महेन्द्रकी वल्लभा भीमा मौल्य और मिथुनकी आत्मजाहै।८४।महाकाल्या महाकाली मन और बुद्धि के लिए महोत्कय माहेश्वरी महामाया और महिष नामक असुर को समाप्त करने वाली है ।८५।

मधुरा कीर्तिमत्ता च मत्तमांतंगामिनी ।
मदप्रिया मांसरमा मत्तयुक् कामकारिणी ।८६
मैथुन्यवल्लभा देवी महानन्दा महोत्सवा ।
मरीचिर्मारतिर्माया मनोबुद्धिप्रदायिनी ।८७
मोहा मोक्षा महालक्ष्मीर्महत्परप्रदायिनी ।
यमरूपा च यमुना जयन्ती च जयप्रदा ।८८
याम्या यमवती युद्धा यदः कुलवर्धिनी ।
रमा रामा रामपत्नी रत्नमाला रतिप्रिया ।८९
रत्नसिंहासनस्था च रत्नाभरणमण्डिता ।
रमणी रमणीया र रत्ना रसप्ररायणा ।९०
रसानन्दा रसवती रघूणां कुलवर्धिनी ।
रमणारिपरिभ्राज्या रैधाकरत्नजा ।९१

रावी रसस्वरूपा च रात्रिराजसुखावहा ।
ऋतुजा ऋतुदा ऋद्धा ऋतुरूपा ऋतुप्रिया ।९२

मधुरा कीर्त्तिमर्त्ता मत्तमातङ्ग (हाथी) के समान झूमती हुई गमन करने वाली है। मद सुर से प्यार करने वाली मांस से रति रखने वाली मत्तयुक् और कामकारिणी है ।८६॥ मैथुन्य की प्यारी देवी महान् आनन्द से संयुत महान् उत्सवों वाली है। मरीचि मा रति माया और मन बुद्धि के प्रदान करने वाली है ।८७। मोहा मोक्षा अर्थात् मोह के स्वरूप वाली और मोक्ष रूप से संयुत है, महालक्ष्मी महान् पद के देने वाली है यम के स्वरूप वाली यमुना जयन्ती और जय के देने वाली है ।८८। याम्धा यमवती युद्धा यदु के कुल का विशेष वर्धन करने वाली रमा रामा श्रीराम की पत्नी रत्नों की माला और रति के समान रत्नों आभरणों समलंकृता है। रमणी-रमणीया रत्ना और रस में परायण है ।८९-९०। रस के आनन्द वाली रसवती रघुराजके कुलके बढ़ाने वाली रमणके अरि की परिभ्राज्या रेधा और आराधिका रत्नजा है ।९१। रावी रसके स्वरूप वाली रात्रिके राजा को सुखों का आवाहन करने वाली है, ऋतुजा-ऋतुदा ऋद्धा ऋतु के स्वरूप वाली और ऋतु से प्यार करने वाली है ।९२।

रक्तप्रिया रक्तवती रंगिणी रक्तदन्तिका ।
लक्ष्मीर्लज्जा च लतिका लीलालग्ना विताक्षिणी ।९३
लीला लीलावती लोभा हर्षाह्लादनपट्टिका ।
ब्रह्मस्थिता ब्रह्मरूपा ब्रह्मणा वेदवन्दिता ।९४
ब्रह्मोद्भवा ब्रह्मकला ब्रह्माणी ब्रह्मबोधिनी ।
वेदांगना वेदरूपा वनिता विनता वसा ।९५
बाला च युवती वृद्धा ब्रह्मकर्मपरायणा ।
विन्ध्यस्था विन्ध्यवासी च विन्दुयुग् विन्दुभूषणा ।९६
विद्यावती वेदधारा व्यापिका र्वीहणी कला ।
वामाचारप्रिया वह्निर्वामाचारपरायणा ।९७

वामाचाररतादेवी वासुदेवप्रियोत्तमा ।
बुद्धीन्द्रिया विबुद्धा वरणमालिनी ।६८
बन्धमोचनकर्त्री च वरुणा वरुणालया ।
शिवा शिवप्रिया शुद्धा शुद्धांगी शुक्लवर्णिका ।६६

रक्त से प्रीति रखने वाली रक्तवती रङ्गिणी रक्त दन्तिका लक्ष्मी लज्जा लतिका लीलाओं में संलग्न रहने वाली और विताक्षणी है ।६३। लीला लीलावती लोभा हर्ष और आह्लादन की पट्टिका ब्रह्म में स्थित ब्रह्मके रूप वाली ब्रह्माणी ब्रह्मका बोध कराने वाली वेदोंकी अंगना वेदों के रूप वाली वनिता बसा है । ब्रह्म के द्वारा वन्दिता और वेद वन्दिता है, ब्रह्म से उद्‌भव प्राप्त करने वाली ब्रह्मकी कला है ।६४-६५। बाला, युवती, वृद्धा ब्रह्म के कर्म में परायण विन्ध्य पर विराजमाना विन्ध्य में वास करने वाली विन्दु से युक्त और बिन्दु के भूषण वाली है ।६६। विद्यावती वेदों के धारण करने वाली व्यापिका वर्हिणी कला वामाचार से प्रीति रखने वाली वह्नि तथा समाचार में तत्पर रहने वालीहै।६७। वामाचारमें निरतदेवी वासुदेव की प्रियतमाओं में सर्वोत्तमा बुद्धीन्द्रिया विबुद्धा, वुद्धा और वरण मालिनी है ।६८। बन्धन से मोचन करने वाली वरुणा वरुण में आलय वाली शिवा शिव की प्रिया वृद्धा शुद्ध अङ्गों वाली और शुक्ल वर्ण से युक्त है ।६६।

शुक्लपुष्पप्रिया शुक्ला शिवधर्मपरायणा ।
शुक्लस्था शुक्लिनी शुक्लरूपा शुक्लपशुप्रिया ।१००
शुक्रिणी शुक्रिणी शुक्रा शुक्राकारा च शुक्रिका ।
षण्मुखी च षडङ्गा च षट् चक्रविनिवासिनि ।१०१
षडग्रन्थियुता षोढा च षण्माता च षडात्मिका ।
षडंगयुवती देवी षडंगप्रकृतिर्वशी ।१०२
षडाना षडस्त्रा च षष्ठी षष्ठेश्वरी प्रिया ।

षडङ्गावादा षोडशी प षोढा न्तासस्वरूपिणी ।१०३
षट्चक्रभेदनकरी षट्चक्रस्थस्वरूपिणी ।
षोडश स्वरूपा च षण्मुखी षड्रदान्विता ।१०४
सनकादिस्वरूपा च शिवधर्मपरायणा ।
सिद्धा सप्तस्वरी शुद्धा सुरमाता स्वरौत्तमा ।१०५
सिद्धविद्या सिद्धमाता सिद्धासिद्धस्वरूपिणी ।
हरा हरप्रिया हारा हारिणी हारयुक्तथा ।१०६
हरिरूपा हरिधारा हरिणाक्षी हरिप्रिया ।
हेतुप्रिया हेतुरता हिताहितस्वरूपिणी ।१०७

शुक्ल पुष्पों से प्यार करने वाली, शुक्ला शिव के धर्म में परायण, शुक्ल में स्थित, शुक्लिनी, शुल्ल रूपा और शुक्ल वर्ण वाले पशु से प्रेम रखने वाली है ।१००। शुक्रस्थ, शुक्रिणी, शुक्रा, शुक्र के रूप वाली, शुक्राकार षण्मुखी,षडंगा षट्चक्र पर विशेष निवास करने वाली है ।१०१। षड्ग्रन्थियों से युक्ता, षोढा, षण्माता षडात्मिक, षडंगों से युवती, देवी, षडंग प्रकृति और वशी है ।१०२। षडानना, षडस्त्रा षष्ठी, षष्ठेश्वरी, प्रिया षडग-वादा, षोडशी-षोढ़ा, न्याओं के स्वरूप वाली है ।१०३। षट्चक्रों के भेदन करने वाली, षट्चक्र में स्थित स्वरूप वाली है । षोडश स्वरों के स्वरूप वाली, षण्मुखी, षट्रदों से समन्वित है । ।१०४। सनक आदि से स्वरूप वाली है और भगवान् शिव के धर्म में तत्पर रहने वाली है । सिद्धा, सप्त स्वरों से समन्वित है । षडज, ऋषभ, गन्धार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद–ये सात स्वर हैं । शुद्धा सुरों की माता और स्वरोत्तमा है ।१०५। सिद्धविद्धा, सिद्धमाता और सिद्ध तथा असिद्ध स्वरूप वाली है । हरा, हर की प्रियतमा-हरा हरिणी और हार से युक्त है ।१०६। हरि के रूप वाली हरि श्रीहरि की प्रिवा है । हेतुप्रिया, हेतु में रता, हित और अहित के स्वरूप वाली है ।

अर्थात् अपने भक्तों का हित और भक्तों के शत्रुओं का अहित करने वाले स्वरूप से सुसमन्वित है ।१०७।

क्षमा क्षमावती क्षीता क्षुद्रघंटाविभूषिण ।
क्षयंकरी क्षितीशा च क्षीणमध्यसुशोभना ।१०८
अजाऽनन्ता अपर्णा च अहिल्या शेषशायिनी ।
स्वा-तर्गता च साधूनामन्तरानन्तरूपिणी ।१०९
अरूपा अमला चार्द्धा अनन्तगुणशालिनी ।
स्वविद्या विद्यका विद्याविद्या चारविन्दलोचना ।११०
अपराजिता जातवेदा अजपा अमरावतै ।
अल्पा स्वल्पा अनल्पाऽऽद्या अणिमासिद्धिदायिनी ।१११
अष्टसिद्धिप्रदा देवी रूपलक्षण संयुता ।
अरविन्दमुखी देवीं भोगसांख्यप्रदायिनीं ।११२
आदिविद्या आदिभूता आदिसिद्धि-प्रदायिनि ।
सीत्काररूपिणीं देवीं सर्वासनविभूषिता ।११३

स्वयं ही क्षमा है क्षमा के स्वरूप वाली अर्थात् क्षमा से युक्त है । क्षीता और क्षुद्राघण्टा से विभूषित क्षय करने वाली, क्षिति की स्वामिनी, अपने कृश मध्य भाग से परम शोभित है ।१०८। अजा, अनन्ता, अपर्णा, अहल्या और शेष नाग की शय्या पर शयन करने वाली है । साधु पुरुषों के अन्तःकरण में रहने वाली और अन्तरा अनन्तरूपिणी है ।१०९। अरूपा, अमला, अर्द्धा, अनन्त गुणों की शोभा वाली हैं । स्वविद्या, विद्यका, विद्या-अविद्या और अरविन्द के सदृश परम् सुन्दर नयनों वाली हैं ।११०। अपराजिता, जातवेदा, अजय, अमरावती, अल्पा, स्वल्पा, अनल्पा, आद्या, अणिमा की सिद्धि देने वाली है । नौ निधियाँ और आठ सिद्धियां होती हैं । उन आठ सिद्धियों के नामों का निम्न पपिगणन है अणिमा, महिमा,गरिमा, लघिका, प्राप्ति प्राकाम्य, ईशत्व और वशित्व-ये आठ नाम हैं । अणिमा का अर्थ है

बहुत ही (हनुमानजीके समान लंका प्रवेशमें) छोटा रूप धारण करलेना ।१११। इन आठों सिद्धियों के प्रदान करने वाली देवी रूप सौन्दर्य के समस्त लक्षणों से संयुक्त है । अरविन्द-तुल्य मुख वाली देवी-सांसारिक सुखों के उपभोग के देने वाली है ।११२। सीत्कार (मुख से सी करना) के रूप वाली, आविद्या, आदिभूता आदि सिद्धि के देने वाली तथा सर्वासन पर भूषित है ।११३।

इन्द्रप्रिया च इन्द्राणी इन्द्रप्रस्थनिवासिनी ।
इन्द्राक्षी इन्द्रवज्रा च इन्द्रवन्द्योक्षिणी ।११४
ईला कामनिवासा च ईश्वरीश्वरवल्लभा ।
जननी चेश्वरी दीना मेदा चेश्वरकर्मकृत् ।११५
उमा कात्यायनी ऊर्ध्वा मीना चोत्तरवासिनी ।
उमापतिप्रिया देवी शिवा चोंकाररूपिणी ।११६
उरगेन्द्रशिरोरत्ना उरगोरगबल्लभा ।
उद्यानवासिनी माला प्रशस्तमणिभूषणा ।११७
ऊर्ध्व दन्तोत्तमाङ्गी च उत्तमा चोर्ध्वकेशिनी ।
उमासिद्धिप्रदा या च उरगासनसंस्थिता ।११८
ऋषिपुत्री ऋषिच्छन्दा ऋद्धिसिद्धिप्रदायिनी ।
उत्सवोत्सवसीमान्ता कामिका च गुणान्विता ।११९
एला एकारविद्या च एणी विद्याधरा तथा ।
ओंकार कारवलयोपेता ओंकारपरमा कला ।१२०

इन्द्र की प्रिया, इन्द्राणी, इन्द्रप्रस्थ में निवास करने वाली, इन्द्राक्षी, इन्द्रवज्रा, इन्द्रवन्द्या, उक्षिणी है ।११३। ईला, कामनिवासा, ईश्वरी-ईश्वरी (शिव) की वल्लभा, जननी, ईश्वरी, दीना, भेदा, ईश्वर के कर्मों के करने वाली है ।११५। उमा, कात्यायनी, ऊर्ध्वा, मीना, उत्तर दिशामें वास करने वाली उमापति (सदाशिव) की प्रियतमा देवी शिवा, ओंकार स्वरूप वाली हैं ।११६। उरगेन्द्र (शेष) का शिरोरत्न

(मणि) है उरगों (सर्पों) को उरस्थल में रखने वाले अर्थात् भगवान् शिर की वल्लभा है। उद्यान में निवास करने वाली, माला, प्रशस्त (अत्युत्तम) मणियों के भूषणों वाली है।११७। ऊर्ध्वदन्ता, उत्तम अङ्गों वाली उत्तमा, उर्ध्वकेशों वाली हैं। उमा, सिद्धियों के प्रदान करने वाली उरगोंके अर्थात् भगवान् शेष के आसन पर स्थिता है।११८। ऋषि की पुत्री, ऋषिच्छन्दा, ऋषियों और सिद्धियोंके देने वाली है। उत्सवा, उत्सवों की सीमा, अन्ता, कामिका और गुणगणों से समन्विता है।११९। एला, एकारविद्या, एणी, विद्याधरा, ओंकारके वलय से संयुक्त ओंकार की परमा, कला है।१२०।

ओम् वद वेदवाणी च ओंकाराक्षरमण्डिता।
ऐन्द्री कुलिशहस्ता च ओं परलोकवासिनी।१२१
ओंकारमध्यबीजा च ओं नमो रूपधारिणी।
परब्रह्मस्वरूपा च अंशकांशुक-बल्लभा।१२२
ओंकारा फट् मन्त्रा च अक्षाक्षरविभूषिता।
अमन्त्रा मन्त्ररूपा च पदशोभासमन्विता।१२३
प्रणवोंकाररूपा च प्रणवोच्चरभाक् पुनः।
ह्रींकाररूपा श्रीकारी वाग्बीजाक्षरभूषणा।१२४
हृल्लेखा सिद्धियोगा च हृत्पद्मासनसंस्थिता।
बीजाख्या नेत्रहृदया ह्रींबीजा भुवनेश्वरी।१२५
क्लीं कामराजक्लिन्ना च चतुर्वर्गफलप्रदा।
क्लीं क्लीं रूपका देवी क्रीं क्रीं क्रीं नामधारिणी।१२६

ओम् वद वेदवाणी, ओंकार के अक्षर से मण्डिता, ऐन्द्री, कुलिश (वजर) हाथ में रखने वाली ओंपर लोक के वास करने वाली है।१२१। ओंकार के मध्य में बीज वाली, ओं नमो रूप के धारण करने वाली, परब्रह्म के स्वरूप से संयुत, अंशुका-अंशुक वल्लभा है।१२२। ओंकार फट् मन्त्र वाली, अक्षा-अक्षर भूषित, बिना मन्त्र वाली, मन्त्र

रूप व समन्वित और पदों की शोभा से युक्त है ।१२३। प्रणव ओंकारके रूप वाली, प्रणव के उच्चारण का सेवन करने वाली, ह्रींकार के रूप से युक्त श्रीकारी और वाग्बीज के अक्षर के भूषण वाली है ।१२४।हृल्लेखा, सिद्धियों के योगवाली, हृदय रूपी पद्म के आसन पर विराजमान है । बीजाख्या, नेत्रहृदया, ह्रीं बीज वाणी भुवनेश्वरी है ।१२५। क्लीं कामराज सेक्लिन्ना, चारों वर्गों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के फल को प्रदान करने वाली, क्लीं क्लीं क्लीं रूपिकादेवी, क्रीं-क्रीं-क्रीं नामों के धारण करने वाली है ।१२६।

कमला शक्तिबीजा च पाशांकुशविभूषिता ।
श्रीं श्रींकारा महाविद्या श्रद्धावती तथा ।१२७
ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं परा च क्लींकारी परमा कला ।
ह्रीं क्लीं श्रींकारस्वरूपा सर्व कर्मफलप्रदा ।१२८
सर्वाढ्या सर्वदेवी च सर्वसिद्धिप्रदा तथा ।
सर्वज्ञा सर्वशक्तिश्च वाग्विभूतिप्रदायिनी ।१२९
सर्वमोक्षप्रदा देव सर्वभोगप्रदायिनी ।
गुणेन्द्रवल्लभा वामा सर्वशक्तिप्रदायिनी ।१३०
सर्वानन्दमयी चैव सर्वसिद्धिप्रदायिनी ।
सर्व चक्रेश्वरी देवी सर्वसिद्धेश्वरी तथा ।१३१
सर्वप्रियंकरी चैव सर्वसौख्यप्रदायिनी ।
सर्वानन्दप्रदा देवी ब्रह्मानन्दप्रदायिनी ।१३२
मनोवांछितदात्री च मनोबुद्धिसमन्विता ।
अकारादिक्षकारान्ता दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ।१३३

कमला, शक्तिबीजा, पाश और अंकुश से विशेष रूप से भूषिता है । श्री, श्रीकारा, महाविद्या, श्रद्धा, श्रद्धावती है ।१२७। ओम् ऐं क्लीं ह्री परा, क्लीकारी, परमा, कला, ह्रीं क्लीं श्रींकार के स्वरूप वाली समस्त कर्मों के फलों को प्रदान करने वाली है ।१२८। सभी से संयुता

सबकी देवी, सब सिद्धियों की देने वाली, सर्वज्ञा अर्थात् सभी कुछ का ज्ञान रखने वाली, सब शक्तियों से परिपूर्ण, वाणी की विभूति देने वाली संसार में बारम्बार जन्मरण के दुःख को दूर करा देने वाली है और सभी तरह के सुखों के उपयोग देने वाली है गुणेन्द्र (शिव) की परम प्यारी है और वामा तथा सब प्रकारकी शक्तियों को प्रदान किया करती है ।१२९-१३०। सर्वानन्द से परिपूर्णा और सम्पूर्ण सिद्धियों को देने वाली है । सम्पूर्ण चक्रों की ईश्वरी देवी है और समस्त सिद्धों की स्वामिनी हैं ।१३१। सभी प्रिय कामनाओं के पूर्ण करने वाली तथा सब सुखों की दात्री हैं । सर्वानन्दों का देने वाली है तथा ब्रह्मानन्द की भी दात्री है । परब्रह्म परमात्मा में मन को लीन करने में जो सर्वातिशयी अनुपम आनन्द होता है उसे ब्रह्मानन्द कहा जाता हैं ।१३२। मन जो भी इच्छित मनोरथ होते हैं उन सबके देने वाली, मन और बुद्धि से समन्वित हैं आकार से लेकर क्षकर पर्यन्त स्वरूप वाली है दुर्गा-दुर्गतियों के विनाश करती है ।१३३।

पद्मनेत्रा सुनेत्रा च स्वधा स्वाहा वषट्करी ।
स्ववर्गा च सवर्गा च सुरवर्गा समन्विता ।१३४
अन्तःस्था वेश्मरूपा च नवदुर्गा नरोत्तमा ।
तत्वसिद्धिप्रदा नीला तथा नीलपताकिनी ।१३५
नित्यरूपा निशाकारी स्तम्भिनी मोहिनीति च ।
वशंकरी तथोच्चाटी उन्मादी कर्षिणीति च ।१३६
मातङ्गी मधुमत्ता च अणिमा लघिमा तथा ।
सिद्धा मोक्षप्रदा नित्या नित्यानन्दप्रदायिनी ।१३७
रक्ताङ्गी रक्तनेत्रा च रक्तचन्दनभूषिता ।
स्वल्पसिद्धिः सुकल्पा च दिव्याचरणशुक्रभा ।१३८
संक्रान्तिः सर्वविद्या च सस्यवासरभूषिता ।
प्रथमा च द्वितीया च तृतीया च चतुर्थिका ।१३९

पंचमी चैव षष्ठी च विशुद्धा सप्तमी तथा ।
अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा ।१४०
द्वादशी त्रयोदशी च चतुर्दश्यथ पूर्णिमा ।
अमावस्या तथा पूर्वा उत्तरा परिपूर्थिमा ।१४१

पद्मसे सदृश सुवर्गा नेत्रों वाली सुन्दर लोचनों से युक्त स्वधा, स्वाहावषट्करी, स्वर्गा, देववर्गा और समन्विता है ।१४। अन्तस्था, वेश्मरूपा, नवदुर्गा नरोत्तमा, तत्वों की सिद्धि देने वाली नीला और नील पताका वाली ।१३६। नित्यरूपा निशाकारी स्तम्भन करने वाली, मोहन करने वाली, वशीकरी तन्त्रोच्चारी, उन्मादी और कर्षिणी है ।१३६। भातिङ्गी, मधुमत्ता, अणिमा, लघिमा, सिद्धा मोक्ष देने वाली, नित्या नित्य ही आनन्द की दात्री है ।१३७। रक्त अङ्गोंसे समन्वित रक्तलोचनों वाली, रक्त चन्दन से भूषित है । स्वल्प सिद्धि अर्थात् थोड़ेही श्रम और प्रयास सिद्धीं देने वाली, सुकल्पा दिव्याचारण शुक्रभा है ।१३८।सक्रान्ति, सर्वविद्या, वासर भूषिता है । प्रथमा, द्वितीया, तृतीया और चतुर्थो है ।१३९। पंचमी, षष्ठी, विशुद्धा सप्तमी है अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी है ।१४०। द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या, पूर्वा उत्तरी परिपूर्णा है ।१४१।

खंगिनी चक्रिणी घोरा गदिनी शूलिनी तथा ।
भुशुण्डी चापिनी वाणा सर्वायुधविभीषणा ।१४२
कुलेश्वरी कुलवती कुलाचारपरायणा ।
कुलकर्म्मसुरक्ता च कुलाचारप्रवर्धिनी ।१४३
कीर्तिः श्रीः परमा रामाधर्म्मायै सततं नमः ।
क्षमाधृतिः स्मृतिर्मेधा कल्पवृक्षनिवासिनी ।१४४
उग्रोग्रप्रभा गोरा वेदविद्याविवर्धिनी ।
संध्या सिद्धा सुसिद्धा च विप्ररूपा तथैव च ।१४५

काली कराली काल्या च कालदैत्यविनाशिनी ।
कौलिनी कालिकी चैव कचटतपर्वणिका ।१४६
जयिनी जययुक्ता च जयदा जृम्भिणी तथा ।
स्राविणी द्राविणी देवी भरुण्डा विंध्यवासिनी ।१४७
ज्योतिर्मता च जयदा ज्वालामालासमाकुला ।
भिन्ना भिन्नप्रकाशा च विभिन्नारूपिणी ।१४८
अश्विनी भरणी चैव नक्षत्रसम्भवानिला ।
काश्यर विनता ख्याता दितिजा दितिरेव च ।१४९
कृतिः कामप्रिया देवी कीर्त्या कीर्तिविवर्धनी ।
सद्योमांससमालब्धा सद्यश्चिन्नासिशंकरा ।१५०

खड्गिनी, चक्रिणी घोर गदिनी, शूलिनी, भुशुंडी चापिनी, वाणा समस्त आयुधों से विवेष भीषणा हैं ।१४२। कुलेश्वरी, कुलवती, कुला चार से परायण है । कुल कर्मों में सुरक्त अर्थात् पूर्णराग रखने वाली कुलाचार के प्रकृष्टवर्धन करने वाली है ।१४३। कीर्ति, श्री, परमा, रामा धर्मा के लिए निरन्तर नमः क्षमा, घृति, स्मृति, मेधा, कल्प वृक्ष पर निवास करने वाली है।१४४। उग्रा उग्रप्रभा, गौरी, वेदों की विद्या का प्रवर्धन करने वाली, साध्य, सिद्धा, सुसिद्धा और विप्र के रूप वाली है ।१४४। काली, कराली, कात्या, काल दैत्य का विनाश करने वाली है कौलिनी, काबिकी, क च ट त प वर्णों वाली है । तात्पर्य क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग और प वर्ग से है । प्रत्येक वर्गमें पांच-पाँच वर्णों का ग्रहण होता है ।१४५। जययक्ता, जय वाली जय देने वाली, जृम्भणी, सावित्री द्राविणी देवी, भरुन्डा, विंध्याचल पर निवास करने वाली है ।१४७। ज्योतिर्भूता, जलदात्री, ज्वालाओं की मालाओं से समन्विता है अर्थात् घिरी हुई हैं-भिन्न भिन्न प्रकाश वाली, विभिन्ना और भिन्न रूप वाली है ।१४८। अश्विनी, भरणी, नक्षत्रों की सम्भवा और अनिला है ।१४९। कृति, कामप्रिया देवी कीर्त्या अर्थात् कीर्तन के करने योग्य-

कीर्तन का विवर्धन करने वाली सद्य (ताजी) मांस के द्वारा समालब्ध होने वाली सद्यश्चिनासिशंकर है।१५०।

दक्षिणा चोत्तरा पूर्वा पश्चिमा दिक् तथैव च।
अग्निनैर्ऋतिवायव्य ईशान्या दिक् तथा स्मृता।१५१
ऊर्ध्वा काऽधोगता श्वेता कृष्णा रक्ता च पीतका।
चतुर्वर्गा चतुर्वर्णा चतुर्मात्रात्मिकाक्षरा।१५२
चतुर्मुखी चतुर्वेदा चतुर्विद्या चतुर्मुखा।
चतुर्गणा चतुर्माता चतुर्वर्गफलप्रदा।१५३
धात्री विधात्री मिथुना नारी नायकवाहिनी।
सुरा मुद्रामुदवती मोदिनी मेनकात्मजा।१५४
ऊर्ध्वकाली सिद्धिकाली दक्षिणाकालिका शिवा।
नित्या सरस्वती सात्वं बगला छिन्नमस्तका।१५५
सर्वेश्वरी सिद्धिविद्या परा परमदेवता।
हिङ्गुला हिंगलांगी च हिङ्गुलाधरवासिनी।१५६

दक्षिण, उत्तरा, पूर्वा, पश्चिमाङ्कि, अग्नि, निर्ऋति, वातव्य व ईशान्यादिक कही गयी है।१५१। ऊर्ध्वा का, अधोगता व्येता, कृष्णा, रक्ता, पीतका, चारों वर्णों वाली, चारों वर्णों से समन्विता। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ये चार वर्ण हैं। चार मात्राओं के स्वरूप आने से युक्त, चार मुखों से सम्पन्ना, चारगणों वाली, चारों की माता और अक्षरा है।१५२। चार मुखों वाली, चार वेदोंसे सयुक्त, चारों विद्याओं चारों वर्गों के फलों के प्रदान करने वाली है।१५३। धात्री, विधात्री, मिथुरा, नारी नायक वाहिनी सुरा, मुदा मुद अर्थात् प्रमोद से युक्त, मोदन करने वाली और मेनका की आतमजा है।१५४। ऊर्ध्व काली, सिद्धि काली दक्षिणा, कालिका, शिवा, नित्या, सरस्वती भी आप ही हैं बगला और छिन्नमस्तका हैं।१५५। सर्वेश्वरी सिद्धियों की विद्या

परा परम देवता हिंगुला-हिंगुल जैसे अङ्गों वाली हिंगुल पर्वतपर निवास करने वाली है ।१५६।

हिङ्गुलोत्तमवर्णाभा हिङ्गुलाभरणा च सा ।
जाग्रती च जगन्माता जगदीश्वरवल्लभा ।१५७
जनार्दनाप्रिया देवी जययुक्ता जयप्रदा ।
जगदानन्दकरी च जगदाह्लादकारिणी ।१५८
ज्ञानदानकरी यज्ञा जानकी जनकप्रिया ।
जयन्ती जयदा नित्या ज्वलदग्निसमप्रभा ।१५९
विद्याधरा च बिम्बोष्ठीं कैलासाचलवासिनी ।
विभवा वडवाग्निश्च अग्निहोत्रफलप्रदा ।१६०
मन्त्ररूपा परादेवी तथैव गुरुरूपिणी ।
गया गंगा गोमती च प्रभासा पुष्करापि च ।१६१
विन्ध्याचलरता देवी विन्ध्याचलनिवासिनी ।
बहुबहुसुन्दरी देवी च कंसासुरविनाशिनी ।१६२

हिंगुल के समान उत्तम वर्ण की आभा वाली है हिंगुल के आभारणों से संयुक्त है आग्रती सगत् की माता और सगतों के ईश्वर को वल्लभा है ।१५७। जनार्दन की प्रिया देवी जय से युक्ता जय को देने वाली जनों को आनन्दकारी जनता के आह्लाद कराने वाली है ।१५८ ज्ञानके दान कराने वाली यज्ञा जानकी जनक की प्रिया जयन्ती जयदान करने वाली नित्य जलती हुई अग्नि के समान प्रभा से युक्त ।१५९। विद्याधरा बिम्ब के समान रक्त ओष्ठों वाली और कैलास पर्वतके ऊपर निवास करने वाली विभवा बढ़वाग्नि और अग्निहोत्रके फलों को प्रदान करने वाली है । तीन गुप्त अग्निया होती हैं जिनका कार्य अग्नि जैसा प्रत्यक्ष दिखलाई दिया करता है किन्तु स्पष्ट स्वरूप प्रतीत नहीं होता हैं १-जठराग्नि पेट में रहने वाली अग्नि जो खाना-पीना को भस्म किया करता है, २-बड़वाग्नि जो समुद्र के जल में रहकर उसके जल खलबलाया करती है । ३-दावाग्नि जो वन के वृक्षोंमें रहती है और आपस

में रगड़ खाकर उत्पन्न होती है और सम्पूर्ण वन को जला दिया करती है।१६०॥ मन्त्र के रूप वाली परा देवी विन्ध्य गिरि के ऊपर वास करने वाली बहुत अधिक सुन्दरी तथा कंस नामक द्वापर में होने वाले असुर का विनाश करने वाली है।१६१-१६२।

शूलिनी शूलहस्ता च वज्राहरापि च।
दुर्गा शिवा शान्तिकारी ब्रह्माणी ब्राह्मणप्रिया।१६३
सर्वलोकप्रणेत्री च सर्वरोगहरापि च।
मंगला शोभना शुद्धा निष्कला परमा कला।१६४
विश्वेश्वरी विश्वमाता ललिता हसितानना।
सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका चण्डविक्रमा।१६५
सर्वदेवमयी देवी सर्वागमभयापहा।
ब्रह्मेशविष्णुनमिता सर्वकल्याणकारिणी।१६६
योगिनी योगमाता च योगीन्द्रहृदयस्थिता।
योगिजाया योगवर्ता योगीन्द्रानन्ददायिनी।१६७

शूलिनी, शूल, हाथ में रखने वाली वज्रा, बज्र के हरण करने वाली दुर्गा शिवा शान्ति करने वाली ब्रह्माणी ब्रह्माणों को प्रिय मानने वाली है।१६३। समस्त लोकों की प्रणेत्री सब रोगों को हरण करने वाली मङ्गला शोभना शुद्धा निष्फला परमा कला है।१६४। विश्वेश्वरी विश्व की माता अर्थात् सम्पूर्ण विश्व का जनन करने वाली ललिता हासिता अर्थात् हास्य से संयुत आनन (मुख) वाली है। सदाशिवा उमा क्षेमा चण्डिका और प्रचण्ड विक्रम वाली है।१६५। समस्त देवगणों से परिपूर्ण देवी है अर्थात् सब देवता जिसके अन्दर निवास किया करते हैं। समस्त आगमों के भय का अपहरण करने वाली है। ब्रह्मा ईश और विष्णु की वनिता और सबके कल्याण के करने वाली है।१६६। योगिनी अर्थात् योगाभ्यास करने वाली योग के उत्पन्न करने वाली माता योगी-

न्द्रों के हृदय में विराजमान रहने वाली योगियों की जाया योग से समन्वित और योगीन्द्रों को आनन्द प्रदान करने वाली है ।१६७।

इन्द्रादिनमता देवी ईश्वरी चेश्वरप्रिया ।
विशुद्धिदा भयहरा भक्तद्वं षिभयंकरी ।१६८
भववेषा कामिनी च भरुण्डा भयकारिणी ।
बलभद्रप्रियाकारा संसारार्णवतारिणी ।१६९
पञ्चभूता सर्वभूता विभूतिर्भू तिधारिणी ।
सिंहवाहा महामोहा मोहपाशविनाशिनी ।१७०
मन्दुरा मदिरा मुद्रा मुद्रामुद्गरधारिणी ।
सावित्री च महादेवी परप्रियनिनायिका ।१७१
यमदूती च पिंगाक्षी वैष्णवी शंकरी तथा ।
चन्द्रप्रिया चन्द्ररता चन्दनारण्यवासिनी ।१७२
चन्दनेन्द्रसमायुक्ता चण्डदैदैत्यविनाशिनी ।
सर्वेश्वरी यक्षिणी च किराती राक्षसी तथा ।१७३
महाभोगवती देवी महामोक्षप्रदायिनी ।
विश्वहन्त्री विश्वरूपा विश्वसंहारकारिणी ।१७४

इन्द्र आदि सभी देवों के द्वारा नमन की गयी देवी ईश्वरी, ईश्वर की प्रिया, विशेष शुद्धि के देने वाली, भय का हरण करने वाली, जो भक्त है उनके साथ द्वेष करने वाले को भय देने वाली है ।१६८। भव (शिव) के वेष वाली कामिनी भरुण्डा भय करने वाली बलभद्र की प्रिया के आकार वाली और संसार रूपी महासागर से तारण करने वाली है ।१६९। पंचभूता सर्वभूता विभूति भूति (भस्म और ऐश्वर्य) के धारण करने वाली है सिंह के ऊपर सवार होकर वहन करने वाली ।१७०। मन्दुरा मदिरा मुद्रा और मुदगर के धारण करने वाली सावित्री महादेवी पर प्रियों की निनायिका है ।१७१। यमराज की दूती पिंगल वर्ण के लोचनों वाली वैष्णवी शङ्करी चन्द्र से प्यार करने वाली चन्द्रमा में

रत रहने वाली और चन्दन के वनमें निवास करने वाली है ।१७२।चन्द नेन्द्र से समायुक्ता और चन्ड नामक दैत्य के विनाश करने वाली है । सर्वेश्वरी अर्थात् सबकी स्वामिनी यक्षिणी किराती और राक्षसी है ।१७३। महान् भोगों से समन्विता देवी महान् अर्थात् परम श्रेष्ठ मोक्ष देने वाली है विश्वके हनन करने वाली विश्व से ही स्वरूप वाली और सम्पूर्ण विश्व के संहार के करने वाली हैं ।१७४।

धात्री च सर्वलोकानां हितकारणकामिनी ।
कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हरविनाशिनी ।१७५
सुरेन्द्रपूजिता सिद्धा महातेजोवतीति च ।
परा रूपवती देवी त्रैलोक्याकर्षकारिणी ।१७६
इति ते कथितं देवी पीतानामसहस्रकम् ।
पठेद् वा पाठयेद् वापि सर्वसिद्धिर्भवेत् प्रिये ।१७७
इति मे विष्णुना प्रोक्तं महास्तम्भकरं परम् ।
प्रातःकाले च मध्याह्ने सन्ध्याकाले च पार्वति ।१७८
एकचित्तः पठेदेतत् सर्वसिद्धिर्भविष्यति ।
एकवारं पठेद् यस्तु सर्वपापक्षयो भवेत् ।१७९

समस्त लोकों की धात्री–हित के ही हेतु से कामिनी कमला सूक्ष्मदा देवी धात्री हर के विनाश करने वाली हैं ।१७५। सुरेन्द्र के द्वारा पूजिता सिद्धा महान् तेजवाली परा रूपवतीदेवी और तीनों लोकों के आकर्षण करने वाली है ।१७६। हे देवि ! यह हमने पीता अर्थात् पीताम्बरा देवी के सहस्र नाम बतला दिये हैं । हे प्रिये ! इस सहस्र नामका जो पाठ किया करता है या इसका पाठन करता है उसको सभी प्रकार की सिद्धि हो जाया करती हैं ।१७७। सहस्र नाम को मुझे भगवान् विष्णु ने बताया था । यह महान् स्तम्भन के करने वाला परम श्रेष्ठ है । पार्वति ! प्रातःकाल में मध्याह्न में और सन्ध्या काल में

ऐकाग्र चित्त वाला होकर जो इसका पाठ किया करता है उसको सबकी सिद्धि हो जाया करती है। जो इस सहस्रनाम का एक बार ही पाठ कर लेता है उसके समस्त पापों का क्षय हो जाता है ।१७८-१७६।

द्विधारं च पठेद् यस्तु विघ्नेश्वरसमो भवेत् ।
त्रिवारपठनाद् देवि सर्वं सिध्यति सर्वथा ।१८०
स्तवस्यास्य प्रभावेण साक्षाद्भवति सुव्रते ।
मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम् ।१८१
विद्यार्थी लभते विद्यां तर्कव्याकरणान्विताम् ।
महत्वं वत्सरान्ताच्च शत्रु हानिः प्रजायते ।१८२
क्षोणोपतिर्वशस्तस्य स्मरणे सदृशो भवेत् ।
यः पठेत् सर्वदा भक्त्या श्रेयस्तु भवति प्रिये ।१८३

जो दो बार इसका पाठ करता है वह तो साक्षात् विश्वेश्वर के ही समान हो जाता । है हे देवि! तीन बार दिनमें नित्य इसका पाठ करने से सर्व प्रकार से सभी कुच की सिद्धि हो जाया करती है ।१८०। हे सुव्रते ! इस स्तोत्रके प्रभाव से इसका पाठ करने वाला पुरुष साक्षात् प्रभु ही हो जाया करता है । जो मोक्ष की मन में इच्छा रखता है उसको मोक्ष की प्राप्ति हो जाती और जो धन की इच्छा किया करता है उसे धन मिल जाया करता है ।१८१। जो विद्या की इच्छा रखने वाला है वह तर्कशास्त्र और व्याकरण से संयुत्त विद्या का लाभ कर लेता है । इससे महत्व की प्राप्ति होती है और एक ही वर्षके अन्त तक शत्रु की हानि हो जाता है ।१८२। इसके पाठ करने वाले पुरुष के वश में नृप हो जाया करता है और इसके स्मरण से नृप के ही समान हो जाता है । हे प्रिये ! जो भी कोई सदा भक्ति भाव से इसको पढ़ता है उसका श्रेय हो जाया करता है ।१८३।

गणाध्यक्षप्रतिनिधिः कविकाव्यपरो वरः ।
गोपनीयं प्रयत्नेन जननीजारवत् सदा ।१८४

हेतुयुक्तो भवेन्नित्य शक्तियुक्तः सदा भवेत् ।
य इदं पठते नित्यं शिवेन सदृशो भवेत् ।१८५
जीवन् धर्मार्थभोगी स्यान् मृतो मोक्षपतिर्भवेत् ।
सत्यं सत्यं महादेवि सत्यं सत्यं न संशयः ।१८६
स्तवस्यास्य प्रभावेण देवेन सह मोदते ।
सुचित्ताश्च सुराः सवे स्तवराजस्य कीर्तनात् ।१८७
पीताम्बरपरीधानां पीतगन्धानुलेपनाम् ।
परमोदय कीर्ति स्यात् स्मरतः सुरसुन्दरि ।१८८

इसके पाठ को करने वाला पुरुष गणाध्यक्ष गणेश का प्रतिनिधि हुआ करता है और काव्य रचना करने में परमश्रेष्ठ कवि हो जाता है। उसको गुप्त उसी प्रकार से रखना चाहिए जिस तरह से जननी के जार को गुप्त रखा जाता है। इसके गोपन में पूरा प्रयत्न करना चाहिए ।१८४। नित्य ही हेतु से युक्त और सदा शक्ति से सुसम्पन्न हो जाता है। जो इसका नित्य ही पाठ करता है वह भगवान शिव के ही तुल्य हो जाया करता है ।१८५। इसके पाठ करने वाला जब तक जीवित रहता है तब तक धर्म और अर्थ क भोग करने वाला होता है और जब मृत्युगत होता है तो वह मोक्ष का पति हो जाता है । हे महादेवि ! इसमें केवल फल स्तुति ही नहीं हैं, प्रत्युत यह पूर्णतया सत्य कथन हैं और सत्य एक सर्वथा सत्य ही है। मनमें किञ्चिन्मात्र भीं संशय नहीहै ।१३६। इस स्तव के प्रभाव से इसका पाठक साक्षात् देव के ही साथ आनन्द प्राप्त किया करता है। इस स्तवराज के ही कीर्त्तन से समस्त सुरगण सूचित रहा करते हैं ।१८७। हे सुरन्दरि ! पीत परिधान वाली पीतगन्ध के अनुलेपन से संयुत देवी का समर्पण करने वाले का परम उदय और कीर्त्ति हुआ करती है ।१८८।

॥ इति उत्कटशम्बरे नागेन्द्रप्रयाणतन्त्रे षोडशसहस्र
विष्णुशङ्करसंवादे श्रीपीताम्बरीसहस्रनामस्तोत्रम्
॥ समाप्तम् ॥

शतनाम स्तोत्रम्

नारद उवाच--

भगवन् देवदेवेश सृष्टिस्थितिलयात्मक ।
शतमष्टोत्तरं नाम्नां बगलाया वदाऽधुना ।१

श्री भगवानुवाच--

शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि नाम्नामष्टोत्तर शतम् ।
पीताम्बर्याः महादेव्याः स्त्रोत्रं पापप्रणाशनम् ।२
यस्य प्रपनात् सद्यो वादी मूको भवेत् क्षणात् ।
रिपूणां स्तम्भनं याति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।३

देवर्षि श्री नारदजी ने कहा-हे भगवन् ! आप तो देवों के भी देवेश्वर हैं और आप संसार की सृष्टि-स्थिति और लय के स्वरूप वाले हैं। अर्थात् आप ही के द्वारा रचना, प्रतिपालन और संसार का सहार हुआ करता है। इस समय मुझ पर परम अनुग्रह करके बगला के अष्टोत्तर शत (एक सौ आठ) नाम बता देवें ।१। श्री भगवान् ने कहा-हे वत्स ! आप अब श्रवण कीजिये । मैं एक सौ आठ बगला के नामों को बतलाता हूँ । महादेवी पीताम्बरा का स्तोत्र पापों को विनाश करने वाला होता है ।२। जिस स्तोत्र के प्रकृष्ट रूप से पढ़ने के बाद करने वाला उसी क्षण में मूक हो जाया करता है और समस्त शत्रुओं का स्तम्भन हो जाया करता है यह सर्वथा सत्य-सत्य ही बता रहा हूँ ।३।

ॐअस्य पीताम्बर्यष्ठोत्तरशतनामस्तोत्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीपीताम्बरी देवता, श्रीपीताम्बरीप्रीतये जपे विनियोगः ।

ओं इस पीताम्बरा के अष्टोत्तर शत नामक स्तोत्र के भगवान् सदाशिव ऋषि हैं, अनुष्टुप् छन्द है, श्री पीताम्बरी इसका देवता है,

इसका विनियोग श्री पीताम्बरा की प्रीति के ही लिये होता है ।

ॐ बगला विष्णुवनिता विष्णुशंकर भामिनी ।
बहुला वेदमाता च महाविष्णुप्रसूरपि ।१
महामत्स्या महाकूर्म्मा महावाराहरूपिणी ।
नरसिंहप्रिया रम्या वामना वटुरूपिणी ।२
जामदग्न्यस्वरूपा च रामा रामप्रपूजिता ।
कृष्णा कर्पादिनी कृत्या कहला कलविकारिणी ।३
बुद्धिरूपा बुद्धिभार्या बौद्धभार्या बौद्धपाखण्डखंडिनी ।
कल्किरूपा कलिहरा कलिदुर्गतिनाशिनी ।४
कोटिसूर्यप्रतीकाशा कोटिकन्दर्पमोहिनी ।
केवला कठिना काली कला कैवल्यदायिनी ।५
केशवी केशवाराध्या किशोरी केशवस्तुता ।
रुद्ररूपा रुद्रमूर्ती रुद्राणी रुद्रदेवता ।६
नक्षत्ररूपा नक्षत्रा नक्षत्रेश पूजिता ।
नक्षत्रेशप्रिया नित्या नक्षत्रपतिवन्दिता ।७
नागिनी नागजननी नागराजप्रवन्दिता ।
नागेश्वरी नागकन्या नागरी च नगात्मजा ।८
नगाधिराजतनया नगराजप्रपूजिता ।
नवीना नीरदा पीता श्यामा सौन्दर्यकारिणी ।९

ॐ बगला विष्णु, वनिता, विष्णु और शङ्कर की भामिनी है । बहुला, वेदमाता और महाविष्णु की जननी है । अर्थात् महाविष्णु को जन्म देनेवाली भी यही है।१। यह महामत्स्या, महाकूर्मा और महावाराह के स्वरूप वाली हैं । भगवान् नरसिंह की प्रिया है तथा वटु के स्वरूप वाली वमना है ।२। जामदग्न्य (परशुराम) के स्वरूप वाली है । रामा और श्रीराम की प्रपूजिता है । कृष्णा, कर्पादिनी, कृत्या, कहला और

कल विकापिणी है ।३। यह बुद्धि के रूप वाली और बुद्धि की भार्या बौद्धों के पाखण्ड का खण्डन करने वाली है । यह कल्कि के रूप वाली, कलिके हरण करने वाली तथा कलि में होने वाली दुर्गति का विकाश करने वाली है ।४। यह करोड़ों सूर्यों के समान दीप्तिमयी है-करोड़ों कामदेवों के भी मोहन करने वाली है । यह केवला, कठिना, काली, कला और कैवल्य (मोक्ष) के प्रदान करने वाली हैं ।५। यह केशव की आराधना के योग्य, किशोरी और केशव स्तुता है । यह रुद्ररूपा रुद्रमूर्ति रुद्राणी और रुद्र देवता है ।६। यह नक्षत्र रूप वाली, नक्षत्रों के स्वामी के द्वारा पूजिता है । नक्षत्रेश की प्रिया, नित्या और नक्षत्रों के पति की वन्दिता है ।७। यह नागिनी, नागों को जन्म प्रदान करने वाली अर्थात् नागों की माता और नागों के राजा के द्वारा वन्द्याना है । . यह नागेश्वरी, नागरी और नगात्मजा अर्थात् पर्वतराज की पुत्री है ।८।यह नागों अर्थात् पर्वतों के राज हिमालय की पुत्री है और नागराज के द्वारा पूजिता है । यह नवीना, नीरदा, पीता-श्यामा और सौन्दर्य के करने वाली है ।९।

रक्ता नीला घना शुभ्रा श्वेता सौभाग्यदायिनीः ।
सुन्दरी सौभगा सौम्या स्वर्णाभा स्वर्गतिप्रदा ।१०
रिपुत्रासकरी रेखा शत्रुसंहारकारिणी ।
भामिनी च तथा माया स्तम्भिनी मोहिनी शुभा ।११
रागद्वेषकरी रात्री रौरवध्वंसकारिणी ।
यक्षिणी सिद्धनिवहा सिद्धेशा सिद्धरूपिणी ।१२
लंकापतिध्वंसकरी लंकेशरिपवन्दिता ।
लंकानाथकुलहरा महारावणहारिणी ।१३

यह रक्ता, नीला, शुभ्रा, श्वेता और सौभाग्य के देने वाली है । यह सुन्दरी, सौभगा, सौम्या, स्वर्ण के समान आभा वाली तथा स्वर्ग में

गति प्रदान करने वाली हैं ।१०। यह रिपुओं के लिए त्रास (भय) करने वाली रेखा और शत्रुओं का संहार करने वाली है । तात्पर्य यह है कि भक्तों के शत्रुओं का विनाश करने वाली है । यह भामिनी माया, स्तम्भिनी, मोहनी और शुभा है ।११। राग और द्वेष करने वाली रात्रि और रौरव नामक नरक का ध्वंस कर देने वाली है । यह यक्षिणी सिद्धों के निवह (समूह) वाली, सिद्धों की स्वामिनी और स्वयं भी सिद्ध के स्वरूप से समन्विता है ।१२। यह लङ्कापुरी के स्वामी (रावण) के विध्वंस करने वाली और लंकेश के रिपु (श्रीराम) के द्वारा वन्द्यमाना है । यह लङ्का के साथ (रावण) के सम्पूर्ण कुल का संहार करने वाली और महारावण के हरण करने वाली है ।१३।

देवदानवसिद्धौघपूजिता परमेश्वरीं ।
पराऽणुरूपा परमा परतन्त्रविनाशिनी ।१४

वरदा वरदाऽऽराध्या वरदानपरायणा ।
वरदेशप्रिया वीरा वीरभूषणभूषिता ।१५

बसुदा बहुदा वाणी ब्रह्मरूपा वरानना ।
बलदा पीतवसना पीतभूषणभूषिता ।१६

पीतपुष्पप्रिया पीतहरा पीतस्वरूपिणी ।
इति ते कथित विप्र नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।१७

यः पठेत् पाठयेद् वापि श्रृणुयाद् वा समाहितः ।
तस्य शत्रुः क्षयं सद्यो याति वै नात्र संशयः ।१८

प्रभातकाले प्रयतो मनुष्यः पठेत् सुभक्त्या परिचिन्त्य पीताम् ।
द्रुतं भवेत् तस्य समस्तवृद्धिर्विनाशमायाति च तस्य शत्रुः ।१९।

यह देवगण, दानवगण और सिद्धों के समुदाय के द्वारा पूजिता है और साक्षात् परमेश्वरी है । यह पराणुरूप वाली, परमा और

दूसरों के तन्त्रों का विनाश कर देने वाली है ।१४। यह वरदान देने वाली, वर देने वालों के द्वारा आराधना करने के योग्य और वरदान देने में अर्थात् अपने भक्तों के लिए वर देने में सदा तत्पर है । वर देश को प्रिय मानने वाली, वीर और वीरभूषणों से विभूषित है ।१५। यह वसु (धन) देने वाली, बहुत अधिक देनेवाली,वाणी, ब्रह्मरूप वाली और श्रेष्ठ मुख वाली है । यह बल देने वाली, पीत वसन धारिणी और पीत वर्णके भूषणों से विभूषित हैं ।२६। यह पीतवर्णके पुष्पों को प्रिय मानने वाली, पीतहरा, पीत स्वरूप से समन्विता है । हे विप्र । हमने यह एक सौ आठ देवी के नामों का वर्णन तुम्हारे सामने कर दिया है ।१७। कोई भी इनका पाठ करता है या इनको पढ़ाताहै अथवा परम सावधान होकर इनका श्रवण किया करता है उसके समस्त शत्रुओं का क्षय तुरन्त ही हो जाया करता है इसमें लेशमात्र भी संशय नहीं है ।१८। प्रातःकाल के समय में मनुष्य संयुत होकर सुन्दर भक्ति के भाव से पीताम्बरा का ध्यान करके इसका पाठ किया करता है उसकी सभी प्रकार की वृद्धि बहुत ही शीघ्र होती है और उसका शत्रु विनाश को प्राप्त हो जाता है ।१९।

इति श्रीविष्णुयामले नारदविष्णुसम्वादे श्रीबगलाष्टोत्तरशत-
नामस्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

श्री ब्रह्मास्त्र महाविद्या स्तोत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

ओं अस्य श्रीबगलामुखीस्तोत्रस्य भगवान् नारद ऋषिः, श्री बगलामुखी देवता, त्रिष्टुप् छन्दःममसन्निहितानामसन्निहितानां विरोधिनां दुष्टानां वाङ्मुखबुद्धीनां स्तम्भनार्थं श्रीमहामाया-बगलामुखीवरप्रसादसिद्ध्यर्थं जपे (पाठे) विनियोगः ।

ॐ ह्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ बगलामुखि तर्जनीभ्यां स्वाहा, ॐ सर्वदुष्टानां मध्यमाभ्यां वषट्, ॐ वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाभ्यां हुम् ॐ जिह्वां कीलय कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॐ बुद्धिं विनाशय ह्लींॐस्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवंहृदयादिषु।

श्री गणेशजी के लिए नमस्कार है । ओं इस श्री बगलामुखी स्तोत्र के भगवान नारद ऋषि हैं । श्रीबगलामुखी देवता है, त्रिष्टुप् छन्द है, मेरे सन्निहित विरोधी दुष्टों की वाणी-मुख और बुद्धि के स्तम्भन के लिए श्री महामाया बगलामुखी के बरदान के प्रसाद की सिद्धि के लिए जप में विनियोग है । ओं ह्लीं अंगुष्ठों के लिए नमस्कार है, ओं बगलामुखि तर्जनियों के लिए नमस्कार है, ओं सर्व दुष्टोंका मध्यमाओंके लिए वषट् है, ओं वाच मुखं पदं स्तम्भय अनामिकाओं को हुम है ओं जिह्वा कीलय इति कनिष्ठिकाओं के लिए बौषट् है। ओं बुद्धि विनाशय ह्लीं ओं स्वाहा करतल करपृष्ठों के लिए फट् है । इसी प्रकार से कर न्यासों के समान हृदयादि पर न्यास का समाचरण करना चाहिए ।

अथ ध्यानम्--

सौवर्णासनसंस्थिता त्रिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं ।
हेमाभांगरुचिं शशंकमुकुटां सच्चम्पकस्रग्युताम् ।
हस्तैर्मुद्‌गरपाशवज्ररसनाः संबिभ्रतीं भूषणै
व्याप्ताङ्गी बगलामुखीं त्रिजगतां संस्तम्भिनीं चिन्तयेत् ।

सुवर्ण निर्मित आसन पर विराजमान तीनों नेत्रों से समन्वित, पीतवर्ण के वस्त्रों से उल्लास वाली, हेम की आभा के सदृश आभा से युक्त अङ्गों वाली, मुकुट में चन्द्र बिम्ब की धारण करती हुई, सुन्दर पीतचम्पा की मालाओं से समन्वित, अपने चारों कर-कमलों में मुदगर पाश, वज्र और शत्रुओं की जिह्वाको धारण करने वाली, सुन्दर भूषणों से देदीप्यमान तथा भूषणों से प्यास अङ्गों वाली तीनों भुवनों का सँस्तम्भन करने वाली श्री बगलामुखी देवी का चिन्तन करना चाहिए ।

जपमन्त्र--

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां बाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।

ओं ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पद स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा ।

अथ स्तोत्रम्--

मध्येसुधाब्धि मणिमण्डपरत्नवेद्यां
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीं
देवीं नमामि धृतमुद्‌गरवैरिजिह्वाम् ।१
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् पीरिपीडयन्तीम्
गदाभिधातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि।२
त्रिशूलधारिणीमम्बां सर्वसौभाग्यदायिनम् ।
सर्वश्रृङ्गारवेशाढ्यां देवीं ध्यात्वा प्रपूजयेत् ।३
पीतावस्त्रां त्रिनेत्रां च द्विभुजां हाटकोज्ज्वलाम् ।
शिलापर्वतहस्तां च स्मरेत् तां बगलामुखीम् ।४
रिपुजिह्वाग्रहां देवो पीतपुष्पविभूषिताम् ।
वैरिनिर्दलनार्थाय स्मरेत् तां बगलामुखीम् ।५
गम्भीरां च मदोन्मत्तां स्वर्णकान्तिसमप्रभाम् ।
चतुर्भुजां त्रिनेत्रां च कमलासनसंस्थिताम् ।६
मुद्‌गरं दक्षिणे पाशं वामे जिह्वां च वज्रकम् ।
पीताम्बरधरां सान्द्रदृढपीनपयोधराम् ।७

सुधा सागर के मध्य में स्थित मणियों के द्वारा सुनिर्मित रत्नों की वेदी में पीत वर्ण के आभरण एवं वस्त्रों से तथा मालाओं से विभूषित अङ्गों वाली मुदगर, शत्रु की जिह्वा को धारण करती हुई देवी श्री बगलामुखी को नमस्कार करता हूँ ।१। एक कर से शत्रु की जिह्वा के अग्रभाग को ग्रहण कर वाम कर से शत्रुओं को हरिपीड़ित करती हुई तथा दाहिने हाथ से गदा के द्वारा अभिघात करने वाली अर्थात् शत्रु के अङ्ग पर चोट करती हुई दो भुजाओं वाली देवी के लिए जो पीत वस्त्रों से शोभित है मैं नमस्कार करता हूँ ।२। त्रिशूल को धारण करने

वाली तथा सब सौभाग्यके प्रदान करने वाली समस्त शृङ्गारके उपकरण एवं वेश से समन्वित अम्बा देवी श्रीबगलामुखी का हृदय में भली भाँति चिन्तन करके फिर प्रकृष्ट पूजन देवी का करना चाहिए ।३। पीत वर्णके वस्त्रों को धारण करती हुई–तीन नेत्रोंसे समन्वित दो भुजाओं से युक्त सुवर्ण के सदृश सेमुज्ज्वल दीप्ति वाल हाथ में पर्वत की शिला को धारण करने वाली उस परम प्रसिद्ध बगलामुखी देवी का स्मरण करना चाहिए ।४। शत्रुओं की जिह्वा के अग्रभाग को खींचकर बाहिर निकालने वाली–पीत वर्ण के कुसुमों से विभूषित देवी बगलामुखी का अपने शत्रुओं के निर्दलन करने के लिए स्मरण करना चाहिए ।५। परम गम्भीर स्वभाव से समन्वित वारुणी के मद से उन्मत, सुवर्ण की कान्ति के आसन पर विराजमान देवी का चिन्तन करे ।६। दाहिने करों में मुद्गर और पाश तथा बाँये हाथों में शत्रु की जिह्वा और वज्र को धारण करती हुई पीत वस्त्रों के परिधान करने वाली धन-पुष्ट एवं पीत पयोधरों से संयुत देवी बगुलामुखी का चिन्तन करना चाहिए ।७।

हेमकुण्डलभूषां च पीतचन्द्रार्धशेखराम् ।
पीतभूषणपीताङ्गीं स्वर्णसिंहासने स्थिताम् ।८
एवं ध्यात्वा जपेत् स्तोत्रमेकाग्रकृतमानसः ।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति मन्त्रध्यानपुरःसरम् ।९
आराध्या जगदम्ब दिव्यकविभिः सामाजिकैः स्तोतृभि-
र्माल्यैश्चन्दनकुङ्कुमैः परिमलैरभ्यर्चिता सादरात् ।
सम्यङ्न्यासितसमस्तभूतनिवहे सौभाग्यशोभाप्रदे
श्री मुग्धे बगले प्रसीद विमले दुःखापहे पाहि माम् ।१०

सुवर्ण रचित कुण्डलों के भूषणों वाली मगुर में पीत वर्ण वाले आधे चन्दमा को धारण करती हुई पीले आभरणों से मीत अङ्गों वाली सुवर्ण के सिंहासन पर विराजमान देवी बगलामुखी का स्मरण करे ।८। इस उक्त प्रकार से देवी का ध्यान करके एकाग्र मन वाला होकर देवी

के स्तोत्र का जप करना चाहिए। देवी के ध्यान के साथ जो भी कोई एकाग्र मनसे देवी के स्तोत्र का जप करता है वह सभी प्रकार की सिद्धि की प्राप्त कर लिया करता है ।९। दिव्य कवियों के द्वारा जगदम्बा का सामाजिक स्तोत्रों से समाराधन करना चाहिए जो आदर के साथ माला कुंकुम और चन्दन से परिमलों के द्वारा अभ्यर्चन की गई है। हे भली भाँति समस्त भूतों के निग्रह को न्यास करने वाली ! हे सौभाग्य की शोभा को प्रदान करने वाली ! हे श्री मुग्धे ! हे बगले ! हे विमले ! हे दुःखों का अपहरण करने वाली आप प्रसन्न होइये और मेरा परित्राण करिए ।१०।

आनन्दकारिणी देवी रिपुस्तम्भनकारिणी ।
मदनोन्मादिनी चैव प्रीतिस्तम्भनकारिणी ।११
महाविद्या महामाया साधकस्य फलप्रदा ।
यस्याः स्मरणमात्रेण त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात् ।१२
वामे पाशाङ्कुशो शक्तिस्तस्याधस्ताद् वरं शुभम् ।
दक्षिणे क्रमतो बज्रं गदाजिह्वाऽभयानि च ।१३
बिभ्रतीं संस्मरेन्नित्यं पीतमालानुलेपनाम् ।
पीताम्बरधरां देवीं ब्रह्मादिसुरवन्दिताम् ।१४
केयूराङ्गदकुण्डलभूषां बालार्कद्युतिरञ्जितवेषाम् ।
तरुणादित्यसमानप्रतिमां कौशेयांशुकबद्धनितम्बाम् ।१५
कल्पद्रुमतलविहितशिलायां प्रमुदितचित्तोल्लसदलकान्ताम्।
पञ्चप्रेतनिकेतनबद्धां भक्तजनेभ्यो वितरणशीलाम् ।१६
एवंविधां बगलां ध्यात्वा मनसि साधकः ।
सर्वसम्पत्समृद्ध्यर्थं स्तोत्रमेतमुदीरयेत् ।१७

देवी सर्वदा आनन्द के करने वाली है और रिपुओं का स्तम्भन कर देने वाली है। मदन के उन्माद वाली है तथा प्रीति के स्तम्भन कर देने वाली है ।११। महा विद्या है महा माया है और साधना करने वाले भक्त साधक को फल देने वाली है जिसके केवल स्मरण करने से

एक ही क्षण में तीनों लोकोंका स्तम्भन कर दिया करती है ।१२। बांयी ओर पाश, अंकुश और शक्ति है और उसके नीचे की ओर शुभ वरदान में तथा दाहिनी और क्रम से वज्र गदा शत्रु जिह्वा और अभय दान वर्तमान रहा करता है ।१३। पीतवर्ण की माला और अनुलेपन को धारण करती हुई देवीका नित्य ही स्मरण करे। पीत अम्बर को धारण करने वाली देवी बगलामुखी सर्वदा ब्रह्मा आदि सुरगणों के द्वारा वन्द्यमान रहा करती है ।१४। केयूर अंगुर और कुण्डलों के भूषण वाली वाल सूर्य की द्युति के समान द्युति रंजित वेष से युक्त तरुण सूर्य के सदृश प्रतिभा से युक्त और कौशेय वस्त्र से नितम्बों को बांधे हुए देवी का चिन्तन करना चाहिए ।१५। कल्प वृक्ष के नीचे निहित शिला पर प्रमुदित चित्त से संयुत एवं सुशोभित अलकों के छोर वाली पाँच प्रेतों के निकेतन में बद्ध अपने भक्तजनों के लिए अभीष्टों के वितरण करने के स्वभाव वाली देवी का चिन्तन करना चाहिए ।१६। इस स्वभाव और स्वरूप वाली बगला जगदम्बा का साधक अपने मन में ध्यान करके समस्त सम्पदाओं की समृद्धि के लिये इस स्तोत्र का उदीरण करे ।१७।

चलत्कनककुण्डलोल्लसित्त चारुगण्डस्थलां
लसत्कनकचम्पकद्यु तिमदिन्दुबिम्बाननाम् ।
गदाहतविपक्षकां कलितलोलजिह्वां चलां
स्मरामि बगलामुखीं विमुखवांङ्मुखस्तम्भिनीम् ।१८
पीयूषोदधिमध्यचारुविलसद्रत्नोज्ज्वले मण्डपे ।
तत्सिंहासनमूलपातितरिपुं प्रेतासनाध्यासिनीम् ।
स्वर्णाभां करपीडित रिरसना भ्राम्यद्गदां विभ्रमां
यस्त्वां ध्यायति, यान्ति तस्य विलयं सद्योक्य सर्वापदः ।१९
देवि त्वच्चारणाम्बुजार्चनकृते यः पीतपुष्पाञ्जलि
मुदां वामकरे निधाय च पुनर्मन्त्री मनाज्ञाक्षरम् ।
पीताध्यानपरोऽथ कुम्भकवशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवं

तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात् ।२०

हिलते हुए कुण्डलों से सुशोभित मनोहर गण्ड स्थल वाली सुललित पीत चम्पक की द्युति से सम्पन्न इन्दु के बिम्ब के समान सुख से समन्वित गदा के प्रहारों से अपने तथा अपने भक्तों के विपक्षियों को निहत करती हुई, सुन्दर चंचल जिह्वा वाली विमुखता रखने वालों के मुख और वचनों का स्तम्भन करने वाली देवी बगलामुखी का मैं स्मरण या चिन्तन करता हूँ ।१८। सुधा सागर के मध्य में परम सुन्दर शोभित रत्नों के द्वारा निर्मित एवं समुज्ज्वल मण्डप में विराजमान और उस सिंहासन के मूल में रिपुओं का निपतन कर देने वाली तथा प्रेत के आसन पर अध्यासित, स्वर्ण के समान आभा से युक्त, अपने कर से शत्रु की रसना को पीड़ित करने वाली, गदा को घुमाती हुई विभ्रम सम्पन्ना आपका जो भी कोई साधक ध्यान किया करता है उसकी समस्त आपदायें उसी क्षण में अर्थात् चिन्तन करने के ही समय में विलीन हो जाया करती हैं ।१९। हे देवि ! आपके चरणकमलों का अभ्यर्चन करने के लिए जो पुरुषों की अंजलि और मुद्रा को बाँये कर में रखकर फिर मन्त्रधारी आपके मन्त्र के परममनोहर अक्षरों का स्मरण करता हुआ पीताम्बरा के ध्यान में तत्पर होता है और कुम्भक प्राणायाम में पार्थिव बीज का स्मरण किया करता है इसके शत्रु के मुख में वाणी में हृदय में जड़ता उसी क्षण में हो जाया करती है ।२०।

मन्त्रस्तावदलं विपक्षदलने स्तोत्रं पवित्रं च ते
यन्त्रं वादिनियन्त्रण त्रिजगता जैत्रं न चित्रं हि तत् ।
मातः श्रीवगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जन्तोर्मुखे
तन्नामस्मरणेन संसदि मुखस्तम्भो भवेद्वादिनाम् ।२१
वादी मूकति रंकति क्षितिपतिर्वैवानरः शीतति
क्रोधी शाम्यति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खञ्जति ।
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यन्त्रणायन्त्रितः

श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नम ।२२

आपका मन्त्र ही विपक्षियों के दलन करने के लिए पूर्ण शक्तिशाली होता है और यह पार्थिव स्तोत्र तीनों लोकों के वादियों के वचन को नियन्त्रण करने में समर्थ है। यह ऐसा ही बीज है-इसमें कुछ भी विचित्रता नहीं है। जिस जन्तु के मुख में हे माता ! आपका यह परम सुन्दर बगला यह नाम होता है उसके केवल नाम के स्मरण से ही सभा में वादियों के मुख का स्तम्भन हो जाया करता है-ऐसा आपके केवल नामके स्मरण का अद्‌भुत चमत्कार होता है ।२१। हे श्री नित्ये ! हे श्री बगलामुखी ! आपकी यन्त्रणा से यन्त्रित होकर बाद करने वाला प्रति पक्षी मूक हो जाता है जो क्षितिका स्वामी बहुत ही धनेश्वर होता है वह भी अकिंचन के समान हो जाया करता है-महान् तेजोमय अग्निभी शीतल हो जाता है-जो प्रचण्ड क्रोध की मूर्ति होता है वह भी परम शान्त स्वभाव वाला बन जाता है-परम दुष्ट प्रकृति का पुरुष भी सज्जन के समान साधु सरल हो जाता है-जो परम शीघ्रगामी होता हैं वह भी खञ्ज अर्थात् हीन चरणों वाला हो जाता है। अभिमानी पुरुष का गर्व विनष्ट हो जाता है जो सभी कुछ के ज्ञान रखने वाला है वह महान् जड़ के तुल्य हो जाता है। हे कल्याणि ! आपकी सेवामें प्रतिदिन मेरा प्रणाम निवेदित है ।२२।

दुष्टस्तम्भनमुग्रविघ्नशमनं दारिद्र्यविद्रावणं
भूभृत्संनमनं च यन्मृगदृशां चेतः समाकर्षणम् ।
सौभाग्यैनिकेतनं समदृशां कारुण्यपूर्णेक्षणं
शत्रोर्मारणमाविरस्कु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ।२३
मातर्भञ्जय मद्विरक्षिवदनं जिह्वां च संकीलय
ब्राह्मीं यन्त्रय मुद्रयाशु धिषणामुग्रां गतिं स्तम्भय ।
शत्रूंश्चूर्णय चूर्णयाशु गदया गौरांगि पीताम्बरे ।
विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे ।२४

हे माता ! आपका यह शरीर महादुष्टों स्तम्भक के करने वाला है अर्थात् दुष्टों की सम्पूर्ण कायिक वाचिक और मासिक चेष्टाओं को जहाँ के तहाँ रोक दिया करता है-अतीव उन विघ्नों का शमन कर देने वाला-जीवों की दरिद्रता को दूर भगा दिया करता है-बड़े-बड़े मही-पतियों को नीचे झुका देता है अर्थात् राजा-महाराजा भी नमन करने वाले हो जाते हैं-मृग के समान परम सुन्दर नेत्रों वाली अङ्गनाओं के चित्त का समाकर्षण कर देता है अर्थात् आपकी कृपाकोर के होते ही सुन्दरियाँ स्वयं समाकृष्ट हो जाया करती हैं कारुण्य मय दृष्टि वाली ! समान दृष्टि रखने वालों के लिए आपका वपु परम सौभाग्य का आलय है-आपके भक्त साधक के शत्रु का मारण मात्रके ही आगे निश्चित रूप से हो जाया करता है। निष्कार्षार्थ यहीं कि आपकी साधना के षट्कर्मों की अर्थात् मारण, मोहन, आकर्षण, वशीकरण, स्तम्भन और उच्चाटन सभी की सिद्धि प्राप्त हो जाया करती है।२३। हे माता ! मेरे विपक्षी के मुख का भञ्जन कर दीजिए और उसकी जिह्वा का कीलन कर दो जिससे उसमें भाषण की क्षमता बिलकुल भी न रहे आप उसकी ब्राह्मी को यन्त्रित कर दो और उसकी बुद्धि को मुद्रित कर दीजिए। विपक्षी की तेज गति को अर्थात् गमन करने की गति शक्ति को स्तम्भन कर दीजिए अर्थात् उसकी गतिशीलताको एकदम रोक दीजिए। आप अपनी गदा से शत्रुओं को चूर्ण कर देवे नष्ट-भ्रष्ट कर दो। पीताम्बरे ! हे गौर अङ्गों वाली ! हे बगले ! मेरे समस्त विघ्नोंके समुदाय का विनाश कर दीजिए। हे करुणा से परिपूर्ण दृष्टि वाली ! आपकी सेवा में मेरा प्रणाम है।२४।

मातर्भैरवि भद्रकालि विजये वाराहि विश्वाश्रये
श्रीविद्ये समये महेशि बगले कामेशि कामे रमे।
मातंगि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे
दासोऽहं शरणागतोऽस्मि कृपया विश्वेश्वरि त्राहि माम्।२५

त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननी विघ्नौघविध्वंसिनी ।
योषाकर्षणकारिणी त्रिजगतामानन्दसंवर्धिनी
दुष्टोच्चाटनकारिणी पशुमनः सद्यः समोहदायिनी
जिह्वाः कीलल वैरिणां विजयसे ब्रह्मास्त्राविद्यांपरा ।२६
मातर्यस्तु मनोरमस्तवमिदं देव्याः पठेत् सादरम्
धृत्वा यन्त्रमिदं तथैव समरे बाह्वोः करे वा गले ।
राजानो वरयोषितोऽथ करिणः सर्पा मृगेन्द्राः खला--
स्ते वै यान्ति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिरा सर्वदा।२७

हे भैरवि ! हे माता ! हे भद्रकालि ! हे विजये हे वाराहि ! हे विश्व की आश्रय स्वरूपे ! हे श्री विद्ये हे ! हे समये महेशि ! हे बगले ! हे कामेशि ! हे वामे ! हे रमे ! हे मातङ्गि ! हे त्रिपुरे ! आप पर से भी पर तर है और स्वर्ग तथा अपवर्ग अर्थात् मोक्षके प्रदान करने वाली हैं । ऐहिक सुख-सौभाग्य के अतिरिक्त स्वर्ग और मोक्ष की माता हैं । मैं आपका दास हूँ और अब आपकी शरण में गत हो गया हूँ । विश्वेश्वरि ! अब आप मेरे ऊपर परमानुकम्पा करके मेरा परित्राण कीजिए ।२४। आप तो परम विद्या है । और आप तीनों लोकों की जननी है । आप विघ्नों के समूहों का भी विध्वंस करने वाली हैं । आप परम सौन्दर्य के गर्व रखने वाला मानिनी नारियों का आकर्षण कर देने वाली है । आप तीनों भुवनोंमें आनन्द का सम्वर्धन करने वाली हैं । आप दुष्ट जनों का तुरन्त उच्चाटन का देने वाली तथा पशुओं के समान मन वालों का भी सम्मोहन करने वाली है । आप मेरे शत्रुओं की जिह्वा को कीलित कर दीजिए । आप पर ब्रह्मास्त्र विद्या है, आपकी विजय होवे ।२६। हे माता ! आपके इस परम स्तोत्र का जो भी कोई आदर के साथ प्रेम से पाठ किया करता हैं और आपके इस मन्त्र को अर्थात् स्तोत्र रूपी तन्त्र को उसी प्रकार से बाहु में या गले में धारण करके

समर में जाता है तो उसके समक्ष में चाहे राजा-महाराजा होवे या खल जन होवे वे सभी रिपुगण एकदम बिमोहित हो जाया करते हैं और उसकी लक्ष्मी सर्वदा स्थिर हो जाती है।२७।

अनुदिनमभिरामं साधको यस्त्रिकालं
पठति स भुवनेऽसो पूज्यते देववर्गैः ।
सकलममलकृत्यं तत्वद्रष्टा च लोके
भवति परमसिद्धो लोकमाता पराम्बा ॥२८

पीतवस्त्रवसनामरिदेहप्रेतजासविवेशितदेहाम् ।
फुल्लपुष्परविलोचनरम्यां दैत्यजालदहनोज्ज्वलभूषाम् ।२९
पर्यंकोपरि लसद्द्विभुजां कम्बुहेमनतकुण्डललोलाम् ।
वैरिनिर्दलनकारणरोषां चिन्तयामि बगलां हृदयाब्जे ।३०
चिन्तयामि सुभुजां शृणिहस्तां सद्भुजां च सुरवन्दितचरणाम् ।
षष्टिसप्ततिशतं धृतास्त्रर्बाहुभिः परिवृतां बगलाम्बाम् ॥३१

जो साधना-निष्ठ साधक तीनों कालों में अर्थात् प्रातः-मध्याहन सायं प्रतिदिन इस देबी के अभिराम स्तोत्र का पाठ किया करता है वह लोक में और पर लोक में देवगणों के भी द्वारा पूजा जाया करता है। वह सकल विमल कृत्यों के करने वाला और लोक में तत्वों का द्रष्टा हो जाता है। उसके लिये लोकों की जननी परा अम्बा बगला-मुखी परम सिद्धि हो जाया करती है।२८। पीतवर्ण के वस्त्रों का परि-धान करने वाली, शत्रु के देह और प्रेत पर अपने देह को निवेशित करने वाली, विकसित पुष्प और रवि के समान लोचनोंसे सुरम्य दैत्यों के समुदाय के दहन के समान उज्ज्वल भूषा से संयुत पर्यंक के ऊपर शोभित दो भुजाओं वाली; कम्बु हेम के नत कुण्डलों से चञ्चल, बैरियों के निदंलन (संहार) करने के कारण क्रोध वाली बगला देवी का मैं अपने हृदय कमल में चिन्तन करता हूँ।२९-३०। मैं सुन्दर भुजाओं से समन्वित, शृणि हाथ में धारण करने वाली अच्छी भुजाओं

से युक्त और सुरगणों के द्वारा वन्द्यमान चरणों वाली शस्त्रधारी साठ सत्तर सौ बाहुओं से परिवृत्ता बगला का चिन्तन करता हूँ ।३१।

चौराणां संकटे च प्रहरसमये बन्धने वारिमध्ये ।
वह्नौ वादे विवादे प्रकुपितनृपतौ दिव्यकाले निशायाम् ।
वश्ये वा स्तम्भने वा रिपुवधसमये प्राणबाधे रणे वा
गच्छंस्तिष्ठस्त्रिकालं स्तवपठनमिदं कारयेदाशु धीरः ।३२
विद्या लक्ष्मीः सर्वसौभाग्यमायुः पुत्राःसम्पद्राज्यमिष्टं चसिद्धिः
मातः श्रेयः सर्ववश्यत्वसिद्धिः प्राप्तं सर्वं भूतले त्वत्परेण ।३३

चोरों के द्वारा आये हुए सङ्कट के अवसर पर आयुधों के प्रहारों के होने के समय मैं किसी के द्वारा बन्धन (घिराव) हो जाने के समय पर जलके मध्य में जब कि प्राण सङ्कट समुपस्थित हो जावे अग्नि में गिर जाने पर वाद-विवाद होने के अवसर पर किसी भी राजा के कोप का भाजन बन जावे तो उस समय में निशा के दिव्य काल में अर्थात् निशीथ समय में वश्य में स्तम्भन में रिपु द्वारा वध के समय में प्राणकी बाधा उपस्थित हो जाने पर अथवा रणक्षेत्र में नमन करते हुए स्थिर रहते हुए तीनों कालों में शीघ्र ही धीर पुरुष को इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ।३२। हे माता ! जो आपको ही एक मात्रा अपना इष्ट-देव मानकर आराधना किया करता है उसके इस भू-मण्डल में विद्या लक्ष्मी सब प्रकार का सौभाग्य आयु पुत्र सम्पदा इष्ट राज्य सिद्धि श्रेय और सबके वश्य करने की सिद्धि कुछ अवश्य ही प्राप्त होता है ।३३।

गेहं नाकति गर्वितः प्रणमति स्त्रीसंगतो मोक्षति
द्वेषो मित्रति पातकं सुकृतति क्ष्मावल्लभा दासति ।
मृत्युर्वैद्यति दूषणं गुणति वै यत्पादसेवनात्
तां वन्दे भवभीतिभंजनकरीं गौरीं गिरीशप्रियाम् ।३४
यत् कृतं जपसंध्यानं परमेश्वरि चिन्तमं तव ।
शत्रूणां स्तम्भनार्थाय तत् गृहाण नमोऽस्तु ते ।३५

ब्रह्मास्त्रमेतद् विख्यातं त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
गुरुभक्ताय दातव्य न देयं यस्य कस्यचित् ।३६
पीताम्बरां च द्विभुजां त्रिनेत्रां गात्रकोज्वलाम् ।
शिलामुद्गरहस्तां च स्मरेत् बगलामुखीम् ।३७
सिद्धि साध्येऽवगंतुं गुरुवरचनेष्वार्जविश्वासभा ।
स्वान्त: पद्मासनसंसंस्था वररुचिबगलां ध्यायतांतारतारम्।
गायत्रीपूतवाचां हरिहरमनने यत्पराणां नराणां ।
प्रातर्मध्याह्नकाले स्तवपठनमिदं कार्यसिद्धिप्रदं स्यात् ।३८

आपके साधक का गृह स्वर्ग के समान हो जाता है गर्व करने वाला भी प्रणाम करने वाला बन जाता है–स्त्री का सङ्गम होते ही मोक्ष प्राप्त करता है–द्वेषी भी मित्रवत् आचरण करने लगता है–मृत्यु भी वैद्यवत् हो जाता है–दूषण गुण हो जाया करते हैं । जिस बगला के चरण कमलों के सेवन करने से ऐसा अद्भुत प्रभाव होता है उस संसार के भय का भञ्जन करने वाली गिरीश की प्रिया गौरी की में वन्दना करता हूँ ।३४। हे परमेश्वरि ! मैंने अपने शत्रुओं के स्तंभन के लिए जो भी जाप ध्यान और चिन्तन किया है वह सब आपकी सेवा में निवेदित किया जाता है उसको आप ग्रहण कीजिए । मेरा आपके लिए नमस्कार है ।३५। यह तीनों लोकों में ब्रह्मास्त्र के नाम से विख्यात है और अत्यन्त दुर्लभ है । इसकी दीक्षा जो भी गुरु देव का भक्त हो उसी को देनी चाहिए और चाहे जिस किसी के लिए भूलकर भी कभी नहीं देनी चाहिए ।३६। पीत वस्त्रों के धारण करने वाली दो भुजाओं से युक्त नेत्रों वाली अङ्गों से परमोज्ज्वल शिला और मुद्गरकी हाथोंमें रखने वाली उस परम प्रसिद्ध बगलामुली देवीका स्मरणकरे।३७ गुरु के वचनों में उचित बिश्वास रखने बालों की सिद्धि साध्य में जानने के लिए अपने अन्त:करण रूपी पद्मासन पर विराजमान सुन्दर

रुचि से संयुत बगला देवी का बार-बार ध्यान करना चाहिए। गायत्री से पवित्र वाणी वाले हरि या हर के भजन में तत्पर नरों को प्रातः मध्याह्न और सायंकाल में इस स्तवन का करना कार्यों की सिद्धि का प्रदान करने वाला होता है।३८।

इति श्रीरुद्रयामले उत्तरखण्डे

श्री ब्रह्मास्त्रमहाविद्याबगलामुखीस्तोत्रं सम्पूर्णम्

पीताम्बरोपनिषत्

ॐ अयं हैनाब्रह्मरन्ध्रे सुभगां ब्रह्मास्त्रस्वरूपिणीमाप्नोति ब्रह्मास्त्रां महाविद्यां शाम्भवीं सर्वस्तम्भकरीं, सिद्धा चतुर्भुजां दक्षाभ्यां कराभ्यां मुद्गरपाशौ वामाभ्यां जिह्वावज्रं दधानां, पीतवासां, पीतालंकारसम्पन्नां, दृढपीनोन्नतपयोधरयुग्माढ्यां, तप्तकार्तस्वरकुण्डलद्वयविराजितमुखाम्भोजां, ललाटपट्टोल्ल सतपीतचन्द्रार्धमनुविभ्रतीम्, उद्यद्दिवाकरोद्योतां स्वर्णसिंहासनमध्यकमलसंस्थां धिया संचिन्त्य, तदुपरि त्रिकोणषट्कोण-वसुपत्रवृत्तान्तः षोडशदल कमलोपरि धूबिम्बत्रयम् अनुसन्धाय, तत्राद्ययोन्यन्तरे देवीमाहूय ध्यायेत् ।

इसके अनन्तर ओं उस सुभगा का ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान करे जो ब्रह्मास्त्र के स्वरुप को प्राप्त होती है और जो ब्रह्मास्त्र से युक्त, महा-विद्या शांम्भवी में जो सबका स्तम्भन करने वाली है। जो सिद्धि और

चार भुजाओं से समन्वित है। जो दाहिने करोंमें मुद्गर और पाश तथा वाम करों से शत्रु की जिह्वा और वज्र धारण करने वाली है, पीले वस्त्र धारण करने वाली और पीतवर्ण के अलङ्कारों से सम्पन्न सुदृढ़ और पुष्ट स्तनयुग्मों से शोभित, तपे हुए सुवर्ण के कुण्डलों से भूषित मुख कमल वाली, ललाट पट्ट पर शोभित अर्धचन्द्र को रखने वाली, उगते हुए सूर्य के समान प्रकाश से सुसम्पन्न, सुवर्ण के सिंहासनके मध्य में कमल पर विराजमान देवी का ध्यान करे । इसके ऊपर त्रिकोण षट्कोण, अष्टदल वृत के अन्दर सोलह दलों वाले कमल के ऊपर तीन बिम्बों का अनुसंस्थान करनी चाहिए वहाँ पर आद्य योनि के मध्य में देवी का आवाहन करके फिर ध्यान करे ।

योनि जगद्योनि समायमुच्चार्य शिवान्ते भूमाग्रविन्दु-मिन्दुखण्डमग्निबीजं ततो वरुणा गुचार्णमभियुतं स्थिरामुखि इति सम्बोध्य, सर्वदुष्टानामिति चाभावय, वाचमिति मुखमिति, पदमिति, स्तम्भयेति चोच्चार्य जिह्वां वेशरादीं कीलयेति बुद्धि विनाशयेति प्रोच्चार्य, भूमायां वेदाद्य, ततो यज्ञभूगुहायां याज-येत् । स महास्तम्भेश्वरः, स सेनास्तम्भं करोति । किं बहुना विवस्वद्घृतिस्तम्भकर्ता, सर्ववातस्तम्भर्ताचि किं दिवा कर्ष-यति स सर्वविद्येश्वरः सर्वं मन्त्रेश्वरो भूत्वा पूजाया आव-र्तनं त्रैलोक्यस्तम्भिन्याः कुर्यात् । अङ्गमाद्यं द्वारतो गणेशं बटुकं योगिनीं, क्षेत्राधीश च पूर्वादिकमभ्यर्च्यं गुरुपंक्ति मीशा-सुरान्तमान्ममन्तःप्राच्यादौ क्रमानुतगताबगलास्तम्भिनीजृम्भिणी मोहनीः वश्या, अचला, चला, दुर्धरा, अकल्पा, आधारा कल्पना कालकर्षिणी, भ्रमरिका, मन्दगमना भोगिका (भोगा) योगिका ।

योनि, जगद्योनि समायं का उच्चारण करके शिवा शिवा के अन्त में भूमाग्रबिन्दु अखण्ड अग्नि बीज कहकर वर्णांक गुणार्ण, अभियुक्त

स्थिर मुखी, इस प्रकार सम्बोधन करके सर्वं दुष्टनाम् यह कहकर 'वाचं मुखं पदं, स्तम्भय यह उच्चारण करके 'जिह्वा वैशारदो कीलाय बुद्धि विनाशय' यह उच्चारण करें। फिर भूमि में वेदाद्य को कहे और फिर यज्ञ गुहा में योजित करना चाहिए। वह महा स्तभेश्वर सर्वेश्वर है। विवस्वान की धृति के स्तम्भन करने वाला, सर्व वात का स्तम्भ करने वाला है, यह समाज विद्या का ईश्वर दिवा का कर्षण करता है। सब मन्त्रों का ईश्वर होकर उसे त्रैलोक्य की स्तम्भिनी की पूजा का आवर्तन करना चाहिए। आद्य अंग श्रीगणेश की द्वार पर वटुक, योगिनी और क्षेत्रपाल का पूर्व आदि क्रम से समर्चन करे। गुरु-गण की पंक्ति ईशासुरात को अन्दर प्राची आदि में और क्रम से अनुगत वगला, स्तम्भनि, जृंम्भिणी, मोहनी, वश्या, अछला, छला,दुर्धरा अकल्पा आधरा, कल्पना, कालकर्षिणी, भ्रमरिका, मन्दगमना, भोगिका, (भोगा) योगिका का अर्चन करें।

ह्याष्टदलनानुगाः पूज्याः- ब्राह्मी-परममाहेश्वरी-कौमारी वैष्णवी, वराही, नारसिंही, चामुण्डाः महालक्ष्मीश्च षड्योनिग-र्भान्ता डाकिनी राकिनी, लाकिनी, काकिनी, शाकिनी, हाकिनी वेराद्यस्थिमायायाः समभ्यर्च्य शक्राग्नियमनिर्ऋतिवरुणवायुघन-देशानप्रजापतिनागेशाः परिवाराभिमतः स्थिरादिशक्तः सवाहना सदस्त्रका वाह्यतोऽभ्यर्च्य तां योनि रतिं प्रीतिमनोमवा एतः सर्वाः समा पीतांशुका ध्येयाः तदन्तमूलायां दलविषोडशामुताः संपूज्य नीराजनैः महैश्वर्ययुतो भवति एना व्यावाति स वाग्मी भवति, सृष्टिस्थितिसंहारकर्ता भवति, स सर्वेश्वरी भवति स तु ऋद्धीश्वरो भवति स शक्तिः वैष्णवी, ह गणपःस शैवः, स जीव-न्मुक्तो भवति, स सन्यासी भवति न मुण्डितमुण्डः षट् त्रिशदन्शे श्वरो भवेत् सौभाग्यवर्चनेति प्रोत वेद ॐ शिवम्, सहनाववतु, इति मन्त्रेण शान्तिः।

फिर आठ दलों में अनुगमन करने वाली सबका पूजन करना चाहिए, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमरी, वैष्णवी, बाराही, नारसिंही,चामुण्डा और महालक्ष्मी का अभ्यर्चन करे। उसी योनि के गर्भ के अन्दर डाकिनी, राकिनी, लाकिनी, साकिनी, हाकिनी, वेदाद्य स्थिर माया का अभ्यर्चन करके इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, धनद, ईशान, प्रजापति नागेश परिवारों से अभिमत स्थिरादिवेदाद्य वाहनों के सहित, वस्त्रोंके साथ बाहिर से अभ्यर्चन करके उस योनि, रयि प्रीतिमनोभुवा ये सब समाग स्वरूप से समन्वित पीतवस्त्रों वाली ध्यान करने के योग्य हैं। उसके अन्तमूल में दलादि षोडश के अनुगत पूजन करने के योग्य है। नीराजन के साथ ऐश्वर्य से मुक्त होता है। जो इसका ध्यान किया करता है। वह वाग्मी (बहुत अच्छा बोलने वाला) होता है। वह अमृत का योग करता है, सब सिद्धियों का करने वाला होता है, सृजन, पालन और संहार के करने वाला होता है, वह सबका ईश्वर होता है, वह तो ऋद्धियों का ईश्वर होता है वह शक्ति अर्थात् शक्ति की उपासना करने वाला, वह विष्णु की उपासना वाला, वह गणपति का अर्चक, वह शिव का भक्त और वह जीवन्मुक्त होता है। जो जीवित दशा में ही मुक्ति पाने का अधिकारी है वह सन्यासी होता है। मुण्डित मुण्ड वाला नहीं होता है। वह छत्तीस अस्त्रों वाला होता है। सौभाग्य के अर्चन से यह प्रोत वेद ॐ शिवम् है। 'सहनाववतु' इस मन्त्र से शान्ति करनी चाहिए।

बगला हृदयम्

श्री देव्युवाच--

इदानीं खलु मे देव बगलाहृदयं प्रभो।
कथयस्व महादेव यद्यहं तव वल्लभा।१

साधु साधु महाप्रज्ञे सर्वतन्त्रार्थसाधिके ।
ब्रह्मास्तदेवतायाश्च हृदयं वच्मि तत्वतः ।।२
प्रणवं पूर्वमुच्चार्य स्थिरमायां ततो वदेहे ।
सम्बोधनपदेनैव बगलामुखि उद्धरेत् ।३
तदग्रे सवद्धष्टानां ततो वाचं पदं मुखम् ।
स्तम्भयेति ततो जिह्वां कीलयेति पद्रं ततः ।४
बुद्धि विनाशय इति स्थिरमायां ततोऽग्रतः ।
पदेच्च पुनर्मेकारं स्वाहेति च पदं ततः ।५
षट्त्रिंशदक्षरीं विद्यां सद्यः स्तम्भनकारिणी ।
अङ्गन्यासं ततः कुर्यात् स्थिरयमायां हृदि न्यसेत् ।६
बगलामुखी तु शिरसि सर्वदुष्टानां शिघासु च ।
वाचं मुखं पदं चैव कवचे विन्यसेत्ततः ।७
जिह्वां कीलय नेत्रयुग्मे आस्ये बुद्ध्यादिकं तथा ।
गम्भीरां च मदोन्मतां स्वर्णकान्तिसमप्रभाम् ।८

श्री देवी ने कहा–हे प्रभो ! अब इस समय में मुझको हे देव ! बगला का हृदय बतलाइए । हे महादेव ! यदि मैं आपकी परम प्रिया हूँ तो आप इनको समझा दीजिए ।१। ईश्वर ने पार्वती से कहा-हे महा-पण्डिते ! बहुत अच्छा, तुमने परम सुन्दर प्रश्न किया है । ऐसा क्यों न हो क्योंकि आप तो समस्त तन्त्रों की साधिका हैं । अब मैं आपके सामने ब्राह्मास्त्र देवता के ह्रदय को बतलाता हूँ ।२। सर्व प्रथम प्रणव का (ॐ) का उच्चारण करके फिर स्थिर माया का अर्थात् ह्लीं को कहना चाहिए । फिर सम्बोधन पद के द्वारा 'बगलामुखि !' इसका उच्चारण करे । इसके आगे 'सर्वदुष्टानां' और फिर 'वाचं मुखं पद स्तम्भय' यह कहकर फिर 'जिह्वां कीलय' यह उद्धृत करे फिर 'बुद्धि विनाशय' कहकर स्थिर माया अर्थात् 'ह्लीं का उच्चारण कर फिर 'ओंकार' और 'स्वाहा' बोले । यह छत्तीस अक्षरों वाली विद्या है ।३-६। जोकि तुरन्त

ही स्तम्भन करने वाली है । इसके पश्चात् अङ्गों पर न्यास करे और स्थिर माया (ह्लीं) का हृदय पर न्यास करना चाहिए 'बगलामुखि' इसका शिर में न्यास करे और 'सर्वदुष्टानां' इसका शिखा में न्यास करे ।७। फिर 'वाचं मुखं पदं' का कवच में न्यास करना चाहिए, 'जिह्वां कीलय' इसका दोनों नेत्रों में न्यास करे और बुद्धि आदि का मुख में न्यास करे ।७-८।

चतुर्भुजां त्रिनयनां कमलासनसंस्थिताम् ।
ऊर्ध्वकेशजटाजूटां करालवदनाम्बुजाम् ।९
मुद्गरं दक्षिणे हस्ते पाशं वामेन धारिणीम् ।
रिपोर्जिह्वां त्रिशूलं च पीतगन्धानुलेपनाम् ।१०
पीताम्बरधरां सान्द्रदृढपीनपयोधराम् ।
हेमकुण्डलभूषां च पीतचन्द्रार्धशेखराम् ।११
पीतभूषणभूषाढ्यां स्वर्णसिंहासने स्थिताम् ।
स्वानन्दानुमयीं देवीं रिपुस्तम्भनकारिणीम् ।१२
मदनस्य रतेश्चापि प्रीति स्तम्भनकारिणी ।
महाविद्या महामाय महामेधा महाशिवा ।१३
महामोहा महासूक्ष्मा साधकस्य वरप्रदा ।
राजसौ सात्विकी सत्या तामसी तेजसी स्मृता ।१४

अब देवी के स्वरूप का निम्न विधि से ध्यान करना चाहिए गम्भीर स्वभाव वाली मद से उन्मत्त सुवर्ण की कान्ति के समान प्रभा से युक्त, चार भुजाओं से समन्वित तीन नेत्रों वाली कमल के आसन पर विराजमान ऊपर की ओर केशों और जटाजूट वाली परम कराल मुख कमल से युक्त दाहिने करों में मुद्गर और पाश को धारण करने वाली और वाम करों में रिपु की जिह्वा तथा त्रिशूल को रखने वाले पीतवर्ण के गन्ध के अनुलेपन से युक्त पीत वस्त्रों को धारण करती हुई घने और पीन तथा दृढ़ पयोधरों से समन्वित सुवर्ण रचित कुण्डलों के भूषण वाली पीत एवं अर्ध चन्द्र के शेखर अर्थात् मुकुट धारण करती हुई पीत

भूषण और भूषा से सयुक्त सुवर्ण के सिंहासन पर विराजमान अपने ही आनन्द से परिपूर्ण रिपुओं के स्तम्भन करने वाली देवी का चिन्तन करना चाहिए ।९-१२। यह देवी कामदेव और उसकी पत्नी रति की भी प्रीति का स्तम्भन करने वाली है, जिनकी परम प्रगाढ़ प्रीति हुआ करती हैं । यह महाविद्या, महामाया, महामेधा, महाशिव, महामोहा, महासूक्ष्मा और साधना करने वाले साधक को वर प्रदान करने वाली है । यह तीन स्वरूपों वाली–सात्विकी राजसी और तामसी है इसकी सत्या और तेजस्वी भी कहा गया है ।१३-१४।

तस्याः स्मरणमात्रेण त्रैलोक्यं स्तम्भयेत् क्षणात् ।
गणेशो बटुकश्चैव योगिन्यः क्षेत्रपालकः ।१५
गुरवश्च गुणास्तिस्रो बगला स्तम्भिनी तथा ।
जृम्भिणी मोदनी चाम्बा बालिका भूधरा तथा ।१६
कलुषा करुणा धात्री कालकर्षिणिका परा ।
भ्रामरी मन्दगमना भगस्था चैव भाषिका ।१७
ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी रमा ।
वाराही च तथैन्द्रणी चामुण्डा भैरवाऽष्टकम् ।१८
सुभगा प्रथमा प्रोक्ता द्वितीया भगमालिनी ।
भगवाहा तृतीया तु भगमिद्धाऽब्धिमध्यगा ।१९
भगस्य पातिनी पश्चात् भगमालिनी षष्टिका ।
उड्डीयानपीठनिलया जालन्धरपीठसंस्थिता ।२०
कामरूपे तथा संस्था देवीत्रितयमेव च ।
सिद्धौ मानवौघाश्च दिव्यौघा गुरवः क्रमात् ।२१
क्रोधिनी जृम्भिणी चैव दंव्याश्चोभयपार्श्वयोः ।
पूज्यस्त्रिपुरनाथश्च योनिमध्येऽम्बिकायुतः ।२२
स्तम्भिनी या महाविद्या सत्यं सत्यं वरानने ।
एषा सा वैष्णवी माया विद्या यत्नेन गोपयेत् ।२३
ब्रह्मास्त्रदेवतायाश्च हृदयं परिकीर्तितम् ।

ब्राह्मास्त्रं त्रिषु लोकेषु दुष्प्राप्यं त्रिदशैरपि ।२४
गोपनीयं प्रयत्नेन, न देयं यस्य कस्यचित् ।
गुरुभक्ताय दातव्यं वत्सर दुःखिताय व ।२५
मातृपितृरतो यस्तु सर्वज्ञानपरायणः ।
तस्मै देयमिदं देवि!बगलाहृदयं परम् ।२६
सर्वार्थसाधकं दिव्यं पठनाद् भोगमोक्षदम् ।
इति श्री शिवपार्वतीसंवादे बगलाहृदयं समाप्तम् ।२७

उसके केवल स्मरण भर करने सी से तीनों लोकों का क्षण भर में स्तम्भन हो जाता है । इसके साथ गणेश बटुक योगिनियाँ और क्षेत्रपाल का भी अर्चन करना।१५। गुरुगण तीनों गुण बगला स्तम्भिनी, जृम्भिणी मोदिनी, अम्बा, भूधरा, बलिका, कलुषा, करुणा, भात्री, कालकर्षिणिका परा, भ्रामरी, मन्दगमना, भगस्था, मासिका,ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, रमा, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा, भैरवाष्टक ।१३-१८। प्रथमा सुभगा कही गयी है, द्वितीया भगमालिनी है, तृतीया भगवाहा है भग-सिद्धा, अब्धिमध्यगा, पीछे भाग की पातिनी षष्ठी का, भगमालिनी उड्-डीयान पीठ के निलय वाली जालन्धर पीठ पर विराजमान तथा काम रूप पर स्थित और तीन देवियाँ सिद्धों के समुदाय और मानवों के समूह क्रम से गुरुगण ।१९-२१। और देवी के दोनों पार्श्वोमें क्रोधनी तथा जृम्भिणी है । योनि के मध्य में जम्बिका से युक्त त्रिपुर नाथ पूजन करने के योग्य है ।२२। हे वरानने! जो स्तम्भिनीहै वह महाविद्या है,यह सर्वदा सत्य है । यह वैष्णवी वह माया है और विद्या है जिसको यत्न से गुप्त रखना चाहिए ।२३। और मैंने तुम्हारे सामने ब्रह्मास्त्र देवता का हृदय बता दिया है । यह ब्रह्मास्त्र तीनों लोकों में देवों के द्वारा भी परम दुष्प्राप्य है ।२४। इसको बहुत प्रयत्न से गोपनीय रखना चाहिए और चाहे जिस किसी को नहीं देना चाहिए । परम गुरु के भक्त को ही तथा जो वर्षों तक दुःखित हो उसको ही देना चाहिए ।२५। जो

अपनी माता और पिता के चरणों में रति रखने वाला हो और सब प्रकार के ज्ञान में परायण होवे हे दवि ! उसी को यह परम गोपनीय बगला हृदय देना चाहिए ।२६। यह बगला हृदय समस्त अर्थोंका साधक है और इसके पठन करने से यह भोगों का उपभोग तथा अन्त में मोक्ष के देने वाला है ।२७।

।। इति श्रीशिव-पार्वती-सम्वादे बगला-हृदयं समाप्तम् ।।

बगला-पंजर-स्तोत्रम्

सूत उवाच--

सहस्रादित्यसंकाशं शिवं साम्वं सनातनम् ।
प्रणम्य नारद: प्राह विनम्रो नतकन्धर: ।१

श्री नारद उवाच--

भगवके साम्ब तत्वज्ञ सर्वदु:खापहारक ।
श्रीमत्पीताम्बरादेव्या: पंजरं पुण्यदं सताम् ।२
प्रकाशय विभो नाथ कृपां कृत्वा ममोपरि: ।
यद्यहं तव पादाब्जधूलिधूसरितोऽभवम् ।३

सूतजी ने कहा-सहस्रों सूर्यों के सदृश, सनातन, साम्ब शिव को नारदजी ने प्रणाम करके विनम्र भाव से अपना मस्तक उनके समक्ष में झुकाकर कहा था ।१। श्री नारदजी ने कहा- हे भगवान साम्ब ! आप तो तत्वों के पूर्ण ज्ञाता हैं और सबके दु:खों का अपहरण करने वाले हैं । हे विभो ! श्रीपीताम्बरा देवी का सत्पुरुषों को पुण्य प्रदान करने वाला पंजर है । हे नाथ मेरे ऊपर कृपा करके उसको प्रकाशित कीजिये यदि मैं आप के चरण रूपी कमलों की धूलि से धूसरति हो गया हूँ ।२-३।

श्री भगवान् शिव ने कहा-

श्री शिव उवाच--

ॐ अस्य श्रीमद्बगलामुखीपीताम्बरापंजररूपस्तोत्रमन्त्रस्य भगवते नारदऋषये नमः शिरसि, अनुष्टुप्छन्दसे नमो मुखे, जगद्वश्यकरी श्रींपीताम्बरा बगलामुखीदेवतायै नमो हृदये, ह्लीं बीयाय नमो दक्षिणस्तने, स्वाहा शक्तये नमो वामस्तने, क्लीं कीलकाय नमो नाभौ, मम परसैन्यमन्त्रतन्त्रयन्त्रादिकृतविपक्ष-क्षयार्थं श्रीमत्पीताम्बराबगलादेव्याः प्रीतये जपे विनियोगः करं सम्पुटेन मूलेन करशुद्धिः । ह्लामिति षट् दीर्घेन षडंगः । मूलेन व्यापकम् ।

ओं इस श्रीमद् बगलामुखी पीताम्बरा के स्तोत्र के मन्त्र का जो पंजर के रूप में है भगवान नारद ऋषि के लिये शिर में नमस्कार है, अनुष्टुप् छन्द के लिये मुख में नमस्कार है, जगत को वश्य करने वाली श्रीपीताम्बरा बगलामुखी देवता के लिये हृदय में नमस्कार है,ह्लीं बीज के लिये दक्षिण स्तन में नमस्कार है, स्वाहा शक्ति के लिये वाम स्तन में नमस्कार है, क्लीं कीलक के लिये नाभि में नमस्कार है परों की सैन्य, मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र आदि के द्वारा किये हुये विपक्ष के क्षयके लिये श्रीमती पीताम्बरा बगलादेवी की प्रीति के लिये विनियोग है। कर सम्पूट के द्वारा मूलमन्त्र से करों की शुद्धि करे । ह्लीं, इस षट् दीर्घ से षडङ्ग-न्यास करे और फिर मूलमन्त्र से व्यापक न्यास करना चाहिये ।

ध्यानम्--

मध्येसुगाब्धि मणिमण्डितरत्नवेद्यां
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषितांगी
देवीं नमामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥

इति ध्यात्वा, मनसा संपूज्य मुद्रां प्रदर्श्य, ऋष्यादिन्यासं कृत्वा पंजरं न्यसेत् ।

सुधा के सागर के मध्य में मणियों से मण्डित रत्नों की वेदी में सिंहासन पर विराजमान सब ओर से पीतवर्ण वाली, पीले वस्त्र और भूषण तथा मालाओं से विभूषित अङ्गों वालीं मुद्गर और शत्रुओं की जिह्वाको ग्रहण करने वालीं देवीं की सेवा में मैं प्रणाम करता हूँ। इस प्रकार से ध्यान करके मन के द्वारा ही अभ्यर्चन करे और मुद्रा को प्रदर्शित करके ऋषि आदि का न्यास करना चाहिए फिर पजर का व्यास करे।

श्री शिव उवाच--

पंजरं तत् प्रवक्ष्यामि देव्याः पापप्रणाशनम्।
यं प्रविश्य न बाधन्ते बाणैरपि नराः क्वचित् ।१
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं श्रीमत्पीताम्बरा देवी बगला बुद्धिबर्धिनी।
पातु मामनिशं साक्षाद् सहस्रार्कसमद्युतिः ।२
शिखादिपादपर्यन्तं वज्रपंजरधारिणी।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमद्ब्रह्मास्त्रविद्या पीताम्बरविभूषिता ।३
बगला मामवत्वत्र मूर्धभाग महेश्वरी।
ॐऐं ह्लीं श्रीं कामांकुशकला पातु बगला शास्त्रबोधिनी।४
पीताम्बरा सहस्राक्षा ललाटं कामिनामर्थदा।
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरसुधारिणी ।५
ॐ ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगला नासिकां मे गुणाकरा ।६
पीतपुष्पैः पीतवस्त्रैः पूजिता वेददायिनी।
ह्ल ऐं ह्लीं श्रीं पातु बगलाब्रह्मविष्ण्वादिसेविता ।७

भगवान् शिव ने कहा-मैं देवीं के उस पापों के प्रकाश करने वाले पंजर को बतलाऊँगा जिसका प्रवेश करके मनुष्य कहीं पर भी बाणों के द्वारा भी कभी बाधित नहीं हुआ करते है।१। ओं ऐं ह्लीं, श्री श्रीमती पीताम्बरी बगलादेवी बुद्धि के वर्धन करने वाली है। सहस्रों रूपों के

समान द्युति वाली देवी मेरी साक्षात् निरन्तर रक्षा करे ।२। शिखा से आरम्भ करके चरणों पर्यन्त वज्र पंजर की धारण करने वाली ॐ ऐं ह्रीं श्री श्रीमती महास्य विद्या जो पीतवस्त्रों से भूषित है ।३। महेश्वरी श्रीमती वगलादेवी मेरे मूर्धा के भाग को यहाँ पर रक्षित करें ओं ऐं ह्रीं श्रीं वामांकुश कला शास्त्रोंका बोध करने वाली है वह बगला रक्षा करे ।४। ओं ऐं ह्रीं, श्रीं सहस्र नेत्रों वाली, पीत वस्त्रों का परिधान करने वाली, कामना किए हुए अभीष्ट अर्थोंके प्रदान करने वाली पीताम्बरा सुधारिणी बगलामुखी देवी रक्षा करें ।५। ओं ऐं ह्रीं श्री रत्नों से अतीव्र सुशोभिता, गुणों की खान बगला मेरे दोनों कानों की एक साथ और नासिका की रक्षा करें ।६। ओं ऐं ह्रं श्री पीले वस्त्रों से और पीत पुष्पों से पूजिता वेदों के देने वाली-ब्रह्मा, विष्णु आदि के द्वारा सेविता बगलादेवी मेरी रक्षा करे ।७।

पीताम्बरा प्रसन्नास्या नेत्रयोर्युगपद्भ्रुवोः ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला बलिदा पीतवस्त्रधृक् ।८
अधरोष्ठो तथा दन्तान् जिह्वां च मुखगा मम ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीताम्बरासुधारिणी ।९
गले हस्ते तथा बाह्वो युगपद् बुद्धिदा सताम् ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला दिव्यस्रगनुलेपना ।१०
हृदये च स्तनयोर्नाभौ करावपि कृशोदरि ।
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं पातु बगला पीतवस्त्रघनावृता ।११
जंघाय च तथा चोर्वोर्गुल्फयोश्चातिवेगिनी ।
अनुक्तमपि यत् स्थानं त्वक्केशनखलोमकम् ।१२

ओं ऐं ह्रीं श्रीं पीताम्बरा प्रसन्न मुख से समन्विता वीत वस्त्रों को धारण करने वाली, बलिदा बगलादेवी मेरे नेत्रों की और भौंहों को एक साथ रक्षा करे ।८। ओं ऐं ह्रीं श्रीं पीताम्बरों के धारण करने वाली बगलादेवी मेरे अधरोष्ठों की, दाँतों की और मुख में रहने वाली

जिह्वा की रक्षा करे ।६। ओं ऐं ह्लीं श्रीं दिव्यमाया और अनुलेपन से समन्विता सत्पुरुषों को दुद्धि देने वाली बगलादेवी गले में हाथ में और बाहुओं में एक साथ मेरी रक्षा करे ।१०। ओं ऐं ह्रीं श्री पीत वस्त्र से घनावृत्ता, कृश उदरवाली बगलादेवी मेरे हृदय में, नाभि में और दोनों स्तनों की और करों की रक्षा करें ।११। अत्यन्त वेषसे युक्ता बगलादेवी मेरी जंघा में, दोनों ऊरुओं में गुल्फों में, त्वचा, नख केश और रोमों की रक्षा करें और जो स्थान नहीं बताया गया है उसकी भी रक्षा करे ।१२।

श्री शिव उवाच--

असृङ् मांस तथाऽस्थीनि सन्ध्यश्चापि मे परा ।
इत्येतद् वरदं गोप्यं कलावपि विशेषतः ।१३
पंजरं बगलादेव्या दीर्घदारिद्र्यनाशनम् ।
पंजरं य पठेत् भक्त्या स विघ्नैर्नाभिभूयते ।१४
अव्याहतगतिश्चाऽसौ ब्रह्मविष्ण्वादिसत्पुरे ।
स्वर्गे मर्त्यै च पाताले नाऽरयस्तु कदाचन ।१५
प्रबोधन्ते नरव्याघ्रं पंजरस्थं कदाचन ।
अतो भक्तैः कौलिकैश्च स्वरक्षार्थं सदैव हि ।१६
पठनीयं प्रयत्नेन सर्वाऽनर्थविनाशम् ।
महादारिद्र्यशमन सर्वमांगल्यवर्धनम् ।१७
विद्याविनयसत्साख्यं महासिद्धिकरं परम् ।
इदं ब्रह्मास्त्रविद्यायाः पंजरं साधु गोपितम् ।१८

मेरे रक्त की, माँस की, अस्थियों की तथा सन्धियों की भी बगलादेवी रक्षा करें । श्रीशिव ने कहा-यह देवी का पंजर वर दाता और परम गोपनीय है । विशेष रूप से इस कलियुग में अवश्य ही गुप्त रखने के योग्य हैं ।१३। यह बगलादेवी का पंजर बड़े भारी दारिद्रय का भी नाश करने वाला है । जो इस पंजर का भक्तिभाव से पाठ करता

है वह कभी भी विघ्नों से अभिभूत नहीं हुआ करता है ।१४। इसके पाठ करने वाले पुरुषकी ब्रह्मा और विष्णु के श्रेष्ठ पुरोंमें भी गति बिना रुकावट वाली हो जाया करती है । इसके पाठ करने वाले को स्वर्ग, पाताल और मर्त्यलोक में कहीं पर भी शत्रु बाधा नहीं दिया करते हैं ।१५। पंजर में स्थिर रहने वाले पुरुष सिंहको कोई भी बाधा नहीं करते हैं । अतएव कीलिकों द्वारा और भक्तों के द्वारा सदा ही अपनी रक्षा के लिये बड़े ही प्रयत्न से इसका पाठ करना चाहिये । यह सभी अनर्थों का विनाश करने वाला है । यह बड़ी भारी दरिद्रता का भी शमन करने वाला है और परासिद्धि करने वाला होता है । यह ब्रह्मास्त्र विद्या का पंजर भली-भाँति गोपित करना चाहिये ।१६-१८।

पठेत् स्मरेद् ध्यानसंस्थः स जीव्या मरणान् नरः ।
यः पंजरं प्रविश्यैव मन्त्रं जपति वै भुवि ।१९
कौलिकोऽकौलिको वापि व्यासवद् विचरेद् भुवि ।
चन्द्रसूर्यप्रभुर्भूत्वा वसेत् कल्पायुतं दिवि ।२०

श्रीसूत उवाच--

इति कथितमशेषं श्रेयसामादिबीजं
भवशतदुरितघ्नं ध्वस्तमोहान्धकारम् ।
स्मरणमतिशयेन प्राप्तिरेवात्र मर्त्यो
यदि विंशाति सदा वै पंजरं पण्डितः स्यात् ।२१

ध्यान में संस्थित होकर जो इस पंजर का स्मरण किया करता है और पाठ करता है वह नर मरण से भी जीवित हो जाता है उसकी मृत्यु भी टल जाती है । जो भूमण्डल में पंजर में प्रवेश करके मन्त्र का जप करता है वह मौत की बाधासे भी दूर रहती है ।१९। चाहे कौलिक हो अथवा अकौलिक हो वह व्यास की भाँति भूमि पर विचरण किया करता है । चन्द्र और सूर्य का प्रभू होकर स्वर्ग लोक में दश सहस्र कल्प पर्यन्त निवास किया करता है ।२०। श्री सूतजी ने कहा-यह क्षेमों

का आदि बीज पूरा-२ मैंने कह दिया है। वह सैकड़ों सांसारिक जन्मों के दुरितों को नष्ट करने वाला है और मोह रूपी अन्धकार का ध्वंसकर देता है। इसका अतिशय से स्मरण करने से मनुष्य को सबको प्राप्ति यहाँ पर ही हो जाया करती है। जो इस पञ्जर में प्रवेश करता है वह पण्डित हो जाता है।२१।

इति श्री परमरहस्यातिरहस्ये पीताम्बर-पञ्जरम्

समाप्तम्।

कीलक स्तोत्रम्

बगलापूर्वतो रक्षेद् आग्नेय्यां च गदाधारी।
पीताम्बरा दक्षिणे च स्तम्भिनी चैव नैऋते।१
जिह्वाकीलिन्यो रक्षेत् पश्चिमे सर्वदा हि माम्।
वायव्ये च मदोन्मत्ता कौवेर्यां च त्रिशूलिनी।२
ब्रह्मास्त्रदेवता पातु ऐशान्यां सततं मम।
सरक्षेन् मां तु सततं पाताले स्तब्धमातृका।३
ऊर्ध्वं रक्षेन् महादेवी जिह्वास्तम्भनकारिणी।
एवं दश दिशो रक्षेद् बगला सर्वसिद्धिदा।४
एवं न्यासविधिं कृत्वा यत् किञ्चित् जपमारेत्।
तस्याः संस्मरणादेव शत्रूणां स्तम्भनं भवेत्।५

पूर्व दिशा में बगला मेरी रक्षा करे। आग्नेयी दिशा में गदाधारी रक्षा करे।१। पीताम्बरा देवी दक्षिण में रक्षा करे। नैऋत्यमें स्तम्भिनी मेरी रक्षा करे।१। जिह्वा कालिनी सदा मेरी पश्चिम में सुरक्षा करे। मन्दोन्मत्ता देवी वायव्य में रक्षा करे और कावेरी दिशा में त्रिशूलिनी देवी रक्षा करे।२। ऐशनी दिशनी में ब्रह्मास्त्र देवता निरन्तर मेरी रक्षा

करे। स्तब्ध मातृका देवी पाताल में सदा मेरी रक्षाकरे। महादेवी ऊर्ध्व भाग में मेरी रक्षा करे जो जिह्वा के स्तम्भन करने वाली है। समस्त सिद्धियों के प्रदान करने वाली बगला देवों इस प्रकार से दशों दिशाओं में मेरी रक्षा करे।३-३। इस रीति से न्यास की विधि को करके जो कुछ भी बन सके मन्त्र का जप करे। उस देवी के स्मरण से ही शत्रुओं का स्तम्भन हो जाया करता है ।५।

॥ इति श्री बगला पंजर न्यास स्तोत्र सम्पूर्णम् ॥

बगलापंजर न्यास स्तोत्रम्

ह्लीं ह्लीं ह्लींकारवाणी रिपुदलने । घोरगम्भीरनादे
ह्रीं ह्रीं ह्रींकाररूपे मुनिगणनमिते सिद्धिदे शुभ्रदेहे।
भ्रों भ्रों भ्रोंकरनादे निखिलरिपुघटाघोटने लग्नचित्ते
मातर्मातर्नमस्ते सकलभयहरे नौमि पीताम्बरे त्वाम् ।१
क्रौं क्रौं क्रोमीशरूपे अरिकुल हनने देहकीले कपाले
ह्स्रौं ह्स्रौं स्वरूपे समरसनिरते दिव्यरूपे।
ज्रौं ज्रौं ज्रौं जातरूपे जहि जहि दुरितं जम्भरूपेप्रभावे
कालिकङ् कालरूपे अरिजनदलने देहि सिद्धिं परां मे ।२
ह्स्रां ह्स्रीं च ह्स्रैं त्रिभुवनविदिते चण्डमार्त्तण्डचण्डे
ऐं क्लीं सौं कौलविद्ये सततशमपरे नौमि पीतस्वरूपे।
द्रौं द्रौं द्रौं दुष्टचित्ताऽऽदलनपरिणतबाहुयुग्मत्वदीये
ब्रह्मास्त्रे ब्रह्मरूपे रिपुदलहनने ख्यातदिव्यप्रभावे ।३

हे ह्लीं ह्लीं ह्लीङ्कार वाणी वाली ! हे शत्रुओं के दलन करने में परम घोर नाद वाली ! रे ह्रीं ह्रीं ह्रींकार के स्वरूप वाली ! हे समस्त मुनिगणों के द्वारा वन्दना की हुई। हे सिद्धि के प्रदान करने वाली ! परम शुभ्र देह वाली! भ्रों भ्रों भ्रोंकार नाद वाली ! हे समस्त

रिपुओं की घटा अर्थात् समूह के त्रोटन करने वाली ! हे शत्रुओं के तोड़ने में चित्त को लगा लेने वाली ! हे माता आपको मेरा नमस्कार है। हे सम्पूर्ण भयों के हरण करने वाली ! हे पीत वस्त्रों वाली ! आपको मैं प्रणाम करताहूँ ।१।हे क्रौं त्रौं क्रौं ईश रूप वाली ! हे अरियों के कुल के हनन करने वाली ! हे कपाले! हे देह के कीलन करने वाली! हे हस्रौं हस्रौं स्वरूप वाली ! हे सम रस में निरत रहने वाली ! हे दिव्य रूपसे युक्त ! हे सुन्दर रूप वाली ! ज्रौं ज्रौं ज्रौं जात रूप वाली अर्थात सुवर्ण की कान्ति वाली मेरे दुरितों अर्थात् पापों का विनाश कर दो। हे जम्भरूप वाली ! हे प्रभाव से युक्त हे कालि! हेकङ्काल रूप वाली ! मुझे शत्रुओं के दलन करने में परम सिद्धि प्रदान कीजिये ।२। हस्रां हस्रीं और हस्रं हे तीनों भुवनों में विदित ! हे प्रचंड मार्त्तण्ड के समान चण्डे ! हे ऐं क्लीं सौं काल विद्या वाली ! हे निरन्तर सम में परायणे ! हे पीतवर्ण के स्वरूप वाली ! आपके लिये नमस्कार हैं। हे द्रौं द्रौं द्रौं दुष्टों के चित्तों के आदलन करने में आपके बाहु युग्म परिणत हैं हे ब्रह्मास्त्रे ! हे ब्रह्म के रूप वाली ! हे रिपुओं के दलों के हनन करने वाली ! हे विख्यात दिव्य प्रभाव वाली ।३।

ठं ठं ठंकारवेशे ज्वलनकृतिज्वालकालास्वरूपे
धां धां धां धारयन्ती रिपुकुलरसनां मुद्गरं वज्रपाशम् ।
मातर्मातर्नमस्ते प्रवलखलहनं पीडयन्तीं भजामि
डां डां डां डाकिन्याद्यैर्डिमकडिमडिभ डमरुकंवादयन्तीम्।४
वाणीं व्याख्यानदात्रीं रिपुमुखनने वेदशास्त्रार्थपूताम्
मातः श्रीबगले परात्परतरे वादे विवादे जयम् ।।
देहि त्वं शरणागतोऽस्मि विमले देवि प्रचण्डोधृते
माङ्गल्यं वसुधासु देहि सततं सर्वस्वरूपं शिवे ।५
निखिलमुनिनिषेव्य स्तंभनं सवशत्रोः
शमपरमिह नित्यं ज्ञानिनाह्लादरूपम् ।

अहरहरनिशायां यः पठद्देवि कीलम् ।
स भवति परमेशा वादिनामग्रगण्यः ॥६

हे ठं ठं बंकार वेश वाली ! धां धां धां की धारणा करने वाली रिपुकुल की रसना को, मुदगरको, वज्रको और पाशको धारण करती हुई, हे माता ! आपको मेरा प्रणाम है। मैं केवल खल जनों को पीड़ा देती हुई आपका भजन करता हूँ। डाँ डां डां डाकिनी आदि के साथ डिमक, डिमडिम डमरू का वादन करने वाली आपका भजन करता हूँ ।४। वाणी, व्याख्यान के देने वाली हे रिपुओं के मुखों का खनन वाली! आप वेद शास्त्र के अर्थ से पूत है, ऐसी आपका मैं सेवन करता हूँ। हे माता ! श्री बगले ! हे पर से भी परतरे ! मुझे आप वाद-विवाद में विजय प्रदान कीजिए। मैं आपके शरणागति में समागत हुआ हूँ । हे विमले ! हे देवि ! हे प्रचण्डोद्धृते ! हे सर्वस्वरूप वाली ! हे शिवे ! मुझे पृथ्वी में निरन्तर माङ्गल्य प्रदान कीजिये ।५। इस कीलक का माहात्म्य कहते हैं कि यह कीलक समस्त मुनगणों के द्वारा सेवन करने के योग्य है और सब शत्रुओं के स्तम्भन करने वाला है। यह कलक इस संसार में नित्य ही शमपरायण हैं। यह ज्ञानी पुरुषों के लिए प्रेम स्वरूप है। जो इस कीलक को प्रतिदिन निशा में हे देवि ! पढ़ता है और इसका पाठ किया करता है वह परमेश अर्थात् सर्वशिरोमणि और वादियों में अग्रगण्य अर्थात् सर्वमान्य हो जाता है ।६।

॥ इति श्री कीलक स्तोत्र परिसमाप्तम् ॥

आरती

जय पीतांबरधारिणि जय सुखदे वरदे, माताजय सुखदे वरदे । भक्तजनानां क्लेशं भक्तजनानां क्लेशं सततं दूर करे । जय देवि जय देवि ॥१

असुरैर्पीडितदेवास्तव शरणं प्राप्ता मातर्तव शरणं प्राप्ताः धृत्वा कौर्मशरीरं धृत्वा कौर्म शरीरं दूरीकृतदुःखम् । जय० ।२

मुनिजनवन्दितचरणे जय विमले बगले, मातर्जय विमले बगले । संसारार्णवभीतिं संसारार्णवभीति नित्यं शान्तकरे ।जय० ।३

नारदसनकमुनीन्द्रै ध्यतिं पद कमलं मातर्ध्यायिं पद कमलम् हरिहरद्रुहिणसुरेन्द्रैः हरिहरद्रुहिणासुरेन्द्रै सेवितपदयुगलम् ।जय० ४।

काञ्चनपीठनिविष्टे मुद्गरपाशयुते, मातर्मुद्गरपाशयुते । जिह्वावज्रसुशोभित जिह्वावज्रसुशोभित पीतांशुकलसिते ।जय० ५।

बिन्दुत्रिकोणषडस्रै रष्टदलोपरि ते, मातरष्टदलोपरि ते । षोडशदलगतपीठं षोडशदलगतपीठं भूसुरवृत्तयुतम् ।जय० ६।

इत्थं साधकवृन्दश्चिन्तयते रूपं, मातश्चिन्तयते रूपम् । शत्रुविनाशकबीजं शत्रुविनाशकबीजं धृत्वा हृत्कमले ।जय० ७।

अणिमादिकबहुसिद्धि लभते सौख्ययुतां, मातर्लभते सौख्ययुताम् । भोगान् भुक्त्वा सर्वान्,सर्वान् भोगान् भुक्त्वा गच्छति विष्णुपदम् । जय० ।८

पूजाकाले कोऽपि आर्तिक्यं पठते, मातरार्तिक्यं पठते । धनधान्यादिसमृद्धो धनधान्यामिसमृद्धो लभते जयं सदा । जय देवि ।९।

।। इति बगलामुखी समाप्तम् ।।

श्रेष्ठतम मन्त्र साहित्य

मन्त्र–तन्त्र साहित्य

मन्त्र शक्ति से रोग निवारण
मन्त्र शक्ति से विपत्ति निवारण
मन्त्र शक्ति से कामना सिद्धि
मन्त्र शक्ति के अद्भुत चमत्कार
शिवसिद्धि
भैरव सिद्धि
दुर्गा सिद्धि
मानस मन्त्र सिद्धि
शाबर मन्त्र सिद्धि
गणेश सिद्धि
हनुमंत सिद्धि
बगलामुखी सिद्धि
काली सिद्धि
महामृत्युंजय साधना (भा. टी.)
नामजप सिद्धि
मन्त्र महाविज्ञान २ खण्ड
मन्त्र बिज्ञान
मन्त्र रहस्य
शारदा तिलक
मन्त्र महासिद्धि
लक्ष्मी सिद्धि
दत्तात्रेय तन्त्र (भा. टी.)
उड्डीश तन्त्र (भा. टी.)
रुद्रयामल तन्त्र (भा. टी.)

गायत्री व ओंकार साहित्य

गायत्री पुराण (भाषा)
गायत्री रहस्य
गायत्री महाविद्या
गायत्री सिद्धि
गायत्री तन्त्र
महामन्त्र–गायत्री
गायत्री साधना के चमत्कार
सरल गायत्री साधना
गायत्री रत्नावली
स्त्रियाँ गायत्री उपासना क्यों करें?
गायत्री सहस्रनाम
ओंकार सिद्धि
हिन्दू एकता का प्रतीक–ओंकार
ओंकार का अर्थ चिन्तन
ओंकार है स्वर्ग का द्वार
ओंकार शक्ति के चमत्कार
भगवान शिव और ओंकार साधना
भगवान राम और ओंकार साधना
भगवान कृष्ण और ओंकार साधना
राष्ट्रीय एकता का प्रतीक ओंकार
श्रेष्ठतम उपासना–ओंकार
प्राचीनतम गुरुमंत्र–ओंकार
विश्व धर्म–ओंकार
ओंकार साधना का अधिकार
त्रिदेवों का प्रतीक–ओंकार
ओंकार और विद्यार्थियों की समस्यायें
ओंकार हवन विधि
ओंकार लेखन साधना

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब, (वेदनगर) बरेली–२४३ ००३ (उ. प्र.)

SVB Li
S.No.-
Subject
Sub. Co